युग प्रमुख चारित्रशिरोमणि सन्मार्गदिवाकर पूज्य आचार्यश्री
विमलसागरजी महाराज की हीरक जयन्ती प्रकाशन माला

आचार्य तिरुत्तक्कदेवर विरचित

जीवक चिन्तामणि

महाकाव्य (तामिल)

हिन्दी अनुवादक

विद्याभूषण पण्डितरत्न मल्लिनाथ जैन शास्त्री

अर्थ सहयोगी

श्रीमती शारदा देवी जी
धर्मपत्नी महेन्द्र कुमार जी पाटनी, कलकत्ता
(मृत्युञ्जय विधान के उपलक्ष्य में)

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्

ज्ञानोदय प्रकाशन माला पुष्प संख्या–४५

प्रेरक : उपाध्याय मुनिश्री भरतसागरजी महाराज

निर्देशिका : आर्यिका स्याद्वादमती माताजी

प्रबंध संपादक : ब्र० धर्मचन्द शास्त्री, ब्र० कु० प्रभा पाटनी
B. Sc. LL. B.

ग्रन्थ : **जीवक चिन्तामणि (महाकाव्य)**

प्रणेता : आचार्य तिरुत्तक्कदेवर

संस्करण : प्रथम संस्करण प्रतियाँ १०००
वीर निर्वाण सं० २५२० सन् १९९४

प्रकाशक : भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्

प्राप्ति स्थान : (१) आचार्य विमलसागरजी संघ

(२) अनेकान्त सिद्धान्त समिति, लोहारिया,
बाँसवाड़ा [राजस्थान]

(३) श्री दि० जैन मन्दिर, गुलाबबाटिका,
लोनी रोड, दिल्ली

मूल्य

मुद्रक : वर्द्धमान मुद्रणालय,
जवाहरनगर कालोनी, वाराणसी–१०

समर्पण

चारित्र शिरोमणि
सन्मार्ग दिवाकर
करुणा निधि
वात्सल्य मूर्ति
अतिशय योगी—
तीर्थोद्धारक चूड़ामणि—
अपाय विचय धर्मध्यान के ध्याता
शान्ति-सुधामृत के दानी
वर्तमान में धर्म-पतितों के उद्धारक
ज्योति पुञ्ज—
पतितों के पालक
तेजस्वी अमर पुञ्ज
कल्याणकर्त्ता, दुःखों के हर्ता, समदृष्टा
बीसवीं सदी के अमर सन्त
परम तपस्वी, इस युग के महान् साधक
जिनभक्ति के अमर प्रेरणास्रोत
पुण्य पुञ्ज—
गुरुदेव आचार्यवर्य श्री 108
श्री विमलसागर जी महाराज के कर-कमलों में
"ग्रन्थराज"
समर्पित

तुभ्यं नमः परम धर्म प्रभावकाय।
तुभ्यं नमः परम तीर्थ सुवन्दकाय॥
"स्याद्वाद" सूक्ति सरणि प्रतिबोधकाय।
तुभ्यं नमः विमल सिन्धु गुणार्णवाय॥

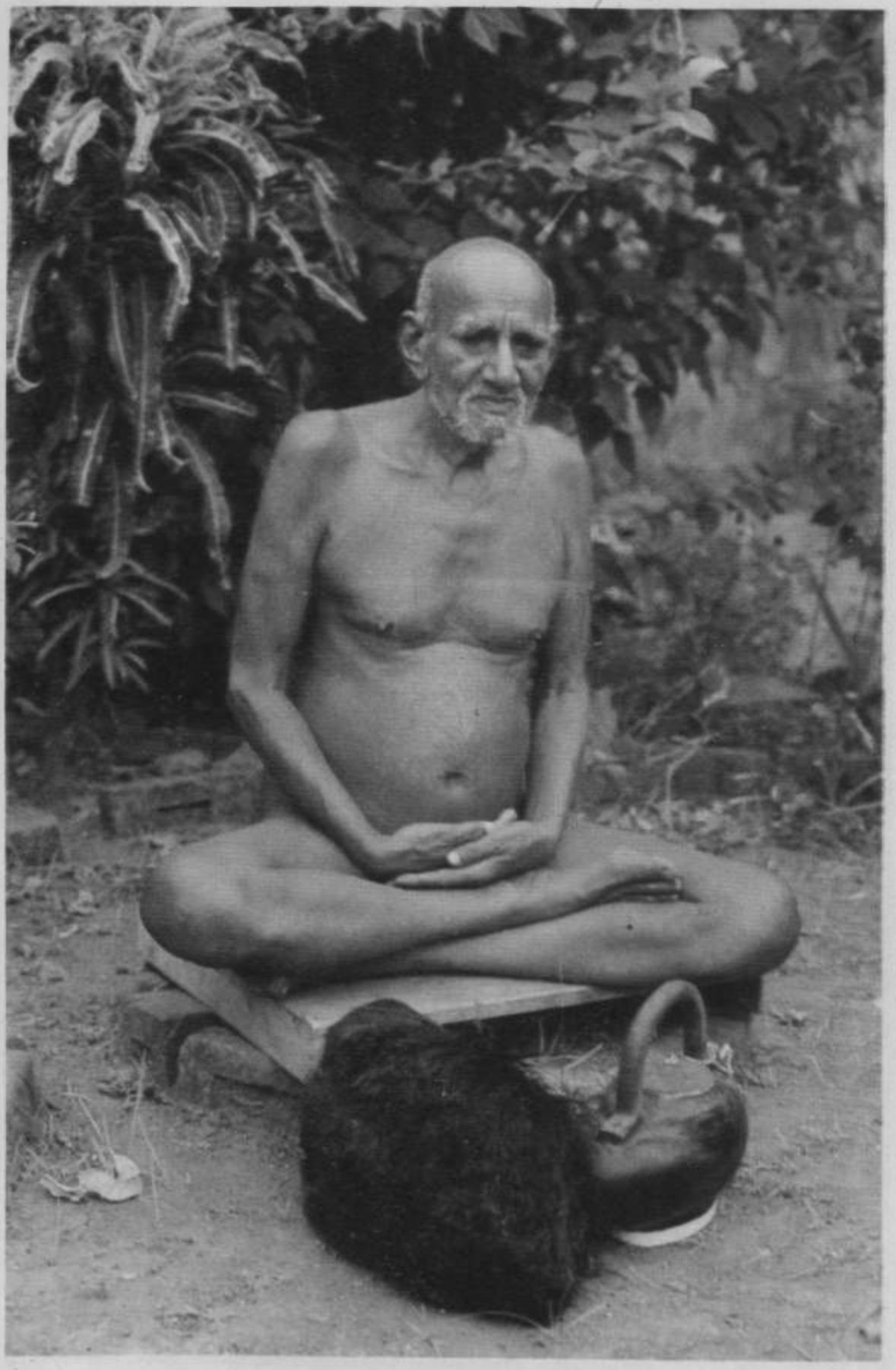

आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज

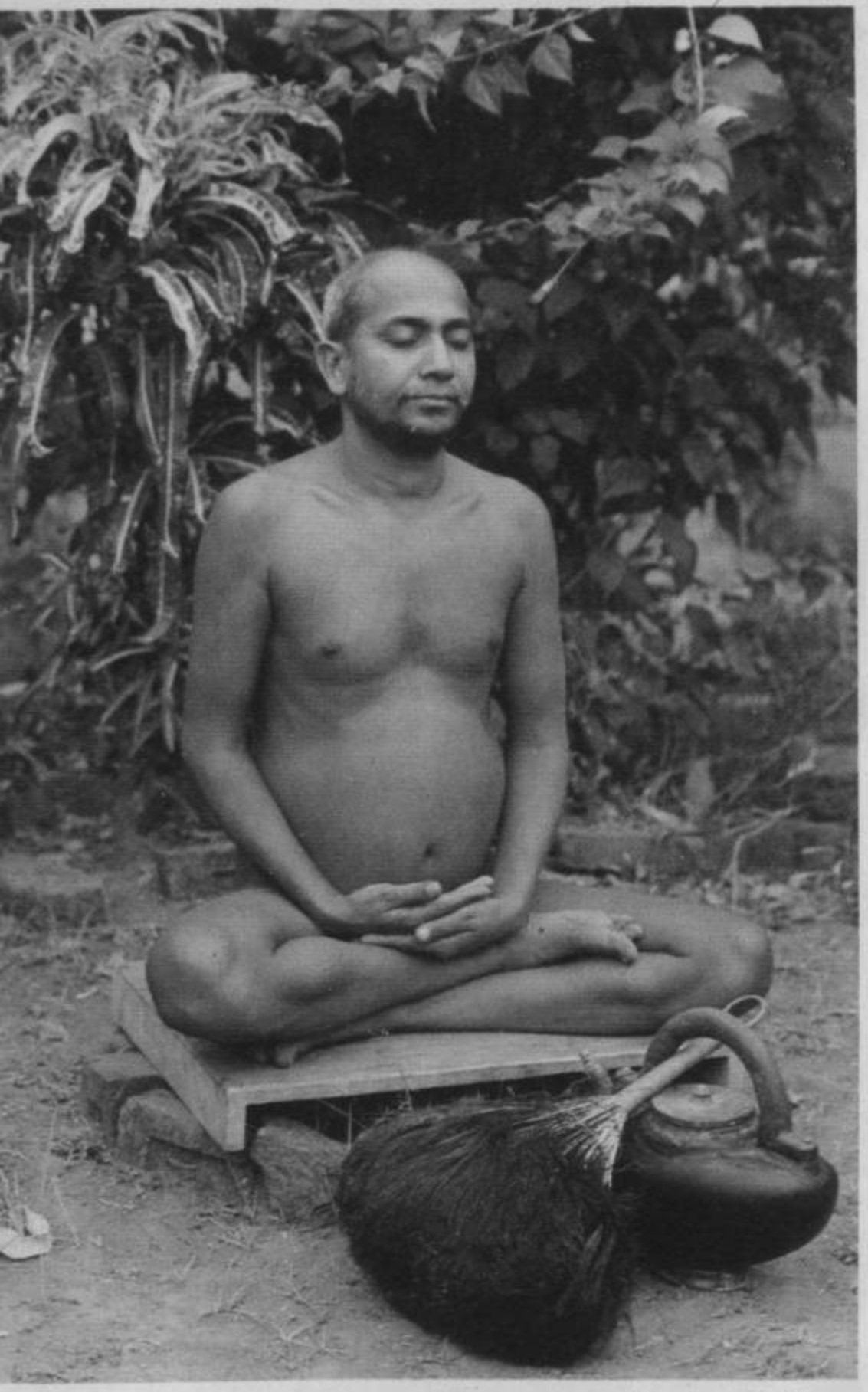

उपाध्याय श्री भरत सागर जी महाराज

सोनागिर

॥ आशीर्वाद ॥

विगत कतिपय वर्षों से जैनागम को धूमिल करने वाला एक प्रयास मिला ऐसा चमक गया कि सत्यपर असत्य का आवरण आने लगा - एकान्तवाद - निश्चयाभास तूल पकड़ने लगा।

आज के इस भौतिक युग में असत्य को अपना प्रभाव फैलाने में विशेष श्रम नहीं करना होता, यह कटु सत्य है, कारण जीव के मिथ्या संस्कार अनादिकाल से चले आरहे हैं। विगत ७०-८० वर्षों में एकान्तवाद ने जैनत्व का टीका लगा कर निश्चय जय की आड़ में स्याद्वाद को पीछे धकेलने का प्रयास किया है। मिथ्या साहित्य को प्रसार-प्रचार किया है। आचार्य कुन्द-कुन्द की आड़ लेकर अपनी ख्याति चाही है और शास्त्रों में भावार्थ बदल दिए हैं अर्थ का अनर्थ कर दिया है।

बुधजनों ने अपनी क्षमता पर 'एकान्त' से लोहा लिया है पर वे अपनी ओर से जनता को अपेक्षित सत्साहित्य सुलभ नहीं करना पाए। आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का हीरक जयन्ती वर्ष हमारे लिए एक स्वर्णिम अवसर लेकर आया है। आर्यिका स्याद्वादमती माताजी ने आचार्य श्री एवं हमारे सान्निध्य में एक संकल्प लिया कि पूज्य आचार्य श्री की हीरक जयन्ती के अवसर पर आर्ष साहित्य का प्रचुर प्रकाशन हो और यह जन-जन को सुलभ हो। फलत ७५ आर्ष ग्रन्थों के प्रकाशन का निश्चय किया गया है क्योंकि सत्यसूर्य के तेजस्वी होने पर असत्य अन्धकार स्वतः ही पलायन कर जाता है।

आर्ष ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु जिन महात्माओं ने अपनी स्वीकृति दी है एवं प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में जिस किसी ने भी इस महदनुष्ठान में किसी भी प्रकार का सहयोग किया है उन सबको हमारा आशीर्वाद है।

उपाध्याय भरतसागर

ता० ११-७-१९९०

'संकल्प'

'णाणं पयासं' सम्यग्ज्ञान का प्रचार-प्रसार केवलज्ञान का बीज है। आज कलयुग में ज्ञान प्राप्ति की तो होड़ लगी है। पदवियाँ और उपाधियाँ जीवन का सर्वस्व बन चुकी हैं परन्तु सम्यग्ज्ञान की ओर मनुष्यों का लक्ष्य ही नहीं है।

जीवन में मात्र ज्ञान नहीं, सम्यग्ज्ञान अपेक्षित है। आज तथाकथित अनेक विद्वान् अपनी मनगढन्त बातों की पुष्टि पूर्वाचार्यों की मोहर लगाकर कर रहे हैं। ऊटपटाँग लेखनियाँ सत्य की श्रेणी में स्थापित की जा रही हैं। कारण पूर्वाचार्य प्रणीत ग्रन्थ आज सहज सुलभ नहीं हैं और उनके प्रकाशन व पठन-पाठन की जैसी और जितनी रुचि अपेक्षित है, वैसी और उतनी दिखाई नहीं देती।

असत्य को हटाने के लिए पर्चेबाजी करने या विशाल सभाओं में प्रस्ताव पारित करने मात्र से कार्यसिद्धि होना अशक्य है। सत्साहित्य का जितना अधिक प्रकाशन व पठन-पाठन प्रारम्भ होगा, असत् का पलायन होगा। अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए आज सत्साहित्य के प्रचुर प्रकाशन की महती आवश्यकता है—

येनैते विदलन्ति वादि गिरयस्तुष्यन्ति वागीश्वराः,
भव्या येन विदन्ति निर्वृति पदं मुञ्चन्ति मोहं बुधाः।
यद् बन्धुर्यन्मित्रं यदक्षयसुखस्याधारभूतं मतं,
तल्लोकत्रयशुद्धिदं जिनवचः पुष्याद् विवेकश्रियम्॥

सन् १९८४ से मेरे मस्तिष्क में यह योजना बन रही थी परन्तु तथ्य यह है कि 'संकल्प' के बिना सिद्धि नहीं मिलती। सन्मार्गदिवाकर आचार्य १०८ श्री विमलसागर जी महाराज की हीरक-जयन्ती के मांगलिक अवसर पर माँ जिनवाणी की सेवा का यह सङ्कल्प मैंने प० पू० गुरुदेव आचार्यश्री व उपाध्यायश्री के चरण-सान्निध्य में लिया। आचार्यश्री व उपाध्यायश्री का मुझे भरपूर आशीर्वाद प्राप्त हुआ। फलतः इस कार्य में काफी हद तक सफलता मिली है।

इस महान् कार्य में विशेष सहयोगी पं० धर्मचन्द्र जी व प्रभा जी पाटनी रहे, इन्हें व प्रत्यक्ष-परोक्ष में कार्यरत सभी कार्यकर्त्ताओं के लिए मेरा आशीर्वाद है।

पूज्य गुरुदेव के पावन चरण-कमलों में सिद्ध-श्रुत-आचार्यभक्तिपूर्वक नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।

आर्यिका स्याद्वादमती

आभार

सम्प्रत्यस्ति न केवली किल कलौ त्रैलोक्यचूड़ामणि-
स्तद्वाचः परमासतेऽत्र भरतक्षेत्रे जगद्योतिका।
सद्रत्नत्रयधारिणो यतिवरास्तेषां समालम्बनं,
तत्पूजा जिनवाचिपूजनमतः साक्षाज्जिनः पूजितः॥ पद्मनंदो पं० ॥

वर्तमान में इस कलिकाल में तीन लोक के पूज्य केवली भगवान् इस भरतक्षेत्र में साक्षात् नहीं हैं तथापि समस्त भरतक्षेत्र में जगत्प्रकाशिनी केवली भगवान् की वाणी मौजूद है तथा उस वाणी के आधारस्तम्भ श्रेष्ठ रत्नत्रयधारी मुनि भी हैं। इसीलिए उन मुनियों का पूजन तो सरस्वती का पूजन है, तथा सरस्वती का पूजन साक्षात् केवली भगवान् का पूजन है।

आर्ष परम्परा की रक्षा करते हुए आगम पथ पर चलना भव्यात्माओं का कर्त्तव्य है। तीर्थंकर के द्वारा प्रत्यक्ष देखी गई, दिव्यध्वनि में प्रस्फुटित तथा गणधर द्वारा गुंथित वह महान् आचार्यों द्वारा प्रसारित जिनवाणी की रक्षा प्रचार-प्रसार मार्ग प्रभावना नामक एक भावना तथा प्रभावना नामक सम्यग्दर्शन का अंग है।

युगप्रमुख आचार्यश्री के हीरक जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में हमें जिनवाणी के प्रसार के लिए एक अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान युग में आचार्यश्री ने समाज व देश के लिए अपना जो त्याग और दया का अनुदान दिया है वह भारत के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। ग्रन्थ प्रकाशनार्थ हमारे सान्निध्य या नेतृत्व प्रदाता पूज्य उपाध्यायश्री भरतसागरजी महाराज व निर्देशिका जिन्होंने परिश्रम द्वारा ग्रन्थों की खोजकर विशेष सहयोग दिया, ऐसी पूज्या आ० स्याद्वादमती माताजी के लिए मैं शत-शत नमोस्तु-वंदामि अर्पण करती हूँ। साथ ही त्यागीवर्ग, जिन्होंने उचित निर्देशन दिया उनको शत-शत नमन करती हूँ।

जीवक चिन्तामणि (महाकाव्य) ग्रन्थ तामिल भाषा का है। इसकी अपनी विशेषता है। आदरणीय शास्त्री जी ने इसका हिन्दी अनुवाद करके पाठकों को लाभान्वित किया है इसके लिमे हम शास्त्री जी के आभारी हैं।

ग्रन्थ प्रकाशनार्थ अमूल्य निधि का सहयोग देने वाले द्रव्यदातारों की मैं आभारी हूँ तथा यथासमय शुद्ध ग्रन्थ प्रकाशित करने वाले वर्द्धमान मुद्रणालय की भी मैं आभारी हूँ। अन्त में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में सभी सहयोगियों के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सत्य जिनशासन की, जिनागम की भविष्य में इसी प्रकार रक्षा करते रहें, ऐसी भावना करती हूँ।

ब्र० प्रभा पाटनी संघस्थ

प्रकाशकीय

इस परमाणु युग में मानव के अस्तित्व की ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के अस्तित्व की सुरक्षा की समस्या है। इस समस्या का निदान 'अहिंसा' से किया जा सकता है। अहिंसा जैनधर्म-संस्कृति की मूल आत्मा है। यही जिनवाणी का सार भी है।

तीर्थंकरों के मुख से निकली वाणी को गणधरों ने ग्रहण किया और आचार्यों ने निबद्ध किया जो आज हमें जिनवाणी के रूप में प्राप्त है। इस जिनवाणी का प्रचार-प्रसार इस युग के लिए अत्यन्त उपयोगी है। यही कारण है कि हमारे पूज्य आचार्य, उपाध्याय एवं साधुगण जिनवाणी के स्वाध्याय और प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं।

उन्हीं पूज्य आचार्यों में से एक हैं सन्मार्ग दिवाकर, चारित्रचूड़ामणि परमपूज्य आचार्यवर्य विमलसागरजी महाराज। जिनकी अमृतमयी वाणी प्राणिमात्र के लिए कल्याणकारी है। आचार्यवर्य की हमेशा भावना रहती है कि आज के समय में प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रन्थों का प्रकाशन हो और मन्दिरों में स्वाध्याय हेतु रखे जाँय जिसे प्रत्येक श्रावक पढ़कर मोहरूपी अन्धकार को नष्ट कर ज्ञानज्योति जला सकें।

जैनधर्म की प्रभावना जिनवाणी के प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण विश्व में हो, आर्ष परम्परा की रक्षा हो एवं अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर का शासन निरन्तर अबाधगति से चलता रहे। उक्त भावनाओं को ध्यान में रखकर परमपूज्य ज्ञान-दिवाकर, वाणीभूषण उपाध्यायरत्न भरतसागरजी महाराज एवं आर्यिकारत्न स्याद्वादमती माता जी की प्रेरणा व निर्देशन में परमपूज्य आचार्य विमलसागरजी महाराज की 75वीं जन्म-जयन्ती पर भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद ने 75 ग्रन्थों के प्रकाशन के योजना के साथ ही भारत के विभिन्न नगरों में 75 धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है और 75 पाठशालाओं की स्थापना भी की जा रही है। इस ज्ञान यज्ञ में पूर्ण सहयोग करने वाले 75 विद्वानों का सम्मान एवं 75 युवा विद्वानों को प्रवचन हेतु तैयार करना तथा 7775 युवा वर्ग से सप्तव्यसन का त्याग करना आदि योजनाएँ इस हीरक जयन्ती वर्ष में पूर्ण की जा रही हैं।

उन विद्वानों का भी आभारी हूँ जिन्होंने ग्रन्थों के प्रकाशन में अनुवादक/सम्पादक एवं संशोधक के रूप में सहयोग दिया है। ग्रन्थों के प्रकाशन में जिन दाताओं ने अर्थ का सहयोग करके अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर पुण्यार्जन किया, उनको धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। ये ग्रन्थ विभिन्न प्रेसों में प्रकाशित हुए एतदर्थ उन प्रेस संचालकों को भी धन्यवाद देता हूँ। अन्त में उन सभी सहयोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष में सहयोग किया है।

ब्र० पं० धर्मचन्द शास्त्री

अध्यक्ष, भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्

श्री जिनाय नमः

प्राक्कथन

जीवकचिन्तामणि तमिल भाषा के काव्यों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। तमिल भाषा के अन्दर पाँच महाकाव्य हैं। वे हैं—जीवक चिंतामणि, सिलप्पधिकारं, मणिमेखलै, वलैयापति और कुण्डलकेशि। काल की अपेक्षा से देखा जाय तो सिलप्पधिकार ही पहला माना जायगा। क्योंकि वह ई० दूसरी सदी की मानी जाती है। काव्य नय की दृष्टि से चिन्तामणि का पहला स्थान मिलता है। चिन्तामणि कहने से तमिल भाषा के अन्दर जीवकचिन्तामणि का ही ग्रहण किया जाता है। क्योंकि इस काव्य की इतनी प्रसिद्धि है कि थोड़ा-बहुत पढ़े-लिखे जैन और अजैन सारे के सारे इसका नाम जानते हैं। विद्यार्थियों के वर्गों के अनुसार इसके पद्य पाठ्य पुस्तकों में भी रखे जाते हैं और पढ़ाये जाते हैं। जो तमिल विद्वान् बनने के लिये पढ़ता है उनको तो बहुत ज्यादा पढ़ने पड़ते हैं। इसलिये इस काव्य का महत्त्व सर्वोपरि मानने में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं है।

इसका नाम चिन्तामणि क्यों पड़ा ? कारण यह है कि केवल नाममात्र से यह चिन्तामणि नहीं है; बल्कि महाकाव्य के जो-जो गुण होना चाहिये वे सारे गुण इसमें मौजूद हैं। इसका अर्थ यों कह सकते हैं कि हमेशा मन में स्थान देने योग्य महत्त्वपूर्ण विषयों से भरे हैं। और चिन्तित वस्तुओं को प्रदान करने वाले होने के नाते इसकी गरिमा है। पंचेन्द्रियों से ग्राह्य विद्वत् समूह को आवश्यक सारी वस्तुयें इसमें एक साथ मिल जाने के कारण इसका नाम चिन्तामणि पड़ा। इस तरह इसके बारे में खूब वर्णन कर सकते हैं।

इस काव्य के कथानायक जोवन्धरकुमार हैं। उसकी जननी माता ने सबसे पहले इसी नाम से पुकारा था कि हे चिन्तामणि ! जीवक जो नाम है वह बाद में आकाशवाणी के रूप में 'जीव' अर्थात् जीते रहो; इस तरह प्राप्त हुआ आशीर्वाद नामक शब्द है। इस शब्द को गन्धोटकट श्रेष्ठी ने

सुना था। अतः उसने उसी नाम को अंकित कर दिया। माता के हृदय से आविर्भूत जो चिन्तामणि नाम है वही ग्रन्थकर्ता का अभीष्ट था। इसलिये तिरुत्तक्कदेवर ने उसी नाम का आदर किया और ग्रन्थराज को नामांकित कर सिरमौर बना दिया।

इस ग्रन्थ का नायक जोवन्धरकुमार आठ सुन्दर कन्याओं को वरण करता है। ये आठों कन्यायें उच्चकुलोत्पन्न एवं सुन्दरता की नमूने थीं। इन सबके साथ क्रमशः विवाह करते जाने से इस ग्रंथ का अपर नाम **वैवाहिक ग्रन्थराज** कहकर पुकारा जाता है। उन्हीं रमणी रत्नों के नाम से 'लम्ब' (सर्ग) का नाम भी अंकित किया गया है। जैसे गांधर्वदत्तैलम्ब, गुणमालैलम्ब आदि।

चिन्तामणि एक पुरातन कथा को आधार शिला बनाकर रचा गया एक अद्‌भुत काव्य है। इसके पद्य पढ़ने वाले को अविरल मधुर वचनों के भण्डार मिलने से चिन्तामणि की उपमा चिन्तामणि ही है। अर्थात् यह उपमातीत है जैसे समुद्र की उपमा समुद्र हो है, उसके साथ अन्य वस्तु की उपमा नहीं दी जा सकती।

तमिल भाषा में कम्बरामायण नामक एक अजैन रामायण है। यह 'कंबन' नामक कवि से रचा गया ग्रंथ है। यह दसवीं सदी का है। अर्थात् चिन्तामणि के बाद का है। चिन्तामणि का जो वचन सौरभ एवं वाक्यविन्यास है वह कंबन रामायण में नहीं है। इसलिये विद्वान् लोग चिन्तामणि कविता के लालित्य पर मुग्ध हो जाते हैं। और तारीफ भी करते हैं। तथा आदर की दृष्टि से देखते हैं। कंबन ने अपनी कृति में चिन्तामणि की देखादेखी से मधुरता लाने की कोशिश की। फिर भी चिन्तामणि के सामने वह फीकी पड़ गयी। चिन्तामणि के माधुर्य भरे वचन, सौरभ अन्य किसी भी काव्य में देखना असम्भव है। तिरुत्तक्कदेवर जी की कला परमानन्ददायिनी है। पुराने जमाने के जितने काव्यों के व्याख्यानकर्ता रहे उन लोगों के सामने चिन्तामणि एक अलौकिक ग्रन्थ रहा।

चिन्तामणि तमिल भाषा का एक जैन महाकाव्य है। इतना ही नहीं, वह सारी दुनियाँ के महाकाव्यों में एक है। इस बात को विदेशी विद्वान् लोग तहे दिल से स्वीकार करते हैं। इसका विवेचन आगे किया जायगा।

इस ग्रन्थ के कथानायक संसार के आशापाश में रहते हुए भी कमल-पत्र स्थित पानी की तरह मोहमाया से दूर रहते थे। ऐसे लोग आखिर त्यागमार्ग को अपना कर मुक्ति पाते हैं। इस उदात्त तथ्य को सिखाने वाला यह एक अद्‌भुत् काव्य रत्न है। इस तरह की रचना या कृतित्व अन्य मत-मतान्तरों में देखने को भी नहीं मिल सकती। अतः यह काव्य अन्य लोगों के लिये उदाहरण स्वरूप है। इससे वे लोग शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

जीवक चिन्तामणि की रचना होने के बाद संस्कृत के अन्दर गद्य-चिन्तामणि, जीवन्धरचंपू, जीवन्धर नाटक, क्षत्रचूड़ामणि आदि की रचना हुई थी। क्योंकि काल की अपेक्षा से विचार किया जाय तो वे सब बहुत पीछे के हैं।

कुछ अनुसंधान वालों का कथन यह है कि जीवकचिन्तामणि गद्य-चिन्तामणि के पीछे का है। गद्यचिन्तामणि का काल नवमी सदी का माना गया है। अतः जीवकचिन्तामणि का काल नवमी सदी के पीछे होना चाहिये। उन लोगों का प्रमाण यह है कि जीवकचिन्तामणि में कुछ पद्य गद्यचिन्तामणि के कुछ श्लोकों का अनुवाद सरीखा दीखता है। अतः यह पीछे का है। यह कथन जीवकचिन्तामणि के काल को नवमी सदी से पीछे ढकेलने के लिये बोला जाता है। इसके उत्तर में अन्य अनुसंधान वालों का कहना यह है कि जीवकचिन्तामणि के पद्यों को गद्यचिन्तामणि के कर्ता ने अनुवाद कर लिया हो, इस तरह क्यों नहीं कह सकते ? वास्तव में यही बात हुई थी। खास बात यह है कि जीवकचिन्तामणि का काल ७वीं सदी के पहले का है; यह बात निश्चित हो चुकी है। इसका प्रमाण यह है कि सातवीं सदी का शैवमत तिरुनावुक्करसु (यह महाशय पहले जैन थे, बाद में शैव हो गये थे) अपने तेवारं नामक ग्रन्थ में तिरुत्तक्कदेवर के जो नरिविरूत्त है उसके अनित्य तत्त्व को खण्डन करते हैं। तिरुनावुक्करसु का काल ७वीं सदी का निर्णय किया गया है। तब तो देवर का नरिविरुत्तं ग्रन्थ उससे पहले का निर्णय हो जाता है। क्योंकि तभी तो वह उस ग्रन्थ को खण्डन कर सकते हैं। इस आधार से देवर का (जीवकचिन्तामणि का) काल ७वीं सदी से पहले का निश्चित हो जाता है। इससे यह पता चलता है कि गद्यचिन्तामणि के कर्ता ने ही जीवकचिन्तामणि से भावग्रहण किया है न कि देवर महाराज ने। इससे यह बात स्वतः निश्चित हो जाती है।

तामिलनाडु में अहित धर्म जो जैनधर्म है उसका स्वर्णिम काल ई० दूसरी सदी से सातवीं सदी तक का रहा। अर्थात् छः सौ साल तक जैन-धर्म अपनी धार्मिक पताका को ऊँचे फहराते हुए जाज्वल्यमान रहता था। उसके बाद तिरुनावुक्करसु, अप्पर, संबन्धर, माणिक्कवाचकर इन शैव भक्तों ने जैनधर्म का एकदम ह्रास कर दिया। जो प्रकाशमान सूर्य के समान था उसे इन लोगों ने जुगनू के समान बना दिया। क्या कहा जाय ? एक तरह से जैनधर्म की हानि हुई ही कहना चाहिये। इसमें यही आश्चर्य की बात है कि ऐसे भयंकर मत संघर्ष होते हुए भी चिन्तामणि सरीखे अपूर्व ग्रन्थ आपत्ति से बच गये।

इस चिन्तामणि के जमाने के बाद जितने भी साहित्य तमिल भाषा में उत्पन्न हुए हैं वे सबके सब इस चिन्तामणि के पदानुसारिणी हैं। इस ग्रन्थ के बाद कोई बड़े साहित्य के नाम से कहा जाय तो वह कंब रामायण है। वह भी साहित्य की कोटि में समझने का कारण चिन्तामणि को ही कहना चाहिये। इस बात को शैव सिद्धान्त कलकं वालों से प्रकाशित जीवकचिन्तामणि की भूमिका में खुद स्वीकार किये हैं। (The South Indian Saiwa Siddanta Works I Part Page 17)

चिन्तामणि के कर्त्ता देवर जी का अभिप्राय यह है कि दिल से आशापाश को हटाना ही मुख्य ध्येय होना चाहिये। परन्तु व्यावहारिक कार्य में याने गृहस्थाश्रम में रहनेवाले श्रावक या राजा जो कोई भी हो, वे अधर्म मार्ग को अपनाये बिना अपनी अथवा धर्म की रक्षा के लिये लड़ाई कर सकते हैं; न्यायपूर्वक कन्याओं से शादी कर सकते हैं और भोग भोग सकते हैं। परन्तु अपने कर्त्तव्यों को कभी भी भूलना नहीं चाहिये। अन्त में सभी तरह के आशापाश को त्याग कर मुनिमार्ग का अवलंबन करना आवश्यक है। उससे मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसी विधेय को आचार्य देवर जी ने अपने इस ग्रन्थराज महाकाव्य में सभी लोगों की जानकारी के लिये विशदरूप में विवेचन किया है।

एक काव्य, लोगों के दिल को कैसे खींच सकता है? इस बात को देवर जी महाराज अच्छी तरह जानने वाले थे। रसों में करुणारस ही मानवों के हृदय को पिघला देता है। पहले लम्ब में ही करुणारस की प्रमुखता इस चिन्तामणि में रहने के कारण इसका महत्त्व एकदम ऊँचा रहता है। उक्त पहले लम्ब में करुणारस के द्वारा अध्ययन करनेवालों के दिल को रुला देते हैं। राजराज सत्यंधर महाराजा की पत्नी राज-महल में वांछित भोगवस्तुओं को भोगनेवाली विजया निर्जन जंगल के

श्मशान में अकेली अपनी प्रसव वेदना के साथ अमूल्य जीवन रत्न को प्रदान करती है। तद्भवे मोक्षगामी, भगवान् महावीर के जमाने में कामदेव ऐसे नररत्न की उत्पत्ति कम से कम एक झोपड़ी में न होकर पिशाचों से भरे अमंगल श्मशान में जन्म लेने के कारणभूत कर्म की वैचित्र्यता को देखकर कौन कठिन दिलवाला नहीं रोयेगा। कठिन से कठिन मनवाले भी रोये बिना नहीं रह सकते। हर एक व्यक्ति को पढ़ते समय संसार की हालत को सोचने का मौका मिलता है। यह कथा झूठी नहीं है, वास्तविक है। राजकुलोत्पन्न वैभवशालियों की हालत ऐसी है तो अपनी हालत क्या है ? यह सोचने का मौका अवश्य ही मिल जाता है। पहला लम्ब ऐसा अनूठा है कि कर्म की विचित्रता, जीव को कर्म के पराधीन होकर कैसे-कैसे दुःख भोगने पड़ते हैं ? चाहें राजमहलवाला हो या नित्य दरिद्री भिखारी हो। कोई भी इस कर्मरूपी खिलाड़ी के सामने बच नहीं सकता। यही संसार की हालत है। धन-वैभव के नशे में जो अन्धा होकर विचरते हैं उनके जबड़े में जोर से एक थप्पड़ देकर जताते हैं देखो, विजया की हालत ! देखो धन वैभव की हालत ! विजया देवी के राजवैभव के सामने तुम्हारे धन वैभव की क्या कुछ कीमत है ? कुछ नहीं; तुच्छ है। फिर क्यों घमण्ड के मारे फूले जाते हो ! इस तरह पहले लम्ब की शिक्षा सर्वजनोपयोगी है। बाद में कामदेव जीवन्धरकुमार आठ नारी रत्नों से विवाह करता है और भोग भी भोगता है। सब कुछ है, फिर भी पहले लम्ब की महानता सबसे ऊँची है।

दुःख भोगते हुए भी मानव अलग सुख की नींद में मस्त होकर सो जाता है। ऐसे मूर्ख व्यक्ति के लिए यह लम्ब नींद जगाने वाला है। संबोधन करने वाला है।

उसके बाद सद्गुरु आर्यनन्दी जो महाराज जीवन्धरकुमार के सातिशय पुण्य के स्वरूप को देख लेते हैं। जो रोग उन्हें सताता था और जिस रोग के कारण अपने अमूल्य तपाराधना की तिलांजलि देनी पड़ी। ऐसा भयंकर भस्मक रोग पुण्यस्वरूपी जीवन्धरकुमार को देखने मात्र से ही भाग निकला।

वे ही महाराज उत्तम पुत्र जीवन्धर के दिल में अनित्यता की छाप जमा देते हैं। जब कुमार अपने कुल नाशक दुराचारी काष्ठांगार से बदला लेने तैयार होते हैं तब कुमार से गुरु दक्षिणा के रूप में एक साल रुक जाने का वायदा ले लेते हैं। कुमार को सारी विद्यायें सिखाने के बाद अपने

कर्तव्य को पूर्त्ति के लिये चल पड़ते हैं। यहाँ भी तपोधनों के लिये एक शिक्षा है, देखो ! किसी कारणवश तप से भ्रष्ट होने की हालत हुई हो तो, फिर से अपने कर्तव्य पथ पर आरूढ़ होकर आत्म कल्याण करने से चूकना नहीं चाहिये। इस तरह आर्यनन्दी महाराज शिक्षाप्रद मार्ग पर चलकर आत्मकल्याण कर लेते हैं।

राजराज सत्यन्धर महाराज को अत्यन्त सुन्दरी विजया एक ही पत्नी थी। उसके रूपलावण्य में मुग्ध हो जाने से राजा को अपना जीवन, राज्य, वैभव, प्यारी पत्नी, कुल मर्यादा सबको तिलांजलि देनी पड़ी। मगर जीवन्धरकुमार को देवांगनाओं से भी सुन्दर आठ पत्नियाँ थीं। फिर भी वे मोहमाया में फँसे नहीं। उन्होंने अपने पुत्र के हाथ में राज्य-लक्ष्मी एवं भोगलक्ष्मी को समर्पण कर त्यागमार्गरूपी तपसाधना के द्वारा मुक्ति नारी को वरण कर लिया था। शायद उन्होंने यों समझा हो कि अविनश्वर लक्ष्मी के सामने नश्वर लक्ष्मी को कोई कीमत नहीं है।

आदरणीय गृहस्थावस्था के लिये विद्या एवं धन दोनों, दो आँखों के समान हैं। इसके साथ-साथ उक्त गृहस्थावस्था को ढंग से चलाने के लिये सदाचारी राजा याने योग्य संचालक की भी बड़ी जरूरत है। देश में शान्ति नहीं रहेगी तो गृहस्थाश्रम ठीक तरह से चल नहीं सकती। देवर जी महाराज ने इस विषय को पहले पद्य में ही अच्छे ढंग से बता दिया है। इससे यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि देवरजी महाराज से समर्पित किये गये चिन्तामणि नामक काव्यरत्न सदाचार के साथ सद्गृहस्थी चलानेवाले व्यक्ति के लिये सारे वस्तुओं को प्रदान करनेवाला चिन्तारत्न है।

शैवमतवालों के पेरियपुराणं नामक ग्रंथ के आधार से अप्पर, संबन्धर माणिक्कवाचकर, तिरुनावुक्करसु नामक शैव पक्षपाती लोगों के कारण जैनियों पर बड़ा भारी अत्याचार हुआ। जैनियों पर झूठे हार को छाप लगाकर आठ हजार मुनिराजों को सूली पर चढ़ाकर सत्यानाश किया गया। इस कुकृत्य को हर साल दक्षिण मथुरा में दस दिन तक उत्सव के रूप में मनाते हैं और जैन मुनियों को सूली पर चढ़ाने का नाटक दिखाया जाता है। जातीयता के पक्षपात से सुदूर सरकार के संचालन में ऐसा विद्वेषपूर्ण कार्य होता रहता है। इस पर सरकार ध्यान नहीं देती। क्या करें। अल्पसंख्यक लोगों को हालत हमेशा ऐसी ही हुआ करती है। यह कथा बहुत लम्बी है। ऐसी भगावत के समय जैनियों के शास्त्रों को पानी

में फेंका गया। आग में डालकर जलाये गये। हजारों ग्रंथों को नाश किया गया। उन अत्याचारों से बचे हुए जो कोई भी जैनग्रंथ हैं वे ही तमिल भाषा के दैदीप्यमान सूर्य के समान चमकते हैं। उनमें से चिन्तामणि भी बचा हुआ ग्रंथ है। सारे के सारे ग्रन्थ रहते तो कितना अच्छा होता !

तमिल भाषा में चिन्तामणि का सबसे पहले प्रकाशन का कार्यकर्ता, शैवमत के अनुयायी होते हुए भी निष्पक्षपाती, तमिल भाषा के बड़े भारी विद्वान अ० वे० स्वामीनाथ अय्यर नामक व्यक्ति थे। उक्त महाशय ने ही जैनियों के घर-घर जाकर ऐसे अद्भुत ग्रन्थों को समेट कर लाया और प्रकाशित कराया। उन महाशय ने प्रयास नहीं किया होता तो आज ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की उपलब्धि भी नहीं होती। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये जैन समाज उक्त महाशय को कृतज्ञता के साथ धन्यवाद देती है। देना भी जैनियों का कर्तव्य है। क्योंकि ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य को जैनी लोगों ने नहीं किया। आज भी जैनियों के तमिल ग्रन्थों को जैनेतर समाज ही लाखों की संख्या में छपवाती है और बेचती है। चाहे व्यापार की दृष्टि से हो। इन ग्रन्थों के खरीददार भी जैनेतर समाज के लोग ही हैं।

इस तरह अ० वे० स्वामिनाथ अय्यर के द्वारा चिन्तामणि का पहला प्रकाशन होने के बाद "शैव सिद्धान्तकलकं" नामक तमिल पुस्तकों को प्रकाशन करनेवाली संस्था ने इस जीवकचिन्तामणि ग्रन्थ की अन्वयार्थ व्याख्या लिखवा कर कई आवृत्ति छपवाई हैं। लाखों की प्रतियाँ छपवाकर बेची हैं। लाखों की प्रतियाँ बिकती हैं तो इस पर लोगों की रुचि कैसी है ? पाठकगण इसका अन्दाजा कर सकते हैं।

व्याख्याता :—पुराने जमाने के व्याख्याता महा-विद्वान "नच्चिनार्किनियर" व्यक्ति थे। उन्होंने ही पहली व्याख्या लिखी थी। उसके आधार से ही पीछे के व्याख्यातागण व्याख्या लिख पाते हैं। चिन्तामणि पद्य बहुत कठिन है। आसानी से अर्थ समझना मुश्किल है। तात्त्विक एवं मार्मिक बातों को समझने के लिये पुरातन व्याख्या की बड़ी जरूरत पड़ती है। अन्य व्याख्याता के नाम हैं "पुलवर, अरसु" एवं "पो० वे० सोमसुन्दरनार"। इनकी अन्वयार्थ व्याख्या है। ये दोनों अच्छे विद्वान् हैं और शैवमतानुयायी हैं। ये दोनों 'नच्चिनार्किनियर' की व्याख्या के आधार से ही इनकी व्याख्या लिखी है। हाल ही में जैनमतानुयायी श्रीचन्द्रन जैन

M. A. (प्राचार्य, जैन कॉलेज, मद्रास) की तरफ से भावार्थ की व्याख्या निकली है। इस तरह कई व्याख्यायें हुई हैं।

इस जीवक चिन्तामणि महाकाव्य के बारे में विदेश के एवं भारत के मनीषी विद्वद् लोगों की सम्मतियाँ—

जीवकचिन्तामणि तमिल काव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। संसार के महाकाव्यों में इलियाद (Iliad), ओडिसिया (Odesseya) नामक ग्रीक देश के काव्य के समान है।

—डॉ० जि० यु० पोप

तमिल काव्यों में जीवकचिन्तामणि अत्यन्त ख्यातिप्राप्त ग्रंथ है। इसमें महाकाव्य के योग्य माधुर्य नहीं होता तो यह कभी से तिरोहित हो जाता।

—जुलियन विनसन—(फ्रेंच देश)

उपमा और कवित्व के अन्दर तिरुत्तक्कदेवर अनुपम कवि चक्रवर्ती हैं।

—डॉ० कमिल जुवलेबिल (चेक्कोस्कोलेविया)

तिरुत्तक्कदेवर कवियों में एक महाराजा हैं। (Prince of Poets)

—एच० फ़ौलर (H. Foular)

फौलर महाशय ने चिन्तामणि को अंग्रेजी में अनुवाद कर अपने को धन्य माना।

तिरुत्तक्कदेवर का चिन्तामणि महाकाव्य आश्चर्यजनक विषयों से भरा है। यह संसार में प्रकाशमान सूर्य के समान है।

—डॉ० मु० वे० अरविन्दन M. O. L. Ph D.

इस ग्रन्थराज के बारे में कई अजैन विद्वद्गण बहुत ही महत्वपूर्ण शब्दों से तारीफ करते हैं। उनके पूरे के पूरे अभिप्रायों को लिखना चाहें तो वह एक पोथो बन जायगी। इस डर के मारे सिर्फ कुछ नाममात्र ही लिखते हैं—

महाविद्वान् डा० उ० वे स्वामिनाथ अय्यर; स० त० सर्गुणं B. A; एस० वैयापुरि पिल्लै B. A. B. L; ते० पो० मीनाक्षि सुन्दरं M. A. B. L; M. O. L; वे० वेंकट राजुलु रेड्डियार; R. राजरत्तिनं अमैयार M. A. L T; ई० त० राजेश्वरि अमैयार MA, LT; इत्यादि।

इस तरह सैकड़ों अजैन विद्वानों के नाम हैं। हम किन-किनके लिखें ! और किन-किनके मन्तव्य प्रकट करें। नाम लिखना हो कठिन सा दिख रहा है; और उन लोगों के मन्तव्य लिखना और भी कठिन है। इसलिये हमने पूरे नाम लिखना छोड़ दिया है।

इस महाकाव्य जोवकचिन्तामणि में ११ लम्ब हैं। सर्ग को लम्ब के नाम से तमिल में बोला जाता है। पहला लम्ब सबसे बड़ा है। इसमें ४०८ पद्य हैं। पहले लम्ब में शुरू से लेकर जीवन्धरकुमार के विद्याभ्यास और आर्यनन्दी महाराज की पुनर्दीक्षा तक विवरण है।

इस महत्त्वपूर्ण तमिल भाषा के जीवकचिन्तामणि ग्रन्थ को प्रकाश में लाने के प्रेरणास्रोत महान् आचार्य, चारित्रचूड़ामणि, निमित्तज्ञानी १०८ श्री विमलसागरजो महाराज, अग्रोग्र तपस्वी, आगम शास्त्र के पारंगत उपाध्याय १०८ श्री भरत सागर जी महाराज एवं स्याद्वाद सिन्धु की सम्यग् ज्ञायिका १०५ श्री स्याद्वादमतो माता जी हैं। कथा सबको विदित है। फिर भो तमिल भाषा के कविवर तिरुत्तक्कदेवर की शैली का परिज्ञान होना उत्तर भारतवासियों के लिये अत्यावश्यक है। इस काव्य का महत्त्व संसार भर में प्रसिद्ध है। इसका अंग्रेजो अनुवाद हो जाने के कारण विदेश वालों को भी इसके रहस्य का जानने का मौका मिला है। परन्तु उत्तर भारत के जैनी लोग अभी तक इसके माहात्म्य को जान नहीं पाये। यह बड़ी भारो कमो रही। तारीफ़ की बात यह है कि आचार्य विमलसागर जो महाराज की ७५वीं जन्म जयन्ती की प्रमुखता में ७५ ग्रंथों को प्रकाशन करने का जो निश्चय लिया गया है; उनमें यह भो एक है। अतः यह अत्यन्त प्रशंसनीय बात रही।

दूसरो बात यह है कि ग्रन्थ पूरा प्रकाशित नहीं हो रहा है। यह सिर्फ दो लम्ब हैं। पूरा स्वाद नहीं ले पा रहे हैं, इस तरह का भाव उठ सकता है। समझने की बात यह है कि अपने धर्मशास्त्रों में पहले पूर्वार्द्ध प्रकाशित किया जाता है, बाद में उत्तरार्द्ध। इसे भी ऐसा हो समझना चाहिये। यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है। कुल ३१४५ पद्य हैं। एकदम पूरे के पूरे प्रकाशन करने का प्रयास करें तो कम से कम दो-तीन साल लगेगा। कौन जाने ? तबतक किसकी आयु कहाँ तक रहेगो ! बिलकुल जानकारी न रहने को अपेक्षा दो लम्ब की जानकारी हो जाय तो अच्छा है न ! महाराज के आशीर्वाद के बल से धीरे-धीरे पूरी हो जायगो। फिकर करने की जरूरत नहीं है। खास कर समझने को बात यह है कि जब यह ग्रन्थ तमिल

भाषा में शुरुआत में छपने लगा, तब एक लम्ब हो छापा गया। बढ़ते-बढ़ते पूरा किया गया। एक आदमो से एक साथ एक सौ किलो वजन उठाना मुश्किल है। २५-२५ किलो के रूप में आसानी से उठा सकते हैं। यह प्रयास भी वैसा ही है। इसे अन्यथा न समझें।

इसे लिखने में मुझे काफ़ी परिश्रम करना पड़ा। मेरे परिश्रम का एक तो यह है कि सन्तों का निरन्तर आशीर्वाद। दूसरा यह है कि तमिल भाषा का दूसरा प्रकाशन भी हो जाय। पहला प्रकाशन यह है कि 'नीति-धर्म मार्गसार' (अरनेरिच्चारं) इस तमिल नीतिग्रन्थ का प्रकाशन करने में ये ही महात्मा लोग रहे हैं। अतः मैं अपने को धन्य समझता हूँ।

मैं जिनेन्द्र भगवान् के चरणों में तथा शासन देवताओं से यही प्रार्थना करता हूँ कि हमारे सन्त महात्मा गण निरोगता के साथ शतायु से अधिक काल तक जीवित रहकर स्याद्वाद वाणी का उद्धार करते रहें।

इस अभूतपूर्व ग्रन्थ के रचयिता श्री तिरुत्तक्कदेवर तमिल भाषा के अद्वितीय विद्वान् थे। यह ग्रन्थ उनकी अपार विद्वत्ता को प्रगट करता है। पाठक गण इनकी विद्वत्ता के बारे में ग्रन्थ के अन्दर विशेष रूप में देखेंगे।

अतः मैं पूज्य आचार्य महाराज, उपाध्याय भरतसागर जी महाराज एवं आर्यिका स्याद्वादमती माता जो इन सभी के चरणों में नमोस्तु करता हुआ अपनी कृतज्ञता प्रकट कर विराम लेता हूँ।

श्रोरस्तु, शुभमस्तु, तथास्तु।

—पं० मल्लिनाथ जैन शास्त्री

ग्रन्थकर्ता तिरुत्तक्कदेवर का जीवन चरित्र

तमिलभाषा के अत्युत्तम एवं अनुपम महाकाव्य जीवकचिन्तामणि के रचयिता त्यागी महात्मा आचार्यवर्य श्री तिरुत्तक्कदेवर महाराज हैं। तमिलभाषा के अन्दर इन्हें तीन नामों से पुकारा जाता है। वे हैं— तिरुत्तगु मुनि, तिरुत्तगु महामुनि एवं तिरुत्तक्कदेवर। देवर् शब्द के नाम से इस भाषा में तीन कवियों को गौरव के साथ नामांकित किया जाता है। (१) जगत्प्रसिद्ध तिरुक्कुरल महाकाव्य के रचयिता देवर, (देवर, भी इनका एक नाम है) (२) जीवकचिन्तामणि के रचयिता तिरुत्तक्क-देवर्, (३) चूलामणि ग्रन्थ के कर्ता तोलामोलिदेवर्। इन तीनों को देवर के नाम से बड़े आदर के साथ पुकारा जाता है। नाम तो देव है, परन्तु 'र्' इस भाषा में गौरव के लिये जोड़ा जाता है। जैसे आदिनाथ, हिन्दी में मर्यादा के लिए 'जी' लगाकर आदिनाथ जी बोलते हैं। वैसे ही तमिल में 'र्' लगाकर मर्यादा व आदर दिखाया जाता है। आदिनाथ = आदि-नाथर्। विशेषता से देवर शब्द महत्त्व के साथ जीवकचिन्तामणि के रचयिता के साथ ही लगाया जाता है।

पुराने जमाने में तमिलनाडु के अन्दर तीन तरह के राजा लोग राज्य करते थे। जैसे चेर, चोल और पाण्ड्य। तिरुत्तक्कदेवर चोल वंश के थे। अर्थात् राजवंश के थे। इनका समय या ग्रन्थ का समय (काल) कहें तो ई० दूसरी सदी से ७वीं तक माना जाता है। याने बीच का माना जाता है। ठीक-ठीक निर्णय नहीं हो पाता। उस जमाने में यहाँ आर्हत (जैन) धर्म प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण दशा में था। ये महान् आचार्य उस धर्म के याने जैनधर्म के अनुयायी थे। ये तमिल और संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित होने के साथ-साथ जगत्प्रसिद्ध महाकवि भी थे। ये महात्मा छोटी अवस्था में ही त्यागमार्ग पर आरूढ़ हो गये थे। याने बाल ब्रह्मचारी थे।

सुना जाता है कि ये महाकवि तिरुत्तक्कदेवर दक्षिण मथुरा जाकर वहाँ के विद्वत् संघ में शामिल होते थे! अर्थात् उन लोगों के साथ हिल-मिल कर रहते थे। उस जमाने में जैन और शैव लोगों में ज्यादा भेद-भाव नहीं रहता था। आपस में खान-पान होता था। लेन-देन (लड़की देना-लेना) होती थी। धर्म परिवर्तन अर्थात् शैव जैन बन जाते थे और जैन शैव बन जाते थे। आजकल जैसा मतद्वेष नहीं था। परन्तु बाद में यह मतद्वेष जोर पकड़ा। कहा जाता है कि दक्षिण मथुरा के अन्दर

विद्वानों का एक बड़ा भारी संघ रहता था। जो व्यक्ति याने कवि उस संघ के विद्वानों से 'सनद' सर्टिफ़िकेट (Certificate) प्राप्त कर लेता है तो तभी उसे उच्चकोटि का विद्वान् या कवि माना जाता था। और यह भी कहा जाता है कि उस संघ में जैन-अजैन सभी तरह के विद्वान् लोग रहते थे। उनमें से किसी ने इनसे कहा था कि जैन कवि लोग त्यागमार्ग (मुनिमार्ग) के ग्रन्थ की रचना करना जानते हैं न कि भोगमार्ग (गृहस्थ-मार्ग) का। उस समय महाकवि देवर ने इस चुनौती के जवाब में कहा कि जैन कविगण दोनों रचनाओं को जानते हैं। तब कहा गया कि ऐसी बात हो तो भोगमार्ग सम्बन्धी कोई ग्रन्थ रच कर दिखावें। उसे सवाल मान कर ये महात्मा अपने गुरु के पास आकर बोले कि मैं भोगमार्ग याने गृहस्थ मार्ग की ग्रन्थ रचना करना चाहता हूँ। तब गुरुजी बोले, तुम्हें यदि ऐसे ग्रन्थ रचना करने की योग्यता हो तो सामने दौड़ती हुई स्यार को आधार शिला बना कर एक ग्रन्थ का निर्माण करो। बाद में तुम्हें बड़े ग्रन्थ रचना करने को अनुमति दी जायगी। गुरुजी के आदेश को शिरोधार्य मान कर तदनुसार 'नरिविरुत्तं' (नरि माने स्यार, विरुत्तं माने चौपाई) नाम का छोटा-सा ग्रन्थ रचा गया। यह छोटा-सा त्याग मार्ग का आधारित ग्रन्थ है। वह ग्रन्थ उपलब्ध है। उक्त ग्रन्थ की महत्ता एवं कवित्व शैली को देख कर गुरुजी ने ग्रन्थ निर्माण करने की अनुमति दे दी। उसके बाद ही ग्रन्थराज जीवकचिन्तामणि की रचना की गयी थी। इस तरह ग्रन्थ रचना का कारण बताया जाता है।

दूसरा कारण यह भी बतलाया जाता है कि अनित्यता को ही प्रधान मान कर ग्रन्थ रचना करने से साधारण लोगों की अभिरुचि नहीं हो पा रही है। ग्रन्थ रचना में नवरस भी भरे हों, कथा के नायक उत्तम महापुरुष हो, समय-समय पर धार्मिक शिक्षा भी मिल जाय तो अच्छा रहेगा। इससे प्रथमानुयोग शास्त्र के अध्ययन करने वाले श्रावक लोगों की अभिरुचि ज्यादा रहेगी; आसानी से धर्ममार्ग की शिक्षा भी मिल जायगी। जैनेतर लोग भी इस तरफ ध्यान देने लगेंगे। धर्ममार्ग का प्रचार भी होता रहेगा इत्यादि। चाहे कुछ भी कारण हो, यह ग्रन्थ महाकाव्य के रूप में सर्वप्रिय एवं सर्वश्रेष्ठ माना जा रहा है।

ग्रन्थ-रचना करने के लिए गुरु महाराज की आज्ञा मिल जाने पर शिष्य की विनती यह रही कि महाराज आप मंगलाचरण के रूप में एक पद्य अपनी तरफ से रच कर देवें; जिससे यह कार्य निर्विघ्नपूर्वक सम्पन्न

हो जाय। शिष्य की बात मान कर गुरुजी ने "सेम्बोन्वरै मेर्पशुंपाने" इस अरहन्ता मंगलं नाम के पद्य की रचना कर प्रदान की। तदनन्तर शिष्य देवर ने अपनी ओर से मंगलाचरण किया। वह यह है कि— "मूवामुदलावुलगमोरु" सिद्धा मंगलं रूप पद्य की रचना की थी। शिष्य के मंगलाचरण को देखकर गुरुजी ने कहा कि मेरे पद्य की अपेक्षा, तुम्हारा पद्य बढ़िया है। मेरा अरहन्त मंगलं का है। तुम्हारा सिद्ध मंगलं का है। इसलिये ग्रन्थ के आदि में सिद्ध मंगलं रूप पद्य को ही रखने के लिये गुरुजी ने आदेश दिया। फिर भी 'देवर' ने अपने पद्य को मंगलाचरण का पहला रखकर गुरुजी के मंगलाचरण पद्य को दूसरे में रख लिया। गुरुजी के पद्य का आदर देना शिष्य का कर्तव्य है। क्योंकि 'गुरुरेवहिदेवता' इस नीति के अनुसार देवरजी का कार्य गुरुभक्ति का नमूना कहें तो अत्युक्ति नहीं है।

यह भी बताया जाता है कि देवरजी बाल ब्रह्मचारी थे। ग्रन्थ में वर्णित शृङ्गार रस को देखकर कुछ लोगों ने कहा कि—बालब्रह्मचारी व्यक्ति को शृङ्गार रस पर आपाताल तक के गूढ़ भोग रस का बिना अनुभव किये वर्णन करना सर्वथा असम्भव है। विद्वान् लोगों के सन्देह को सुनकर 'देवर' जी ने अपने निर्मल ब्रह्मचर्य को इस रूप में प्रदर्शित किया कि तपतपाये हुए गरम लोहे को हाथ से उठाकर दिखाया। इसका मतलब यह रहा कि ब्रह्मचर्य के माहात्म्य से हाथ नहीं जला। अतः लोगों के सामने परिशुद्ध ब्रह्मचर्य का दिग्दर्शन हुआ। उसके बाद सब लोग 'देवर' जी के निर्दोष ब्रह्मचर्य के बारे में तारीफ करने लगे।

तिरुत्तक्कदेवर जी का जो जोवकचिन्तामणि नामक कृतित्व है वह उनके अनमोल कवित्व की महत्ता को लोगों के सामने प्रकाशमान करते हुए अमरकीर्ति के साथ चिरंजीवी बना रहेगा। 'पुलवर् अरसु' नामक शैव विद्वान् का कहना यह है कि देवर जी से रचे गये चिन्तामणि ग्रन्थ को जो पढ़े नहीं वे अनपढ़ ही हैं। जिनने उस ग्रन्थ के मधुर स्वाद को अनुभव नहीं किया है वे तमिल भाषा की मधुरता से अनभिज्ञ ही कहना चाहिये।

तिरुत्तक्कदेवर जी ने अपने से पहले के आगम परम्परागत ज्ञानियों से बताये गये महत्त्वपूर्ण तत्त्वों के सार को एकत्रित कर लोगों के सामने समर्पण किया है। महाप्रज्ञ ग्रन्थकर्त्ता की विद्वत्ता, शैली, विवेचन शक्ति, लावण्यत्ता, वचन सौष्ठव, गाम्भीर्य, रसविश्लेषण, अलंकारपरिपूर्णता,

उपमा की गरिमा आदि सबके सब अनुपम हैं। इनके बाद के कंबरामायण के कर्त्ता वैष्णवमतानुयायी 'कंबन' वगैरह कविगण ने इनकी रचना का अनुकरण किया है। इनके समान प्रतिभाशाली कवि "न भूतो न भविष्यति" यह तथ्य चरितार्थ है। तिरुक्कुरल महाकाव्य में धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरुषार्थों का ही विवेचन है। परन्तु गुणगरिमावान देवरजी ने अपनी कृति जोवकचिन्तामणि में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का अन्तस्थलस्पर्शी एवं हृदयग्राही के रूप में विवेचन किया है। इनकी कृति तमिलभाषारूपी देवी सरस्वती के आभूषणों में अमूल्य सिरमौर चिन्तामणिरत्न बन कर जगज्ज्योति का रूप धारण करते हुए जाज्वल्यमान हो रही है। तिरुत्तक्कदेवर जी का जीवकचिन्तामणि जयवन्त हो! उस महात्मा के चरणकमलों में करोड़ों नमन हों।

●

तमिल जीवकचिन्तामणि का कथासार

पहला लम्ब

जम्बूद्वीप में राजमापुरी नाम की राजधानी थी। उसका राजा नोतिमान सत्यन्धर था। उसकी विजया नाम की अत्यन्त सुन्दरी रानी थी। राजा रानी पर इतना मोहित था कि उसे छोड़कर एक मिनिट भी रहना नहीं चाहता था। इसलिये उसने अपने राज्य को अमात्य काष्ठांगार के हाथ में सौंप दिया था। उस समय अमात्य लोगों ने बहुत कुछ समझाया। फिर भी विषयासक्त होने के कारण राजा ने किसी की बात न सुनी। देवीविजया के साथ भोग भोगते हुए राजा का काल चलता रहा। उस समय विजयामहादेवी गर्भवती हुई। उसने रात्रि के पिछले भाग में याने प्रातःकाल के समय तीन स्वप्न देखे। पहला स्वप्न यह था कि एक अशोक वृक्ष समूल टूट कर गिर पड़ा था। दूसरा यह था कि उसके नीचे एक छोटा सा अशोक वृक्ष उगा हुआ था। वह वृक्ष आठ मोती माला सहित मणिमुकुट धारण कर शोभित था।

विजया ने राजा से उसका फल पूछा। राजा ने स्वप्नशास्त्र के आधार से बताया कि तुमने स्वप्न में मणिमुकुट देखा था न, उसका फल यह है कि तुम्हें एक भाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होगा। उसमें जो आठ मालायें थीं न, वह आठ कन्याओं को वरण करेगा। इतना कहकर चुप रह गया। फिर विजया ने पूछा कि अशोक वृक्ष नष्ट होने का फल क्या है? हे देवी मुझे एक आपत्ति आनेवाली है। इस बात को सुनकर विजया मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। फिर राजा ने उसे समझा कर समाधान किया।

उसके बाद राजा ने अपनी पत्नी एवं सन्तति की रक्षा के लिये एक सुन्दर मयूर यन्त्र बनवाया। उसमें रानी को बिठाकर उस यन्त्र को चलाने का अभ्यास कराता था।

इधर दुष्ट काष्ठांगार ने राजा को मारकर खुद राजा बनना चाहा। उसने अमात्यों को बुलाकर कहा कि एक राजा का विरोधी दैव मेरे पास आकर सताता है कि राजा को मार डालो। उसे सुनकर अमात्यों ने काष्ठांगार को बहुत समझाया; परन्तु उसने न माना। उसके बाद उसने राजा को मार डालने के लिये बड़ी भारी सेना भेजी। सत्यन्धर राजा ने द्वारपाल के द्वारा अपने को मार डालने के लिये आयी हुई सेना का

समाचार सुनकर पत्नी विजया को मयूर यन्त्र में बिठाकर जल्दी से जल्दी आकाश मार्ग में भेज दिया।

तदनन्तर राजा युद्ध करने के लिये सन्नद्ध हुआ। सेना के साथ खूब लड़ा। राजा अकेला क्या करता ? नीच काष्ठांगार ने राजा के छाती पर वेलायुध को धसा दिया। अन्त में राजा पंचपरमेष्ठियों के शरण में जाकर शुभ परिणाम के साथ स्वर्ग में अमरेन्द्र हुआ। कृतघ्न काष्ठांगार ने राजा के शव को जलाने के बाद राजमहल में जाकर खुद राजा बन जाने का ढिंढोरा पिटवाया।

इधर मोरयन्त्र में जानेवाली विजया शोक सागर में डूबी हुई थी। जीत का ढिंढोरा शब्द सुनकर मूर्च्छित हो गयी। न चलाने के कारण मोरयन्त्र उसी नगरी के श्मशान में उतरा। उसी समय विजया ने एक पुत्र-रत्नको जन्म दिया। पुत्र के पुण्य माहात्म्य के कारण एक देवता धाय का रूप धारण कर विजया की सहायतार्थ आयी। उसने विजया से कहा कि पुत्र रक्षा को चिन्ता मत करो। एक सम्पन्न व्यक्ति आयेगा और पुत्र को ले जाकर राजा के समान पालेगा। अतः अपन दोनों को छिपकर रहना चाहिये। वे दोनों वैसे ही छिपकर रहने लगीं।

उस समय उसी नगरी में रहने वाला गन्धोत्कट नाम का सेठ अपने मरे हुए बच्चे की मृत्यु क्रिया करने के निमित्त श्मशान आया। किसी मुनिराज के कथनानुसार जीवित पुत्र की खोज करने लगा। सामने प्रकाशमान पुत्ररत्न को देखा। बड़े प्रेम के साथ उसे उठाने गया। उसके ऊपर जाज्वलयमान अँगूठी रखी हुई थी। उसे उठाकर छिपा लिया। उस समय शिशु छींकने लगा। साथ में 'जीव' आशीर्वाद वचन सुनाई पड़ा। खुशी के साथ शिशु को घर ले जाकर अपनी पत्नी से कहने लगा कि तुमने बिना देखे जिन्दे बच्चे को मरा हुआ बता दिया था। देखो बच्चा जिन्दा है। पति का वचन सुनकर भार्या ने बड़े आनन्द के साथ बच्चे को ले लिया और पालन-पोषण करने लगी।

सेठ गन्धोत्कट पुत्र प्राप्ति के सन्तोष में बड़ा भारी उत्सव मनाने लगा। मूर्ख काष्ठांगार समझने लगा कि सेठ अपने राज्य प्राप्ति के लिये ही महोत्सव मना रहा है। इसे भरपूर धन देकर आदर करना चाहिये। इस विचार से काष्ठांगार ने खूब धन भेजा। पुत्र के पुण्य से उसका निजी धन उसके जन्मोत्सव में आ गया।

इधर विजया अपने बच्चे को ले जाने के बाद ब रोयी। देवता उसे समझाकर रातोंरात पचासों योजन दूर जो दण्डकारण्य था वहाँ ले जा

रही थी, रास्ते में बहुत कुछ समझाती जा रही थी कि यहाँ धरणीतिलक नाम का नगर है। इसमें आपके रिश्तेदार रहते हैं। वहाँ जाना उचित नहीं है। क्योंकि आपने पति को लड़ाई में बलि दे रखी है और पुत्र को अनजान आदमी के हाथ में देकर आ रही हैं। ऐसी दयनीय दशा में वहाँ जाना अनुचित है। इस तरह कई शिक्षाप्रद बातें कहते-कहते दण्डकारण्य ले गई। वहाँ विजया को तपस्विनियों के आश्रम में ठहराकर अपने स्थान चली गई।

सेठ गन्धोत्कट और उसकी पत्नी सुनन्दा दोनों बच्चे का नाम आशीर्वादात्मक वही 'जीवक' रखकर पालने लगे। बच्चा दिन-दूना रात चौगुणा बढ़ता रहा। उसको विद्याभ्यास कराने के विचार में थे। एक दिन सेठ भोजन करने बैठे थे। उस समय ब्रह्मचारी सरीखा व्यक्ति भोजन की लालसा से बरामदे में खड़ा था। उसे देखकर सेठ जी ने आदर के साथ बुलाकर अपने पास खाने के लिये बिठा लिया। उस वक्त वहाँ आये हुए जीवन्धर कुमार को देखने मात्र से उसका भस्मक रोग दूर हो गया। उस व्यक्ति के दिल में यह भावना हुई कि परोपकारी इस पुण्य-शाली को क्या उपकार करूँ? फिर उसो महाशय ने विद्यागुरु बनकर जीवक को सारी विद्यायें सिखाकर अनुपम विद्वान् बना दिया। उक्त गुरु महाराज का नाम था आर्यनन्दी।

तदनन्तर विद्यागुरु आर्यनन्दी महाराज ने योग्य युवक जीवन्धर कुमार को निर्जन प्रदेश में ले जाकर एक कथा सुनायी। वह यह है कि इसके पहले इस नगर का राजा नीतिमान सत्यन्धर था। उनकी शीलवती एवं सुरसुन्दरी सदृश विजया नाम को रानी थी। उसके रूपलावण्य में मोहित राजा काष्ठांगार नामक धूर्त अमात्य के हाथ में राज्य देकर पत्नी के साथ भोग-विलास में रमता रहा। रानी गर्भवतो हुई। रात के चौथे याम में तीन स्वप्न देखे। राजा ने उसके फल से अपना मरण जान लिया। कब काष्ठांगार ने राजा को मारने सेना भेजी थी तब मयूर यन्त्र के द्वारा विजया को भेज दिया। दुष्ट काष्ठांगार राजा को रण में मार डाला। विजया का मोरयन्त्र दुर्भाग्य से श्मशान में जा उतरा। विजया ने वहाँ एक पुत्ररत्न को जन्म दिया। एक देवता ने उसकी सहायता की। उस बच्चे को एक सेठ ने ले जाकर पालन-पोषण किया। उत्तिरट्टादि नक्षत्र में जन्म लिया हुआ वह पुत्र चन्द्र के समान सारे संसार में दैदीप्यमान हो रहा है। जीवक पूछ बैठा कि महाराज वह पुत्र कौन है? तुम ही हो।

इसे सुनकर वह मूर्च्छित हो गया। गुरुजी की शुश्रूषा एवं सान्त्वना के बाद वह उठ बैठा। फौरन कुमार को गुस्सा आया। काष्ठांगार के साथ लड़ने तैयार हो गया। गुरुजी ने उससे एक चीज माँगी। वह यह था कि तुम एक साल तक काष्ठांगार के साथ लड़ने मत जाना। जीवक कुमार ने अपने गुरु महाराज की आज्ञा का पालन किया।

गुरुजी महाराज दूसरी कथा सुनाने लगे। वह यह है कि विद्याधर लोक में वाराणसी नाम की नगरी है। उसका राजा लोकपाल था। वह मेघपटल से संसार की अनित्यता को देखकर अपने पुत्र के हाथ में राज्य भार देते हुए त्यागमार्ग की आराधना करने लगा। अर्थात् वह मुनि बन गया। दुर्भाग्य से उस मुनि को भस्मक नाम का रोग हो गया। वह रोग मुनि को बहुत सताता था। वह जितना भी खावें सारे के सारे को एकदम भस्म कर देता था। आखिर मुनि को अपने तप से भ्रष्ट होकर विचरण करना पड़ा। कुमार कहने लगा कि महाराज वह कौन था? महाराज कहने लगे कि और कोई नहीं है, मैं ही हूँ। फिर वे कुमार से कहने लगे कि अब मैं पुनर्दीक्षा लेना चाहता हूँ। कुमार ने मना नहीं किया। सुनन्दा देवीजी से मना करने पर भी उसे समझाकर पुनर्दीक्षा लेने के वास्ते भगवान महावीर के समोशरण की ओर चल दिये।

जीवकचिन्तामणि

द्वितीय लम्ब

चिन्तामणि देवलोक की वस्तुओं में एक है। उसका महत्त्व यह है कि जो व्यक्ति उसके पास जाकर किसी वस्तु को स्मरण करता है अथवा यों समझिये कि बिना याचना किये उसको उसको प्राप्ति हो जाती है। वह देवलोक की हालत है। मगर मनुष्य लोक में विद्वानों के आवश्यक विद्यारूपी धन को बिना याचना किये जब जरूरत है तब प्राप्त करने योग्य पाँच महाकाव्य हैं (तामिल)। वे हैं—वलैयापति से कुंडलकेशी, चिन्तामणि, सिलप्पधिकारं और मणिमेखलै। इनमें आखिर के तीनों काव्य महाविद्वान् डा० उ० वे स्वामिनाथ अय्यर के प्रयत्न से प्रकाशित हुए हैं। ये तीनों जैन काव्य हैं। इनमें चिन्तामणि सर्वश्रेष्ठ है। इसे सारे

विद्वान् लोग उत्कृष्ट मानकर तारीफ करते हैं। बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

इस ग्रन्थ को कई व्याख्यायें हैं। उनमें पुरातन व्याख्या नच्चिनार्कि-नियर की है। वह सर्वोत्तम है। उसी के आधार से सब लोग इस महनीय ग्रन्थ का अर्थ समझते थे, समझते हैं और समझेंगे। यह व्याख्या ग्रन्थ-कर्त्ता के भाव को ठीक तरह से अभिव्यक्त करती है।

इस ग्रन्थ के पूरे पद्य ३१४५ हैं। इनमें पहला लम्ब ४०८ पद्य का है। जिनका नाम है सरस्वती लम्ब और गोविन्दै लम्ब। दूसरा भाग गन्धर्वदत्तै लम्ब है। इसमें जीवन्धरकुमार गान्धर्वदत्ता को वीणा की स्पर्द्धा में जीत कर विवाह करते हैं। इस लम्ब के कुल पद्य ३५८ हैं।

●

श्रीजिनाय नमः

जीवक चिन्तामणि

सिद्ध वन्दना

[१]

मूवा मुदला उलगं ओर, मून्द्रं, एत्तत्
तावादइन्बं तलैयायदु तन्निनेयदि
ओवादु निन्ट्र गुणत्तु ओण्णिधिच्चेलवनेन्ब
देवाधिदेवनवन्सेवडि सेर्दु मन्द्रे

भावार्थ—साधु लोग कहते हैं कि सिद्ध भगवान् आदि अनन्त से रहित, तीनों लोकों के भव्यजनों से वन्दनीय, अमूल्य अनन्त सुखों से संपन्न (जैसे रत्न की कान्ति और पुष्पों की सुगन्धि है) अविनाशी आठ गुणों से भरपूर हैं ऐसे सिद्ध भगवान् के चरणों में हम भी भक्तिभाव के साथ वन्दना करते हैं।

[२]

अरहन्त वन्दना

सेम्बोन्बरैमेल पसुम्पोन्नेलुत्तिट्ट देपोल
अम्पोन्चिदिविन्मरुवाथिरत्तेट्ट अणिन्दु
बेम्बु सुडरिन्सुउरुं तिरुमूर्त्ति विण्णोर्
अम्पोन्मुडिमेलडित्तामरै सेन्निवैप्पाम्

भावार्थ—रत्न खचित सोने के पहाड़ के ऊपर पीले सोने से लिखे हुए अक्षरों के समान सुन्दर एक हजार आठ दिव्य लक्षणों से विराजमान जिनेन्द्र भगवान् प्रातःकालीन प्रकाशमान सूर्य के समान शोभायमान हो रहे हैं। उनके चरण कमलों में देवगण अपने सोने और मणियों से निर्मित मुकुटों के साथ नतमस्तक होकर प्रणाम कर रहे हैं। ऐसे परमपूज्य जिनेन्द्र भगवान् के चरणों में हम भी अपने मस्तक झुका कर नमस्कार करेंगे।

[३]

आचार्य, उपाध्याय और साधुवन्दना

पण्माणगुणङ्गडकु इडनाय्पगै नण्पोडु इल्लान्
नोन्माण्बु अमैन्द पुनै नललरं तुन्नि निन्ट्
सोन्माण्बमैन्द कुलुविन्शरण्सेण्ट् तोक्क
नन्माण्बु पेट्रेन इदु नाट्टुदल माण्बुपेट्रेन

भावार्थ—अनन्त गुणों के खान एवं रागद्वेष रहित जो अरहन्त भगवान् हैं उनसे प्रतिपादित प्राचीन तथा सर्वोत्तम धर्म मार्ग पर चलनेवाले आचार्य, उपाध्याय और साधुपरमेष्ठियों के चरणारविन्द के नमन के साथ संपर्क होने के कारण मैं (आचार्य) इस कथा को दुनियाँ के अन्दर अमर बनाने में भाग्यशाली हो सकूँगा।

आचार्य महाराज ने इन तीनों पद्यों के द्वारा सिद्ध, अरहन्त, आचार्य उपाध्याय और साधुओं का नमस्कार किया है। अर्थात् ये तीनों पद्य पंच परमेष्ठियों की वन्दनास्वरूप मंगलाचरण हैं।

[४]

कर्पालुमिन्द मणियु कलुवादु विट्टाल्
नर्पाललियुं नगैवेण्मतिपोल् निरैन्द
सोर्पालुमिन्द मरुवुं मतियालकल्विप
पोपाविलैत्तु वकोल्लपाल पुलमैमिक्कार्

भावार्थ—जैसे पत्थर से निकला हुआ रत्न साफ नहीं किया गया तो उसमें प्रकाश नहीं आता। वैसे ही जाज्वल्यमान चन्द्रमा की कला के समान विद्यामय वचनों में जो कुछ भी कमियाँ रहेंगी, उन्हें नहीं निकाला जाय तो वचनों में महत्त्व नहीं रहेगा। अतः ज्ञान निकेतन स्वरूप विद्वान् लोग मेरे शास्त्र के अन्दर रहनेवाले दोषों को अपनी बुद्धि से संशोधन कर अतीव सुन्दर बना लें। मैं तो उसका पात्र नहीं हूँ।

विशेषार्थ—आचार्य इस पद्य के द्वारा अपनी नम्रता दिखाते हैं विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि मेरे इस ग्रन्थ में जो कुछ भी दोष दिखेगा उसे निकाल कर गुणों को ग्रहण करने की कृपा करें। मैं तो बड़ा भारी विद्वान् नहीं हूँ। छोटा-सा व्यक्ति हूँ। अतः माफ किया जाय।

[५]

मुन्नीर्पिरन्द पवलत्तोडु संगमुत्तुं
अन्नीर उवक्कुं एनेन्यारवै नीक्कुकिर्प्पार
इन्नीर एन्सोल् पलुदायिनुं कोलब अन्ट्रे
पोयन्नीर अललप्पोरुलाल विण्पुगुदु मेन्बार

भावार्थ—पन्ना, शंख, मोती ये तीनों समुद्र में पैदा होते हैं। परन्तु उस समुद्र का पानी खारा रहता है। अतः पानी खारा समझ कर मोती आदि अमूल्य चीजों को कोई भी छोड़ता है क्या ? नहीं ठीक इसी प्रकार आगम परंपरा से मोक्ष की प्राप्ति समझनेवाले मानवों को चाहिये कि मेरे वचन खारे पानी के समान समझ कर न छोड़ें बल्कि उसमें रहनेवाले तत्त्वों को ग्रहण करने का प्रयत्न करें।

विशेषार्थ—समुद्र का पानी खारा समझ कर उससे निकलनेवाले मोती, पन्ना आदि बहुमूल्य चीजों को कोई भी छोड़ता नहीं है। तदनुसार भले ही मेरा वचन मन को रुचनेवाला न हो, फिर भी उस वचन पर ध्यान न देकर उसमें रहनेवाले परमागम तात्त्विक विषयों पर ध्यान दें और उसे ग्रहण करने का प्रयत्न करें। यही शोभनीय है। यह पद्य भी नम्रता का द्योतक है।

[६]

मीन्येरुयर्त्त कोडिवेन्दनै वेन्ट्र पोर्पिन
तानेरु अनैयानुलन्, जीवकसामियेन्बान्
वानेरनोष्ड पुगलान, चरितं तन्नै
तेनेरु निन्ट्रु तेरुण्डारवै सेप्पलुट्रेन्

भावार्थ—मीन चिह्न ध्वज वाला जो मन्मथ है उसको भी जो व्यक्ति पुरुष सिंह होकर जीत लिया है उसका नाम है जीवकस्वामी। जगत् में विख्यात कीर्तिमान जो जीवक स्वामी हैं, उनकी शिक्षाप्रद जीवनी को मधु मीठे के समान स्वादुमय काव्य के रूप में विद्वानों के समक्ष समर्पित कर रहा हूँ।

विशेषार्थ—जीवकस्वामी तद्भवे मोक्षगामी हैं तथा भगवान महावीर के जमाने के कामदेव हैं। उनकी कीर्त्ति दिगन्त व्यापी है। उनका चरित्र सुनने में एकदम प्रिय लगेगा। अतः मैं (काव्यकर्ता) जीवकस्वामी के

पवित्र चरित्र को विद्वानों के समक्ष काव्य के रूप में समर्पण कर रहा हूँ। यह सुनने में सभी को मधुर लगेगा। इसमें कोई शक नहीं है।

[७]

कोडाद सेंकोल कुलिर्वेण्कुडै क्कोदै वेलवेल्
ओडाद तानै उरु, मुक्कुरल, ओडै यानै
वाडाद वेंट्रि मिगु सच्चन्दन, एन्ब मन्नन्
वोडाद कर्पिन अवन्देवि विजयै येन्वाल्

भावार्थ—जिसकी नीति टेढ़ी न हो, जिसका चिह्न सफेद छत्र हो जिसके गले में फूल की माला लटकती हो, जिसकी सेना हार को कभी देखी न हो, जिसके गर्जना करने वाले मत्त हाथी हों, जिसको जीत के ऊपर जीत हो ऐसे संपन्नशाली राजाधिराज का नाम सत्यंधर है उनकी सदाचारिणी पट्टरानी का नाम है विजया महादेवी।

[८]

सेन्दोत्तु अलर्न्द सेलुन्तामरै अन्नवालकण्
पून्दोत्तु अलर्न्द पसुंपोन्कोडि अन्नपोर्पिन्
एन्दोत्तलर्न्द मुलैयिनमिर्दु अन्नसायल्
वेन्दक्कुं अमुदाय, विलैयाडुदर्कु एदुवामे

भावार्थ—विजया महादेवी की अनुपम एवं विकसित कमल के समान प्रकाशमान आँखें, अत्यन्त सुन्दर एवं खिले हुए फूल के गुच्छे के समान तथा सोने की लतावत, सुन्दर, लम्बे-चौड़े एवं नयनाभिराम स्तन ये अमृतमय मृदुल राजाधिराज सत्यन्धर महाराज के लिये प्रेम विलास के कारण बन कर रहे। अर्थात् विजया महादेवी का अति सुन्दर प्रत्येक अंग-उपांग सत्यन्धर महाराजा के लिये प्रेमोन्माद के कारण रहे।

[९]

कल्लार मणिप्पूणवन, कामं कनैन्दु कन्ट्रि च्
सोल्लारु केलान, ननिसूलच्चियिल नोट्टवारुं
पुल्लार पुगलप्पोरि मंजैयिट्रे विपोगिच्
सेल्लारु इलुक्किच, सुडुकाडवल सेन्र्दवारुं

भावार्थ—माणिक्य रत्नमय आभूषणों को पहिना हुआ श्री सत्यंधर महाराज ने तीव्र कामवेदना के कारण मन्त्रियों की बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। उस समय उसके शत्रु ने षड्यन्त्र रचाकर राजा को हरा कर मार दिया। राजा ने अपनी पत्नी विजया महादेवी को शत्रुओं से बचाने के लिये मोर के यंत्र में अन्यत्र भेज दिया। मगर रानी शत्रुओं की विजय भेरी शब्द सुनकर बेहोश हो जाने से, जाने के रास्ते से भटक कर श्मशान भूमि पर जा पहुँची।

[१०]

नालुट्र, नम्बि पिरन्दान, दिसै पत्तुं नन्दत्
तोलुट्रोर, देयवं तुणैयाय, तुयर्, तीर्त्तवारुं
कोलुट्र कोन्पोल, अवन्कोण्डु वलर्त्तवारुं
वालुट्र कन्नाल्, मगन्वालगेन नोट्रवारुं

भावार्थ—विजयारानी के नवमास परिपूर्ण हो गया था। जिस कारण से दशों दिशा के सभी जीवराशि अभ्युत्थान हो; उसके साथ-साथ उक्त श्मशान भूमि में जीवन्धर का जन्म हुआ। उस समय टेढ़ी कमर वाली एक देवता धाय के रूप में आयी। अपना हाथ अपनी सहायता करने के समान उसने विजयादेवी को आश्वासन देकर दुःख निवारण किया। सत्यंधर राजा मार दिया गया। जैसा राजा से पाला-पोसा जाता है वैसा ही जीवन्धर शिशु का पालन-पोसन गन्धोत्कट श्रेष्ठी के द्वारा हुआ। तलवार के समान लम्बी आँखें वाली विजया "पुत्र जीते रहें" इस उद्देश्य से तप करने लगी।

[११]

नेजं पुनैया क्कलैमाक्कडल् नीन्दि आंगे
वंजं मरवर, निरैवललल, विडुत्तवारुं
विजैक्कुइरैवन् मंगल, वीणैयिल्, तोट्रवारुं
नंजुट्र कामं ननि नागरिन् तुयत्तवारुं

भावार्थ—जीवन्धरकुमार ने अपने मन को जहाज बनाकर शास्त्र समुद्र का पार किया। उसी समय धूर्त व्याध लोग गायों को चुरा ले गये। कुमार उन्हें जीत कर गायों को छुड़ा लाया तथा विद्याधरों का अधिनायक बना। कलुषवेग राजा की पुत्री गान्धर्वदत्ता को वीणावाद्य में

जीत लिया। दोनों प्रेम से मिलजुल कर नागदेवता के समान भोग भोगने लगे।

[१२]

मुन्नीर्पंडु संगु अलर मुरसु आर्प मूदूर्च
सेन्नी र्क्कडियिन् विलवाट्टिनुल तेंगोल सुण्णम्
मैन्नी मेंडुंगण इरु मंगैयर् तम्मुल माराय्
इन्नीर्पंडियें इर्वे तोट्टनं एन्ट्र वारुम्

भावार्थ—समुद्र की शंख ध्वनि एवं पटहवाद्य से परिपूर्ण राजमा-नगरी में नये पानी की जल-क्रोड़ा पर सुन्दर एवं लंबी आखेंवाली दो युवतियों ने (गुणमाला–सुरमंजरी) जलक्रोड़ा के अन्दर चूर्ण की स्पर्द्धा में प्रतिज्ञा की थी कि जो इस होड़ में हारेगी वह इस नदी के पानी में नहीं नहा सकेगी।

[१३]

सुण्णं उडैन्दु सुरमंजरि सोन्दु तोलि
वण्णं नेडुंगण गुणमालैयै वैदुमारिप्
पुण्मेल् पुडैयिल पुगैन्दाणुरु वियादुं नोक्काल्
कण्णोक्कु उडैन्दु कडिमांड अडैन्द वारुं

भावार्थ—सुरमंजरी, चूर्ण की स्पर्द्धा में हार गयी। अतः वह शोका-कुल हुई। लंबी एवं सुन्दर आँखोंवाली सखी गुणमाला से विचलित होकर सोचने लगी कि जीवन्धर कुमार गुणमाला के ऊपर मोहित हो गया है। उसे वर्षा काल के कर्ता कहकर कोसने लगी। जैसे घाव पर सूजन होने से दर्द होता है वैसे ही दुखित हुई। फिर उस युवती ने प्रतिज्ञा की कि चित्रों में भी पुरुषों को न देखूँगी। इस विचार के साथ कन्याओं के निवास स्थान पर पहुँच गई।

[१४]

पोन्तुंजु मार्बन पुनलाट्टिडैप्पुन्कण्णेय्दि
निन्ट्रिंजु गिन्ट्र अमलिक्कु अमिर्दुईन्दवारुं
अन्ट्रैप्पगले गुणमालैयै अच्चुरुत्त
वेन्ट्रिक्कलिट्टै विरितारवन्वेन्ट्रवारुं

भावार्थ—लक्ष्मी के निवासभूत कीर्तिमाला से अलंकृत जोवन्धर कुमार को यज्ञक्रिया के अन्दर मरने की अवस्था को प्राप्त कुत्ते को देखकर बहुत दुख हुआ। फिर उस कुत्ते को जीवन प्रदान करने में अमृतमय "पंच नमस्कार मंत्र" का उपदेश दिया। उसी दिन गुणमाला को डराने वाले हाथी को वश कर उस युवती को बचाया।

[१५]

तेनूरु तोञ्जोल् गुणमालैयैच्चेन्द वारुं
कोनूरु सेय्वान कणुतिच्चिरै कोण्डवारुं
वानारु इलिन्दुमलैमिन्नेन वन्दुओर्देवन्
ऊनारू ओलिवेल उरवोन्कोण्डु एलुन्द वारुं

भावार्थ—तदनन्तर मधुमय मीठी वचनवाली गुणमाला को वरण किया। काष्ठांगार ने जोवन्धर कुमार को मार डालने के विचार से कैद किया। उस समय मेघ में चमकने वाली विद्युत के समान एक देव (सुन्दजून) आकर जाज्वल्यमान कान्तिवाले जोवन्धर कुमार को उठा ले गया।

[१६]

तेंगाद मल्लर् तिरल्तोलिनै सिक्कयात्त
पूंगच्चु नोक्किकयोरिमाणकलं नल्लसेत्ति
नींगात काद लुडैयाय् निनैक्कएन्टू पिन्नुं
पांगायविंजै पणितांगु विडुत्तवारुं

भावार्थ—वीर भट जीवंधर कुमार को बाँधकर ले जाते थे। उस समय उनके सुन्दर एवं बड़ी-बड़ी भुजायें बँधे हुए थे। अकस्मात् "सुदंजन" नाम का देव आया। उसने कुमार के बंधन को हटाकर अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषणों से अलंकृत किया। फिर कुमार से प्रार्थना करने लगा कि सदा सर्वदा प्रेममय महामानव "आप के जब कभी जरूरत पड़ेगी तो मेरे को याद करना, मैं आपकी सेवा में हाजिर हो जाऊँगा।" इस तरह विनती करते हुए कुमार को कुछ विद्यायें प्रदान कर चला गया।

[१७]

पैन्नागप्पल्लिल मणिवण्णनिन् पायल् कोण्डु
कैन्नागं तुंजुं कमल् कान्दलं चारल् पोगि

मैन्नागवेलि मलि पल्लवदेयं नण्णिक्
कोय्न्नाग च्चोलैक्कोडि अन्नग पुक्किवारुं

भावार्थ—उसके बाद जीवन्धर कुमार ने काले-काले साँप के ऊपर सोने वाले वासुदेव के समान सुगन्धमय कान्दल नामक एक तरह के फूलों की शय्या बनाकर जिस पर हाथीगण सो रहे थे। ऐसो पहाड़ियों की तलहटियों को पार किया। तदनन्तर मेघों से आच्छादित पर्वतों को दिशान्त बनाने वाले पल्लव देश पर जा पहुँचा। वहाँ पर फूलों से भरे "पुन्नै" नामक एक तरह के पेड़ों तथा लताओं से समृद्ध चन्द्राभ नाम का जो प्रधान शहर था, वहाँ पहुँच गया।

[१८]

अत्तं अनैय कलिट्ट्, अन्नगर मन्नन् मंगै
मुत्तं उरिञ्जु मुकिल्मेन्मुलै मिन्ननालैय्
पैत्तंकोर नागं पनिमामति एन्ट्र् तोण्डच्
सित्तं कुलैयक् एनत्तोर्तवल् सेन्दैवारुं

भावार्थ—उस नगर का राजा गिरि के समान हाथियों का अधिपति था। उसकी एक सुन्दर एवं सुडौल पुत्री थी। उसकी छाती मोतियों को माला से सुशोभित थी। वह विद्युल्लतावत् जगमगाती थो। ऐसी सुन्दर कन्या को एक दुष्ट सर्प ने काट खाया। उसका भाई लोकपाल उस घटना से चिन्तित था। कुमार ने उसको आश्वासन देकर उसकी बहन को विष मुक्त किया तथा उस कान्तिमय कन्या के साथ विवाह भो कर लिया।

[१९]

पोर्पूण सुमन्द पुणर्मेन्मुलै क्कोडु पोल
नर्पूकललान्इरू तिंगल् नयन्दवारुं
कर्पाडलित्त कनमामणि त्तूण सेय्, तोलान्
बेर्पूड, अरुत्तु विरैविन्नेरिक्कोण्डवारुं

भावार्थ—बहुमूल्य आभूषणों से अलंकृत कुमार ने जिस कन्या के स्तन पर सोने की मालायें सुशोभित थीं, उसके साथ मदनलीला का भोग भोगते हुए दो महीने यापन किये। पत्थर से बने खम्भ के समान

मोटो-मोटी भुजाओं से अलंकृत कुमार वहाँ से निकल कर पहाड़ों के जरिये आगे-आगे चलने लगे।

[२०]

तल्लाद सुम्मैमिगु तक्कनन्नाडु नण्णि
विल्ला विलुच्चोर वणिकन् मकल् वेल्कण, नोक्कं
उल्लावि वाट्ट उयिर ओन्ट्रु, ओत्तुरैत्तवारुं
कल्लाविनारुं कमल् कोदैयिन, पोयवारुं

भावार्थ—तदनन्तर हमेशा कोलाहल शब्द से परिपूर्ण तक्क नाम के देश का प्रधान शहर क्षेमगापुरी थी। वहाँ विख्यात व्यापारी सुभद्र था। उसकी पुत्री क्षेमश्री थी। उसकी आँखें वेलायुध के समान लम्बी थीं। कुमार ने उसकी सुन्दरता पर मोहित होकर उससे विवाह किया। दोनों बड़े प्रेम के साथ भोग भोगते हुए आनन्द से दिन बिताने लगे। कुछ दिनों के बाद कुमार मधुमय उस कन्या को छोड़कर आगे चलने लगे।

[२१]

इन्नोर् अमिर्दन नवलकण्णिणै मारि कर्पप्
पोन्नूर कललान् पोलिमामलै काक्कुपोगि
मिन्नीर वेल्वेल् अवन् मत्तिमदेय मन्नन्
कोन्नूर कोडुवें चिलै कण्डु एदि कोंण्डुवारुं

भावार्थ—सोने के भुजाबन्ध वाले कुमार, जोर की वर्षा में ही चल दिये। उससे अमृत के समान प्रेमभरी क्षेमश्री की आँखों से आँसू निकल रहे थे। वर्षा में आने वाले कुमार को वेलायुधवाला मध्यम देश का राजा द्रढमित्र ने बड़े आदर के साथ स्वागत किया।

[२२]

तिणतेर अरसर तिरलि्संगंकल् विल्लुंवालुं
कण्डांगु उवन्दु कडिपेयदु इवण कात्तुं एन्ट्
कोण्डार कुडर्गे अलवेयुल कण्णिनालैप
पुणतांगु एरिवेल इलैयोर्कुप् पुणर्त्तवारुं

भावार्थ—दृढ़मित्र महाराज ने बड़े-बड़े रथवाले शत्रुराजारूपी हाथियों को जीतने में सिंह के समान शूरवीर अपने पुत्रों को धनुर्विद्या में

निपुण बनाने वास्ते जीवन्धर कुमार की योजना बनायो। सुन्दर एवं मुकुलित नयनवाली अपनी कन्या कनकमाला को जाज्वलयमान धनुष को धारण करने वाले कुमार के साथ विवाह कर दिया।

[२३]

मदियं केडुत्त वयमोनेन त्तंबि मालान्दु
उदितर्कुं उरियाल पणियाल उडनाय वारुं
नितियिन नेरिगिल अवन्ट्रोलर निरन्दवारुं
पतियिन अगन्ट्रु पयन्दालैप्पणिन्दवारुं

भावार्थ—जीवन्धर कुमार का छोटा भाई नन्दाढ्य (सुनन्दा का पुत्र) चन्द्रमा के वियोग से रोहिणी के समान दुखित गान्धर्वदत्ता की आज्ञा से कुमार को देखा। वे कैसे थे? दुनियाँ के अभ्युत्थानार्थ जन्म लिये हुए महापुरुष थे। धन सम्पादनार्थ निकले हुए उनके मित्र कुमार को ढूँढ़ने लगे। कुमार ने राजमानगरी से बिछुड़ी हुई अपनी जन्मदात्री माता विजया देवी को देखकर नमस्कार किया।

[२४]

कणवाल अरुक्कुं कमल्तारवन तायोडु एण्णि
विणवाल अरुक्कुं नगर्वीथि पुकुन्द वारुं
मणमेल विलक्काय वरत्तिन्पिर न्दारोर्कन्नि
फेण्णार अमिर्दिन पेरुवारियु ल्पहवारुं

भावार्थ—आँखों को चमकने वाली एवं सुगन्धमय माला को पहिने हुए जीवन्धर कुमार अपनी माता के साथ विचार विमर्श कर उस माता विजयादेवी की आज्ञानुसार आकाशचुम्बिनी महलों से शोभायमान राजमानगरी की वीथी में जा रहा था। उस समय वसुन्धरा के अन्दर दीपक के समान प्रकाशमान एवं भाग्योदय से पैदा हुई विमला नाम की कन्या को देखा। उससे विवाह कर अमृतमय भोगसागर में डूबता रहता था।

[२५]

तुंजा मणिप्पूण सुरमंजरी एन्नुं नामत्तु
अंजायल्पूत्त अगिला तुंगिलाय् पोन् अल्कुल्
एजात इन्वक्कोडि तालत्तदुं पन्ट्रि एयदु
नंजरु वेलान् पगैतां अरक्कोन्ट्रु वारुं

भावार्थ—कुमार ने सुरमंजरी नाम की सुन्दर कन्या के साथ विवाह किया। वह कैसी थी? जाज्वल्यमान माणिक्य रत्नों से अलंकृत थी। सुगन्धमय कमलों से सुशोभित थी। सोने के आभूषणों से अलंकृत थी। फूलों से शोभित लता के समान चित्ताकर्षक थी। तदनन्तर कुमार ने यंत्र में स्थित सुअर को गिराकर यश का पात्र बना तथा निर्भीक होकर शत्रु का वध किया।

[२६]

पुण् तोय्त्तु एडत्तु पोरुवेलेनच्चेन्दुनोण्ड
कण् पोन्ट्र मामत् मगल् कण्मणिप्पावैयन्न
पेण्पाल् अमिर्दिन नलं पेट्रुं पोर्पच्चेंगोल्
तण्पाल् मदितोय कुडे तण्णिलल पायवारुं

भावार्थ—जीवन्धर कुमार के मामा जो गोविन्द राजा थे उनकी पृथ्वी नाम की भार्या थी। उसकी आँखें रक्तमय वेलायुध के समान लम्बी-लम्बी थीं। उसकी आँख की पुतली के समान लक्ष्मणा नाम की जो पुत्री थी, कुमार ने उसके साथ बड़ी धूमधाम से परिणयन किया। उस कन्या के अमृत सदृश प्रेम सुख का खूब अनुभव किया। चन्द्रमा के समान सफेद छत्रछाया के नीचे अपनी नीतिमय राज्यसत्ता को चलाकर प्रजा की रक्षा कर रहे थे।

[२७]

तिरैमन्नर उय्पत्तिरु निर्पच्चेंगोल् नडपक
कुरैविन्ट्र क्कोट्रमुयरत्तेवर्त्तेपणिय
उरैकिन्ट्र कालत्तु अरंकेट्टु उरुं उट्र पांपिन्
अरिवन् अडिकोल् अरसंजित्तुरन्द्वारुं

भावार्थ—कुमार के अधीनस्थ सभी राजा लोग अपना कर बराबर देते रहते थे। राज्य में सभी तरह की संपत्तियाँ भरी हुई थीं। लक्ष्मी का निवास अच्छी तरह दीखता था। लड़ाई में सब जगह जीत ही जीत हो रही थी। शत्रु लोग अपने-अपने रथ में आकर जीवन्धर स्वामी को नमन करते थे। उनका राज्य सभी तरह की समृद्धि के साथ चलता था। जीवन्धर मेघ गर्जना से डरे हुए साँप के समान सर्वसम्पन्न साम्राज्य से

सब डरने लगे। तदनन्तर वे जिनेन्द्र भगवान के चरणों में जाकर धर्मोपदेश सुनते हुए सर्वसंगपरित्याग रूप त्याग धर्म की आराधना करने लगे।

[२८]

कोणैक्कलिन्ट्रु क्कोडित्तेर इवुलिक्कडल् सूल्
वाण् मोयतत्त तानै अवन तम्बियुं तोलन्मारुं
पूण् मोय्त्त पोम्मन मुलैयारुं पुले तुरप्प
वीणैकिलबन् विरुन्दार्गतिच्चेन्ट्रु वारुं

भावार्थ—मदोन्मत्त गज समूह, ध्वजा से शोभित रथ पंक्ति, पारावार के समान अनगिनत घोड़े, हाथ में हथियार ली हुई पैदल सेनायें इस तरह के वैभवों से सुशोभित राजयुक्त अपना छोटा भाई, चारों मित्र मण्डल, छाती पर मनमोहक अलंकारों से अलंकृत आठों पत्नियां ये सब के सब संसार सागर की वासना से निर्मुक्त होकर तप धारण करने लगे। वीणा वाद्य में निपुण जीवक स्वामी कर्मों से निर्मुक्त होकर मोक्ष धाम सिधार गये।

[२९]

तेन्वायुमिलन्द वमिर्दु उण्डव्नपोन्ट्रु सेलवन्
वान्वाय वणक्कुं नलत्तार्मुलैप्पोगं वेण्डान
एनोरुं एत्त अवनेयदिय इन्बवेल्लं
ईनोक्कुरैप्पां पदिकत्तुल इयन्ट्रवारे

भावार्थ—अविनाशी समृद्धि से सम्पन्न जीवक स्वामी मधुमय सांसारिक सुख को त्याग कर अमृत एवं आनन्द स्वरूप निर्वाण सुख पर आरूढ़ हुए। देव स्त्रियों को भी लज्जित करने योग्य सुन्दर मानव रमणियों के भोग सुख की तिलांजलि दे दी। सारे संसार के लोगों से वन्दनीय मोक्ष लक्ष्मी के सुख से संपन्न हुए। इस तरह पदिक नामक उपोद्घात के द्वारा बताये गये विषयों को आगे विस्तार से (लोगों को) कहा जाएगा।

पदिक उपोद्घात संपूर्ण हुआ।

●

वाग्देवी (नामगल) लम्ब

[३०]

नाविट्रुन्द पुलमामगलोडु नन्पोन
पूवीट्रिरुन्द तिरुमामगलपुल्लनालुं
पावीट्रिरुन्द कलैपाररच्चेन्ट्र केलिवक्
कोवीट्रिरुन्द कुडिनाट्टुणि कूर लुट्रेन्

भावार्थ—विद्वानों की कविता एवं कला से समृद्ध ज्ञानवान एक राजा था। उसका ज्ञान वाक्पटुता से सुशोभित था। सोने के कमल पर विराजमान लक्ष्मी से अलंकृत प्रजायें परिपूर्ण थीं। ऐसे वैभवशाली देश की महिमा का वर्णन करने जा रहा हूँ।

[३१]

कायमोण्ड तेग्गिन्पलंवोल वकमुगिन्नेट्रि
प्पूमाण्ड तोन्नतेन्तोडै कोरि वरुक्कै पोलन्दु
तेमांकनि सिदरि वालैप्पलंगल सिन्दुं
एमांगतमेन्ट्र इसैयाल् तिसै पोयटुण्डे

भावार्थ—नारियल के पेड़ से नारियल पक कर सुपारी के पेड़ पर गिरे। जिससे शहद के समान स्वादुमय सुपारी के गुच्छे टूटे। वे धड़ाधड़ कटहल के फल पर गिर पड़े। कटहल आम के पेड़ पर गिरने से पटापट आम गिरने लगे। इस तरह सारे फलों से परिपूर्ण एवं समृद्ध हेमांगद नाम का देश था। उस देश की शुभकीर्ति सारी दिशाओं में फैली हुई थी। इस तरह के फलों से परिपूर्ण पेड़ों की शोभा दक्षिण में देखी जा सकती है।

शायद आचार्य ने दक्षिण की महत्त्वपूर्ण शोभा को ध्यान में रखकर वर्णन किया हो। आचार्य भी दक्षिण के थे। उनका निवास स्थान भी दक्षिण था। उनकी वर्णन शक्ति परिपूर्ण थी। फिर क्या कहना ? अपनी विद्वत्ता से वर्णन करना शुरु किया।

[३२]

इलंग बालियि नान्कलिट्रु ईट्टंबोल्
कलंगु तेण्तिरै मेयन्दु कणमलै

पोलं कोल् कोन्द्रैयि नान्सडै पोल् मिन्नि
विलंगल सेन्र्दुविण एरिविटअु आर्तव

भावार्थ—महान् शक्तिशाली एवं साम्राज्याधिकार वैभवों के अधिनायक आदिचक्रवर्ती भरतेश्वर के हाथियों के झुण्ड के समान मेघ आच्छादित थे। वे लहरों से शब्दायमान सागरों का पानी पीने लगे। पहाड़ों के शिखरों को घेरने लगे। सोने के रंग जैसा "कोन्ट्रै" नामक लाल फूलों से अलंकृत शिव की जटा के समान विद्युत के द्वारा चमका कर गम्भीर गर्जना करने लगे। यह मेघ का वर्णन है।

[३३]

तेन निरैत्तुउयर्मोय्यवरै च्चेन्नियिन
मेलिनरैत्तु विशुंबुर वेलिलवेण
कोन्निरैत्तन पोलकौलुन्तारैकल
वान्निरैत्तु मणन्दु सोरिन्दवे

भावार्थ—शहद के पत्ते मिले हुए के समान "मेघ" एक के ऊपर एक चढ़कर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ पर रमणीयक मालूम होते थे। उन मेघों से बरसात की धारायें गिरने लगीं। वे ऐसा शोभायमान होने लगीं मानों चाँदी से बनायी गयी एकदम सफेद धागा जैसी दिखाई पड़ती थीं।

[३४]

कुलविवेण्मति क्कोडूल क्कोण्डतेन
मुलवि न्निन्ट्रुं अदिर्मोय वरैच्चैन्नियिन्-
इलियुं वेल्लरु वित्तिरल यावैयुं
कुलुविन्माउत्तुगिल कोडिपोन्ट्रवे

भावार्थ—ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के शिखर से गिरने वाली सफेद मेघ की धारायें शहद से भरी नदी के प्रवाह के समान मीठी थीं। वे धारायें ऐसी शोभायमान दिखाई देती थीं मानों पूर्व पक्ष-चन्द्रमा से फटकर ध्वनि के साथ निकली हुई हों या बड़े-बड़े महलों की खिड़कियों में लटकने वाली सफेद लतायें जैसी हों।

[३५]

इलंगुनीण्मुडि इन्दिर न्मार्पिन मेल
विलंगि वीलन्द मुत्तारं पोन्ट्रवै
नलंकोल पोन्नोडु नन्मणि सिन्दलाल
कलन्पेय पैले कवित्तवुं पोन्ट्रवे

भावार्थ—वे पानी की धारायें बराबर गिरते समय सुन्दर आभूषणों के समान प्रकाशमान होती थीं। उनकी शोभा ऐसी होती थी जैसे इन्द्र के छाती पर शोभायमान मोतियों की मालायें हों अथवा सोने और रत्नों को गिराने से इन्द्र को आभूषण पेटी उलट कर उससे गिरने वाले आभूषण हों।

[३६]

वल्लल् कैत्तल मान्दरि न्माल्वरैक्
कोललै कोण्ड कोलुनिधि क्कुफैयै
उल्लं इल्लवर्क्कु ऊर्तोरुं उयत्तुराय
वेललं नाडुमडुत्तु विरैन्ददे

भावार्थ—पानी का वेग जोर से जा रहा था। वह ऐसा दीख पड़ता था कि मन के साथ दोनों हाथों दान देने वाले उदार दानियों के समान, ऊँचे पहाड़ों से समेट कर लायी गई संपत्तियों को हर गाँव में आलस्यता के साथ रहने वाले व्यक्तियों को देने जा रहा हो।

[३७]

मैयल यानैयिन्मुंमदं आंदुं तेन
ऐय पोन असुं पाडि अलैन्दुराय
च्चेयय सन्दनं लींपलं आदिया
नैयवारि नडंददु नन्ट्रो

भावार्थ :—बरसात के पानी का वेग जोर से जा रहा था। वह ऐसा मालूम पड़ा था कि मानों हाथियों के तीन तरह मदों को भीतर भर कर ऊपर मधु से लेप किया हुआ हो, तथा आश्चर्य भरे सोने के टुकड़ों को मिला कर सुगन्ध चन्दन एवं मीठे-मीठे फल आदि बहुत सी चीजों को लेकर जंगल को रुलाता हुआ देश की ओर जा रहा हो।

[३८]

वीडिलयटिटनं वव्विय वेन्देन
ककाडु कैयरि ककोण्डु कवन्दपेय
मोडु कोल्पुल मूरि नेडं कडल
नाडु मुट्रियदो एन नण्णिट्रे

भावार्थ—पानी का वह वेग गाँव के लोगों को दुखित करता हुआ देश की ओर जा रहा था। वह ऐसा जान पड़ा कि प्रजाओं को तरसा कर शहर को लूटने वाला राजा के समान, लहर के हाथों से जंगल को नष्ट-भ्रष्ट कर उस जंगल में पड़ो चीजों को समेट कर ले जाने वाला बड़ा भारी पारावार देश को घेर लिया हो।

[३९]

लिरै पोरू कनैकडलसेलवन्सेन्निमेल
नुरैयेनुं मालैयै नुगरच्चूट्टुनान
सडैयेनुं पेयरुडै तडंकोल वेंमुलैक्
कुरैपुनल कन्नि कोणरइलिददु देन्बवे

भावार्थ—शब्दायमान पानी की धारारूपी कन्यका, लहर के द्वारा जोर से आवाज देकर आह्वान करने एवं ज्योतिर्मय समुद्ररूपी अपने पति से मिलने जा रही थी। वह कैसी दिखायी देती थी मानो अपने को "सरै" नाम धारण करती हुई, रेतरूपी स्तनों के साथ खुद इकट्ठा कर लायी गये बहुत से वस्तुओं को समर्पण करने नया डिंडीरूपी माला को पहनाने की लालसा से जा रही हो।

[४०]

पलं कोलतेंकिलै येन प्परन्दु पाय्पुनल
वलंगमुन, इयट्रिय सुदैसेय वायत्तलै
तलं कुरल पंपैयिन्साट्रि नांडेलां
मुलंगुतींपुनलगं मुरिय मोयत्तलें

भावार्थ—नारियल के पत्ते के समान हिलकर जाने वाला पानी, किनारों पर टकराने से "पपै" नामक वाद्य विशेष की तरह मधुर आवाज करने लगा। गाँव के लोग उस आवाज को सुन कर चूने के द्वारा पहले से बाँधे गये रुकावट को और भी मजबूत बनाने में इकट्ठे होने लगे।

[४१]

वेलर्करुं कुंजरं वैट्टं पट्टेन
त्तलै त्तलै अव र्कदं तविर्प्पत्ताल्दुं पोय्
क्कुलै त्तलै मगलिर्तं कर्पिन्कोटट्कं
निलैप्पडा निरेंन्दन पिरवुं एन्बवे

भावार्थ—महावत लोग मदभरे हाथियों के मदों को आयुधों से वश करते हैं। तदनुसार गाँव के लोग वेग के साथ जाने वाले पानी को मुश्किल से रोक पाये। एकदम रोका गया वह पानी आबद्ध कुलनारी की तरह रुक कर तालाब झील आदि में भर गये।

[४२]

कव्वैयुं कडुंपुनल् ओलियुं काप्पवर्
सेव्वन्नूरायिरं सिलैक्कुं पंबैयुं
एव्वेलात्तिसै कलुं ईण्डि क्कारोडु
पव्वं निन्ट्र इयंबुव दोत्तवेन्बवे

भावार्थ—रोकने पर भी बिना रुके कूद-कूद कर दौड़ने वाला पानी का कोलाहल, वह पानी किनारों को विध्वंस न करे उसे रोकने के कार्य पर प्रयत्नशील लोगों की चिल्लाहट, "पंपे", "परै" आदि हजारों वाद्य-विशेषों के धाम-धाम शब्द, ये सारे के सारे सभी दिशाओं में फैल कर, समुद्र और मेघ की गर्जना के समान शब्दायमान होने लगा।

[४३]

मामनु मरुगनुं पोलु, मन्बिन
कामनुं सामनुं कलन्द काच्चिय
पूमनुं अशिसिप्पुल लार्न्द मोट्टिन
तामिन ममैन्दुतं तोलिलिन्मिक्कवे

भावार्थ :—खेतीबाड़ी में काम आनेवाले भैंस वगैरह, मामा और जमाई की तरह दिखाई देने लगे। घास-फूस आदि चीजों को खाकर पेट भरनेवाले भैंसे झुंड के झुंड चारों तरफ खड़े थे।

[४४]

नेरिमरुप्पु एरुमैयिन, ओरुल्, नीलिनम्
सेरिमरुप्पु एट्रिनं सिलंप प्पण्णुरीइप्
पोश्विरि वरालिनं इरियप्पुक्कुडन्
वेरिकमल् कलनियुल् उलुनर् वेल्लमे

भावार्थ—फसल की जमीन में कीचड़ के कारण एक तरह से बदबू आ रही है। वहाँ के पानी में बिन्दीवाली एवं लकीरवाली मछलियाँ भैंस के सींग हिलाने से पानी में इधर-उधर दौड़ रही हैं। लंबे-लंबे सींगवाले बैलों को किसान लोग हल में जोत कर चला रहे हैं। इसकी गिनती बहुत ज्यादा दिखाई दे रही है।

[४५]

सेरमै सेरुविनुल्, सेन्नेल् वालमुलै
वीरोडु विलैकेनत्तोलुदु वित्तुवार्
तारिदु पदमेन प्परित्तु नाल् सेय्वार
कूरिय कडैसियर् कुलां कोण्डु एगुवार्

भावार्थ—उसी तरह जोतने वाले किसान भूदेवी की प्रार्थना करते हुए कीचड़ से परिपक्व जमीन पर धान को बोयेंगे। उस धान से निकले हुए पौधे को दूसरी जमीन पर लगाने के वास्ते शुभ दिन देखेंगे। उस पौधे को लगाने के पहले दिन उक्त कार्य के लिये काम करने वाली औरतों को बुला लायेंगे।

[४६]

मुलैत्तंड सेतंक पोरिप्प मट्रवर,
कुलैत्तुडन् पदित्तलिन् कुदित्तवाल् कयल्
पुलत्तिडै क्कवरिकन्दु ऊट्टप्पोन्द पाल्
निलत्तिर्डे प्पायन्दवै, पिरलुं नोरवे।

भावार्थ—धान के पौधे लगानेवाली औरतों की छाती पर कीचड़ लगते हैं। पौधे को अलग-अलग कर कतार से जमीन पर लगाती हैं। जिसके कारण पास में रहने वाली मछलियाँ खाली जगह पर भाग जाती हैं।

कुरिंजी नामक प्रदेश में रहने वाली हिरणियाँ अपने बछड़ों को दूध पिलाती हैं। बछड़े के पीने से बाकी बचा दूध जमीन पर गिरता है जिसके कारण से मछलियाँ दौड़ने लगती हैं।

[४७]

पाल् सुवै अरिन्दवै लनत्तामरै
मेल्सेल प्याय्दलि न्वेरिइय वण्डिनं
कोल्नोडि नुलैच्चिय मुत्तं कोप्पवर्
एट्रिय मालैत्तेन्, इरिय प्याय्न्दवे

भावार्थ—वे मछलियाँ दूध के स्वादु से पानी का स्वादु भिन्न समझकर जमीन के कमल पर चढ़ती हैं। जिसको वजह से कमल स्थित भौंरे भागकर मोतियों के धागे में पिरोने वाली औरतों के सिर पर लगाई गई फूलमाला में स्थित शहद मक्खियाँ को भगाने लगीं।

[४८]

इरिन्दतेन् कुवलैयिन्नेट्रि तैवर
मुरिन्दु पोदु अविलन्दु कोंगुउयिर्कु मुल्लैयिन्
अरुम्बु सेन्र्द लणिञ्जिमिरू आर्प्प वाय् पदं
विरुदेदि क्रोण्मेन त्तलुवि वोलदवे

भावार्थ—मोतियों को पिरोने वाली औरतों के सिर की माला में रहने वाली मधुमक्खियाँ 'कूवले' नामक कमल पर जा बैठीं। उसमें रहने वाले 'ञ्जिमिरू' नामके भौंरे मिलकर गूँजने लगे। उस कमल में मधु ज्यादा होने से मानों मधुमक्खियाँ भौंरे को सम्मान के साथ मधु प्रदान कर रहीं हों। उस मधु में भौंरे मधुमक्खियों के साथ गिरने लगे।

[४९]

वलमुडि नडु पव वैरंबिल्, कंबलै
इलमलै मुलक्केन मंजैएंगलिन्
अलमरु कुयिलिनं अलुगि प्पूंपोलिल
उलमेलि मकलिरिन् ओडुंगु मेन्बवे

भावार्थ—धान के पौधों को जमीन पर लगाने वाली किसान की औरतें जोर-जोर से गाने लगीं। उसे सुनकर मेघ-गर्जना समझकर मोर

शब्द करने लगे। उसे वास्तविक समझ कर कोयल मानों पतिवियोगिनी महिलाएँ, इस तरह डर के मारे झाड़ में जाकर छिपने लगीं।

[५०]

बलै क्कैयाल्, कडैसिय मॅट्टबाक्कलिन्
तिलैत्तव पॅरुगिय तेरल् तेंगुलिक्
कलिप्प उण्डु इलअनं गन्नि नारैयैत्
तिलैत्तलिपॅंडै मयिल् तेरुट्टुं सेम्मट्टे

भावार्थ—जमीन पर लगातार काम करने वाले किसानों को उनकी औरतें चूड़ियाँ पहने हाथ से मधु पिलायेंगी। उस समय गिरे हुए मधु को हंसपक्षी पीकर हंसिनी के पीछे दौड़ेगा। उसे देखकर मोरनी मोर को शिक्षा सिखायेंगी।

[५१]

कण्णेन क्कुवलैयुं कट्टल् ओंबिनार्
वण्णवाल् मुगमेन मरैयिनुल् पुकार्
पण्णेलुत्तु इयल्पड प्परप्पि यिट्टनर्
तण्वय लुलवतं तन्मै इन्नदे

भावार्थ—किसान 'कुवलै' नाम के फूलों को अपनी क्यारियों के आँख समझ कर जोड़ देते थे। उनके सुन्दरतम 'मुख' मान कर कमलों के पास तक नहीं जाते थे। घास-फूसों को निकालने आयी हुई प्रेमिकाओं आँख और मुख को चिन्तन करते-करते किसान मधुर गाना गाने लगे। खेती पर किसानों की हालत इस तरह हुआ करती थी।

[५२]

नित्तिलप्पन्दुडनीन्ट्र पादिरि
ओत्तपू उडट्रिय नाकिन नाकिनाल्
तत्तुनी नारैमेलेरिय त्तण्कडल्
पैत्तेलु तिरैयेनप्परवै आलुमे

भावार्थ—मोतियों के गँद के समान एक साथ अण्डे देने वाले 'पादिरि' नाम के फूल को अपनी जोभ से हटाते हुए 'नत्तै' नाम के एक

तरह के जीव पानी के 'नारे' नाम के बतक के ऊपर फेंकने लगे। जिससे वह जीव समुद्र के ठंडे पानी में डुबकी लगाकर लहर सरीखे ऊपर उठते हुए आवाज करते थे।

[५३]

सोल्लरुं जूल् पसुं पांबिन् तोट्टंपोल्
मेल्लवे करु इरुन्दु ईन्ट्र मेल्लार्
सेलवमे पोल्, तलै निरुवित्तेन्र्दनूल्
कल्वि सेर मान्दरि निरैंजिक्काय्त्तवे

भावार्थ—धान के पौधे गर्भ धारण करने से 'हरे साँप के समान दीखने लगे। पौधे सम्पन्न अधम लोगों के समान खड़े होने लगे। पौधे पक जाने पर विद्वत्ता से परिपूर्ण विद्वानों के समान झुकने लगे।

विशेषार्थ—यहाँ पर तीन उपमायें दी गई हैं। हरा सूर्य, सम्पन्न अधम लोग, विद्वत्ता से परिपूर्ण विद्वान। हरेपन के लिये हरे सर्प को लिया गया है। अधम लोग सम्पन्न हो जाते हैं तो घमंड से सिर ऊँचा करते हुए खड़े रहते हैं अर्थात् उनमें नम्रता नहीं रहती। यदि कोई व्यक्ति विद्वत्ता से परिपूर्ण होता है तो नम्र होता है घमण्ड नहीं रहता। इसका मतलब यह है कि धान के पौधे सूल भरने पर एकदम खड़े रहते हैं। धान पक जाने के बाद झुक जाते हैं। इन उपमाओं से आचार्य महाराज के कवित्त की महत्ता झलकती है।

[५४]

मीनकणिनलबुं वेट्टिडंग लिन्मैयिल्
तेन्कण क्करुंबिय ल्काडुं सेन्नेलिन्
वान्पुगल् कलिरुमाय् कलनि आक्कमुं
ऊन्कणाक्कुं उरैप्परिदु ओल्लेन्सुर्मेत्ते

भावार्थ—वहाँ की जमीन में मत्स्य के आँख जो हैं उतनी जगह भी खाली नहीं है यानी जमीन के सब जगह खेती उपजायी जाती है। अतः इस विषय को मानव समूह को बजाय अमर लोग भी तारोफ करने लगे। उस खेती के मधु मछली की चाह सहित गन्ने की खेती तथा बैल के बराबर खड़े धान की खेती शब्दायमान होती थी।

[५५]

आयपिलि विरुन्दु वण्डु अयिट्रि उण्डु तेन
वाय् पोलि कुवलैगल् सूडि मल्लर्गल्
तेय्पिरै इरुबुतं बलक्कै सेत्तिनार्
आय् सेन्नेल् अगन्ट्र काडु अरिकुट्रार्गले

भावार्थ—किसान लोग नशों से भरे मद्य को भौरों को पिलाते हुए खुद पिये। मधु भरे 'कुवलै' नाम के फूल को सिर पर लगाकर अपर पक्ष चन्द्रमा के समानरूप हँसिया को दाहिने हाथ में लेकर धान के पौधे को काटने लगे।

[५६]

वलियुडैक्कैगलाल मलर्न्द तामरै
मेलिवेय्द क्कुवलैगल् वाटक्कंबलम्
पोलिवेय्दप्पूंपोटगै सिलंबिप्पार्पेल
मलैपड अरिन्दु कून्कुयं कैमाट्रिनार्

भावार्थ—किसान, के शक्तियुक्त हाथों से खेतों पर खिले हुए कमल मुरझाने एवं कुवलै फूल सूखने के कारण बने। उनके शब्दों से चिड़ियों के बच्चे आदि डर के मारे चिल्ला कर भागने लगे। काटे हुए धान के पौधे पहाड़ सरीखे ज्यादा होने से काटने वाला हँसिया टेढ़ा हो गया। जिसे एक हाथ से दूसरे हाथ में बदलने लगे।

[५७]

वानैयिनिर्न तलैइरिय वण्डलर्
तालुडैत्तामरै किलिय वण्सुमै
कोलुडै इलैयव कुंलां कोण्डेगलिन्
पालै वाटक्कमुगिनं पलंगलिसन्दुमे

भावार्थ—फसल काटे गये खेती की मछलियाँ अपनी जगह से भागने लगीं। भौंरों के कारण खिले हुए धान फटने लगे। जवान किसान कटे हुए धान के पौधों को बाँध कर ले जा रहे थे। वह सुपारी के पेड़ पर लगने से उसके फल धड़ा-धड़ गिरने लगे।

[५८]

सोर्पुयल् मुगिल्तलै विलंगित्तूनलं
मार्बुकोण्डु आन्र्दु अदुनरल वण्सुलै
आर्बु पलाप्पलं अलिन्दनील् कलं
पोर्बिनाल् मलिन्दुड न्पोलिन्द नीरवे

भावार्थ—काट कर लाये गये धान के पौधे के ढेर पानी बरसने वाले मेघों को भी रोकने लगे। अर्थात् उतना ऊँचा हो गया। भूदेवी की छाती पर भर जाने से मानों खेती की जमीन कहने लगी कि इस धान के बोझ को मुझसे सहा नहीं जाता। वहाँ पर कटहल के फलों को खानेवाले कोई भी न होने के कारण उन फलों के साथ-साथ वहाँ की जमीन धान के पौधों से भरी पड़ी थी।

[५९]

ईडुसालपोर्पलित्तु एरु मैप्पोत्तिनाल्
माडुरत्तेलित्तु वैकलैन्दु कालुरीइच्
सेडुरक्कूप्पिय सेन्नेल् कुप्पैगल्
कोडुयर्कोलुंबनिन्कुन्ट्रं ओत्तवे

भावार्थ—नीचे फैलाये गये धान के पौधों पर भैंसों को घुमाकर धान और घास को अलग-अलग किया जाता था। उसमें से निकले धानों को हवा से साफ़ कर ढेर लगाया गया। उक्त धान का ढेर ऐसा दीखने लगा मानों सिर उठाये हुए शोभायमान सोने के पहाड़ हों।

[६०]

करुम्बुकण्णुडैप्पवरालैतोरेलां
विरुम्बिवन्दडैन्दवर्परुगिविंजिय
तिरुन्दुसारुडुवुलिप्परन्द तींबुगै
परन्दु विण्णुगुदलिन् परुदिसेन्ददे

भावार्थ—जहाँ यन्त्र से गन्ने का रस निकाला जाता था वहाँ लोग खूब उसका रस पीते थे। बचे रस को तपाते समय जो धुआँ निकलता था वह आकाश में फैलकर सूर्य तक गया जिससे सूर्य एकदम लाल हो गया।

[६१]

किणैनिलप्पोरुनतं सेल्ललकीलप्पडव्
पणनिलैयाय्सेनेल्पगुरुं पण्डियुं
कणैनिलैक्करुंबिनिल्कवरुं बण्डियुं
मणनिलै मलर्पेय्दु मरुगुं बण्डियुं

भावार्थ—गरीबों की गरीबी हटने तक धान को दान में दिया जाता था, दान से बचे हुए धान को गाड़ी में भर कर ले जाते थे। उन गाड़ियों के साथ-साथ गन्ने के रस से तैयार किये गये गुड़ को भर कर ले जाने वाली गाड़ियाँ और फलों से लदी गाड़ियाँ सब जगह दिखाई देती थीं।

[६२]

मल्ललं तेंगु इलनीर्पेय्पण्डियुं
मेल्लिलैप्पण्डियुं कमुगिन्मेतगु
पल्पलुक्काटक्कुलै पेय्द बण्डियुं
ओलगु तींबण्डं पेय्दु ओलुं बण्डियुं

भावार्थ—कच्चे नारियल से भरी गाड़ियाँ, हरे पान से भरी गाड़ियाँ, सुपारी के फल से भरी गाड़ियाँ, एकदम पके फलों से भरी गाड़ियाँ हमेशा जाती रहती थीं।

[६३]

करुंकडलवलंतरक्करैयुं बण्डियुं
नेरुंगुबु मुदिरैयिन्निरैन्द बण्डियुं
पेरुंगलिप्पण्डिकलिपरवुं सेट्टुबु
तिरुन्दि एत्तिसैगलुं सेरिन्द एन्बवे

भावार्थ—समुद्र से निकली वस्तुओं को शहर के लोगों को देने के वास्ते ले जाने वाली गाड़ियाँ, तुवर आदि धानों से भरी गाड़ियाँ, इनके अलावा बाकी धानों से भरी गाड़ियाँ जोर के शब्द करती हुई सब जगह जा रही थीं।

[६४]

किलिवलर्पूमरुदु अणिन्दुकेडिला
वलवयल्वैकलु मिन्नदु एन्बदेन्
तुलियोडु मदुत्तुलि अरादसोलैसूल्
ओलिअमैयिरुक्कैयूरुरैक्क निन्ट्रवे

भावार्थ—खुशी से निवास करने वाले तोतों से भरे 'मरुद' नाम के पेड़ों से घेरे एवं हरे-भरे खेतों से खेतो शोभायमान हो रही थी। इसके बाद मधु एवं मद्य की बूँदों से समाविष्ट बगीचों से आक्रान्त जगमगाती हुई बस्तियों का वर्णन करते हैं।

[६५]

सेवलन्नं तामरैयिन्तोडविल्न्द सेव्विपू
क्काविलकूडुएक्किय कव्विक्कोण्डिरुन्दन
तायिलपोन्विलक्कमात्तण्कुयिल् मुलवमा
त्तूविमंर्जेनन्मणं पुगुत्तुं तुंबिक्केंबरो

भावार्थ—मुर्गा जाति के हंस बगीचे में घोंसले बनाने के वास्ते कमल फूलों के पत्ते ले जा रहे थे। वे हंस दीपक बने, कोयल की आवाज वाद्य बनी भौंरों से भरे फूलों के गुच्छे से खूब सुगन्ध आती थी और मोर बगीचे में छिप जाते थे।

[६६]

कूडिनार्कणम्मलक्कुवलै अंकुलियिडै
वाडुवल्लै मेलेलां वालै एरप्पाय्वन
पाडुसाल्कयिट्रिलपाटदुं पलकलनोलिप्पप्पोन्दु
आडुकूत्ति आडल्पोन्ट्र नारै काण्बओत्तवे

भावार्थ—प्रेमो से मिली हुई प्रेमिका की आँखों के समान विकसित कुवलै नाम के फूलों से भरे पानो के झरने में पानी कम होने से थोड़ी सो मुरझाई हुई 'वल्लक' नाम को लता के ऊपर एक तरह की मछलियाँ चढ़ने लगीं। उस तरह चढ़ना मानों ऐसा दीख पड़ता था कि खेल खेलने वाली (खिलाड़ी) नारो, नजदीक की रस्सी पर आभरण के झलक-झलक

की आवाज के साथ नृत्य करती हो। उक्त नृत्य के दर्शक थे किनारे पर खड़े एक तरह के बकों के झुण्ड।

[६७]

कावि अन्न कण्णिना र्कयंतलै क्कुडैतलिन्
आवियन्न पून्दुगिलणिन्द अलकुल, पल्कलै
कोवै अट्टु दिन्र्दन कोललुं नीररिन्मैथिन्
वावियावुं पोन् अणिन्दु वानं पूत्तदोत्तवे

भावार्थ—'कुवलै' नाम के फूल के समान आँखवाली नारियाँ तालाब में उतर कर खेलती हुई नहा रही थीं। दूध के समान सफ़ेद एवं चित्र-विचित्रत उत्तरीय से अलंकृत नारियों के मध्य प्रदेश में बँधे हुए मेखला-भरण से मणियाँ गिरने लगीं। मगर उन मणियों को उठाने वाले कोई नहीं थे। अतः उस पानी का प्रदेश आकाश के नक्षत्रों का सा दीख पड़ता था।

[६८]

पाशवलिडिप्पवरुलक्कै वालैप्पलपलं
आसिनिवरुक्कै मातडिन्दु तेन्कनियुदिर्त्तु
असलाडु पैंकमुगु तेंगिनोप्पलं परोई
वासत्तालै सण्बगत्तिन्वान्मलर्गलनक्कुमे

भावार्थ—नये-नये पोये को ठोकनेवाला मूसल इस तरह करने लगा कि केले के फलों को गिराने के साथ-साथ आम आदि पेड़ों के भागों को तोड़ दिया तथा उनके फलों को गिराकर सुपारी और नारियल के फलों को पटक दिया। उसके बाद तालें और सेण्बक नामक फूलों को भी छूने लगा।

[६९]

मन्ट्रल् नाऱ इलंजि मेय्न्दु मागुलै सुरन्दपाल्
निन्ट्र तारैयाल् निलं ननैप्प एगि नील्मनैक्
कन्ट्रु अरुत्ति मंगैय र्कलं निरै पोलितर
निन्ट्र मेतियाल् पोलिन्द नीर माड मालैये

भावार्थ—भैंसे गड्डे के सुगन्धमय फूलों को खाती थीं। जिससे उनका दूध जमीन के सारे प्रदेश में गिरने लगा। उस समय उन भैंसों को अपने बछड़ों की याद आने लगीं। अतः उन बछड़ों के स्थान पर जाकर उन्हें दूध पिलाने के बाद घर की नारियों से लाये गये बर्तनों को दूध से भर देती थीं जिससे महलों की नारियाँ सन्तुष्ट रहने लगीं।

[७०]

वेल्लिप्पोल विलंग वैत्तनैयवाय् मणित्तलैक्
कोलपवलं कोत्तनैय काल कुन्ट्रिच्चेंगण
ओल् अगिर्पुगै तिरण्डदोक्कुं मामणिप्पुरा
विकल्लैयोडु पालुणुं केडिलपूवै पाडवे

भावार्थ—उन महलों में चाँदी की थाल के टुकड़े के समान सफ़ेद चोंच, सुन्दर सिर, 'अगिर' नामक धुआँ के समान जो कबूतर थे उनके पैर पन्ने के टुकड़े जैसे लाल थे। लालमणि की तरह आँख वाली नारियाँ गाते हुए तोतों के साथ दूध पीती थीं।

[७१]

काडियुण्ड पून्दुकिल् कलुम ऊट्टुं पूंबुकै
माडमालै मेलनलार्मणिक्कुल लिन्मूलकलिन्
कोडुयन्र्द कुन्ट्रि न्मेल कुलीयमंजै तंसिरकु
आडुं मंजिनुलिव रुत्तुइरुन्द वण्ण मन्नरे

भावार्थ—पके चावल के पानी लगाये गये एवं सुन्दर कारीगरी से भरे कपड़े 'अगिल' नामक धुआँ पर लगे। वह धुआँ महल में रहने वाली नारियों के बालों पर घुसे। जिससे उन नारियों के आभूषण उन धुओं में छिप गये। अतः वे नारियां लम्बे-लम्बे पंखों से शोभित एवं बड़े पत्थरों पर खड़े, मेघों के अन्दर शोभायमान मोर के समान प्रकाशमान हो रही थीं।

[७२]

कण्णुलानुं कादलरोलिग कामर्मीगेन
उलिनलायवेट्कैयालू डिनारैयाडवर्

वण्ण मेगलैजलैप्पट्टरट्टु दिर्न्दन
एण्णिलपोन्सुडु नेरुप्पुक्कमुट्ट मोत्तवे

भावार्थ—"तुम्हारी प्रेमिका तुम्हारी आँखों के भीतर ही हैं। इसलिये तुम अपनी कामवासना को छोड़ दो" इस तरह दिलभरी प्रेमासक्त नारी-मणियों के भर्तागण उन रमणियों के कमर बन्धनों को खींचने लगे; जिससे वह टूट गया। उसकी मणियाँ इधर-उधर फैलने लगीं। उससे फैली हुई जमीन शुद्ध सोने के टुकड़े फैले हुए के समान दिखाई देने लगी। अर्थात् वह जमीन स्वर्णमय दीखता था।

[७३]

कोट्टिटलं तगर्कलुं कोटमंलर तोन्ट्रिपोल्
सूट्टूडैय सेवलुं तोणिक्कोलियादिया
वेट्टवट्टिनूरुला वेंरुलिमान्दर्पोकोली
क्काट्टियाक्कुंकौवेयुं कडियुं कौवे कौवैये

भावार्थ—धन के मद से मत्त मानुष, सींगवाले तथा मदोन्मत्त बकरों को, फूल के समान लम्बे शिखा वाले मुर्गों को, देशान्तर से आये हुए बकरों को आपस में लड़ा कर तमाशा देखते थे। वे लोग आपस में लड़ने वाले बकरे और मुर्गों के घाव के बारे में चिन्ता नहीं करते थे। ऐसे हिंसामय इस तमाशा को जनता के सामने दिखाकर मनोरंजन की तालियाँ बजाते हुए खुशी मनाते थे; कुछ लोग उन निरपराध जीवों की लड़ाई को रोकने में तत्पर होकर चिल्लाते थे।

[७४]

इरुं नुसुप्पिनं नलारेन्दु वल्लत्तेन्दिय
नरव कोप्पुलित्तलि न्नागुपन्नै पूत्तन
सिरगर्वण्डु सेव्वलि पाडमाडत्तूडेलां
इरैकोल्वानि न्मीनेन अरंबै मुलैयिनिरुन्दवे

भावार्थ—दौड़-धूप लगानेवाली नारियाँ रत्नों के प्याले में भरे मद्यों से कुल्ला कर थूकती थीं; जिसके कारण महल में स्थित छोटे-छोटे 'पुन्नै' नाम के पेड़ फूलने से उसमें भौंरे बैठकर अति मधुर गाने लगे। इसके अलावा उस मद्य के कारण केले के पेड़ से फूल निकलने लगे; वह देखने में ऐसा लगता था मानों सुन्दर नारियों के विकसित स्तन हों।

[७५]

विलविकल् सालै यावक्कुं वेप्पुइल मुप्पलच्चुनै
त्तलैत्तणीर्मलरणिन्दु सन्दनं सेय् पन्दरुं
कोलैत्तलैय वेल्कणा कूत्तुमन्ट्रियै पोरि
निलत्तलैय तुप्पेलां निरैतुलुंबुमूर्गले

भावार्थ—उस देश को भोजनशाला में किसी भी व्यक्ति को अलग नहीं किया जाता था। वहाँ का जलाशय आँवले के पेड़ से घिरा हुआ रहता था। लोग सुबह उससे पानी लिया करते थे। वहाँ पर अलंकार लिये फूल-मालायें और लगाने के लिये चन्दन रखे जाते थे। प्याऊ में पीने के लिये पानी भी रखा जाता था। वेलायुध आदि से भरे खेलने का स्थान रहता था। इन सबके अलावा पाँचों इन्द्रियों के भोग्य सुन्दरतम सारी चीजें मिल जाती थीं। लोग इन सारी सुविधाओं के कारण आराम से रहते थे।

[७६]

अडिसिल्वैकलायिरमरप्पुरमुमायिरं
कोडियनार्सेय कोलमुं वैकलदोरुं मायिरं
मडिविल्कम्मियर्कलोडु मंगलमुमायिरं
ओडिविले वेरायिरमो बुवारिनोंबवे

भावार्थ—उन गाँवों में हजारों भोजनशालायें रोज चलती थीं। हजारों की संख्या में जमीनें धार्मिक कार्य के लिये दी हुई थीं। कोमल लता के समान रहने वाली हजारों नारियों के अलंकारार्थ हजारों स्थान थे। आलस्य के बिना अपना-अपना धन्धा करनेवाले हजारों की संख्या में दिखाई देते थे। सब जगह हजारों मंगल कार्य होते थे। इस तरह भिन्न-भिन्न हजारों कार्य सब जगह भरपूर चला करते थे। उन कार्यों में किसी तरह की बाधा न पड़े एतदर्थ हजारों की संख्या में उसके रक्षक भी मौजूद थे।

[७७]

नट्रवं सेय्वावर्कुं इडं तवंसेय् वावर्कुंमदु इडं
नर्पोरुल् सेय्वावर्क्कमिडं पोरुल्सेय्वावर्कुं मदुइडं

पेट्रइन्बं विलैविप्पान्विण्णुवन्दु वीलदेन
मट्टनाडु वट्टमाग वैगुमट्र नाडरो

भावार्थ—दुनियाँ सारे सुख भोगों को आदरता के साथ स्वीकार करे तथा अमर लोक भी इसे देखकर सन्तुष्ट होवें, देशान्तर सीमा ही इस (हेमांगत) देश की सीमा हो ऐसी शोभायमान होती थी। यह देश तपोनुष्ठान करनेवाले महात्माओं को, परलोक के हित को ध्यान में रखकर गृहस्थी चलानेवालों को, शास्त्राध्ययन करनेवाले बुद्धिमानों को, अशाश्वत धन सम्पत्तियों को सम्पादन करनेवाले व्यक्तियों को (यह देश) उपयुक्त स्थान था।

[७८]

नगर का वर्णन

कण्वलैक्कामुक रेन्नुमापडुत्तु
ओल् निधित्तसै तलोइ उडलं विट्टिडुं
पेण्वलैप्पडादव पोंडिन्नोंगिय
अण्णलं कडिनगर मैदिसेप्पुवां

भावार्थ—आचार्य कवि कहते हैं कि अब मैं राजमापुर का महत्त्व बता रहा हूँ। इस नगर में वेश्यायें आँख रूपी जाल से कामान्ध जनरूपी जानवरों को अपने वश में लाकर धनरूपी चमड़े को हाथ में लेते हुए अपने शरीर को बेच देती थीं। मगर वहाँ रहनेवाले मुनिगण इनके जाल में न फँसते थे। उन मुनिराजों के तप प्रभाव के समान धन समृद्धि से भरे एवं महत्त्व सम्पन्न नगर की शोभा है।

[७९]

विण्पुगुवियन्सिनै मेलिय पूत्तन
सण्बगत्तणिमल कुंडैन्दु तादुक
वण्सिरैक्कुयिलोडु मयिलगल्मारु कूय्
क्कण्सिरैप्पडु निललकावु सूलन्दवे

भावार्थ—उक्त नगर सुन्दर बगीचों से घिरा हुआ था। उनके वृक्षों की आकाश तक लम्बी डालें 'सेण्बक' नामक फूलों के कारण झुक जाती थीं। उन डालों पर निवास करनेवाली कोयल, मोर के साथ अपनी-अपनी भिन्न-भिन्न आवाज के कारण लोगों की दृष्टि को अपनी ओर

खींच लेते थे। छायामय एवं सुन्दर फूलवाले बगीचे का यह दृश्य नगर के चारों ओर शोभायमान होता था।

[८०]

कैपुनैसान्तमुं कडिसेय् मालैयुं
मेय पुनैसुण्णमुं पुगैयुमेविय
नेय्योडु कुंकुमं निरैन्द नाणिनाल्
पोय्कैगलपूंपडां पोर्त्त पोन्ट्रवे

भावार्थ—वहाँ के जलाशय में नारियाँ आकर नहातो थीं। वे खुशबूदार फूल मालायें पहनी हुई थीं। हाथ से घिसे हुए चन्दन, सुगन्ध चूर्ण, घी, कुंकुम आदि परिमल चूर्णों को शरीर पर लगाई हुई थीं। उनके नहाने से सब चूर्ण आदि जलाशय में मिल जाते थे। अतः वह ऐसा सुन्दर दीख पड़ता था कि वह जलाशय मानों शर्म के मारे कपड़े पहने हुए हो।

[८१]

कडिनलक्करुंबोडु काय्नेलकट्टैयिन्
पिडिनलं तलीवरुं पेरुंगैक्कुंजरं
अडिनिलै थिरुप्पेल वमैन्द नन्मतिल्
पुडैनिलै वारिगल्पोलिन्द सूलदंवे

भावार्थ—वहाँ पर हाथियों के झुंड "कणेय" नामक पेड़ के किवाड़ से लगे पत्थर से बने परकोटा के अन्दर बसते थे। वे हाथियों के झुंड ऐसे थे कि ये गन्ने अच्छे हैं और बहुत मीठे हैं इस तरह चुनकर लेनेवाले और पके हुए धान से तैयार किये गये कवलाहार को ग्रहण करनेवाले तथा जमीन को छूते हुए लम्बी सूँड़वाले थे।

[८२]

सलसल मुंमदं सोरित्तत्तमुल्
कोलैमरु प्पिर ट्टैग लकुलिप्प प्पाय्न्दिरु
मलैतिलैप्पन एन नागमान्ट्रपो
कुंलविय निलैक्कलं कोलमार्न्दवे

भावार्थ—उस नगर के गाँवों में हाथियों का झुण्ड रणस्थल पर

सुन्दर दीखता था। वे ऐसे दीख पड़ते थे जैसे दो पहाड़ आपस में लड़ने को तैयार हों। उनके तीन तरह के मद झर रहे थे। उनके दाँत सचमुच प्रतिपक्षियों को मार डालने वाले हों ऐसे दीख पड़ते थे। वह रणस्थल इस तरह शोभायमान था।

[८३]

मुक्कुडै वेण्मरु प्पुईन्दुं मेय्कोल
प्पत्तियि न्कुयिट्टिय मरुंगिल्पलिवनै
च्चित्तिरविकंपुरि वैरं सेत्तुंनर्
ओत्तिय लिडंगलु मुलंगुनीण्डवे

भावार्थ—मोतियों के सफेद मोटे भाग को काट कर तेज बनाते हुए सीधे सुन्दर एवं कारीगरी से 'किंपुरी' नामक वस्तु बनायेंगे। ऐसे बनाये गये वस्तु पर कीमती हीरों को जमाने वाले लोगों की वीथियाँ उस नगर में लगातार शोभित होती थीं।

[८४]

ओडु तेच्चारिगै युगुपोन्भूमियु
माटकमाट्टं तांपुरवि वट्टमुं
केडक वालतोलि लिडमुकेडिला
क्कोडु वेंचिलैत्तोलि लिडमु कूडिन्ट्रे

भावार्थ—उक्त नगरी में रथों को अति वेग से चलाने से इधर-उधर सोने के टुकड़े बिखर कर गिरते थे। इस तरह के रथाभ्यास का स्थान, आटक नाम के सोने की माला को पहनकर घोड़ों पर चढ़ते हुए अभ्यास करने की जगह केडय लेकर तलवार अभ्यास करने का स्थान, किसी तरह को कमी के बिना धनुर्विद्याभ्यास का स्थान आदि ढंग से शोभायमान होते थे।

[८५]

नगर का मध्य भाग

पुडैनगर्त्तोलिलिडं कडन्दु पुक्कपिन्
इडैनगप्पुरं वणै इयंबु मोसैयोर्
कडलुडैन्ददुवेन क्कलन्द ट्क्कडल्
मडैयडैत्तनैयदम्माक्कलीट्ट मे

भावार्थ—'पुरंपनै' नामक बाहर (नगर) के प्रदेशों में काम करने वालों को लांघ कर देखें तो नगर का मध्य भाग दीखता है। उस प्रदेश की जमीन को 'मरुद' कहते हैं। वहाँ की आवाज ऐसी सुनाई पड़ती है मानो समुद्र ही टूट पड़ा हो। वहाँ निवास करने वालों की परिस्थिति ऐसी थी कि उस समुद्र के पानी की आवाज को रोकने में समर्थ हो।

[८६]

सिन्दुर प्पोडिकलुं सेंपोन्सुण्णमुं
सन्दन नीरोडु कलन्दु तैयलार
पन्दोडु सिविरियिलिसदर प्पार्मि सै
इन्दिर विल्लेन विकडन्द वीतिये

भावार्थ—वहाँ की वीथियों में नारियाँ एकदम लाल रंग के चूर्णों को खरे सोने के चूर्णों के साथ मिलाकर चन्दन और अत्तर से मिश्रित पानी को पिचकारी के द्वारा लगाती थीं। इस तरह फैलाया गया पानी जमीन पर ऐसा दीख पड़ता था मानो इन्द्रधनुष हो पड़ा हो। नगर की वीथियाँ ऐसे शोभायमान होती थीं।

[८७]

पात्तुरुं पशुं पोन्निण्माडत्तुच्चि मेल्
तूचिन्मणिक्कुडुं निरैत्तु त्तोन्ट्रुव
पूत्तन वेंगमेलपोलिन्दु कार्निनैन्दु
एत्तरु मयिलकुलामिरुन्द पोन्ट्रवे

भावार्थ—बिलकुल बढ़िया सोने से बनी हुई अट्टालिकाओं के शिखर पर बड़े-बड़े नीलमणियों के कलश रखे हुए थे। उसका दृश्य ऐसा दीख पड़ता था मानो विकसित 'वैगे' नाम के पेड़ पर मोर के झुण्ड वर्षाकाल के मेघ समझ कर बैठे हों। ऐसा यह दृश्य सुन्दर दीखता था।

[८८]

नेडुंगोडि निल लमति नेट्रितैवर
उडंबुवेत्तिन मलै उररि नोक्कलिन्
नडुंगु पुनलवरै माडत्तुच्चियि
लडंगि वीलदरु वियिरुव पोन्ट्रवे

भावार्थ—उक्त सोने के अट्टालिका महलों में लटकने वाली लतायें, प्रकाशमान चन्द्रमा के काले को छूने से बीच में घूमने वाले मेघ, गर्मी के मारे टकराकर पानी बरसने लगा। जिससे पहाड़ सरीखे सुन्दर महलों के शिखर से झरने के समान पानी नीचे गिरने लगा। वह ऐसा लगता था कि मेघ रो रहा हो।

[८९]

पोन्सिरु तेर्मिसै प्पैंपोर्पोदक
नलिसरारुर्दलिन्नंगैमार्विरी
उट्रव कोंलिमे लेरिन्द वोण्कुलै
मट्र स्तेरुरुलकोडा वलमै सान्ट्रवे

भावार्थ—उस नगर के वीथियों में नारियाँ धान को सुखा रही थीं। उन नारियों ने सुखाये हुए धान को खाने के लिये आये हुए मुर्गे के ऊपर एक तरह के सोने से निर्मित गोलों को फेंकी। वे गोले छोटे-छोटे रथ पर लगे हाथो पर लड़के चढ़ कर चलाते समय उसे रोकने लगे। इस तरह संपत्ति से समृद्ध नगर शोभायमान होता था।

[९०]

मालैयुं पशुंपोनुं मयंगि वार्कणै
क्कोलेय्युं कुनिसिलै नुदलिनारोडु
वेलिय लाडर्विरवि विण्णव
रालयमिदुवेन वैयं सेय्युमे

भावार्थ—वह शहर देवों के निवास स्थल के समान दोखता था। उस नगर की रानियाँ फूलों की मालायें एवं सोने के आभूषण पहनी हुई थीं। नयन के ऊपर भाग को धनुष एवं दृष्टि को बाण बनानेवाली ललनायें अपनी कटाक्षविक्षप से पुरुषों को वश करती थीं। फिर भी वहाँ के पुरुष उन नारियों को जीत लेते थे। अर्थात् स्त्री-पुरुष बहुत प्रेम से रहते थे।

[९१]

कलसुणं सेयदतोण् मैन्दर्कादलाल्
नलसुणप्पट्टुडै पट्र नाणिनाल्
पोर्सुणत्तालिवलक्कविप्पप्पोंगिय
पोर्सुणं पुरंबणै तवलुं पोर्पिट्रे

भावार्थ—उस शहर के पुरुष लोग इतने शक्तिशाली थे कि पत्थर को भी चूर्ण बना सकें। ऐसे शक्ति संपन्न, कामुक लोग अपनी कामिनियों की सुगन्ध चूर्ण लगाई हुई पीताम्बर साड़ियों को खींचते थे। जिससे साड़ी घिसकने लगी। लज्जा से वे नारियाँ हाथ में लिये हुए सोने के चूर्ण को दीपक के ऊपर फेंक कर बुझाते हुए अँधेरा कर देती थीं। इस तरह फेंके गये चूर्ण हवा में उड़कर समीप स्थित 'मरुद' नाम की पृथ्वी पर पड़ने से वह जमीन अत्यन्त शोभायमान होती थी।

[९२]

नलंतगु नानंनिन्ट्र, इडिक्कु नललव
रुलक्कैया लुदिन्दंन तेंगि नोण्पल
निलत्तवै सोरिदोंलि वेरोय मंजेंपोय
क्कलत्तुय कूंबिन्मेलाडुंकौवैत्ते

भावार्थ—नगर की नारियाँ खड़े होकर मूसल से सोने को ठोक कर चूर्ण बनाती थीं। उस समय हाथ के मूसल नारियल के पेड़ पर लगे। जिसके कारण पेड़ से नारियल तड़-तड़ां से जमीन पर गिरने लगे। गिरने वाले नारियल को देखकर मोर डर के मारे उड़कर जहाज पर बैठे और जोर की आवाज करने के साथ-साथ नृत्य भी करने लगे। वह आवाज शहर को चारों दिशाओं में सुनाई देने लगी।

[९३]

इट्टवेल् निलपडा वकैलैयि नोण्डिय
मुट्टिलामूवरु पाडै माक्कलाल
पुलपयिलपलुमर पोलि विट्टागिय
मट्टिला वलनग र्वण्णमिन्नदे

भावार्थ—उस नगर में अठारह भाषा बोलने वाली जनता ऐसी भरी हुई थी कि तिल डालने का भी खाली स्थान नहीं था। फल के पेड़ों पर चिड़ियाँ निवास करते हुए दिखाई देती थीं। इन सभी कारणों से वह नगर अत्यधिक शोभा से प्रकाशमान था।

[९४]

खाई का दृश्य

तंगोलि निन्तिलत्तामं सूडिय
वेंकलि इलमुलै वेर्कण्मादरार
पैंकिलि मुन्कैमेलकोण्डु पार्पेणुं
कोंगल र्तामरै क्किडंगु कूरुवां

भावार्थ—प्रकाशमान मोतियों की माला से अलंकृत एवं कामोद्दीपक सुन्दर स्थल, वेलायुध के समान लंबे नयन इत्यादि विशेषणों से विशिष्ट नारियाँ अपने हाथ में तोते को लेती हुई हंसों के बछड़ों को गिनती थीं। आगे मधु मिश्रित कमलों से भरे खाई के बारे में वर्णन करेंगे।

[९५]

कोलसुरा विनत्तोडु मुदलैक्कुप्पैगल्
आल्पेरातिरितर वंजिप्पाय्वन
मोट्टिटुराप्पनि किडं गुलक्क मोय्त्तेलुन्द्
दुट्टुरा प्पुलिलन मिरट्र मेन्ववे

भावार्थ—उस खाई के अन्दर-आपस में मार डालने वाले 'सुरा' नामक मत्स्य रहते थे। उन मत्स्यों का झुण्ड आदमियों को पकड़कर खाने के लिये इधर-उधर देखते-देखते दौड़ रहा था। लेकिन कोई नहीं मिलता था। इस तरह घूमने वाले 'सुरा' मत्स्यों को देखकर 'इराल' नामक दूसरे तरह के मत्स्य भय के मारे खाई के अन्दर जाकर उसे गन्दा करेंगे। इस तरह की परिस्थिति को, मिले हुए हंस के जोड़े देखकर खड़े-खड़े चिल्लाते थे।

[९६]

सिरैयेनप्पेडैयिनोडु डिच्चेवल्पो
यरुपद वण्डिन मार्प्पत्तामरै
युरैवदु कुलुविनि न्नींगियोकोडु
करैयर मुयल्वदो र्कंडवुलोत्तवे

भावार्थ—पंखों वाली हंसनियों से रमता हुआ हंस एवं छः पैरवाले भँवर एकदम आवाज करते हुए कमल फूलों पर जा बैठे थे। उसे देखने से ऐसा लगता था मानो अपने बन्धु-बान्धवों को छोड़कर-जन्म-जरारूपी मैलों को हटाने के लिये कठिन से कठिन तप करनेवाले मुनिवर हों।

[९७]

अरुपोनुं वेल्लियुं मणियुमल्लदु
करुंकलं तोय्विलाक्कामपूंन्दुरै
कुरुंवैमेन्मुलैयिन्मेल् कुलाय कुंकुमं
विरुन्दुसेय्दिड वेरिमेनिसेन्ददे

भावार्थ—सोना, चाँदी और रत्नों से निर्मित घट अथवा मिट्टी का घट इनमें पानी भर न सकें इस तरह सुन्दर कमलों से भरे जलाशय थे। वहाँ पर नहाती, खिलती हुई नारिरत्नों के हृष्ट-पुष्ट स्तनों पर खूब अलंकार थे तथा उन स्तनों पर लगाये हुए कुंकुम पानी में मिल जाने से वह पानी सुगन्धमय होने के साथ-साथ लाल-लाल दीखता था।

[९८]

पट्टवर्त्तंप्पलिन्परवैयेन्दल् कुल
अट्टोलि अरत्तंवाय् क्कणिकैयल्लदु
मट्टुडैमणमग लमलर्न्दं पोदिनाल्
कट्टुडै क्कावलि र्कामर्कन्निये

भावार्थ—लाल-लाल वे खाइयाँ उसमें जो फँस जाते हैं उन्हें यमराज के घर भेज देती थीं। बड़े-बड़े मर्मस्थान और एकदम लाल-लाल मुँहवाली-वेश्याओं के समान थीं। अथवा विकसित एवं सुगन्धमय फूलों से अलंकृत वधू (विवाह) जैसी थीं। व प्रतिबन्ध के साथ रहनेवाली सुन्दर कन्यावत् थीं।

[९९]

निरैकदि निन्तिलं कोत्तु वैत्तपोल्
विरैकमल् कमुकिन्मे लिवरिन्द पालैयुं
कुरै मदुक्कुवलैगलिकडंगिलपूत्तवुं
उरैयिनोरोसनै उलावि नारुमे

भावार्थ—उस जलाशय में प्रकाशमान मोतियों को लगातार पिरे हों, इस तरह सुपारी पेड़ के गुच्छे की गन्ध थी, पानी के भीतर खिले 'कुवलै' फूल की मधु मिश्रित सुगन्ध थी। ये सब के सब एक योजन तक फैल कर सुरभित कर देते थे। जिसे देखकर लोग खूब तारीफ़ करते थे।

[१००]

ताय् मुनै तलुविय कुलविपोलवुं
मामालै तलुविय मंजु पोलुवुं
आय मुगि लतलीय संबरातनोट्रिय
सेयुय मंदिल्वगै सेप्पुगिन्ट्रदे

भावार्थ—मेघाच्छन्न ऊँची-ऊँची दीवारें (परकोटा) का वर्णन करते हैं। वे कैसी हैं? बच्चे को छातो पर लगाई हुई माँ के समान जल भरे मेघों को अपने पास रखते थो। दूसरी बात यह थी कि मेघ से आच्छादित पहाड़ के समान ऊँची थीं।

[१०१]

माट्रव मंरैप्पडै मलैन्दु मदि लपट्रिन्
नूट्रुवरै क्कोल्लियोडु नूक्कियेरि पोरियुं
तोट्र मुरु पेय्कलिरु तुट्रुपेरुं पांबु
कूट्रमन क्लुगुतोड़ कुंन्दमोडु कोण्मा

भावार्थ—शत्रु के शक्तिशाली योद्धा लोग, इस परकोटे को लाघने के लिये डूबे तो एकदम सौ मानवों को खतम करनेवाले 'शतग्नि' नामक यंत्र, आदमी को उठा कर फेंकने वाले यंत्र, पिशाच व हाथी तरह के यंत्र, निगल कर खतम करनेवाले यंत्र, साँप के समान भयंकर यंत्र, यमराज के समान जीवघातक यन्त्र, जंजीर के समान पकड़कर पीसने वाले यंत्र, हिंसक जानवरों के समान यंत्र, इस तरह विरोधियों को विध्वंस करनेवाले यंत्र वहाँ रखे जाते थे।

[१०२]

विर्पोरिगलवेय्यविडु कुतिरै तोडरयिलवाल्
कर्पोरिक ल्पावैयनं माडमडु सेन्दी
क्कोर्पुनैसेय् कोल्लिपेरुं कोक्केलिसेय् कूकै
नट्रलैगल् तिरुक्कुंवलि नेरुक्कुमर निलैये

भावार्थ—बाणों को चलानेवाला यंत्र, भयंकर घोडे का यंत्र, दौड़कर मारनेवाला तलवार यंत्र, पत्थरों को फेंकनेवाला यंत्र, हंस के समान यंत्र, अग्निज्वाला को उगलनेवाला यंत्र, बक के समान यंत्र, मानवों के सिरों को काटकर मारनेवाला यंत्र, इस तरह बहुत से यंत्र उस परकोटा के दीवार पर रखे हुए थे।

[१०३]

सेंबुरुकु वेंगलिग लुमिलव तिरिन्देंगुं
बेंबुरुकु वट्टुमिलव वेन्नेय् मुगन्दुमिलव
अंबुमिलव वेलुमिल्व कललुमिलव वाकि
त्तंबुलंग लालयवन र्ताट्पडुत्त पोरिये

भावार्थ—सब जगह घूम फिरकर गोले (पानी सदृश) तांबे को उगलनेवाला यन्त्र, गरम-गरम घी को डालनेवाला यन्त्र, धनुष, बाण, पत्थर आदि वस्तुओं को फेंकनेवाला यन्त्र, यवन लोगों को बुद्धि से तैयार किये गये यंत्र, ये सब उसकी दीवार पर रखे हुए थे।

[१०४]

करुंपोन्नियल्पन्ट्रिगद नागविडु सकडं
कुरंगुपोरु तकरिनोडु कूर्दरिव नुण्णूल्
परन्दपशुं पोर्कोडिपताकैयोडु कोलिक्कुं
तिरुन्दुमदि लतेव्वर्तले निप्पत्तिरुंनिन्ट्रे

भावार्थ—लोहे से तैयार किये गये सूकर यन्त्र, गुस्से से लगानेवाला विष यन्त्र, सामने फेंके जानेवाले चक्र यन्त्र, बन्दर यन्त्र, बकरा रूप यन्त्र, तीक्ष्णता से गले को दबाकर पतली रस्सी से लगे यन्त्र, उड़नेवाली अग्नि-ज्वाला यन्त्र आदि सब तरह के यन्त्र लगे हुए थे। पताका से शोभित सुन्दर दीवार को देखते ही शत्रुओं के दिल डर के मारे धड़कने लगेंगे।

[१०५]

वयिरवरै कण्विलिप्प प्पोन्ट्रु मलै युगलुं
वयिरमणि ताल् क्कदवु वायिलमुगभाग
वयिरमणि आयिलमुलै वान्पोर्कोटि क्कून्दल्
वयिरक्किटं काडैमदि लकन्नियदु कविने

भावार्थ—पर कोटारूपी कन्या अति सुन्दर दीख पड़ती थी। जैसे नील रत्नमय पहाड़ खुली आँख हो, मेघ से आच्छादित एवं काले रत्नों से बने साँकल लगे किवाड़ ही मुख हो, हीरे जवाहरात से जड़े हुए मध्य भाग ही स्तन हो, आकाशचुम्बिनी पताका ही सिर के बाल हों, हीरे के समान प्रकाशमान खाई का नोर ही सारी हो, इस तरह वह कन्या शोभायमान होती थी।

[१०६]

सेंबोनमलै पोन्टूडितोरु आयिरंगलिसन्दि
पैंबोन्विलै तीविनिधि तडिन्दु पलक्कार्त्ति
अंबोन्निलत्तु एगुगुडिया नगरमदुता
नुंबरु लगोप्पदु अदन्तन्मै सिरिदुरैप्पां

भावार्थ—वहाँ की जमीन में सोना निकलता था, उसे निकालकर सब लोगों को सोना दान दिया जाता था। वह ऐसा जान पड़ता था कि मानों सोने की वर्षा हो रही हो। उक्त दान के कारण लोगों को परभव में स्वर्ग प्राप्ति मिलती थी। जिसके कारण से नगर का मध्य भाग अमर लोक के समान दीखता था। इस तरह नगर का मध्यभाग महत्वपूर्ण दिखाई देता था।

[१०७]

वेश्याओं के निवास स्थान का दृश्य

तुप्पुर लतोण्डैच्चेव्वाय् त्तोलिय र्कामत्तूदि
नोप्पवोन्टूादियाग आयिरत्तोरेट्टु ईरा
च्चेप्पित्तं सेन्पोनल् कुल्नलंवरै विन्टूविक्कुं
मुप्पमै कामत्तुप्पि नवरिड मुरैत्तु मन्ट्रे

भावार्थ—वहाँ की वेश्यायें, प्रवाल के समान गलों वाली, लाल मुख हों इस तरह की सखियों द्वारा कामोत्पादक वचनों से ठगे जानेवाले एवं कामवेदना से अपनी ओर आनेवाले कामुक पुरुषों से एक से लेकर एक हजार आठ सोने के टुकड़े लेकर अपने मर्मस्थान को बेचती थीं। यह ऐसा जान पड़ता था कि मानों अपने प्रेम को नित्य सुख के लिये बेच रही हों।

[१०८]

कुंकुमं मेलुगिच्चावुं तिण्णैयुं कुयिट्टियुल्लाल्
तंगुमेन्सान्दत्तोडु तामम्मुं ताल नाट्टि
एंगुनर्सुवकलडोरुं नाडकमेलुदि एर्प्प
प्पोंगु मेन्मलर्पेय्सेक्कै पोलिन्दु विण्पुर्कुचियुण्डे

भावार्थ—वेश्याओं का निवास स्थान इस तरह मनमोहक रहता है कि घर का अगला भाग एवं बैठने का स्थान कुंकुमों से पोता हुआ अन्दर का भाग सुगन्ध चन्दन मिश्रित वस्तुओं से पोता हुआ है। दीवारों पर फूल की मालायें लटकती हैं और कामवासना जनक चित्र लिखे हुए हैं। काम क्रीड़ा के योग्य कोमल फूलों को डालकर शय्यायें बिछायी हुई हैं। इन सारी विशेषताओं को देखने से मालूम होता है कि इस स्थान को देवलोग भी वाँछा कर सकते हैं।

[१०९]

दूसुसूल् परवैयल्कुल् सुमक्कलादेन्न वीलत्त
कासुसूल् कोवैमुत्तं कदिर्मुलै तिमिर्न्द शान्तं
वासनर्पोडिकल् मालै वण्डुणवीलन्द मुट्ट
आसैपट्टरसुवैक लरुंगडि कमलुमन्ट्रे

भावार्थ—उन वेश्याओं के घर का मध्य भाग इस तरह सुगन्धमय है कि इसे देखकर राजा-महाराजा लोग भी प्रेम के साथ आकर ठहर सकते हों। अलावा इसके वेश्याओं का मर्मस्थान रेशमी कपड़ों से आच्छादित है। उसके मध्य भाग याने कमर रत्न एवं मणियों से अलंकृत हैं। सुन्दर स्तन पर चन्दन का लेप है। खुशबूदार चूर्ण एवं फूलमालायें नीचे गिरी पड़ी हैं। उनपर भौंरें बैठकर मधु का स्वादु ले रहे हैं। वे घर इस तरह की शोभा से अलंकृत हैं।

[११०]

अंजिलंबोलियोडु अलकुल् कलैयोलियणिन्दमुन्कै
पंजिमेलिवरलि लपाणि पण्णोलि पवलच्चेव्वाय्
अंजि नेर्न्दुयिक्कुं तेन्सोर्कुललोलि मुलविनोसै
तुंजलि लोसै तम्माल् तुरक्कमुं निगर्क्कलाते

भावार्थ—पैर में पहने हुए सुन्दर पायल की आवाज, कमर में पहने हुए मेघलाभरण की आवाज, लाल-लाल रंगों से रंगीले पैर की उँगलियों में शब्दायमान 'याल' नामक वाद्य की आवाज, पन्ने के समान लाल मुँह से निकलने वाला 'मधुर' गान, मधुवत् प्रिय 'कुलल' नामक वाद्य की आवाज आदि वाद्य विशेषों की ध्वनि से वेश्याओं के घर देवलोक को भी जीतते थे।

[१११]

ते नुला मदुसेय् कोदै तेंपुकै कमलऊट्ट
वानुलां सुडर्कण्मूडि मानगरिर वुसेय्य
प्पालिनला च्चोरिन्दु नललारणि कलंपकलैच्चेय्य
वेनिलान्विलैन्द सेरि मेलुलगनैय दोन्ट्रे

भावार्थ—भौंरों के रींकार से शब्दायमान मधुमय फूलमाला पहनी हुई नारियाँ, अपनी मालायें अत्यन्त सुगन्धित होने के निमित्त 'अगिल' धूआँ लगाती थीं। जिस धुआँ के कारण आकाश का सूर्य छिपकर अन्धेरा हो जाता था। उस समय शहर में दिन, रात सरीखा हो जाता था। परन्तु सुन्दर नारियों के पहने हुए आभूषणों से एकदम प्रकाश निकल जाता था; जिससे वह अन्धेरा दूर होकर दिन हो जाता था। इस तरह कामदेव वांच्छित होने योग्य वह स्थान देवलोक सा दीखता था।

[११२]

इट्टनूल्वलामैयोडि योसनैएललैनीण्डु
मट्टुवार्मलै वेय्न्दु सदुक्कंगलमलिन्द सुम्मै
पट्टमुं पसुंपोन्पूणुं परन्दोलि निलट्ट्तीन्देन्
अट्टंतारणिन्द मार्व्वरावणं किलक्कलुट्टेन

भावार्थ—वहाँ पर एक योजन दूर तक व्यापारियों का बाजार लगातार लगता था। बाजार की दूकानों में फूलमालायें लटकती थीं। चौराहे में हमेशा लोगों की भोड़ बनी रहती थी। व्यापारी लोग अपनी-अपनी योग्यता के अनुकूल बहुमूल्य आभूषण एवं फूल को मालायें पहने हुए थे। इस तरह वणिक लोगों की वीथियाँ जगमगाती थीं।

[११३]

मणिपुनै सेंपोन्कोट्टै वंबणि मुत्तमालै
कणिपनै पवलत्तिण्कालकंबलक्किकडुकिनून्ट्रि
अणिनिलमेलुगिच्चान्दि नगिलपुगैत्तंपोन्पोदिन्
लिणिनिल मणिन्दु तेंको ल्लयविसितरिनारे

भावार्थ—वणिक वीथियों में व्यापारी लोग, सोने की गोली में मणियों को मोतीमाला पर जड़े हुए कंबलों को दूकान के सामने पसारते थे। जमीन सुगन्ध चन्दन से पोती जाती थी। 'अकिल' को धूआँ भी लगायी जाती थी। हीरे-जवाहरात से जड़ी हुई जमीन पर सोने का फूल एवं सुगन्ध फूलों के साथ-साथ देवतायोग्य सफ़ेद राई भी डाली जाती थी।

[११४]

पोन्सोरि कदवुतालिन्तिरन्दु पोन्यवनपेलै
मिन्सोरि मणियुं मुत्तुं वयिरमुं कुवित्तुप्पिन्नुं
मन्पेरुं पवलक्कुप्पै वालणिकलंसेय् कुप्पै
नन्पगलिखुसेय्युं नन्कलं कूप्पिनारे

भावार्थ—व्यापारी लोग सोने को वर्षा करनेवाले दूकान के किवाड़ को कुञ्जी से खोलते थे। यवन देश के सोने की पेटी से विद्युत के समान चमकने वाले माणिक्य, मोती, हीरे आदि कीमती जवाहरातों को निकाल कर ढेर लगाते रखते थे। उनमें पन्ने का ढेर भी था। चमकदार आभूषण भी रखे जाते थे। दिन को रात बनाने वाली नीलमणियों का भी ढेर बना देते थे। इस तरह व्यापारियों की दूकान उनकी सम्पत्तियों के महत्त्व को जाहिर करती थी।

[११५]

विलुक्कलं सोरियच्चिन्दि वील्न्दवै एडुत्तुक्कोलला
वोलुक्किनरवर्कलसेल्वं उरैप्परि दोलिगवेण्डा
पलक्कुलै कमुगुं तेंगुं वालैयुं पशुंपोन्नालुं
एलिल्पोलि मणियिनालुं कडैतोरुं मियट्रिनारे

भावार्थ—इस तरह सजाने के लिये बहुमूल्य आभूषणों को निकाल कर रखते समय छोटे-छोटे आभूषण नीचे गिर जाते थे। उसे उठाने के लिए आँख उठाकर भी कोई देखते भी नहीं थे। इस तरह के सम्पन्न वणिक लोग, अपनी दुकानों को पके सुपारियों के गुच्छे, नारियल, केले, खरे सोने और रत्नों से अलंकार करते थे। इससे उन लोगों के धन का महत्त्व कहना अशक्य ही नहीं बल्कि असम्भव है। इस पर ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है।

[११६]

मूसुतेनिरालिन्मूस मोय्तिरै इयंवियांगुं
ओसैयेन्ट्रुणरिनल्ला लेलुत्तु मेय्युणर्द लागा
पूसुसान्दुरुवर्पूसिट्रेलुवत्तं मगलं पूसि
मासनमिडं पेरादु वण्कडै मलिन्द दन्ट्रे

भावार्थ—बाजार में खूब भीड़ रहा करती थी। जिसके कारण लोगों को चलना-फिरना मुश्किल होता था। एक आदमी की छाती पर लगाये गये चन्दन सात आदमियों के छाती पर घसोट-घसोट कर लग जाता था। इतनी घनी भीड़ थी। मधु के छत्ते पर लगने वाले भ्रमरों के समान चलने-फिरने वाले लोगों की भीड़ रहती थी। उन लोगों से निकलने वाली समुद्र की लहर सी आवाज से भीड़ का अन्दाजा लगा सकते हैं। उसे अक्षरों से लिखकर बताया नहीं जा सकता।

[११७]

मेय्यणि पसुंपोन्सुण्ण मेतगु नाननीरि
नैदु पट्टोलुगि यानै यलिमदं कलन्दुसेराय्
च्चेय्यणि कलन्नालिसन्दि मालैयुं मदुवुमलिक
वेय्दडि इडुदक्कागा वीतिकल्विलंब लुट्रेन्

भावार्थ—शरीर पर लगाये गये नये एवं सुन्दर और खुशबूदार चूर्ण के साथ 'पन्नीर' नामक (गुलाब जल) द्रव वस्तु मिलने से वह चूर्ण गोला होकर गिरने लगा। उसके साथ-साथ हाथी के मदजल मिल जाने से एक-दम पसीना हो गया। मधु और माला (फूल) के साथ-साथ सारा प्रदेश कीचड़ बन गया। उस कीचड़ में असावधानी के कारण आभूषण भी गिर

पड़ने लगे। जिसके कारण पैदल चलने वालों को पैर उठाकर रखने में दिक्कत होती थी।

[११८]

वीथियों का दृश्य

मुलवणि मुदुनग र्मुरसोडु वलैविम्
विलवणि मगलिर्तं विरैकमलिलमुलै
इलैयणि ओलिइल वेयिल्से यविडुपुगै
मलैयेन मरैयिन पोलिविनदोरुपाल्

भावार्थ—एक तरफ वाद्यों से शब्दायमान राजमहल में शंखनाद और भेरी वाद्य भी बजने लगे। उसी महोत्सव में नारीमणियों की छाती पर पहने हुए आभूषणों की कान्ति प्रातःकाल सूर्य प्रकाश की तरह चमकती थी। वहाँ से निकली हुई सुगन्ध धुआँ मेघ का भ्रम पैदा कर सूर्य को ढँकने लगा।

[११९]

कुडैयोडु कुडैपल कलिरोडु नेरितर
उडैकड लोलियिनो डुरुवर र्पलिसेल
मुडियोडु मुडियुर मिडैतलि न्विडुडसुर्
कोडियुडै मलैमिनि र्कूलविय दोरुपाल्

भावार्थ—छाता-छाते के साथ, हाथी-हाथी के साथ दूसरी तरफ़ टकराने लगे। जिससे ऐसा शब्द होने लगा कि समुद्र ही टूट कर जोर का शब्द कर रहा हो। उस समय राजा लोग देवताओं की पूजा कर रहे थे। उन राजाओं के मुकुट आपस में टकराने से निकलने वाला प्रकाश, मेघों में टकराई से जो विद्युत् चमकती है तद्वत् शोभायमान होती थी।

[१२०]

पूत्तलै वारण प्पोत्तोलि लिलैयवर्
नात्तलै मडिविलिक्कूत्तोडु कुयिलतर
क्कायत्तुरु तमनिय त्तुगलोडु कडिकमल्
पूत्तुकलकलुमिय पोलिविन दोरुपाल्

भावार्थ—दूसरे प्रदेश में एक तरह से लाल फूल के समान सिरवाले जो मुर्गे थे, उनकी आपस की लड़ाई में जीते हुए लड़के मुँह से जोर का आवाज निकाल कर याने चिल्ला-चिल्ला कर खुशी मना रहे थे। अलावा इसके कुछ लड़के कूद-कूद कर खेल रहे थे। इनके खेल के कारण पेड़ों के फूल से गिरने वाला मकरन्द चारों तरफ़ सुगन्ध को फैला रहा था।

[१२१]

मैन्दरो डूडिय मगलिरै यिलैयव
रन्दुगि ल्पट्रलि न्कासरि न्तणिकिलर
सुन्दर निलमिसै च्चोरितलि न्मिन्नणिन्
दिन्दिर तिरुविलि नेलिलिन दोरुपाल्

भावार्थ—नकली गुस्से के कारण जानेवाली नारी को उसका पति हाथ पकड़ कर खींचने लगा। जिससे उससे उस औरत के गले के आभरण का धागा टूट गया। अतः आभूषण तितर-बितर गिरने लगा। उसे देखने से ऐसा लगता था कि मानो जमीन पर आकाश की विद्युत गिर कर पड़ी हो।

[१२२]

वलैयरु त्तनैयन वालरि यमैपद
मलवरु नरुनेयो टडुकरियमैदुवै
विलैवमै तरियोडु मिसैकुवि विरैयुमि
नुलवणि कलमेनु मुरैयिन दोरुपाल्

भावार्थ—अन्य जगह पर इस तरह बुलावा दिया जा रहा था कि शंख के समान एकदम सफ़ेद चावलों से पकाये गये अन्न को, घी से तैयार किये गये साग-भाजियों को और अच्छे दही से तैयार किये हुए चटनी को मिलाकर खाने के लिये जल्दी से जल्दी दौड़-दौड़ कर आइये। खाना-खाने के बाद आप लोगों को जेवर का पारितोषिक भी दिया जायगा।

[१२३]

वरैनिरै यरुवियि न्मदमिसै सोरिवन
पुरैनिरै कलिरोडु पुनैमणि यियररु
विरैनिरै यिवुलियो डिलैयव विरकुपु
कुरैनिरै कुलिर्पुनल्याट्रिन दोरुपाल्

भावार्थ—पहाड़ों से गिरने वाली झरने की तरह, हाथी के सिर से बराबर मदजल गिरता था; घोड़े, सोने की घण्टी लगे हुए रथ को जोर से खींच ले जाते थे; तथा लड़कों की चिल्लाहट के साथ-साथ नदी में वेग से जाने वाले पानी का शब्द था। ये सब मिलकर एक तरफ़ जोर की आवाज सुनाई पड़ती थी।

[१२४]

वरिवलै यरवमुं मणिमुल वरवमु
मरिवल र्कण्णिय रणिकल वरवमुं
पुरिवल र्कुललोडु पोलिमलि कविनिय
तिरुविलै कडिमनै तिरविदि न्मोलिवां

भावार्थ—यहाँ इसके अलावा शंख का नाद, वाद्य विशेषों का शब्द, लाल-लाल आँखों वाली नारियाँ, पहने हुए आभूषणों की आवाज, बाँसुरी का नाद ये सब मिलकर एकदम शब्दायमान होते थे। इसके आगे सुन्दर एवं समृद्धि से परिपूर्ण घरों के बारे में वर्णन किया जायगा।

[१२५]

पावै अन्नव र्पन्दु पुडैत्तलिन्
तूवियन्नं वेरोइत्तुणै येन्ट्रु पाय्
क्कोवै नित्तिलमाक्कुलामिसै
मेविवेण्मति तन्नोडिरुक्कुमे

भावार्थ—प्रतिबिम्ब के समान नारियाँ गेंद खेल रही थीं; उन लोगों का शब्द सुनकर कोमल पंखोंवाले हंस पक्षियाँ डर के मारे भागने लगीं। वे पक्षियाँ, मोती और रत्न जड़े महल के ऊपर चन्द्रमा को सहायक मानते हुए ठहर कर निवास करती थीं।

[१२६]

तिरुव न्नीणकच्चेंपोनिनोडिय
कुरुव वोण्को डि यूलिनुडंकुव
परवै वेंगति च्चेंलवन पन्मयिर्प
पुरवि पोंकल लाट्रुव पोन्ट्रवे

भावार्थ—पहले कहे गये संपत्ति से युक्त लोगों के लम्बे-चौड़े महलों में लाल-लाल सोने की तरह चमकने एवं हिलने वाली लतायें, मानों जाज्वल्यमान सूर्य के घोड़े के उष्ण को निकाल रही हों। इस तरह का रमणीय दृश्य दिखाई देता था।

[१२७]

इलैकोलवेंमुलै यीर मुलात्तुवार्
विलैय वूट्टिय मेतगु तींपकै
कुलैकोलवाण्मुगं चूलकुलि रंकतिर्
मलैयुण्मामति पोन्मेन त्तोन्द्रु मे

भावार्थ—ऊपर कहे गये विशेषता के साथ कामवासना रत पतिगण से अपनी पत्नियों की छाती पर लगाये गये चन्दन आदि सुगन्ध वस्तु के गीलेपन को नारियाँ सुखाना चाहती थीं। उसके लिये "अखिर" नाम की धुआँ जलायी थीं।वह धुआँ मेघ की तरह चारों ओर फैलने लगीं। उक्त मेघ के अन्दर कर्ण भूषण की कान्ति से चमकने वाला मुख मेघ के भीतर प्रकाशमान पूर्ण चन्द्र के समान देदीप्यमान दीखने लगा।

[१२८]

सेंपोर्कण्ण् सिरार्कलै तिट्टवु
मंपोन्मालै यविलन्दुड न्वीलन्दवुं
तंपोन्मेनि तिमिर्न्द तण्सान्तमुं
वंपुण्कोदैय मट्टुं मयलरो

भावार्थ—वहाँ पर छोटे-छोटे बच्चों से निकाल कर फेंकी गयी एवं सिर पर पहनने वाली सोने की मालायें, सिर की बालें खुल जाने से घिसक कर नीचे गिरी हुई स्त्रियों की स्वर्णमालायें, स्वर्ण के समान चमकदार शरीर पर लेप कर निकाले गये चन्दन, ये सब नौकरानियों से निकाल कर फेंकने योग्य कूड़े के समान पड़ी रहती थीं।

[१२९]

वेरि यिन्मेलु क्कार्न्द मे न्पूनिल
त्तारि यागवं सान्तं तलित्तपिन्
वारि नित्तिलं वैप्पपो पूर्ववोडु
सेरि तोरिदु सेलवत्तियर्के ये

भावार्थ—सुगन्ध वस्तुओं को मिलाकर जमीन पुतायी गयी थी। इसके ऊपर सुन्दरता के वास्ते तरह-तरह को रंग लगायी गयी थी। उस पर सोने के फूल एवं समुद्र की मोती रखी जाती थी। हर जगह इस तरह समृद्धि की महिमा देखी जाती थी।

[१३०]

करुनै वासमुं कारिरुं कून्दला
ररुमै सान्ट्र वगिर्पुगै वासमुं
सेरुमि च्चेन्दुक ण्णीर्वर स्तेंपोलि
लुरिमै कोंडन वोण्पुर वेन्बवे

भावार्थ—गाँवों में तैयार करने वाली साग-सब्जी की धुआँ एवं नारियाँ अपने काले बालों को सुखाने के वास्ते लगायी गयी "अखिल" की धुआँ सब मिल कर आँखों में लग जाने से उन आँखों से पानी निकलने लगा। इसलिये वहाँ के महलों में रहने वाले कबूतर महलों को छोड़कर बगीचों में निवास करने लगे।

[१३१]

नरैयु नानमु नारु नरुंपुगै
विरगि न्वेलिल यडुप्पिनं पोर्कल
निरैय वाक्किय नेय्पयिल् इन्नमु
तुरैयु मान्द विरुन्दोडु मुण्बवे

भावार्थ—चाँदी की चूल्हे में "नरै" नामक लता एवं सुगन्ध चन्दन इन दोनों की लकड़ी को जला कर तैयार किये गये अमृतमय अन्न को खूब घी मिलाकर वहाँ के रहने वाले लोग आतिथ्य सत्कार के साथ जीमते थे।

[१३२]

पालै मेन्कमु किन्पल मेल्लिलै
नीलवे ण्माडत्तु निन्ट्रु कोण्डन्नला
रालि मोय् म्पर्क्क लित्तणि सण्बक
नालसेय् मालै नगैमुडिप्पेय बवे

भावार्थ—वहाँ की नारियाँ, लम्बे एवं सुन्दर सफ़ेद महलों में खड़े होकर, पतले सुपारी के गुच्छे से निकले हुए सुपारी और पान को ले जाकर पुरुष सिंहवत् शोभायमान पुरुषों के हाथ में देंगी। उन पुरुषों के गले में पहनी हुई नई चंपकमाला को हाथ में लेकर मोती की माला के साथ-साथ अपने सिर पर पहनतीं थीं।

[१३३]

एलुदु वाणेडुं कण्गिणै यन्नलार्
मेलुगु कुंकुम माबिडै वेंमुलै
युलुदु कोदैयुं चान्दु मुबन्दवै
मुलुदुं वित्ति बिलैप्पव र्तिर्तैप्पवे

भावार्थ—वहाँ की स्त्रियाँ अपने प्रेमी से इच्छा के अनुसार मिलकर भोग भोगती थीं। वे कैसी थीं ? चित्र-विचित्रित तलवार की तरह लम्बी-लम्बी आँखेंवाली थीं। उन नारियों के छाती के स्तन पर लगाये गये कुंकुम पति के साथ प्रेमालिंगन करते समय उन पति के छाती पर लग जाता था। इसके अलावा छाती पर चन्दन का लेप करती थीं और फूल मालाओं को भी पहनाती थीं। इस तरह पति-पत्नियों को कामक्रीड़ा बड़े मजे के साथ होती थी।

[१३४]

कुंजि मेलनि च्चंमल कूट्टुणु
मंजिलोतिय रंम्मलच्चौरडि
मंजुतोय्मणि माडत्तु मलगुपूं
पंजिमेलुं पनिक्कुं पनिक्कुमे

भावार्थ—'अनिच्च' नाम के फूल की तरह कोमल बालों वाली नारियों के सुन्दर चरण, मेघों से आच्छादित रत्न खचित महलों में भोग-भोगनेवाले पतिदेव के सिर पर लगते थे। तथा फूलों को डाले हुए रुई के बिस्तरों पर भी लगते थे।

[१३५]

दूम मेगम लुन्दुकि सेंक्कैमेर्
काम मेनुग वारितम कादलाल्
याममुं पगलुं मरिया मैयार्
भूमि मानग पोन्नुलकोत्तदे

भावार्थ—'अगिल' नामक धुआं के कारण सुगन्धित एवं सफेद कपड़े वाले बिस्तर पर कामवासना में तल्लीन कामी पुरुष कामलीला में तन्मय होने के कारण उन लोगों को दिन-रात का पता नहीं लगता था। जिससे वह नगर दिन-रात का अभाव होने के कारण देवलोक के समान रहता था।

[१३६]

अरवु कान्टिट्ट वंगति र्मामणि
युरवु नीर्मुत्तु मुल्लुरुत्तुल्लन
विरव न्मान्दवर्कु मिन्नवै योवदोर्
पुरवु पूण्डन पोन्नग र्मान्दरे

भावार्थ—सर्पों से उगले गये सुन्दर एवं प्रकाशमान माणिक्य और समुद्र की मोती आदि सभी बहुमूल्य वस्तुएँ याचकों को दान दिये जाते थे। इसका मतलब यह है कि स्वर्ण नगरी जो राजमापुरी है उसकी सारी प्रजा मुक्त हस्त से दान देती थी। अतः उस नगरी में याचक लोग थे ही नहीं।

[१३७]

मुल्लै यंकुललार्मुलै च्चेलवमु
मलल न्मानग च्चेलवमुं वार्कल
सेलव सेलवमुं काणिय वेन्बर्पो
लेल्लियुं मिमै यारिमै यातते

भावार्थ—चमेली नाम के फलों को सिर पर लगाने वाली नारी रत्नों का हृदयाकर्षक स्तन संपत्ति (भोग-सुख) सारे आवश्यक वस्तुओं से भरे नगर की संपत्ति (धन-धान्य-वैभव) भुजबल पराक्रम से युक्त वीरों की साहस संपत्ति (वीरता) आदि अत्यद्भुत संपदाओं को देखने के लिये हम (देव लोग) रात में भी जागते रहे। इस तरह देव लोग के भी अपनी आँखों से संबोधन कर कहने योग्य संपदायें (वैभव) उस नगरी में भरी हुई थीं।

[१३८]

मुलवुं संगमुं मुन्ट्रि न्मुलंगुव
विलवुं वेल्वुं विडुत्तलोन्ट्रिन्मैया
र्पुगल लांपडित्तन्ट्रिदु पोन्नग
रगल्त न्माक्कड लन्नतो र्सुमैत्ते

भावार्थ—वहाँ पर महोत्सव और हवन (होम) हमेशा चलते रहते थे। इसलिये हर घर के सामने शंखनाद सदा सर्वकाल होता था। मृदंग (डोल) वाद्य भी बजती रहती थी। समुद्र की आवाज की तरह बराबर वाद्य विशेषों का नाद होते रहने से यह सुन्दर नगर प्रशंसा का पात्र रहा।

[१३९]

तिंगण मुक्कुडै यान्ट्रिरु मानग
रेंगुमेंगु मिडंदोरुमुण्मैया
लंकण्मानग वर्काक्क मरादो
र्संग नीणितियाट्रलैक्किन्ट्रदे

भावार्थ—चन्द्र के समान छत्रत्रय से अलंकृत भगवान अरहन्त देव के जिनमन्दिर हर वीथियों में मौजूद थे। अतः राजमा नगरी में हर तरह की संपत्ति की कमी नहीं होती थी। वह संपत्ति दिनोंदिन शंख निधि के समान वृद्धिगत होती थी।

[१४०]

तेन्ट्रलै त्तुवलैमालै पैन्दुगि ल्सेंपोन्पूत्तु
आन्ट्रन वयिरमालै नकुकदि र्मुत्त मालै
कान्ट्रमिर्तेन्दि निन्ट्र कर्पक च्चोलैयार्क्कु
म्रोन्ट्रु लसुरन्द सेलवत्तिरासमा पुरमदामे

भावार्थ—मद्य बिन्दु को गिराने वाली फूलों की मालायें, पीतांबर शय्यायें, सोने की मालायें, लटकने वाली होरे की मालायें, चमकदार मोती की मालायें, इन सब के जन्मदात्री अमृतमय बगीचे (उत्पादन स्थान) थे। अतः वे करुणा प्रदान एवं धन प्रधान के रूप में रहते थे। इसलिये वह राजमा नगरी के नाम से प्रसिद्ध है।

विशेषार्थ—उक्त नगर के लोग हर तरह से संपन्न थे। वे गरीबों पर करुणा दिखाते थे तथा याचकों को दान करते थे। इसलिये वह नगरी सभी नगरों में प्रधान समझी जाती थी।

[१४१]

राजमहल की शोभा राजमन्दिर का महत्त्व

वेग यानै मीलिवेल्वेय्यतानै यैय कोन
माग नीर्म्माणमुडि मारि वण्कै मासिलसी
रेकवाणै वेण्कुडै यिन्नग वर्क्कुमन्नव
नागनीर नन्नक नंन्मूलैन्नं सेप्पुवां

भावार्थ—अति वेग से चलने वाली हाथियों की सेना, हाथ में वेलायुध को धारण करनेवाले युद्ध सन्नद्ध योद्धाओं की सेना, हर तरह से तारीफ करने योग्य राज्य सत्ता, ख्याति प्राप्त एवं प्रकाशमान मणि मुकुट, खूब दान देने वाले मुक्त हस्त, निर्मल कीर्त्ति, स्वतन्त्र राज्य भार, श्वेत छत्र इन सारे वैभवों से परिपूर्ण राजा का जो राजमहल है, उसके बारे में वर्णन किया जायगा।

[१४२]

नोणिलं वगुत्तुनो निरन्दु वन्दिलितर
च्चेणिलत्तियट्रिय सित्तिरच्चुरुंगैसेर्
कोणिलत्तु वेय्यवां कोडुंचुरत्तडंकिडंगु
पूणिलत्तु वैत्तदो पोंपिनिर्पोलिन्ददे

भावार्थ—भूमादेवो के कंकण के समान राजमहल के चारों ओर घेरी हुई खाई सुन्दर दीखतो थी। वह खाई कैसी थी ? बाहर से राजमहल तक पानी बराबर आने के वास्ते जमीन खोदकर बनाई हुई थी। रहस्यमय उस खाई में आनेवाले शत्रुओं को डुबोकर मारने योग्य गहराई भो थी; तथा लोगों को खा जानेवाले 'सुरा' नामक मत्स्य भरमार रहते थे। इस तरह राजमहल खाई से शोभायमान होता था।

[१४३]

इंजिमाक नेंजुपोलनंदेल्लै काण वेगलिन्
मन्जु सूलन्दु कोण्डणिन्दु मागंनीण्डनागमु
मन्जु निन्नै एन्ट्रलि नाण्डु निन्ट्रु नीण्डदन्
कुंजि माण्कोडिक्कैया र्कूवि विट्ट दोत्तदे

भावार्थ—जान पड़ता था कि राजमहल मेघमण्डल तक लम्बे पताका के द्वारा देवलोक को सम्बोधन कर कहने लगा—'तू आकर मेरे वैभव को देख' इस तरह कह रहा हो! क्योंकि राजमहल का परकोटा, आकाशमार्ग को तोड़कर देवलोक की सीमा तक जाने लगा। उस समय 'मेघ' उस परकोटा के चरण पकड़कर नम्रता के साथ कहने लगा कि आकाश में स्थित ऊँचा देवलोक तुझे देखकर डर रहा है; इसलिये कृपा कर तू आगे मत जाना। इस तरह राजमहल का जो परकोटा है उसके ऊँचाई का वर्णन किया गया है।

[१४४]

मुत्तमालै मुप्पुरि मूरिमामणिक्कत
वोत्तनान्गु कोपुर मोंगि निन्ट्रोलिर्वन
सत्तिनेट्रि सूट्टिय तामनीमणिवणन्
रत्ततोलिमणि मुडित्तामनालव पोलुमे

भावार्थ—नगर के चारों द्वार के ऊपर रहनेवाले गोपुर के किवाड़ पर बड़े-बड़े घण्टे लगे हुए थे। उन किवाड़ों के ऊपर झूलायुध थे। उन झूलायुधों में अलंकार के लिये तीन धागेवाली मोती की मालायें लटकती थीं। वे मालायें ऐसी लगती थीं कि मानो कृष्ण जी के सिर पर लगी हुई सुन्दर माला हो शोभती है।

[१४५]

संगु विम्मु निलिलं सान्दोडेन्दु पूण्मुलै
क्कोंगु विम्मु कोदैतालकून्द लेन्दु सायला
रिंगितक्क लिप्पिना लेय्दि याडुं पूंपोलिल्
सेंगणिन्दि रन्नगर्च् सेल्व मेन्न तन्नदे

भावार्थ—वहाँ की नारियों के सुन्दर एवं बड़े-बड़े स्तनों पर चन्दन का लेप लगा हुआ था। खास शंख से पैदा हुए मोतियों की माला लटकती थी। मधुमिश्रित फूल की माला सिर के बालों पर अलंकृत थी। ऐसी नारियाँ कामोन्माद से जाकर खेलने वाली वाटिका ऐसी लगती थी कि, मानों इन्द्रपुरी की वाटिका हो। इस तरह वहाँ की कामिनियाँ कामक्रीड़ा करती हुई आनन्द के साथ अपना जीवन बिताती थीं।

[१४६]

वेल्लि यानै मेन्पिटि मिन्निलंगु पैंपोना
ट्रुल्लु मानोरुत्तलुं सेंपोनं पोन्मान्पिणै
युललु काम मुल्सुड वेन्दनांगु रैवदो
र्पुल्लि माड मण्डपं पसुंकदिर्प्पं वण्णमे

भावार्थ—वहाँ के राजा के मन में काम वेदना को अग्नि को बढ़ाने वाली उक्त वाटिका में आकर ठहरने के लिये वसन्त मण्डप बना हुआ था। वह मण्डप नाकलोक के समान दीख पड़ता था। उस वाटिका में और भी विशेषतायें थीं। वे ये हैं—चाँदी से बना हुआ सुन्दर हाथी था। प्रकाशमान सोने से निर्मित हथिनी थी। लाल सोने से तैयार किया हुआ हिरण और बढ़िया सोने से बनी हुई हिरणी थी। इनके आपस में देखने का दृश्य राजा के मन में काम वेदना पैदा करता था।

[१४७]

कोलरैमणि मडर्कून्द नेट्रियेन्दिय
मालैयन्दिर लकनि मामणि मरकतं
सूलकुलैप्प सुंकमुगु सूलु पालै वेण्पोना
लूलिदरण्मणिक्कयि रूसलाड विट्टदे

भावार्थ—सोने से बनाया हुआ सुन्दर फल, गौरवप्रद हरे मरकत मणि से निर्मित गुच्छा, चाँदी से तैयार किया हुआ पत्ता सहित नीचे का भाग, नीलमणि से रचित भागवाले रोम थे। सुपारी के पेड़ पर हिंडोल हिलाने के वास्ते मोती की माला ही रस्सी के रूप में बन्दी हुई थी। इस तरह वहाँ की महिमा का वर्णन है।

[१४८]

मेन्ट्रिनैप्पिरंगलुं मिलिन्दुवीलरु वियुं
कुन्ट्र यन्मणिच्चुनै क्कुवलै कण्विलिप्पवु
निन्ट्र नोक्कु मान्पिणै नीलयानै मन्नवन्
कन्ट्र काम वेक्किय कामर्काम भूमिये

भावार्थ—काले हाथी एवं अत्यन्त कामवेदना से युक्त राजा, कामदेव चाहने योग्य भूमि पर पैदा होनेवाले 'तिनै' नामक धान्य, वेग से कूद-कूदकर गिरनेवाला पानी का स्रोत, सम्भोग करनेवाला हिरन ये सब थे। वे पास के तटाक पर रहनेवाले 'कुवलै' फूल के समान देखते थे।

[१४९]

तींकुयि न्मणन्दुतेन्ट्र जवण्डु पाण्सेय
वेंगैनिन्ट्र पोन्नुगुक्कुं वेर्प्पुडुत्त संदण
मोंगु पिण्डि सण्वग मूलिनारु नागमु
नींग नींगु मिन्नुयिर्नि नैप्पि निन्ट्रि लक्कुमे

भावार्थ—मधुर कोयल का वाद्य 'तुम्बी' नामक जीव की वीणा, भौरों का गाना, इस तरह का वाद्य विशेष चलता था। इसके अनुकूल 'वेंगै' नाम का पेड़ अपने फूलों को गिराकर पारितोषिक के रूप में प्रदान करता था। ऐसे रम्य स्थान में चन्दन, अशोक, चम्पक आदि वृक्ष रहने से चारों ओर सुगन्ध फैलता था। खास बात यह है कि इन वृक्षों को हटावें तो जीवन खतम हो जायगा और इनको रहने से जीवन को वृद्धि होगी। अर्थात् इन पेड़ों के कारण वहाँ की आबहवा साफ होती थी; जिसके कारण शरीर आरोग्य बना रहता था, जीवन की वृद्धि होती थी।

[१५०]

मुत्तं वाय्पुरित्तन मोय्कदिर्प्पसुं पोना
सित्तिरत्तियट्रिय सेलव मलगुपण्मणि
पत्तियिर्कुयिट्रवा न्पदित्तु वैत्त पोलवन
वित्तिरत्त पन्देरिन्दिलैय राडु पूमिये

भावार्थ—सुन्दर नारियों के गेंद खेलने के स्थान पर जो कोने थे

उनमें मोतियाँ लगी हुई थीं। सभी जगह प्रकाशमान नये सोने से चित्र-विचित्र कारीगरी की हुई थी। इस तरह खेलने का स्थान धन सम्पत्ति के प्रभाव को दिखा रहा था। उसमें क्रमशः नाना प्रकार की मणियाँ लगी हुई थीं। यह ऐसा दीख पड़ता था मानों देवलोक को मानवलोक में लाकर रखा गया हो।

[१५१]

वैत्त पन्देडुत्तल मालैयुट् करत्तलुं
कैत्तलत्ति नोट्टलुं कण्णि नेट्रितोट्टलुं
पत्तियिर्पुडैत्तलुं पैयर व्विनाडलु
मित्तिरत्त पन्दिनो डिन्न मेल्लै यिललैये

भावार्थ—वहाँ के लोग गेंद खेलते थे। उन लोगों का खेलना ऐसा लगता था कि नीचे रखे हुए गेंद को हाथ से बिना छुए पैर से लात मार कर उठाना, पहनी हुई माला में छिपाना, हाथ से उठाकर फेंकना, सिर से लगाकर क्रमशः ऊपर-ऊपर ठोकते जाना, साँप के समान इधर-उधर घूम कर ठोकना। इस तरह गेंद खेल में खूब आनन्द लेते थे।

[१५२]

कट्रमन्न कूर्नुतिक्कुरुतिवान्मरु प्पिडैच्
चीट्रुट् मन्नर्तं सेन्नि पन्दु अडिप्पन
कट्रिरुन्द मुंमदत्तु ओडैयानै पीडु साल्
कट्रियल पुरविते र्कलन्दु कव्वै मलिकन्टे

भावार्थ—वह जगह कोलाहल से गूँज उठता था। वहाँ पर यमराज के समान जो हाथी थे उसके दाँत के अग्रभाग में खून लगा हुआ था। उसका कारण यह था कि राजा के शत्रुओं के सिर का गेंद के समान उठा कर खेलता था; ऐसे हाथियों के सिर से तीन तरह का मद जल निकल कर गिरता रहता था, हवा के समान दौड़ने वाले घोड़े भी मौजूद थे तथा रथ भी तैयार थे।

[१५३]

कव्वैयं करुवि सूलन्दु कण्पडुक्कं माडमुं
तेव्वर्तन्द नीलिनति सेन्दं सेम्पोन्माडमुं
मव्वलं कुललिना र्मणिक्कलं पेय् माडमुं
इव्वलन्द अललवुं इडंगल् एललै यिललैये

भावार्थ—वहाँ पर बहुत से आयुधशाला आदि के स्थान थे। अहंकार के साथ चिल्लाने वाले वीर योद्धाओं के समूह थे। राजा के शत्रुओं को मन में सोचते हुए हर जाम (पहर) में पहरा देनेवालों का स्थान, शत्रु राजाओं से दिये गये कर (टेक्स) के धन को रखने का महल, चमेली फूलों से शोभित नारियों के आभूषण रखने का महल, इसके अलावा बिना कहे अनगिनत सुन्दर शोभायमान महल थे।

[१५४]

पूत्त कोंगुं वेंगैयुं पोन्निणसेंय् कोन्ट्रैयुं
काय्त्तुनिन्ट्र कण्तेरुउं कामर्वलिल मादरार्
कूत्तराद पलिलयुं कोट्र मन्न मंगैयर्
एत्तल्सान्ट्र कोयिलुं मिडैप्पडु त्तियन्ट्वे

भावार्थ—वहाँ पर नाटकशाला एवं अरहन्त भगवान के मन्दिर दोनों अलग-अलग थे। उस नाटकशाला में नाट्य करनेवाली नारी मणियों के नयन, कामातुर नौजवानों के वदन को तापते थे। लता के समान सुन्दर नारियों की शरीराकृति जवानों के दिल को जलाते थे। नाटकशाला में ऐसी रमणियों का नाट्य हमेशा होता रहता था। पास में जिनमन्दिर भी विराजमान थे। शत्रु राजाओं को जीतकर लायी गयी रानियाँ उस मन्दिर में जाकर देवदर्शन, पूजन, भक्ति आदि किया करती थीं। अलावा इसके वह नाटकशाला कई तरह के पेड़ के पतों से अलंकृत थी।

[१५५]

कन्दु मामणि त्तिरल् कडैन्दु सेंपोन्नील् सुवर्च्च्
सन्दु पोल्न्दु इयट्रिय तट्टुवेय् न्दुवेण्पोनाल्
इन्दिर न्तिरु नगऊरिमैयोडु मिव्वलि
वन्दिरुन्द वण्णमे अण्णलकोयि ल्वण्णमे

भावार्थ—वहाँ का जिनमन्दिर इस तरह शोभायमान होता था जिसमें माणिक्य के खम्भे थे। लाल-लाल सोने की दीवालें थीं, और चन्दन के पट्टे पर चाँदी की पट्टियाँ लगी हुई थीं। इस तरह के सुन्दर चमत्कारमय जिनमन्दिर देवेन्द्र के भवन के समान लावण्यमय दीखते थे।

[१५६]

आडलिन् अरवमुं अंगैकोट्टि नेंजुण
पाडलिन् अरवमुं पणैमुलवु अरवमुं
कूडु कोलत्तींजुवै क्कोलयालरवमुं
वाडलिल्ल ओयैयाल् वैकल् नालुं वैकिन्ट्रे

भावार्थ—उस नगर के लोग बड़े आनन्द के साथ अपना जीवन बिताते थे। वहाँ हमेशा चलने वाले नाटक का नाद, सुनने वालों के दिल को पिघलाने वाले गाने का मधुर नाद, अन्य वाद्यों का नाद तथा चित्ताकर्षक वीणा का नाद आदि हमेशा सुनाई पड़ता था, जिससे लोगों का समय कठिनाई के बिना कटता था।

[१५७]

नच्चु नागत्तिनारल्ल सीट्रत्तन्
अच्चमुट्रु अडैन्दार्क्कमिर्दन्नवन्
कच्चुलां मुलैयार्क्कणं गाकिय
सच्चन्तन् एनुं तामरैच्चेंगणान्

भावार्थ—इस तरह प्रसिद्ध नगर में सत्यंधर नाम का राजा राज्य करता था। वह अतिसुन्दर रूपवान था। उसको देखते ही नारियों के दिल में कामेच्छा प्रकट हो जाती थी। उसकी आँखें विकसित कमल के समान थीं। वह विषयुक्त सर्प के समान शत्रुओं के लिए विनाशकारी था। उसके शरण में जो आ जाते हैं उनके लिए अमृतवत् हितंकारी था।

[१५८]

वण्कैयाल् कलिमाट्रि वैवेलिनाल्
तिण्तिर लतेव्वर्तेर्त त्तोगै माट्रिनान्
नुण्कलैक्कु इडनाय् त्तिरुमामगल्
कण्कलु क्किडनां कडिमार्बने

भावार्थ—वह राजा सत्यन्धर शत्रुओं की भयंकर रथ सेना को अपने तीक्ष्ण वेलायुध के द्वारा आसानी से जोत लेता था। लक्ष्मी कटाक्ष विक्षेप के कारण ख्याति प्राप्त राजाधिराज महाराजा ने गाना, बजाना, नाटक, शिल्पकला, चित्रकला आदि में निपुण होते हुए भुजबल पराक्रम से राज्य के लोगों की गरीबी को भगा दिया था। इन सभी कारणों से उसका प्रताप चारों ओर फैला हुआ था।

[१५९]

कोरै नित्तिलं सूल्कुलिर्वेण्कुडै
ओदनीरुलगोप्प निलट्लाल्
तादये अवन् ताल् निल लतंगिय
कादलालकलि क्किन्ट्रु वैयमे

भावार्थ—सत्यंधर महाराजा फूलों की माला आदि से अलंकृत सफ़ेद छत्र से शोभायमान होता हुआ पारावार से घिरे हुए राज्य को सानन्द चलाता था। वह सारे संसार के पितृवत् दिखाई देता था। उनकी सारी प्रजा उनकी छत्रछाया में रह कर अपने को भाग्यशाली समझती थी तथा जीवनयापन भी करती थी।

[१६०]

तरुमन्तण्णलियाल् तनदु ईगैयाल्
वरुणन्कूट्रु उयिर्माट्रलि न्वामने
अरुमैयाललगिन्कणैयैन्दुडै–
त्तिरुमगन् तिरुमानिल मन्नने

भावार्थ—भरपूर संपत्ति से समृद्ध देश का राजा सत्यंधर दूसरों की सहायता में धर्म देवता था। दान देने में वरुण भगवान के समान था। शत्रुओं के संहार में यमराज सदृश था। आगम की प्रज्ञा में अरहन्त की उपमा प्राप्त था। रूप लावण्य में कामिनियों की कामवेदना को जताने वाला कामदेव था।

[१६१]

एनै मन्नतं इन्नुपिसेंट् वेल्
तानै मन्नरिलतानिमिललेरुनान्
तेनै मारि अन्नान्तिसै कावलन्
वानं तोय् पुगलाल् मलिवुएयिदनान्

भावार्थ—मधुमय जलवृष्टि के समान प्रिय वचन बोलने वाले तथा आठों दिशाओं के अधिपति सत्यंधर महाराज शत्रु राजाओं के जीवन को अपने वेलायुध से सर्वनाश करने के कारण मत्त बैल के समान उन्मत्त था। उनका यश आठों दिशाओं में व्याप्त था।

[१६२]

सेल्वक्कु इन्नणं सेरलिन्त्रीं पुनल्
मलगुनी वितैयत्तरसन्मगल्
अलिलसेरणंगिर्कणंगु अन्नवल्
विलिलन्नीलपुरुवत्तु एरिवेलकणाल्

भावार्थ—जलाशय से परिपूर्ण विदेह देश के राजपुत्री विजया महादेवी सत्यंधर राजा के सभी समृद्धि के कारण रही। वह विजयादेवी कमलालया के समान समृद्धिशालिनी थी। उसके नयन के अग्रभाग धनुष के समान थे। उसकी लम्बी आंखें वेलायुध जैसी थीं।

[१६३]

उरुवुं सायलुं ओप्प उरैप्पदक्कु
अरियवायिनुं अव्वलै त्तोलिकट्
पेरुगु कारिगै पेसुव लपेण्णणंगु
आरियदेवरुं एत्तरु नीलरे

भावार्थ—विजयादेवी की शोभा, कोमलता, सौन्दर्य आदि के बारे में कहना अशक्य है। फिर भी बाँस के समान भुजवाली विजया की कान्ति के बारे में थोड़ा-बहुत जरूर कहेंगे ही। उसका रूप लावण्य देवों के द्वारा प्रशंसनीय रहा।

[१६४]

एण्णयु नानमुमिवै मुल्लिक इरुडितरु किट्ट्रु
ओण्णरुं तुगिर्किलि पोरिन्दुरै कलित्तनपोल्
कण्णिरुण्डु नेरिमलिकक्कडैकुलन्ट्रकरुं कुललकल्
वण्णप्पोदु अरुच्चित्तु मकिलवु आनात्वेतकैवे

भावार्थ—विजया के सिर के बाल एकदम लम्बे और काले थे। उनमें खूब तेल और सुगन्ध द्रव्य लगाया जाता था। कालिमा के कारण वे बाल देखने वालों की आँखों को अन्धकार सा बना देते थे। ऐसे सुन्दर दिखाई देते थे कि साफ़ कपड़ों से निकाले गये हों। उन बालों में सखियाँ फूलों से अलंकार करती थीं। वह अलंकार उसे दुखदायो होता था।

[१६५]

कुलविक्कोट्टिलं पिरैयुं कुलिर्मदियुं कूडिनपोल्
अलगु कोल्लिसरुनुदलुं आणिवट्ट मतिमुगमुं
तोलुदाक्कुंवरकोडुक्कुं पोण्डै वाय् तूमुरुवल्
ओलुगु पोर्कोडि मूक्कुं उरुप्पसियै उरुक्कुमे

भावार्थ—वह विजयादेवो यौवनवतो थो। उसका ललाट तीसरी चन्द्रमा सी सुन्दर था। उसका गोलाकार सुन्दर मुख, पति के वर प्रसाद था। उसके मुख की लालिमा 'कोण्वै' नाम के फूल के समान थी। मन्द-हास के कारण दाँत सुन्दर दीखते थे। उसकी नाक सुवर्ण लता सदृश थो। इन सभो अवयवों को देखने से ऐसा लगता था कि देवलोक की उर्वशी हो।

[१६६]

वण्सिलैयै वनप्पु अलित्तु वार्दोलिगिनिलंपेरा
नुण्करुमै कोण्डु ओसिन्दु नुदलिवन्दुपोन्दुलाटक्
कण्कूडा कडैपुडैत्तु क्कैवललानेलुदिय पोल्
पण्बु आर्न्द कोडुं पुरुवं पलिच्चुनाप्पडियवे

भावार्थ—उसको पलकें धनुष की शोभा को हरा देती थीं। व कान तक लम्बी थीं। कालिमा से युक्त वह आगे न जाकर ललाट तक गई

हुई थां और टेढ़ी थीं। देखने से ऐसे लगते थे मानों कोई चित्रकार इसके रूपलावण्य को खींच रखा हो। इस तरह तारीफ से अधिक चमक रही थीं।

[१६७]

सेलनैय सिल् अरिय कडैसिवन्दु करुमणिअं
पालगत्तु प्पदित्तअन्न पडियवाय् मुनिवरैयु
मालुरुप्प मगिल्सेयव माणिपिलनंजुंअमिर्दमुने
पोल् गुणत्तपोरु कयक्कंण्सेवियुरप्पोन्दु अगन्ट्रनवे

भावार्थ—उसकी कान तक दीर्घ आँखें ठीक-ठीक जमी हुई शोभा दे रही थीं। वे आँखें मत्स्य के समान थीं और कोने में थोड़ी सी लाल थीं। ऐसा प्रदीप्त हो रहा था कि मुख पर विष्णु एवं क्षीर समुद्र रखे गये हों। वीतराग मुनियों को भी रागभाव उत्पन्न करने योग्य सन्तोष प्रदान करती थीं। उससे अलग होने में विष सदृश हालत एवं मिलन में अमृत तुल्य शोभा हो रही थी।

[१६८]

मयिरेरिकत्तरिकै अनैयवाय् वल्लैवाड
उयिर्सिगुत्तु मुन्ओन्ट्रिप्पि न्पेरान्दु उरु अमैन्द
सेयिर्मकर कुण्डलमुं तिलैप्पना वार्कादुं
वयिरवि मुगंसूडि वण्णं वीटिरुन्दनवे

भावार्थ—उसका कान हीरे की शोभा को सम्पन्न कर रहा था। वे कैंची के समान थीं और लता की शोभा को उल्लंघन कर रही थीं। पीछे व आगे न झुकी हुई थीं तथा सुन्दरता के साथ मकर मत्स्यवत् गोलाकार थीं। वे कुण्डल और कर्णभूषण के साथ चमकती थीं।

[१६९]

ईनादइलं कमुकिन्मरगत मणिक्कण्णु
आनादे इरुलपरुगु अरुमणि कडैन्ददूउं
तानागि इरुलोडुओर्तामरैप्पू च्चुमन्द अन्न
कानार्न्दं तिरलकलुत्तु क्वविन्सिरै कोण्डिरुन्दते

भावार्थ—उसकी गर्दन सौन्दर्य को अपने साथ लेती हुई मरकत माणिक्य के समान नन्हें एवं बिना गुच्छे के सुपारी पेड़ सदृश थी। चमकदार माणिक्य एवं रत्न के समान चमकती थी। अन्धकार स्वरूप काले सिर के बाल के कारण प्रकाशमान् मुखकमल खुशबूदार होती हुई शोभा दे रही थीं।

[१७०]

मणिकरं वाय् पोलन्दु वाल्मुत्त वडंसूलन्दु आंगु
अणियरवकु आसेंबन्जि अणैयणैय आडुअमैतोल्
तुणिकदि र्वलै मुन्कैत्तोगुविरल्सेंकान्दल
मणिअरुम्बुमलरंगै कुलिकमार्वनप्पिनवे

भावार्थ—बाँस की तरह लम्बी लाल-लाल भुजायें, रुई भरे बिस्तर सी थीं। मुँह खुले सुरा मत्स्य के समान था। उसके चारों ओर आभूषण एवं मोती की मालायें अलंकृत थीं। चूड़ियों से अलंकृत उसके हाथों में विकसित चमेली फूल के सदृश अँगलियाँ थीं। उसका करकमल कमल-फूल के समान चमक रहा था।

[१७१]

तामच्चेप्पिणै मुकट्डुत्तण् कदिर्विडुनोल
मामणि तापित्तनपोलमनंपरुगु करुंकण्ण
एमुर अडिपरन्दु इलंपिरै वडंसूडि
आमणंगु कुडियिरुन्दं अरुं सुणंगु परन्दनवे

भावार्थ—मालाओं से अलंकृत गोलाकार सेप्पुनामक वस्तु के समान दोनों स्तन थे। उसके अग्र भाग में नीलमणि खचित हुए हों इस तरह शोभते थे। वे देखनेवालों के दिल को चूसनेवाले काले आँखवाले से थे। निचला भाग मोटा एवं अग्र भाग पतला होने से सुन्दर दीख रहे थे। पूर्वपक्ष द्वितीय चन्द्रमा सदृश आभूषण पहनने से देवता निवास स्थान चिह्न से चमकते थे।

[१७२]

अंगैपोलवयिरणिन्द वलंसुलि अमैककोप्पूल्
कंगैयिन्सुलियलैक्कुं कण्कोला नुडंगिडैयै
उण्डेन त्तमर्मदिप्पर्नोक्किनापिररेल्लां
उण्डिलै येन ऐयमललदु उन्ट्णर्वरिदे

भावार्थ—करतल के समान पेट की सुन्दरता को बढ़ानेवाली घुमाव से अलंकृत नाभी, गंगा नदी की घुमाव को लज्जित करती थी। आँखों से अनदेखे रहस्य स्थान बन्धु-बान्धव नारियों से देखकर अस्तित्व का प्रमाण दिया जाता था। जो लोग न देखे हों वे अन्य अवयव होने से उसका भी अस्तित्व मान लेते थे। कुछ लोग मानने में असमर्थ भी हो रहे थे।

[१७३]

मन्नाग इणैप्पडमुं तेर्त्तट्टु मतिमयक्कि
पोन्नालवट्टमुपोलकलै यिमैक्कुं अगलल्कुल्
कोन्निलं परिदियुं कुरुमुयलिन्कुरुदियुं पोन्ट्रु
इन्नरत्तप्पट्टु असैत्तिन्दिरकुं पुगल्वरिदे

भावार्थ—विजया का रहस्यमय मध्यभाग, मेखलाभरण की ख्याति प्राप्त नाग सर्प का फणा एवं रथ का गोलाकार भाग, सोने से निर्मित गोलाकार छत्र इनके समान था। उसका रहस्यमय मध्यभाग प्रातः-कालीन सूर्य एवं खरगोश के रक्त सदृश लाल-लाल पीताम्बर पहनने से सबकी बुद्धि को हर लेता था। इसके अलावा इसका महत्व इन्द्र के द्वारा भी अवर्णनीय था।

[१७४]

वेलवेण्तिरलतडक्कै गेरुट्टि मट्टिलंकन्नि
वालैत्तण्डेन त्तिरण्डु वालरक्कुण्सेंपंजि
तोलमै कोण्डु एनमेन्मै पडैयवायोलितिगन्दु
मालैकोलमणिमकरं कौवि वीट्रिरुन्दनवे

भावार्थ—विजया के जंघा हाथी की सूंड़ को लज्जित कर देती थी। छोटे-छोटे केले के पेड़ के मध्यभाग सी शोभित थीं। लाल-लाल रुई जैसी मृदुल थीं। प्रकाशमान सोने के अन्दर जड़ित मकराकार रत्नाभरणों से अलंकृत होने के कारण सुशोभित थीं।

[१७५]

पक्कत्तालकविलियवाय् मेलिप्परगाप्पाण्डिला
ओक्कनन्गुणरामै पोरुन्दिय सन्दिनवाय्
नेक्कुप्पि न्कूडादु निगरमैन्द मुलन्दालुं
मक्कलुक्किललाद माट्चियिन्मलिन्दनवे

भावार्थ—उसकी जंघा के ऊपर का भाग गोलाकार था। इस तरह कहने लायक था कि इससे सुन्दर और कोई चीज नहीं है। वह घुटना आगे-पीछे न जाकर दोनों ठीक-ठीक जमे हुए थे। अन्य लोगों को इस तरह का अवयव नहीं बन सकता था। यह उसकी जंघा के घुटने की तारीफ़ के योग्य बात कहनी चाहिये।

[१७६]

आडुतसै पिरंगादु वट्टादुमयिरगन्ट्रु
नीटादु कुरुगादु निगरमैन्द अलविनवाय्
सेडाव नालिकैयिन्पूडैतिरण्डु तेन्नेय् पेय
वाडाद कांबे पोल कणैक्कालिन्वनप्पिनवे

भावार्थ—उसकी दोनों जंघाओं का निचला भाग इधर-उधर न घिसे और कम-ज्यादा न रहे अर्थात् बराबर रोम के साथ समाये हुए थे। बाणों को रखनेवाले कवच के सदृश थे। मधु और घी लगाये गये कच्चे बाँस की तरह चिकनेपन के साथ शोभित थे।

[१७७]

पशुंपोन्सेय् किंकिणियुं पाटकमुं पाडलैप्प
नयन्देरिपोन्सिलंबुमुत्तु अरिपेयदु अगनग
इयैन्देलिलार्भणियामै इलं पार्पिन्कून्पुरंपोल्
असैन्दुणर्वु मडिन्दोलियुं अडियिणैपुगलवार्क्के

भावार्थ—विजया देवी के दोनों चरण-कमल शोभायमान हो रहे थे। उनमें सोने से निर्मित पायल थे। उन पायलों में सोने और मोतियों की शब्दायमान परल नामक गोलियाँ डाली गयी थीं। जिनसे चलते समय झन-झन शब्द कर रहे थे। वे पायल चमक रहे थे; उनका प्रकाश आँखों में लगता था। मकर के समान टेढ़ी पीठवाली पायलों से अलंकृत चरण-द्वयों का वर्णन करना अशक्य है। यदि वर्णन करने लगे तो मतिभ्रम हो जायगा।

[१७८]

अरविकयल्सेंकलुनी रगगितलपो लुगिर्सुडिप्
परप्पिन्ट्रि नुतियुयर्न्दु पलिप्परत्तिरण्डु नीण्डु
ओरुक्कुर नेरुंगिप्पोन्नोलियालि अगंकोवि
तरुक्कविन्कोल् मेलिवरल्गल् तेनार्कुं तकैयवे

भावार्थ—कमलालया (लक्ष्मी) की शोभा से शोभायमान विजया की उँगलियों का अग्रभाग मोटा नहीं था। लम्बा और मिला हुआ था। उन उँगलियों में सोने की अँगूठियाँ थीं। उनके नाखून लाल-लाल थे। उन उँगलियों को भ्रमर फूल समझकर मँडराते थे।

[१७९]

एन्बोडु नरंबु इन्ट्रि इलंबू अडरनुक्कि
इन्बुर वरंबुयर्न्दु इरुनिलं उरप्पुलिल
ओन्वदि न्साण् नडप्पिनुमोरुकातमेन्ट्रन्जु
मेन्पंजिच्चीरडियुं मेतक्क विलैविनवे

भावार्थ—उसके सुन्दर पादद्वय ऐसे दीखते थे मानों इनमें हड्डी और नसें न हों। इलवं नामक रुई के समान कोमल थे। सात फुट दूर चलें तो कोशों दूर चलने के बराबर कष्ट पानेवाले मृदुल पादद्वय गौरव-मय एवं चित्ताकर्षक हो रहे थे।

[१८०]

इव्वुरुवु नेंजु एन्नुं किलियिन्मेलिरुन्दिलक्कित्त
अव्वुरु निवैप्पु एन्नुं तुकिलियालवरुत्तित्तुक्
कव्वियत न्नोक्किनाल्कण्विडुत्तु क्कादलनीर-
सेव्विदि न्तेलित्तु आनाक्कामप्पू च्चितरिनान्

भावार्थ—सत्यन्धर राजा, अपरिमित सुन्दरी विजया देवी को अपने मनरूपी चित्र पट में स्मरण रूपी लेखनी के द्वारा सम्पूर्ण अवयवों को चित्रित कर, ध्यानरूपी चिन्तन से नयनावरण हटाकर कामरूपी जल भरता था। फिर भोगरूपी फूलों से सत्कार करते हुए आनन्द लूटता था।

[१८१]

मेय्पेरा एलुत्तुयिक्कुं मललैवायिन्मुरुवल्
तैयलालनेडुन्तडंकण्वलैप्पट्टु सच्चन्दन्
ऐयुरानणंगु एनवे अगत्तु अडक्किक्चेल्लिकन्ट्रान्
मोय्यराक्कलियानै मुलंक्किक्तेनिमिर्तारान्

भावार्थ—हमेशा झगड़े के लिये तैयार रहनेवाले मत्त हाथियों के समान गर्जना करनेवाला एवं भ्रमरों के रोंकार युक्त फूलमालाओं को

पहननेवाला सत्यन्धर महाराजा, अस्पष्ट भाषिणी एवं मन्दहासवती विजया के नयनजाल में फँस गया। भूचलन, नयन स्पन्दन आदि मनुषिनी के स्वाभाविक कृत्यों को देखते हुए भी उसे (विजया) देव स्त्री तुल्य समझने लगा।

[१८२]

वण्डिनं मुगपडा मणिन्दु वार्मदं
उण्डुकुत्तिडु कलिट्रु उलवन्तन्मगल्
पेण्डितं पेरुनलं कडन्दु पेट्रपेर
विडलकोदैक्कु विजयैएन्बवे

भावार्थ—झरते हुए मद जल को पीनेवाले भ्रमरों के झुण्ड से गुंजायमान मत्त हाथियों से युक्त विदेह देश का जो राजा था, उसकी लड़की का नाम विजया था। कली खिलने से विकसित फूल-माला पहनी हुई उक्त रमणी का नाम इसलिये सार्थक है कि वह अन्य नारियों के रूप-लावण्य को एकदम जीत लेती थी।

[१८३]

अरुमणिमरकदत्तु अंगण्नारिय
एरिनिरं पोन्इदल् एन्दु तामरैत्
तिरुमगल् इवल् एनत्तिलग वेण्कुडैप्
पेरुमग न्कोयिलु ल्पेदै वैकुमे

भावार्थ—वह विजया नारियों के तिलक के समान शोभायमान होकर राजमहल की छत्रछाया में विराजमान थी। वह कैसी थी? मरकतमणि की चट्टान से खोद कर निकाली गयी प्रतिमा के समान थी। पद्मा नाम के तालाब में जलती हुई आग के समान चमकने वाली एवं सोने से निर्मित कमल के पत्ते में विराजमान कमलालया लक्ष्मी के सदृश थी।

[१८४]

कलंपुरि अगल् अलगुल् तायर्तव्वैयर्
सिलंपुरि तिरुन्दडि परवच्चेलपवल्
वलंपुरी सलंजलं वलैइयदु ओत्तनल्
कुलंपुरि न्तनैयदु ओर्कोडियि न्नीर्मेयल्

भावार्थ—वह विजया कुल परम्परा के भाग्य से पैदा हुई लता-सी शोभती थी। और कैसी थी? मेखलाभरणालंकृत मर्मस्थान से शोभित पंच प्रकार की मातायें और अपने से बड़े एवं पायल पहनी हुई सुन्दर चरणारविन्द नारियाँ इन सभी लोगों से तारीफ़ पाती थी। जैसे 'सलंजल' नामक शंखराज को वलंबुरि शंखें घेरे हुए हों।

[१८५]

इन अगिल् कोलुबुगै उयिक्कुं ईगुंलल्
मेन्मलक्कोदै तन्मुलैगल्वोगलिन्
मिन् उरुक्कुरुं इडै मेलिय मेल्लवे
कन्नि तन्तिरु नलं कनिन्द देन्बवे

भावार्थ—हलकी फूल-माला से अलंकृत विजया देवी के बड़े-बड़े स्तन अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रहे थे। उसके बाल सुगन्ध को फैलाने वाले 'अकिल' नामक वस्तु के धुए से गरम किये गए थे। विद्युत् के प्रकाश को नीचा दिखाने वाला उसका कमर कृश (छोटा) था। कन्या की अवस्था में भी उसके नारीत्व की परिस्थिति विकसित होने लगी।

[१८६]

मुन्दुनां कूरिय मूरित्तानैयक्
कन्दु कोलकडाक्कलि यानै मन्नवन्
पैन्दोडि प्पासिलै प्परवै एन्दु अल्गुल्
तन्दै माट्टु इसैत्तन न्तनदु माट्रिये

भावार्थ—जिसकी बड़ी भारी सेना हो, अगणित मत्त गज हों इस तरह सम्पन्न सत्यन्धर महाराजा से विजया के पिता से, नये-नये आभरणों को पहनी हुई विस्तृत मर्मस्थान से शोभित एवं लता सदृश विजया के साथ पाणिग्रहण करने का प्रस्ताव रखा।

[१८७]

मरुमगन्वन्ददु मंगै आक्कमुं
अरुमतिच्सूल्च्चियिन् अमैच्चर् एण्णिय
करुममुं कण्डव र्कलत्त र्पानमैयिल्
पेरुमग न्सेर्त्तिना र्पिणैय नालैये

भावार्थ—जमाई का कथन, उसके ऊपर अपनी लड़की का प्रेम, भविष्य की जानकारी एवं विचारशील और अनुभव कला में निपुण अमात्यों का आशय इन सभी जानकारी कारण सहमत माता-पिता ने हिरणी के समान चंचल और अति सुन्दर अपनी पुत्री विजया का सत्यन्धर के साथ विवाह कर दिया।

[१८८]

पोन् अंकोडि अमिर्दु अनालुं पोन्नेडुं कुन्ट्रु अनानुं
अनंगनुक्कु इलक्कमागि अंबु कोण्डु अलुत्तविललार
इनं तमक्कु एम्गुं इल्लार् इयन्दनर् एन्ब मुक्कण्
सिनं तिकलिवडै यिनामुं सेलिवयुं सेन्र्ददोत्ते

भावार्थ—कामबाण से विद्ध सत्यन्धर महाराजा विवाह होने के बाद स्वर्णलता सदृश सुन्दर एवं अमृत स्वरूप विजया देवी के साथ एकरूप (अभिन्न) हो गये। वे दोनों शिव-पार्वती समान मिल गये। कभी भी अलग न होते थे। सदा-सर्वदा मिल-जुलकर रहते थे। उपमातीत होकर काम-सुख भोगने लगे।

[१८९]

कादलालर्कामभूमिक्क दिरोलि यवरुं ओत्तार
मादरुं कलिरनानुं मासुण मकिलिच्च मन्ट्रल्
आदरं पेरुगुकिन्ट्र अन्बिना लन्न मोत्तुं
तीतिला तिलैप्पि नामा न्सेलवमे पेरिदुमोत्तार्

भावार्थ—वृषभ स्वरूप सत्यन्धर और विजया वे दोनों अत्यन्त प्रेम के साथ भोग भोगते थे। उनका भोग कामातुर सर्पों का सा था। दिनों-दिन प्रेम बढ़ते जाने के कारण हंस पक्षी सदृश थे। नयन कटाक्ष विक्षेप के कारण जंगली गाय के समान थे। वे दोनों संपत्ति सुखभोगादि में भोगभूमिजों के समान दीखते थे। वर्तमान काम भोग में भी उन्हीं भोग-भूमि के लोगों के सदृश दिखाई दे रहे थे।

[१९०]

तन्नमक्कर्कादलानु तैयलुं मणन्दा पोलिदल्
पोन्ननालमिर्दमाग प्पुकलवेय् योन्परुगियिट्टान्
मिन्नविर्पूणिनानै वेलकणाक्किकयट्टट्टप्पट्ट
मन्निय मधुविन्वांगिमातरुं परुगि यिट्टाल्

भावार्थ—स्वेच्छापूर्ण प्रेम भरे सत्यन्धर राजा और उसकी पट्टरानी विजया दोनों प्रेम से आलिंगन करते समय, लक्ष्मी सदृश उस विजया के साथ यश के इच्छुक वह राजा अमृतवत् सुखानुभव करता था; ज्योतिर्मय अपने पति को बेलायुध के समान चंचल नयन वाली विजया, नारियों के निमित्त रखा हुआ मधु के समान स्वीकार कर आत्मतृप्ति के साथ भोग भोगने लगे।

[१९१]

पवलवाय् परवै यल्गुल् एन्ट्रिवै पुरुगुं वेलान्
कवलमार्कलिरु पोन्ट्राकातलि करुंबैयोत्ताल्
तवलमदुक्कोदै मादतोमरै प्पूवदाग
उमिलनगैवेलिनानुं ओण्सिरै मणिवण्डोत्तान्

भावार्थ—वेलायुध वाला सत्यन्धर, पन्ना के समान लाल-लाल मुँह, विशाल मर्मस्थान, गन्ना और कमल सी विजया के पन्ना-सा मुँह को चूसते समय कवलाहार ग्रहण करने वाला हाथी सदृश था। विजया गन्ने के समान थी। मधुमय फूलमाला पहनी हुई विजया के मर्मस्थान को चूसते समय बिना कष्ट दिये कमल के मधु को चूसने वाले भ्रमर के समान था।

[१९२]

पलिक्करै प्पवलप्पावै परिसेनत्तिगलुं सायल्
कलिक्कयल्पोरुवप्पोन्ट्रु कडैसिवंदगन्ट्रु कण्णाल्
ओलिक्कविन्कोण्ड कामत्तु ऊलुरु कनियै योत्ताल्
अलित्तयिलिगन्ट्रु वेन्दनंसिरै प्परवैयोत्तान्

भावार्थ—दर्पण के समान साफ़-सुथरा कमरा पन्ना-सी लाल-लाल नारी के प्रतिबिंब से लाल दीखने के समान विजया रानी ने राजा को अपने अधीन बना लिया। मृदुल और सन्तुष्ट कमल मत्स्यवत् लाल और लम्बी आँखवाली तथा प्रकाशमान एवं सुन्दरता से शोभित विजया, सत्यन्धर के लिये आनन्ददायिनी एवं मधुर रसमय फल बन गयी। हमेशा आनन्द प्रदायी और प्रेम सागर में डुबकी लगाने वाला राजा उस मधुर फल के रस को चूसने वाला पंखी (पक्षी) बन गया।

[१९३]

तुरुमलर्प्पिणैयलुं सूट्टुं सुण्णमुं
नरुमलवर्क्कण्णियुं नारुसान्दमुं
अरुनिलत्तमिर्दमुं अखिलुं नावियुं
पेरुनिलं पिणित्तिड प्पेरियवैंगिनार्

भावार्थ—सत्यन्धर राजा और रानी विजया दोनों प्रेम सागर में डूबते हुए आनन्द पा रहे थे। विजया की छातो में फूलों की माला लटक रही थी। माथे पर आभूषण सुन्दर दिखाई दे रहे थे। शरीर पर सुगन्ध चूर्ण लगाये हुए थे। खुशबूदार फूलमाला से सिर के बाल अलंकृत थे। शरीर पर सुगन्ध चन्दन का लेप था। अत्यन्त रुचिकर भोज्य पदार्थों का भोजन करते थे। सुगन्ध सुवास वस्तुओं का उपयोग किया जाता था। बस, इन सारे पदार्थों से पंचेन्द्रियों की भरमार तृप्ति होने के साथ-साथ कामभोग लालसा की असीम अभिवृद्धि होती थी। अतः वे दोनों निरन्तर भोग भोगते हुए आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

[१९४]

तुडित्तलै क्करुंकुलसुरुंबुण्कोदैतन्
अडित्तलै च्चिलंबिनोडु अरवं मेखलै
वडित्तलैक्कण्मल र्वलर्त्त नोक्कोडु
अडुत्तुलप्पुरिदवर् अरिल् इन्बमे

भावार्थ—राजा-रानी दोनों भोग-भोगते समय रानी का पैर राजा के सिर पर लगता था; जिसके पायल की आवाज गूँज उठती थी। इसके सिवाय मेखलाभरण की आवाज भी साथ मिल जाती थी। इस तरह उन दोनों का भोग किसी भी रुकावट के बिना चल रहा था। सिर के काले बालों पर सुगन्ध वस्तुयें लगायी गयी थीं। सुगन्धता के कारण भ्रमरों से गुंजायमान फूल-मालायें भी पहनी हुई थीं। उसकी आँखों के कटाक्ष विक्षेप से प्रेमोन्माद होता था। प्रेम में सरस-विरसता का हाव-भाव दिखाई दे रहा था। अलौकिक भोग के कारण अपने को भूल जाते थे।

[१९५]

इलैकिल् रिलमुलै एलुदुनुण्णिडैत्
तलैवलर्मंदुमल तंयंगु पूंचिकैक्
कुलैमुख क्कोडियोडु कुरुदिवेलिनान्
मलैमुगिन्मारियिन्वैगुमेन्बवे

भावार्थ—रक्तमय वेलायुध वाला राजा सत्यंधर, वर्षाकाल के मेघ की तरह प्रेमवर्षा करते हुए भोग सुख का अनुभव कर रहा था। उस समय विजया के दोनों स्तनों पर आभूषण चमकते थे; कमर खींची हुई लकीर जैसी थी; मधुमय फूलों से सिर के बाल अलंकृत थीं; कर्णाभरणों से मुखकमल जाज्वलयमान था; इन सभी कारणों से राजा, रानी पर एकदम आसक्त होकर अपने को न्योछावर कर रहा था।

[१९६]

पडुतिरै प्पवलवायमुदं मान्दियुं
कोडिवल कुंविमुलै त्तडत्तु ल्वैकियुं
इडियिनुं कोडियिनुं मयंगि यावदुं
कडिमण विकलमैयो क्कंडलि न्मिक्कदे

भावार्थ—राजा और रानी का अपरिमित भोग पारावार से भी बड़ा समझा जाता था। उस समय राजा समुद्र के पन्ना के समान जिसका मुँह हो ऐसी सुन्दर विजया के मुखामृत का पान करता था; लतासी कमर पर लगे स्तनों को प्रेम से छाती पर आलिंगन करता था; आटा कूटने का सा भोग होता था जिससे शरीर और मन को थकावट हो जाती थी।

[१९७]

कप्पुर प्पसुंतिरै कदिर्सेय् मामणिच्
सेप्पोडु सिलतिय रेन्दत्तीविय
तुप्पुमिलन्दु अलमरुं कामवल्लियुं
मोप्परुं पावै पोन्द्रु रैयुमेन्बरे

भावार्थ—विजया और सत्यंधर दोनों पाँचों इन्द्रियों को सन्तुष्ट करने वाली वस्तुओं को भोग रहे थे। विजया भोग सुख में कामलता के समान उपमातीत होकर चमक रही थी। भोग-भोगते समय सेविकायें कपूर और हरे-हरे पानों को चमकदार एवं माणिक्यमय पात्रों में लेते हुए इन्तजार के साथ खड़ी रहती थीं।

[१९८]

मण्णगं कावलि न्वलुक्कि मन्नवन्
पोण्णरुं कलत्तोडु पिणैन्द पेररुल्
विण्णगं इरुलकोल विलंगु वेण्मति
ओण्णिर वुरोणियो डोलित्त दोत्तदे

भावार्थ—भू-भाग की महिमा के साथ रक्षा करनेवाला राजा सत्यंधर अपने कर्त्तव्य से च्युत होकर नारियों के तिलक स्वरूप विजया महादेवी के साथ काम भोग में अपना समय व्यतीत करता था। यह कृत्य ऐसा प्रतीत होने लगा कि आकाश मार्ग में चमकने वाला चन्द्र उस आकाश मार्ग को अन्धकार से आच्छादित कर रोहिणी के मोह में गिर कर तिरोहित होने के बराबर था।

[१९९]

कुंकुम त्तोलिवानुं कोलुंकय र्कण्णिनालुं
तेगियकातलवेललं तणप्परप्परुगु नालुल्
तिंगलवेण्कुडै यिनार्कुत्तिरु विलुक्कुट्रवण्णं
पैंकदि र्मदियिलतेल्लि प्पकन्र्दु एडुत्तु रैत्तुमन्ट्रे

भावार्थ—मंगलमय कुंकुम से शोभित एवं भुजबल पराक्रम वाला राजा सत्यंधर, सुन्दरी और मोननयनी विजया के साथ अपरिमित काम-भोग सुख को भोगते हुए अपना जीवन बिता रहा था। इसके कारण चन्द्रमा के समान सफ़ेद छत्र-छाया में विराजित राजा को धन-धान्यादि संपत्ति अपरपक्ष चन्द्रमा के समान दिनोंदिन घटती जा रही थी। इसके बीच में जीवन्धर कुमार का चरित्र प्रस्तुत किया जायगा।

[२००]

कलिरना नमैच्चर्तम्मुलकट्टिय कार नेन्बान्
ओलिरुवा लतडक्कैयानुक्कुयिरैन ओलुगुंनालुल्
पिलिरुवार्मुरसि न्याट्टि प्पेरुं सिरप्पियट्टि वेन्दन्
वेलिरिला क्केलिवयानै वेरु कोण्डिरुन्दु सोन्नान्

भावार्थ—मत्त गज के समान जो सत्यंधर राजा था, उसके अमात्यों में काष्ठांगार नाम का एक मंत्री था। वह प्रकाशमान तलवार से शोभित राजा को प्राण के समान सेवा करता था। उसकी सेवा से सन्तुष्ट राजा उसके हाथ में छत्र और मुकुट के अलावा राजकोय सारे अधिकारों को सभी लोगों के सामने दे दिया था। यह कार्य ऐसा मालूम होता था कि काष्ठांगार को हितचिन्तक समझा गया था और निमित्तक नामक व्यक्ति को अहित चिन्तक समझा गया था। तदनन्तर राजा उस काष्ठांगार को अलग बुलाकर इस तरह कहने लगा।

[२०१]

असैविला प्पुरवि वेललत्तरिंजयन्कुलत्तुल्तोन्ट्रि
वसैयिलाल्वरत्ति न्वन्दाल् वान्सुवै यमिर्दमन्नाल्
विसैयैप्पिरिदलाट्टे न्वेन्द न्नीयागि वैयं
इसैपट क्कात्तलवेण्डु मिलंगुपूण्मार्ब एन्ट्रान्

भावार्थ—जाज्वल्यमान रत्नाहार पहिने हुए दोस्त, आप मेरे बदले राजा होकर कीर्त्तिमान बनने के साथ-साथ प्रजापालन करना, क्योंकि जिसकी सेना में अपरिमित घोड़े हों ऐसे अरिंजय के राजकोय परम्परा में उदित निर्दोष एवं पूर्वजन्म पुण्य प्रभाव से प्राप्त रानो विजया को छोड़ कर मैं एक क्षणमात्र भी अलग नहीं रहना चाहता। उसके साथ रहकर काम भोग सुख में जोवन बिताना आवश्यक एवं अहोभाग्य समझता हूं। अतः राज्यभार को सम्हालना अत्यावश्यक है। इस तरह राजा सत्यंधर अमात्य काष्ठांगार से कहने लगा।

[२०२]

अण्णलतानुरैप्पक्केट्टे अडुकलिट्टे रुत्तिनिट्ट
वण्णप्पू दविसुतन्नै आमलिमेलिट्टदोक्कुं
कण्णगल् आलं कात्तलेनक्केन क्कमलुं कण्णि
मण्णगं वलरुं तोलान्मरुत्तु नी मोलियलेन्ट्रान्

भावार्थ—काष्ठांगार की इच्छा थी कि राज्य पदवी मिले। राजा का वचन उसकी कामना के अनुकूल था। अतः राजा की बात को सुनकर काष्ठांगार को बड़ा आनन्द हुआ। फिर भी वह राजा से नकली विनती-पूर्वक कहने लगा कि हे प्रभो! मैं इस पद के लिये लायक नहीं हूँ। जो भार मत्तगज के ऊपर लादा जा सकता है उसे एक कुत्ते के ऊपर रखा जाय तो वह कैसे ढो सकता है? यह कार्य उसी के अनुसार ही है। भू-वलय का अधिपति राजा, काष्ठांगार की बात सुनकर बोला कि 'तुम मेरी बात को मना मत करना' स्वीकार कर लेना।

[२०३]

एलुतरु परुदिमार्ब निट्रेन इसैत्तलोडुं
तोलुदडि पणिन्दु सोल्लुं तुन्नवर्त् तोलैत्तवेलोय्
कलिपेरुं कादलाल्कण्कलिनलं पेरुगवैयं
पलिपडा वकैयिल्काक्कुं पडुनुगंपूण्पलेन्ट्रान्

भावार्थ—उदय सूर्य के समान प्रकाशमान वक्षस्थल से अलंकृत राजा सत्यंधर ने काष्ठांगार से अपनी परिस्थिति को विस्तार से बताया। उसे सुनकर काष्ठांगार राजा के चरण स्पर्श के साथ नम्रता से कहने लगा कि प्रभो, आप शत्रुओं को वेलायुध से जीते हुए महान् व्यक्ति हैं। आप अपनी पत्नी के साथ सानन्द भोग भोगते रहियेगा। मैं किसी तरह की न्यूनता के बिना इस राज्यभार को सम्भालूँगा। आप निश्चिन्त रहें।

[२०४]

वलंबुरि पोरित्त वण्कै मतवलि विडुप्परगकिक्
कलन्दन न्सेनै कावल्कट्टियं कारनेन्न
उलंतरु तोलिनाय् नी योरुवन्मेलकोट्रं वैप्पिन्
निलं तिरुनींगु मेन्ट्रो निमित्तकन्नेरियिलसोन्नान्

भावार्थ—सत्यंधर महाराजा के शंखलांच्छन से चिह्नित अपने हाथ से इशारा करने मात्र से काष्ठांगार सारी सेना को अपने अधीन बना लिया। निमित्तक नामक अमात्य इस बात को जान कर नीतिशास्त्र के आधार से कहने लगा कि पत्थर के खम्भे के सदृश भुजबल पराक्रमी हे राजन्! आप राज्य की सत्ता को किसी अन्य व्यक्ति के हाथ में सौंपेंगे

तो भू-देवी और श्रीदेवी दोनों आपसे अलग हो जावेंगी। आप पीछे पछतायेंगे।

[२०५]

एनक्कुयिरेन्नप्पट्टान् एन् अलाल् पिररै इललान्
मुनैत्तिरं मुरुविक मुन्ने मोय्यमर्पलवुं वेन्ट्रान्
तनक्कुयान्सेय्व सेय्देन्तान्सेय्व सेय्गयोन्ट्रु
मनक्किनामोलियवेण्डा वालिय रोलिग एन्ट्रान्

भावार्थ—सत्यंधर महाराजा, निमित्तक नाम के अमात्य की बात सुन कर कहने लगा कि "काष्ठांगार मेरे जीवन के समान हैं; वह मेरे को छोड़कर दूसरों पर प्रेम नहीं करता" इसके पहले अपनी कई लड़ाइयों में शत्रुओं को जीत कर नाम कमाया है। इसलिये उसका जो कुछ सत्कार करना था उसे किया। वह मेरे प्रति जो कुछ करना चाहता है उसे खुशी से करने दो, अतः तुम मेरे मन में क्लेश पैदा हो ऐसी विद्वेष की बातें मत कहना। तुम अपना काम देखो। इस पर ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है।

[२०६]

कावल कुरिप्पन्ट्रेनुं करुममोदरुलिक्केण्मो
नावल सॊल् कोण्डाक्कुं नन्कलाल् तींगुवारा
पूवल कॊडियनार्कण् भोगमे कलुमिमेलुं
पावमुं पलियु मुट्रार्पर्पलकॆलितेन्ट्रान्

भावार्थ—राजा की बात सुनकर 'निमित्तक' नामक अमात्य बोला—हे प्रजापालक, आपको मेरी बात सुनने की इच्छा न हो, फिर भी मेरी विचारधारा को सुनने की कृपा कीजियेगा। अमात्य के वचन सुननेवालों का हित ही होगा, अहित कदापि नहीं हो सकता। (अमात्य ने कहा था कि राज्य की सत्ता को किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ में देना अनुचित है, इस बात को राजा ने स्वीकार नहीं किया था) विकसित फूलों से शोभायमान लतासी कामिनियों के भोग सुख ही शाश्वत हैं। इस तरह के भोग सुख पर लालायित होकर पाप और बदनाम के पात्र बने हुए कई व्यक्ति आपके पहले भी हो चुके हैं। उन लोगों का वृत्तान्त सुनाता हूँ। सुनने की कृपा कीजियेगा।

[२०७]

पेरुं पेयर्पिरमन् एन्नुं पोडिनाल्पेरिय नीरान्
अरुबिय मुलैयिनालुक्कणिमुगं नान्गु तोन्ट्रु
विरुंबियांगवलै येय्दान् विण्णगमिलन्ददन्ट्रित्
तिरुन्दिना किन्ट्रु कारुं सिरुसोललाय् निट्रदन्ट्रे

भावार्थ—महत्वपूर्ण तप के माहात्म्य से ख्याति प्राप्त ब्रह्मा नाम का व्यक्ति, सुन्दर एवं सुडौल स्तनभार से शोभित 'तिलोत्तमा' नाम की देवदासी के ऊपर मोहित हुआ। वह नर्तन करती हुई जिस दिशा में जाती थी, उस दिशा पर अपने गर्दन को मोड़ने के बदले एक-एक करोड़ वर्ष के तप को नष्ट कर हरएक दिशा में मुख की सृष्टि कर डाली। इस तरह चारों दिशाओं में चार मुख की सृष्टि कर लेने पर भी उस तिलोत्तमा को प्राप्त कर नहीं सका। इस मोह लालसा के कारण उसे अपने देवलोक सुख को भी तिलांजलि देनी पड़ी। साथ ही साथ साढ़े तीन करोड़ वर्ष के तप को भी खोना पड़ा। अलावा इसके आज तक उसकी बदनामी ज्यों की त्यों मौजूद है।

[२०८]

कॅमलक्कातल्वेलिक्कण मलैयरैयन्मंगै
मॅमलक्कॉदैपागंकोण्डदे मरुवदागक्
कोयंमलक्कॉन्ट्रै मालै क्कुलिर्मदिक्कण्णियार्कुप्
पेयंमल रलंगलमार्ब पेरुंपलियायिर्ट्रन्ट्रे

भावार्थ—छाती पर फूलमाला से अलंकृत हे राजन्, पर्वतराजा की पत्नी का नाम है मेना। उसकी प्यारी पुत्री पार्वती के नाम से प्रसिद्ध है। उस पार्वती को महादेव ने अपने वामभाग में रख लिया। भगवान के रूप में पूजे जानेवाले महादेव स्त्री के मोह से पतित हो जाने के कारण आज तक वह महाशय बदनामी पाता आ रहा है।

[२०९]

नीनिर वण्णनन्ट्रु नेडुंतुकिलकवर्न्दु तंमुन्
पानिर वण्णनोक्किर्पलियुडै तेन्ट्रु कण्डाय्
वेनिरत्तानै वेन्दे विरिपुनट्रोलनैयाट्रुट्
कोनिर वलैयिनार्क्क क्कुरुन्दव नोसित्तदेन्ट्रान्

भावार्थ—जाज्वल्यमान वेलायुधधारी सेनावाले राजन्, नीलवर्ण वाले गोपाल ने कई गोपिका स्त्रियों का वस्त्रापहरण किया था। उसे अपने भाई बलदेव को देख लें तो बदनाम होगा; इस डर के मारे खुद चढ़े हुए पेड़ की डालियों को तोड़कर नदी के पानी में गिरा दिया था; जिससे नदी में नंगी रहने वाली गोपिका स्त्रियों को वस्त्र मिल जाय। यह उसका खेल था।

[२१०]

काममे कन्ट्रि निन्ट्र कलुदै कण्डरुलिनाले
वामना सेन्ट्रु कूडि वरुन्दिनी रेन्ट्रु वैयत्
तीमंसेर्मालै पोल विलित्तिडप्पट्ट दन्ट्रे
नाम वैट्रडक्कै वेन्दे नामिदु तेरियि नेन्ट्रान्

भावार्थ—शत्रुओं के भयोत्पन्न वेलायुधधारी हस्तवाले प्रभो, एक गधा कामवेदना से तड़प रहा था। उसे देखकर बुद्ध को करुणा आयी। उस वेदना को तृप्त करने के लिये बुद्ध ने गधिया का रूप धारण किया और गधे की कामवेदना शान्त की गयी। उस समय गधे से बुद्ध का कहना यह था कि इस अल्प कामभोग के लिये तड़प कर क्यों इतनी वेदना पायी? बुद्ध के कथन पर विचार किया जाय तो यह कामभोग श्मशान में शवों के ऊपर डाली गयी फूलमाला के सदृश है।

[२११]

पडुपलि मरैक्कलामो पंजवरन्ट्रु पेट्र
वडुवुरै यावर्पेर्रप्पार वाय प्परै यरैन्दु वूट्रि
यिडुवदे यन्ट्रि प्पिन्नु मिलुक्कुडैत्तम्म काम
नडुवु निन्ट्रुलग मोंब नललदे पोलु मेन्ट्रान्

भावार्थ—आगे निमित्तक का कहना यह था कि कामभोग से होने-वाले अपवाद को कौन छिपा सकता है? पहले के जमाने में पाँचों पाण्डव एक ही स्त्री के साथ सम्बन्ध रखते थे; इस तरह का अपवाद आज तक चलता आ रहा है। उसे कोई रोक नहीं पाता। इस कामतीव्रता के कारण होनेवाला जो कुकृत्य है, उससे इस भव में अपवाद तो होता ही है; अलावा इसके परभव में भी नरकादि दुःखों को भोगना पड़ता है। अतः

माध्यस्थ भाव के साथ रहकर प्रजापालन करना अत्यन्त आवश्यक है। इस तरह अमात्य ने उदाहरण के साथ सविस्तार सम्बोधन किया अर्थात् खूब समझाया।

[२१२]

आररि विकलद ल्सेलला वायिरं सॅंगणानुं
कूररि वुडैय नोरार्सोर्पोरु ल्कोण्डु सेल्लुं
पेररिकुडैयै नीयुं पिणैयनाट् कवलं सेययु
मोररिवुडैयै येन्ट्रा नुरुत्तिर दत्तनेन्बान्

भावार्थ—राजा ने निमित्तक का सम्बोधन ध्यान से सुना, परन्तु उसे स्वीकार नहीं किया। इस हालत को देखकर 'रुद्रदत्त' नाम का एक अमात्य था वह बोल उठा; हे राजन् कोई भी दोष न दे सकें ऐसे विशेषज्ञ एवं सहस्रनेत्र जो इन्द्र हैं वे भी बुद्धिमान अमात्यों की बातें सुनकर तदनुसार चलते हैं। परन्तु आप अमात्य निमित्तक की बात पर अनादर दिखा रहे हैं। अलावा इसके हिरणी के समान जो विजयादेवी है उसको दुख देने योग्य एकेन्द्रिय (याने इन्द्रिय के एकमात्र कामभोग में लगानेवाले) हो गये हैं। यह सर्वथा अनुचित है।

[२१३]

अलन्दु तां कोण्डु कात्त वरुतव मुडैय नोरार्क्
कलन्दन भोगमेल्ला मवरवक्र्कट्टॅं नाले
यलन्दन वालु नालु मदुवेन क्कुरैय लेन्ट्रान्
विलंकोलि मणिक ल्वेय्न्दु विडुसुड रिमैक्कुं पूणान्

भावार्थ—अमात्य निमित्तक के कहे गये नीतिप्रद वचनों को प्रकाशमय रत्नों से अलंकृत राजा सत्यन्धर सुनकर मंत्री से कहने लगा कि हरएक जीव के जन्म लेते समय ही अपने-अपने भाग्य के (पुण्य-पाप) अनुसार सुख-दुख निश्चित हो जाते हैं। बाद में कुछ भी बदलते नहीं हैं। अतः आपको मैं अनित्यता के बारे में उपदेश देने की कोई जरूरत नहीं है। हरएक को अपने भाग्य के अनुसार भोगना ही पड़ेगा। इसमें चिन्ता करने की कोई बात नहीं है और चिन्ता करने से रुकनेवाला भी नहीं है।

[२१४]

मूरित्तेन्दारिनाय्नी मुनियिनु मुरुदिनोक्किप्
पारित्तेन्ट्रुरुम नुण्णुल्वलक्कदु वादलकण्डे
वेरित्तें कोदैमार्दविरुन्दुनक्काक विन्बं
पूरित्तेन्दिलैय कोंगै पुणर्गयान् पोवलेन्ट्रान्

भावार्थ—राजा की बात सुनकर मंत्री निमित्तक बोलने लगा कि मधुमिश्रित फूलमाला से अलंकृत राजन्! अमात्य का कर्तव्य यह है कि धर्मशास्त्र के अनुसार भवितव्य के विषय में कूट-कूटकर प्रकाश डालना, इसी कार्य को मैंने किया है। मगर आपको मेरी बात रुचिकर नहीं लगती। जो होना है वह होगा ही। "बुद्धिः कर्मानुसारिणो" अर्थात् बुद्धि कर्म के अनुकूल ही होती है। उसे कोई रोक नहीं सकता। परन्तु पुरुषार्थ की बड़ी आवश्यकता है, उसे आप करना नहीं चाहते। अतः आप फूलमाला से शोभित नारी (विजया) के सुन्दर अवयवों के आकर्षण में मुग्ध होकर शारीरिक भोग सुख भोगते रहियेगा। मना नहीं।

[२१५]

इनमा मेन्ट्रु रै प्पिनुमेतमेणान्
मुनमा कियपा न्मैमुलैत्तेललार्
पुनमा मलर्वेय् नरुंपुं कुललाण्
मनमा नेरियो डिय मन्नवने

भावार्थ—सत्यन्धर महाराजा, चमेली आदि सुगन्धित फूलों के कारण शोभित केशों से अभिराम विजया की सुन्दरता से मुग्ध हो जाने से अपने कर्तव्य से च्युत हो गया था। इसका कारण यह है कि उसके पुराकृत पापों का उदय ही समझना चाहिये। राजन्, आपका यह मोह पहले कहे गये देवशास्त्रों के अन्दर तिरस्कृत मोह के तुल्य है। इतना समझाने पर भी आप सुनते नहीं है। अपनी जिद्दी पर अड़े रहते हैं।

[२१६]

कलैया र्तुंगिलें दलकुलुं कादिर्सूल्
मुलैया र्तंटमुं मुनियादु पडिन्
तुलैया त्तिरुवि न्नमिर्दुण्डोलिसेर्
मलैया र्मंणिमा र्पन्मकिलन्दनने

भावार्थ—सत्यन्धर महाराजा प्रकाशमय सुन्दर वक्षस्थल से शोभायमान होता हुआ, विजया महादेवी के मेखलाभरणादि से अलंकृत मर्मस्थान, जाज्वलयमान मोती की माला से चमकने वाला स्तनभार इन सबको स्पर्श करने से तृप्ति न होने के कारण बार-बार आलिंगन करता हुआ जवानी के भोग में रमता रहा। उन्हें दिन-रात का पता नहीं होता था। दुनियाँ और राज्य के सारे विषयों को भूल जाता था। भोग के सिवाय कोई दूसरी चीज नजर नहीं आती थी। इस तरह अनवरत बिना विश्राम के भोग भोगते हुए समय बिताता था।

[२१७]

विरिमा मणिमालै विलंगु मुडित्
तिरुमा मणिसिन्दु तिलैप्पिनरा
येरिमा मणिमार्बनु मेन्दिलैयु
मरुमा मणिनाकरिना यिनरे

भावार्थ—जाज्वलयमान रत्नों से अलंकृत वक्षस्थल युक्त राजा और रानी दोनों भरमार भोग भोगते थे। ऐसे भोग सुख में तल्लीन होते समय रत्नमालायें, सिर के चूड़ामणि आदि आभूषण चारों ओर बिखरे पड़े थे। उन्हें देखने से ऐसा लगता था मानों नागदेवताओं के भोग से बिखरा हुआ नागलोक हो।

[२१८]

नरवार्न्द दोर्ना किलन्तामरैवा
युरवोलद तोरोण्मणिपो न्ट्रुरवो
नरवाक्कियविन्बममर्न्द विरुट्
करैवे र्कणिनालकनवुट्रनले

भावार्थ—इस तरह नाग देवताओं के समान भोग भोगनेवाले सत्यन्धर एवं विजया दोनों प्रेम सुख में मग्न होकर नींद ले रहे थे। ऐसे रात के समय मधुमय कमल के अन्दर गिरे हुए स्वर्णमय मोती के समान 'जीवक' ने विजया के गर्भ में अवतार लिया। उस समय वेलायुध के सदृश लालिमामय नेत्रों से शोभित विजया से प्रेमसुख के विघातक एवं भयंकर स्वप्न देखे गये।

[२१९]

पंजियडिप्पव लत्तुव र्वायव
डुंजिमिडैक्कन मून्ट्रवै तोन्ट्रलि
नंजि नडुंगिन लायिलै यायिडै
वेंचुडर्तोन्ट्रि विडिन्ददै यन्ट्रे

भावार्थ—लाल रुई के समान चरणारविन्दों से शोभित पन्ने के सदृश मुखकमल वाली विजया महादेवी से भोगसुख के साथ नींद लेते समय तीन स्वप्न देखे गये। वे तीनों स्वप्न बार-बार मन में आकर दुख दे रहे थे। ऐसे ही प्रातःकाल के समय पूर्व दिशा में भानु उदय हुआ। अर्थात् दिन निकल आया। इसका मतलब यह है कि प्रातःकाल में सुबह होते-होते विजया ने स्वप्न देखा। प्रातःकाल स्वप्न झटिति फलदायी है।

[२२०]

पण्केलु मेल्विरलार्पणै त्तोलितन्
कण्कुलुउ च्चेय्दु कलैनल तांगि
विण्पोलि पूमलै वेलकदि नेमिय
वण्पुक लमालडि वन्दनै सेय्दाल्

भावार्थ—बाँस के समान भुजवाली विजया ने वीणावाद्य में अभ्यस्त अपनी कोमल उँगलियों से मुखकमल को साफ किया। तथा बढ़िया साड़ी पहनकर देवलोक देवताओं के द्वारा फूल की वर्षा से पूजनेवाले एवं पाप कर्मों को विनाश करनेवाले यशोमय भगवान जिनेन्द्रदेव के मन्दिर में जाकर उनके चरणारविन्द में भक्ति परवशता के साथ पूजा-अर्चना की।

[२२१]

इंपरिलानरुं पूवोडु सान्दु कोण्
टेंपेरुमानडि वकेय् दुकैन्ट्रे त्ति
वेंपरिमानेंडुं तेमिगु त्तानैयत्
तंपेरुमानडि सार्न्दन लन्ट्रे

भावार्थ—विजया महादेवी अरहन्तदेव के चरणों में सुगन्ध चन्दन और फूलों से पूजा करते समय बड़ी भक्ति भावना के साथ प्रार्थना करने

लगी हे भगवन्, मेरे से समर्पण करनेवाली वस्तुयें आप से स्वीकार करने योग्य हो जायँ; इस तरह की पूजा करने के बाद घर वापस आयी। अति-वेग घोड़े की सेना, अत्युन्नत रथों की सेना तथा अन्य सेनाओं से शोभित अपने पतिदेव के चरणों में नमस्कार करने लगी।

[२२२]

तानम र्कादलि तन्नोडुमावलि
वानवर्पोन्मकि लकुट्रपि न्वार्नरुं
तेनेन प्पालेन च्चिलल्लमि दूट्रेनक्
कानम र्कोदै कनामोलिगिन्ट्राल्

भावार्थ—महान् शक्तिशाली सत्यंधर महाराजा अपनी इच्छा के अनुकूल मिली प्रेमिका विजया देवो के साथ देवों के समान भोग भोगता रहा। सुगन्धमय प्रेमिका विजया ने मधु, दूध और अमृत सदृश फलदायी प्रातःकाल देखे गये तीनों स्वप्नों को अपने पतिदेव के सामने प्रस्तुत किया।

[२२३]

तोत्तणि पिण्डि तोलैन्दर वीलन्द देण्
मुत्तणि मालै मुडिक्किड नाक
वोत्तद न्ट्रालवलि येमुलै योंगुपु
वैत्तदु पोल वलर्न्ददै यन्ट्रे

भावार्थ—एक अशोक वृक्ष, डालियाँ टूटने के साथ समूल नीचे गिर पड़ा है। उसके नीचे पौधे लगाये गये हों ऐसा एक छोटा-सा अशोक का पेड़ उगा है। उस छोटे से अशोक पेड़ पर मणिमुकुट है, उस पर आठ मोतियों की मालायें लटक रही हैं।

[२२४]

वार्कुलै विलिलड मामुडि तूक्कुपु
कार्केलु कुन्ट्रनै यान्कन् विन्नियल्
पार्केलु नूलिवधि यार्पय न्ट्रान्नेरिन्
तेर्कुलै याम लेडुत्तुरैक्किन्ट्रान्

भावार्थ—मेघाच्छन्न पर्वत सदृश सत्यन्धर महाराजा, स्वप्न शास्त्र के आधार से स्वप्नों का फल जानकर मुकुट से अलंकृत सिर हिलाकर उन तीनों में से जो अच्छे फल देने वाले थे, उन स्वप्नों का फल कहने लगे।

[२२५]

नन्मुडि निन्मग नानरु मालैग
लन्नव नालम रप्पडु न्देवियर
नन्मुलै निन्मग नाक्कम दामेनय्
पिन्नदना र्पय न्पेसलन्विट्टान्

भावार्थ—हे प्रिये, तुमने स्वप्न में मणिमुकुट देखी थी न, उसका फल यह है कि तुम्हें एक सत्पुत्र होगा। आठ मालायें यह बतलाती हैं कि वह अतिसुन्दर आठ रमणियों से विवाह करेगा। उगे हुए छोटे पेड़ का मतलब यह है कि वह पुत्र समृद्धिशालो रहेगा। जो पेड़ समूल गिर पड़ा है, उसका फल कहना छोड़ दिया था।

[२२६]

इट्टदनार्पय नैन्नन बेन्दिलै
युट्टदि न्नेयिडै यूरेन क्केन्ट्लु
मट्ु रैयाडल लाय् मणि मानिलत्
तट्टदो कोंदैयि पोंकोंडि सोन्दाल्

भावार्थ—विजया ने पूछा पतिदेव, अशोक वृक्ष टूट कर समूल नीचे गिर पड़ा है न, उसका फल क्या है? उसके जवाब में राजा कहता है कि एक भयंकर आपत्ति अभी मुझे आने वाली है। सोने की चूड़ियाँ पहनी हुई विजया यह बात सुनकर कुछ भी कह नहीं सकी; जमीन पर टूटकर गिरी सुन्दर माला-सी नीचे गिर कर मूर्च्छित हो गयी।

[२२७]

कावि कडन्द कण्णीरोडु कारिकै
यावि नडन्ददु पोन्ट्रणि मालकय्
पावि योनावि वरुत्तुदि योवेनत्
देवियै याण्डकै सेन्ट्ु मेय् सान्दान्

भावार्थ—कुवलैनाम के फूल के समान जो आँखें थीं; उनसे अश्रुधारा बह रही थी। ऐसी शोकाकुल विजया शोभाविहीन होती हुई मृत-सी पड़ी हुई थी। सत्यन्धर महाराजा फौरन उसके पास जाकर कहने लगा कि हे पापिनी, क्यों मेरी जान ले रही है? इस तरह कह कर उसे आलिंगन करने लगा।

[२२८]

तण्मलर्मार्पुरत्तलेइयि नानवल्
कण्मलर्त्ता लकन विन्निय ल्मेययेनुं
पेण्मय मोपेरि तेमडवाय् क्केनप्
पण्पुरैयार्पर वित्तुयर्त्तीत्तान्

भावार्थ—विजया ठंडी छाती पर प्रेमपूर्वक आलिंगन करने से आँख खोल कर देखने लगी। उस समय सत्यन्धर बोल उठा कि स्वप्न के फल को सच समझ कर रोने को स्त्री बुद्धि तुम्हें आ गयी है। तुम बेकार रो रही हो! अब क्या हो गया। कुछ तो नहीं हुआ। फिर रोने-चिल्लाने एवं छाती कूटने की क्या आवश्यकता है? शान्ति से रहो। इस तरह समाधान कर उसका दुःख निवारण किया।

[२२९]

कादल न्कादलि नार्कलित्ताय् मलर्क
कोदैयं कोबनै यार्तं कुलांतोलत्
तातुगु तामणिन्दगिलिवम्मिय
पोतुगु मेललणै प्पूमग ल्सेर्दाल्

भावार्थ—विजया अपने प्रेमी जो पति हैं उसकी प्रेमपूर्ण अमृतवाणी से सन्तुष्ट हुई। फूलमाला से अलंकृत एवं लता-सी सखियाँ विजया को बड़े आदर के साथ प्रणाम करने लगीं। तदनन्तर मकरन्द से भरपूर फूल-माला पहनी हुई लक्ष्मी सदृश विजया फूल की पंखुड़ी से भरी बिस्तर पर सोने के लिये जाने लगी।

[२३०]

पण्कनियप्परु किप्पय नाडकं
कण्कनिय ककवर्न्दुण्डु सिन्नालसेल
विण्कनियक्कवि न्वित्तिय वेर्कणि
मण्कनि प्यान्वल रत्तल किन्ट्राल्

भावार्थ—विजया देवी मधुर गाने को कानों से सुन कर खुश हो रही थी। आनन्द देने वाले नाटकों को देख कर पति-पत्नी दोनों खुश हो रहे थे। इस तरह मजे में कुछ दिन चल रहा था। देवताओं से प्रकाशित सुन्दर वेलायुध सदृश नयनाभिरामिनी देवी विजया के गर्भ में जीवक बढ़ने लगा। जिससे उसके शरीर पर थकावट आने लगी।

[२३१]

करुंबार्तोण्मुत्तं कलन्ट्रु सेव्वाय् विलत्तुक्कण्पसलैपूत्तकामं विरुंबार्मुलैवकण्करिन्दुतिंग लवेण्कदिक लपेय् तिरुन्द पोर्सेप्पे पो लरुंबालपरन्दु नुसुप्पुं कण्णि न्पुलनायिर्ट्रायन्द वनिच्चमालै पेरुंभारमाय् प्पेरिदु नैन्दुनर्सूर्सलंजलं पोनंगै नलन्दोलैन्दते

भावार्थ—गन्ने का सा जो भुज था वह पतला हो गया था; जिससे मोती की मालायें नीचे गिरने लगीं। मुँह सफ़ेद होकर फीका पड़ने लगा। आँखों की चमचमाहट गायब होने लगी। कामदायिनी स्तनभार का अग्र-भाग काला हो गया; जिससे चन्द्रमा की कान्ति से शोभित सोने से निर्मित कलश के समान दीखता था। कमर बढ़ने लगी। फूलमाला उठाने में भी कष्ट होता था। इतनी असक्ति आ गयी। 'सलंजलं' नामक शंख के समान विजया की सुन्दरता बिगड़ने लगी।

[२३२]

तूबुडै नेडुंगे वेलन्दुट्रिय वेलिलले पोर्
ट्रेंबुडै यलंगन्मार्विट्रिरुमगन्ट्रु मियनाग
वोंपडैयोन्ट्रुं सेप्पाडिरु मगलोलित्तु नींग
वांपुडै तेरिन्दु वेन्दर्करिवेनु ममैच्चन्सोन्नान्

भावार्थ—सूँड़वाले हाथी से खाये गये कबीट फल के समान भीतर की बीमारी से दुखित एवं हार पहिने हुए सत्यन्धर महाराजा राज्य से

पतित होकर एकाकी रह गये। लक्ष्मी देवी बिना कहे तिरोहित हो गयो। अतः जो करना है उसे समझाने के लिये बुद्धिरूपी मन्त्री शिक्षा देने लगा।

विशेषार्थ—सत्यन्धर महाराजा जब तक भोगवासना से वशीभूत होकर अपनी पत्नी के साथ भोग भोगते हुए मस्त रहता था तब तक उसे किसी तरह की चिन्ता नहीं रहती थी। जब अपनी पत्नी विजया के स्वप्नों में से एक स्वप्न यह था कि अशोकवृक्ष समूल गिर कर नष्ट हुआ था। सत्यन्धर ने इसका फल स्वप्न शास्त्रों के आधार से जान लिया कि यह अपनी अन्तिम अवस्था को सचेत करती है। फिर वह सोचता है कि जब हम काष्ठांगार के हाथ में राज्य देने लगे तब अमात्यों ने हमें शास्त्राधार के साथ बहुत कुछ समझाया था; वह यह है कि दूसरों के हाथ में राज्य देना हानिकारक है। आज मित्र बना हुआ व्यक्ति कल शत्रु बन सकता है। अतः आप कृपा कर राज्य मत दीजियेगा। उस समय मोह ने मुझे अंधा बना दिया था। उन लोगों की बात कड़वी सी लगती थी। अब क्या करूँ? चिन्तित होने से कोई फायदा नहीं है। कर्म सिद्धान्त की अपेक्षा से देखा जाय तो सब कुछ कर्माधीन है। फिर भी पुरुषार्थ तो करना ही चाहिये। अब क्या करूँ? समझ में नहीं आता। कम-से-कम अपने और अपनी सन्तति के जीवन बचाने के लिये कोई-न-कोई उपाय ढूँढना आवश्यक है। वास्तविक बात यह है कि जो व्यक्ति अशरण हो गया हो जिसे सिर पर अन्तिम अवस्था की आपत्ति आ गई हो उसे असीम चिन्ता होना स्वाभाविक है। यही दशा अब सत्यन्धर की हो रही है। सिर के ऊपर आपत्ति आने के बाद पश्चात्ताप करते हुए रो रहा है कि न जाने हमारी हालत क्या होगी? निरुत्तर होकर तड़प रहा है।

यहाँ हर एक व्यक्ति को समझना यह है कि इस सत्यन्धर राजा की कथा से हमें अच्छी शिक्षा लेनी चाहिये। ऐसी हालत अपने को भी हो सकती है। अतः पीछे पछताने की अपेक्षा पहले ही सोच समझकर काम करना अत्यन्त आवश्यक है।

[२३३]

कातिवे न्मन्न तंगलकण्णेन वैक्कप्पट्ट
नीतिमेर्सेर रेट्राय् नेरियला नेरियैच्चेन्र्दु
कोतियल् काममेन्नुं मधूविनिर्कुलित्त आन्ट्रे
योतिय पोरियट्रायो रुं पोरि पुनैवियेन्ट्रान्

भावार्थ—बुद्धिरूपी अमात्य का उपदेश यह था कि वेलायुधारी राजा लोग जिस धार्मिक मार्ग पर चलते थे उस पथ पर जाना भूल गया। अधर्म मार्ग पर चलकर अहित करने वाले काम भोगरूपो मदिरा पीने से प्रशंसात्मक और हितकारी पुण्य से पतित हो गया। अतः अब जो कुछ करना है उस कार्य के लिये सोच लो। बस, वह कार्य यही है कि बढ़िया मयूर यन्त्र तैयार करा लो जिससे तुम्हारे और कुल का बचाव हो सके।

[२३४]

अन्दर त्तार्मयने येन वैयुरुं
तन्दिरत्तार्ट्रम नूलकरै कण्डवन्
वेन्दिरला न्पेरुं तच्चनै क्कूवियो
रेन्दिर वूदि यियट्टुमि नेन्ट्रान्

भावार्थ—राजा ने कारीगरो शास्त्र के अच्छा जानकार अपने धन्धे में चतुर लकड़ो के यन्त्र तैयार करने वाले (सुनार) को बुलाकर आज्ञा दी कि एक सुन्दर और आकाश में उड़ने वाला मयूर यन्त्र झटिति तैयार कर दो। वह व्यक्ति इस तरह अनुमान करने योग्य था कि धन्धे को अपेक्षा से देखा जाय तो देवलोक के कारीगर 'मय' ही कहना चाहिये था।

[२३५]

पलिकलियुं पयिनुं तुगिनू लोडु
नललरक्कुं मेलुगुं नलं सान्ट्रन
वललनवुं ममैत्तांगेलु नालिडैच्
सेलवदो र्मामयि ल्सेय्दननन्ट्रे

भावार्थ—उस लकड़ो के कारोगर ने (सुनार) फौरन कई तरह के कपड़े, सफेद धागे, उन सबको चिपकाने की चोज एवं बढ़िया लाख इनके अलावा और कई चोजें मिलाकर सात दिन के अन्दर ही अन्दर आकाश में अच्छो तरह उड़ने वाला मोर यन्त्र तैयार कर दिया।

[२३६]

पोलिन न्मामयिलुं पिरिदाक्किय
कोलन न्मामयिलुं कोडुसेन्ट्रवन्
आल मेलला मुडै यानडि कैतोलु
तालु मिमंजै यरिन्दरु लेन्ट्रान्

भावार्थ—उस सुनार ने शिखण्डो वाला सुन्दर एवं जिन्दा मोर, मोर के रूप में बनाये गये नकली मोर इन दोनों को ले जाकर भूमण्डल के शासक राजा सत्यन्धर के सामने रख दिया और राजा से कहने लगा कि आप बताइयेगा, कौन मोर जिन्दा असली मोर है और कौन नकली है, इन्हें जाँच कर बताने की कृपा करें। इसका मतलब यह है कि कारीगर की निपुणता के कारण असली और नकली में फर्क जानना मुश्किल रहा। केवल चलने-फिरने से ही असली का पहचान हो सका। कारीगर की निपुणता की तारीफ को है।

[२३७]

नन्नेरि नूनयं तानन्ट्र नन्ट्रिदु
कोन्नेरि यिर्पेरियायियु कोलगेन
मिन्नेरि पलकल मेदक प्पेय्ददोर
पोन्नरै तान्कोडु तान्पुक लवेय्योन्

भावार्थ—यशोभिलाषी राजा ने कहा, यह मोर कारोगरी शास्त्र के आधार से देखा जाय तो यह अति निपुणता को जता रहा है। यह बढ़िया है और अत्यन्त रमणीय है। इस तरह तारीफ करते हुए कहा कि हे कारोगरी के अद्वितीय नैपुण्य, इस कार्य के लिये मेरे सम्मान को स्वीकार करो। ऐसा कहकर विद्युत् के समान देदोप्यमान आभूषणों से भरे पेटी को (सम्मान में) दिया।

[२३८]

आडियन्मामयि लूदियै यव्वलि
माडमुं कावु मडुत्तो सिन्नालसेलप्
पाडलि न्मेन्मे र्पयप्पयत्ता न्ट्रुरं
तोड मुरुक्कि युणर्त्त वुणन्दालि्

भावार्थ—खेलने वाले उस मयूर यन्त्र को आकाश मार्ग में जाने के समान महल के ऊपर और बगोचे पर धीरे-धीरे चलाते-चलाते राजा को कई दिन बीत गये। तत्पश्चात् उस यन्त्र के चढ़ाने और उतारने को कला को अपनी पत्नी विजया को सिखाया। उसने भी जल्दी से जल्दी उसे सीख लिया।

[२३९]

पण्डर्वविरलिर्पावै पोरिवलन्दिरिप्पप्पोंगि
विण्डवलमेगं पोल्न्दु विसुंबिडै प्परक्कुंवेय्य
पुण्डवल् वेर्कट् पावै पोरियिड न्तिरिप्पत्तोगै
कण्डवर्मरुल वीलन्दु कालकुवित्तिरुक्कु मन्ट्रे

भावार्थ—विजया, संगीत के नसों को बजाने वाली उँगलियों से मयूर यन्त्र को दक्षिण की तरफ मोड़ती तो वह यन्त्र उछल कर आकाश मार्ग में फैले हुए मेघमालाओं को तोड़ते हुए चलता था। शत्रुओं को घाव पैदा करने वाले वेलायुध के समान नयनाभिरामिनो विजया उसे वामभाग की ओर मोड़ती तो वह यन्त्र देखने वालों को चकित करते-करते उतर कर पैरों तले खड़ा रहता।

[२४०]

काति वेलवल क्कट्टियं कारनु
नीतियानिलं कोण्डपि नीतिनू
लोदिनार्तमै वेरुकोण्डोतिनान्
कोदुसेय् गुणक्कोतिनुट् कोदनान्

भावार्थ—राजा सत्यन्धर ने अपने राज्य को सारे लोगों के समक्ष वेलायुध की लड़ाई में समर्थ काष्ठांगार के हाथ में दे दिया था। वही काष्ठांगार राज्य को अपने कट्रोल में कर लेने के बाद धर्मशास्त्र के जानकारी लोगों का तिरस्कार करते हुए तथा धर्मशास्त्र के अन्दर बताये गये सद्गुणों के विपरीत जो असद् गुण याने अकृतज्ञता है उसके ऊपर खड़े होकर खुलं-खुलला कहने लगा।

[२४१]

मन्नवन्पगै यायदो मदियुव
मेन्नै वन्दिडं कोण्ड तिराप्पग
रुन्नि निन्ट्रु सेगुत्तिडु नीयेनु
मेन्नै यान्सेय्व कूरुमि नेन्नवे

भावार्थ—राजा काष्ठांगार, अमात्यों से पूछने लगा कि सत्यंधर

राजा की शत्रु एक बड़ी भारी देवता मेरे पास आकर रात-दिन उपद्रव करते हुए कहती है कि "सत्यंधर महाराजा को मार डालो"। आप लोग बता दीजियेगा कि अब मुझे क्या करना है ?

[२४२]

अरुमै मामणि नाग मलुंगवो
रुरुमु वीलन्देन वुट्किन रावन्
करुमं कालत्तमै कण्डव तँमुलान्
ररुम दत्तनेन्बा निदु साट्रिनान्

भावार्थ—बहुत बढ़िया माणिक्य रत्नधारी सर्प के सिर पर वज्र-पात गिरा हो, इस तरह सत्यंधर राजा को मार डालने का विचार काष्ठांगार से सुन कर अमात्यगण एकदम भयभीत हो गये। उन अमात्यों में से धर्मदत्त नाम का मंत्री सभी के सामने राजा काष्ठांगार से कहने लगा।

[२४३]

तवलैक्किण्किणि त्तामरैच्चोरडिक्
कुवलैयेयल वुलल कोलुंकणा
लवलैयेयमि र्तागवव् वण्णलु
मुवल कन्दन दाग वोडुंगिनान्

भावार्थ—राजा सत्यन्धर, मेंढक के आकार की तरह रहने वाला एवं शब्दायमान पायल का नाद, कमल फूल के पंखुटो सदृश चरण, 'कुवलै' नाम के फूल-सा नयन इन सारे विशेषों से विशिष्ट विजयादेवी को अमृत समझ कर अन्तःपुर में ही पड़ा रहा। उसका दिल और किसी काम में नहीं लगता था।

[२४४]

विण्णि नोडमिदं विलैच्चेलवदु
पेण्णि निन्बं पेरिदेन त्तालन्दव
नेण्ण मिन्ट्रि यिरंगि यिव्वैयकं
तण्ण न्तामरै यालोडु न्तालन्वदे

भावार्थ—स्त्री सुख देवलोक तथा अमृत इन दोनों को कीमती से भी बढ़कर है। तथापि तुम्हारे राज्य की कीमत उससे भी मूल्यवान है। इस तरह अमात्य निमित्तक ने राजा सत्यंधर को सम्बोधन कर बहुत कुछ समझाया। फिर भी राजा ने मोह में वशीभूत होकर अमात्य की बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया और अपने हितकारी तथा यथार्थ वचन का तिरस्कार किया। इसी कारण से उस अमात्य ने राजा को अपेक्षा साधारण व्यक्ति होने पर भी संसार से विरक्त होकर मुनि दीक्षा धारण कर ली। ऐसी परिस्थिति में इस भूमण्डल का राज्य लक्ष्मीदेवी के साथ आपके अधीन आया। याद है न!

[२४५]

तन्नैयाक्किम ताप्पोलि वेन्दनैप्
पिन्नै वौविर्पिरलिन्दडुं भूमग
लन्न वन्वलिच्चे लिर्लनि मण्मिसैप्
पिन्नै त्तन्कुलं पेर्क्कुन रिललैये

भावार्थ—हे राजन् (अमात्य धर्मदत्त काष्ठांगार से बोलता है) अपने को (आपको) हर तरह से योग्य बनाकर उन्नति के पथ पर स्थापित किये गए राजा सत्यंधर को उसके उपकार के बदले में उसे मार डालेंगे तो उसका कुल, धन और सम्पत्ति आदि सब कुछ खतम हो जायगा। यदि उस राजा से दिखाये गए मार्ग पर चलने लगेंगे तो इस संसार में उसका कुल, सम्पत्ति और यश आदि कुछ भी नाश नहीं होगा बल्कि शाश्वत रहेगा।

विशेषार्थ—अमात्य का कहना यह है कि राजा ने तुम्हें अमूल्य राज्य देकर बड़ा उपकार किया है। इस उपकार को कभी भी भूलना नहीं चाहिये। कृतज्ञता के साथ हमेशा याद रखना चाहिये। इसे छोड़कर यदि तुम राज्य अपने हाथ में है इस ममता से कृतघ्नतापूर्वक राजा को मार डालोगे तो उसका सब कुछ नष्ट तो हो जायगा। इसमें कोई शक नहीं है। परन्तु याद रखना कि भाग्य एक-न-एक दिन इसका बदला अवश्य लेगा। तुम्हें भी यही मुसीबत भोगनी पड़ेगी। खबरदार! समझदारी से काम करना इत्यादि।

[२४६]

तिलक नीण्मुडित्तेवरुं वेन्दरु
मुलग मान्दर्गं लोप्पवे न्ट्रोदुप
कुलवुतार्मं न्नर्क्कियानिदु कूरुवन्
पलनुमिक्कनर्देवरि पार्त्तिपर्

भावार्थ—राजन्, माला से शोभित राजाओं का कर्तव्य बता रहा हूँ, उसे ध्यान से सुन लेना। बढ़िया एवं लम्बे-लम्बे केश वाले देवतागण और प्रजापालक दोनों बराबर हैं। यह लोकोक्ति है। फिर भी देवों से राजा लोग कई प्रशंसनीय गुणों के कारण श्रेष्ठ हैं। अतः राजा लोगों को तदनुकूल आचरण करना आवश्यक है।

[२४७]

अरुलु मेलर साक्कुमन्कायुमेल्
वेरुल च्चुट्टिडुं वेन्दनु मादेय्व
मरुलि मट्रवै वालित्तनुं वैयिनु
मरुलि आक्क ललित्तलं काववो

भावार्थ—राजा नामक बड़ा भारी दैव कृपा करें तो कई उपकार कर सकते हैं तथा क्रोध करें तो अत्यधिक हानि भी पहुँचा सकते हैं। लेकिन शक्तिशाली दैव से कोई व्यक्ति प्रार्थना करे तो फौरन अपने भक्त के लिये हित नहीं पहुँचा सकते तथैव दैव के प्रति दूषण दें तो उसी वक्त उसे अहित भी नहीं पहुँचा सकते। इसलिये दैव की अपेक्षा राजा को बड़ा समझना उचित है।

[२४८]

उरंगुमायिनु मन्नवन्ट्रन्नोलि
करंगु तेण्डिरै वैयगं काक्कुमा
लिरंगु कण्णिमै यार्विलित्तेयिरुन्
तरंगलवौव वदन्पुरंकाक्कवार्

भावार्थ—प्रजापालक यदि सोते भी रहें उसका परिपालन लहर से शब्दायमान सागर से घेरे हुए भूमण्डल को सुरक्षित रखेगा। लेकिन

देवत्व को महिमा से शोभित देवतागण, बिना पलक लगाते देखते भी रहें, तो भी धर्म के ऊपर असुरों के द्वारा होनेवाली आपत्ति से बचा कर सद्धर्म की रक्षा करना असम्भव है।

[२४९]

यावरायिनु नालवरै प्पिन्निडिर्
ट्रेव रेन्बदु तेरुमि व्वैयगं
कावन्मन्नव कायुवन सिन्दियार्
नाविनुं मुरै यार्नवै यंजुवार्

भावार्थ—जैसे कैसे भी नीच हों ऐसे व्यक्ति के पीछे चार-पाँच लोग घूमने लगें तो उसे बड़ा भारी व्यक्ति समझ कर मानव आदर करने लग जायेंगे। क्योंकि हमें क्यों आपत्ति को मोल लेना है। इस दृष्टि से उसके खिलाफ कुछ भी नहीं बोलेंगे। साधारण लोगों के विषय में ऐसी हालत है तो शक्तिशाली एवं प्रजारक्षक राजा के विषय में कहना ही क्या है? वह (राजा) जिसे नफ़रत की दृष्टि से देखता है तो उसे लोग न मुँह से कुछ कहेंगे और न मन में ही स्मरण करेंगे। क्योंकि राजा के विरोध में बोलना या विमर्शन करना दण्डनीय समझ कर डर के मारे चुप रहेंगे।

[२५०]

तोण्डिनार्तमैत्तीच्चुडु मन्नर्तो
योण्डु तंकिलै योडु मेरित्तिडुं
वेण्डिलिन्नमिदुं नंजु मादलान्
माण्ड दन्ट्रु निन्वाय् मोलित्तेय्वमे

भावार्थ—अमात्य आगे कहता है कि जो व्यक्ति अग्नि को छूता है वह उसे जलायेगी। मगर राजारूपी अग्नि तो ऐसी है कि जो व्यक्ति उनके गुस्से का पात्र बन जाता है, उसे और उसके सारे कुटुम्ब के लोग, रिश्तेदार आदि सभी जनों को जला देगा अर्थात् उनको नष्ट कर देगा। राजा की कृपा उसके प्रेमीजनों के लिये अमृत तुल्य है और उसका गुस्सा उसके अप्रिय जनों के लिये विष तुल्य है। राजा सन्तुष्ट होगा तो अपने प्रिय जनों को लाभ पहुँचायेगा; यदि असन्तुष्ट रहेगा तो उसके अप्रिय जनों की सारी सम्पत्तियों को छीन लेने के साथ-साथ असीम दुःख

देगा। आप जो दैव के नाम से कह रहे हैं, वह दैव, मेरे सत्यंधररूपी दैव के समान परोपकारी नहीं है।

[२५१]

वेलिन्मन्ननै विण्णगं काट्टियिऱ्
ऋाल मालवदु नन्ट्रेन वक्केन्ट्रियेल्
वालितन्ट्रेन वक्कूरिन न्वाण्ऋमर्
कोलै वैत्तन्न वोण्डिर लार्ट्र लान्

भावार्थ—जो व्यक्ति तलवार की लड़ाई में यमराज से भी बलवान हो उनसे आ जाओ तुम्हारी शक्ति को आमने-सामने देखेंगे। इस तरह पत्र भेजने योग्य 'धर्मदत्त' कहने लगा कि आप वेलायुध शक्ति के द्वारा राजा सत्यंधर को यमराज के पास भेजकर यहाँ भूमण्डल का शासन करना चाहते हैं तो यह कार्य आपके लिये उचित नहीं है। यह कृतघ्नता है। वास्तव में आपसे कोई दैव राजा सत्यंधर को हिंसा करने नहीं कहता। आप दैव के व्याज से राजा को मार डालना चाहते हैं। यह कार्य सर्वथा अनुचित है।

[२५२]

कुलच्चिकै वकोदै सूट्टि वकोण्डव निरुप्पमट्रोर्
निलट्रिक लवेलिनानै नेडिय नेडुंगणालुं
पिलैप्पिलाट् पुरन्दन्तानुं कुरवरै प्पेणलसेय्या
तिलुक्किना रिवर्गलकण्डायिडुंपै नोय्विकरैकलावार्

भावार्थ—जिस पति ने अपने सिर को फूलमाला को भार्या के सिर पर लगाया था, ऐसे पत्नीदास व्यक्ति की मौजूदगी में वेलायुधधारी परपुरुष पर मोहित लम्बी आँख वाली नारी, निर्दोष पत्नी की रक्षा न करने वाला पुरुष, राजा, गुरु, माता-पिता, बड़े भाई इन पाँचों पितृओं की सेवा न करने वाला व्यक्ति ये तीनों भयंकर रोग से पीड़ित होकर दुःख भोगेंगे।

[२५३]

नट्पिडै वकुय् यं वैत्तान् पिरर्मनै नलत्तैच्चेन्र्दान्
कट्टल र्कामत्तीयि र्कन्नियै वकलविकनानु
मटटुयि रुडलं तिन्ट्रा न्नमैच्च ना यरसुकोन्ट्रान्
कुट्टनोय् नरगं तम्मुट् कुलिप्पवरिवर्कल् कण्डाय्

भावार्थ—मित्र द्रोही परदार लंपट, किसी नारी से विवाह कर लेने की लालसा दिखाकर भोग भोगने के बाद उससे वंचित व्यक्ति, खुद जीव हिंसा कर उससे मिले मांस का भक्षी, अमात्य के कर्तव्य से च्युत होकर राजा की हत्या से राज्यापहरण करने वाला व्यक्ति ये पाँचों इस भव में कुष्ठ रोग से पीड़ित होकर दुःख भोगेंगे और परभव में भी नरक दुःख के पात्र बनेंगे।

[२५४]

पिरैयदु वलरत्तानुं वलन्दुंडन्पेरुगिप्पिन्नाट्
कुरैपडु मदियन्तेय क्कुरुमुयरेय् वदेपोल्
इरैवनात्तन्नै याक्कि यवन्वलियोलिगिनिन्ट्रु
निरैमति यिरुलै प्पोलुं नेडुंपुकल्विलैक्कुमेन्ट्रान्

भावार्थ—चन्द्रमा का कलंक पूर्वपक्ष में बढ़ता है और अपर पक्ष में घटता है, उसी प्रकार जो व्यक्ति अपने को राजा बना कर बड़ा किया था, उसके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलकर अपने को बड़ा बना लेना है। यदि उस राजा की अवस्था गिरो तो उसके साथ-साथ खुद को भी गिरा लेना है। इस तरह का महान् व्यक्ति ही अन्धकार को विनाश करने वाले चन्द्रमा के समान कीर्त्तिमान बनेगा।

[२५५]

कोणिलै तिरिन्दु नालि कुरैपड प्पगलकण्मंजि
नीणिल मारियिन्ट्रि विलैवग् गिप्पसियुनीडिप्
पूण्मुलै मगलिर्पोर्पिर् कर्पलिन्दरंगण्मारि
याणेंयिव् वुलगुकेडामासुकोल् कोडिनेन्ट्रान्

भावार्थ—राजा अपने कर्तव्य से च्युत होगा तो गगनगामिनी तारायें अपने मार्ग से विचलित होंगी, दिन-रात के समय में घटा-बढ़ो होगी, वर्षा का अभाव होगा, धान्योत्पत्ति की कमो रहेगी, लोग भूख से मरेंगे, नारियाँ चरित्र भ्रष्ट होंगी, धर्म का विनाश और अधर्म को वृद्धि होगी, दानशालायें नहीं रहेंगी; जिससे धर्म का मार्ग नष्ट होने के साथ-साथ अधर्म का ताण्डव नर्तन होगा।

[२५६]

तार्पपोलि तरुमदत्तन्ट्रक्कवारु रैप्पक्कुन्ट्रिर्
कार्त्तिगै विलक्किट्टन्न कणिकमलकुवलैप्पैन्दार्
पोर्त्तदनगलमेल्लां पोललेन वियर्त्तुप्पोंगि
नीर्क्कड न्मगर प्पेलवाय् मदनन्मट्रिदबैच्चोन्नान्

भावार्थ—विजयमाला पहनने से शोभान्वित धर्मदत्त नामक मंत्री ने राजा और अमात्य के कर्तव्य के बारे अच्छा प्रकाश डाला। उसे सुनकर पर्वत के शिखर पर रखा हुआ कार्त्तिक मास दीपक जैसा सौरभयुक्त नील पुष्प की माला पहना हुआ 'मदन' जो काष्ठांगार का साला था, झट उसका वक्षस्थल पसीने से भींग गया, मन उबल गया; जलपूरित समुद्र मकर का मुँह जैसा अपना बड़ा भयंकर मुँह खोल कर निम्न प्रकार बोलने लगा।

ज्ञान दान देने वाले के उपदेश को अनसुनी करने के साथ-साथ अस्वीकार करने वाला व्यक्ति राजा क्यों न हो उसे अपवर्ग मार्ग का स्वरूप बतलाना अमात्यों का परम कर्तव्य है। (६३८–कुरल काव्य)

[२५७]

तोलिनालवलियरागित्तोक्कवर्तलैकलपार
वालिनार्पेसलल्ला लवायिनार्प्रेसरेट्र्ेन्
कालमेघंगलसोल्लि वकरुनैयार्क्कलैक्कुं कैकल्
वालमर्नीन्दुं पोलिदन्वलुवलुत्तोलियुमेन्ट्रान्

भावार्थ—उस मदन ने कहा कि भुजबल पराक्रम से सामना करने वाला जो शत्रु है उसका सिर तलवार से तितर-बितर करना है। तभी शत्रुता खतम हो सकती है। उसे छोड़ कर मुँह से बोलते रहना मैं नहीं जानता। आप लोग घने-मेघ के समान गर्जना करते हैं। परन्तु धीरे-धीरे सब्जि समेत रोटी समेटने वाले हाथ में तलवार लेकर युद्ध सागर में तैरते समय, पसीने के कारण तलवार हाथ से फिसल कर गिर जायगा।

मतलब यह है कि इस तरह कहते-कहते खाते-पीते रहेंगे तो काम बिगड़ जायगा। जो कुछ करना है उसे जल्दी से जल्दी करना चाहिये।

तलवार का नाता निर्भय वीर पुरुषों के साथ है। अन्य लोगों से क्या मतलब है। कुछ भी नहीं है। (७२३–कुरल काव्य)

[२५८]

नुण्मुत्त मेट्रि यांगु मेय्येलां वियर्त्तु नोय्दिन्
वण्मुत्तनिरै कोणट्रि वार्मुरिपुरुवमाक्कि
कण्णेरि तवल वण्कै मणिनगु कडक मेट्रा
वेण्णगै वेगुण्डु नक्कुक्कट्टियं कारन्सोन्नान्

भावार्थ—तदनन्तर काष्ठांगार सारे शरीर में मोती सरीखे पसीने भरे, लम्बी टेढ़ी भ्रू को ऊँचा कर आँखों में अग्नि कण उमड़ता हुआ, प्रकाशमान कटक से सुन्दर हाथ को मेज पर जोर से मार कर क्रोध के साथ हाहाकार करते हुए कहने लगा।

अपना बल दिखाने के लिये क्रोध ही ऐसी जरूरी चीज है, इस तरह समझने वाले का ऐसा नाश होगा कि कि जो अपने हाथ से भूमि को ठोकता है। (कुरल काव्य ३०७)

[२५९]

एन्नलार्पिरर्कल् यारे यिन्न वै पोरुक्कुनीरा
रुन्नलार्पिरर्कल्यारे युट्रवर्कुराद सूलवार्
मन्नन्पोय् तुरक्कमाण्डु वानवर्कि्करैवनाग–
प्पोन्नेलां विलैन्दु भूमि पोलिययान्काप्पलेन्ट्रान्

भावार्थ—तुम्हारी हानिकारक बातों को मेरे अलावा सब्र करने वाला और कौन हो सकता है ? तुम्हारे अलावा स्वपक्ष वालों को हानि पहुँचाने वाला और कौन हो सकता है ? राजा (सत्यंधर) स्वर्ग लोक जाकर वहाँ देवों के नेता बन कर रहें। मैं इस भू-मण्डल पर सोने को लहलहाती हुई फसल के साथ इसको रक्षा करता रहूँगा।

अहित करने वाले का नाश उसी के पीछे है, जैसा कि हर व्यक्ति के पैर के नीचे उसकी छाया बनी रहती है। (कुरल काव्य २०८)

[२६०]

विलैग पोलिग वहतेयुरैत्तिलं वेगुलवेण्डा
कलैग मेलुग मिन्ने कावल कूट्टं कोललुं
वलैकय मडन्दै कोललुं तान्सेयद पिलैप्पुक्कोललु
मलवरु नितियं कोल्लु मरुलकोलल्लु ममैग वेन्ट्रान्

भावार्थ—काष्ठांगार का वचन सुनकर धर्मदत्त नाम का मंत्री (मन की घृणा के साथ) कहने लगा कि बहुत अच्छा, आपके कथन के अनुसार भू-मण्डल फसल से भरे होवे, सोने की उपज भी होवे, परन्तु आपको इसलिये नाराज नहीं होना चाहिये कि आपकी तमन्ना के अनुसार मैंने कहा नहीं हो। हम सब, हानियों को दूर करने अभी तैयार हो जावें। यमराज, राजा को भी मरणदण्ड देवें। बिल भरे भूमि को वसुन्धरा स्वयं नाश करें। जिसने कसूर किया, वही कसूर उसे नाश करें। भरपूर संपत्ति खुद को नाश करें। दया, क्रूर रूप धारण मारें। इस तरह की मृत्यु उसे (सत्यंधर को) प्राप्त होवें।

मंत्री अपने मन में और ही सोचकर ऐसे व्यंग से कहने लगा कि इस तरह की मृत्यु के द्वारा काष्ठांगार का सर्वनाश हो।

हिंसक व्यक्ति के हानिकारक कृत्य सत्पुरुषों के मन में उस व्यक्ति की नीचता की अभिव्यक्ति होगी। (कुरल काव्य ३२९)

[२६१]

निलैत्तलै त्तिरुवनाड नीप्परुं कादलकूर
मुलैत्तलै प्पोग मूलिक मुगिलिनला मुडिकोलसेन्नि
वेलर्करुन्दानैनीत्त वेन्दनै वेरुमै नोक्कि
कुलत्तोडुं कोरलेण्णि क्कोडियवन् कडिय सूलदान्

भावार्थ—राजा सत्यंधर संसार के अन्दर लक्ष्मी सदृश विजया देवी के ऊपर रखे गये अतिप्रेम के कारण उसके सुन्दर स्तनों के भोग में डूब गया। अतः राज्य उसके पास न रहने से जीतने में अशक्य रथ-गज-तुरग-पदाति सेनायें न रहीं। ज्योतिर्मय किरीटधारी राजा अकेला रह गया। उसके सहायक कोई न रहे। राजा के अकेलापन को जानकर दुष्ट काष्ठांगार सत्यन्धर राजा को कुटुम्ब सहित विनाश करने के वास्ते मंत्रालोचन करने लगा।

[२६२]

कोन्ट्रम निगल मूलिक क्कोट्टत्तु क्कुरंकत्तन्को
लेन्ट्रनन्मान्दक्केलला मिरुनिधिमुगन्दुनलिक
यूनिट्रय नाट्टै येल्ला मोरुकुडै नीलल् सेय्दु
तोन्ट्रिना न्कुन्ट्रत्तुच्चि च्चुडर्प्पलि विलक्किट्टन्ट्रे

भावार्थ—नीच काष्ठांगार ने, सत्यंधर राजा के आदर करने वाले लोगों को पकड़ कर हथकड़ी लगाते हुए जेल खाने में डाल दिया। अपने अधम कृत्य के बारे में आदर देने वालों को खूब धन देकर अपने पक्ष में कर लिया। डर के मारे दुष्ट काष्ठांगार के खिलाफ़ बोलने वाले कोई न रहे। सारे देश के लोगों को अपनी एकमात्र छत्रछाया के अन्दर खींच लिया। ऊँचे पर्वत के ऊपर रखे गये दीपक के समान प्रसिद्ध सर्वाधिकारी हो गया था। सेना और प्रजा उसके अधीन थीं। उससे पूछने वाला कोई नहीं था। वह जो कुछ कहता वही सत्य माना जाता था। इस तरह सारी सुविधायें उसके अनुकूल थीं। इनसे फायदा उठाकर राजा सत्यन्धर के खिलाफ़ खूब दुष्प्रचार करने लगा।

[२६३]

परुवमित्त कलिरुमावुं परन्दियरेरुं पण्णि
त्तिरुमिक्क सेनैमूदुर्त्तेरुवुदोरॅगुमोन्डि
योरिमोय्त्त वालुं विल्लुमिलंकिलैवेलुमेन्दि
च्चेरुमिक्कवेलिनान्ट्रन्ट्रिरु नगर्वलैन्द तन्ट्रे

भावार्थ—काष्ठांगार की सेना ने महान बुद्धिशाली वेलायुधधारी सत्यन्धर महाराजा का राजमहल जो था उसको चारों ओर से घेर लिया। वह सेना कैसी थी ? शक्तिशालिनी थी। उसमें कतार से खड़े रहने वाले हाथी के झुण्ड, घोड़ों के समूह और विशाल रथ थे। इसके अलावा अग्नि-ज्वाला के समान प्रकाशमान तलवार और धनुष वाले योद्धा थे। वे जो योद्धा थे उनके अलावा पत्ते सदृश वेलायुधधारी पदातिगण भी थे।

[२६४]

नीणिल मन्न पोट्रि नेडुमुडिक्कुरुसिलपोट्रि
पूणणि मार्प पोट्रि पुण्णिय वेन्दे पोट्रि
कोणिनै क्कुरित्तु वन्दान् कट्टियंकार नेन्ट्रु
सेणिल त्तिरैंचिच्चोन्नान्सेय्यकोलवेय्य सोललान्

भावार्थ—सेना की हालत को देखकर रक्षा निमित्त हाथ में लाल-लाल दण्ड रखा हुआ और कठोर वचन बोलने वाला दर्बान महाराजा के सामने आकर कहने लगा कि विशाल भू-मण्डल के नाथ, लम्बी शिखा

वाले वीर कवच से अलंकृत वक्षस्थल वाले, सन्मार्ग पर चलने वाले हे राजन् माफ़ कीजियेगा काष्ठांगार आपको मार डालने के लिये सेना सहित आकर घेरा हुआ है।

[२६५]

तिण्णिलै क्कदव मेल्लान्तिरुन्दु तालुरुक्कवल्ले
पण्णुग पशुं पोट्रेरुं पडुमद क्कलिरुमावुं
कण्णक न्पुरिसैकाक्कुंकावल रडैकवेन्ट्रान्
विण्णुरु मेरु पोन्ट्रु वेडिपड मुलंगुं सोलवान्

भावार्थ—वज्रपात के समान गर्जना करनेवाला सत्यन्धर महाराज दरबान का वचन सुनकर आज्ञा करने लगा कि राजमहल के दरवाजों को जल्दी से जल्दी बन्द करो। क्योंकि कोई उन्हें खोल न सकें। नये-नये रथ, लड़ने वाले मत्त हाथियों के समूह, दौड़-धूप मचाने वाले घोड़े इन सबको कतार बाँधने दो, परकोटा की रक्षा करने वाले वीरों को सज-धज कर तैयार रहने दो। (वास्तव में राजा के पास न तो हाथी, घोड़े और योद्धा थे। न इनकी सहायता करने वाला कोई व्यक्ति था। फिर भी पहली आदत के कारण राजा के मुँह से ऐसे शब्द निकल पड़े।

[२६६]

पुलिप्पोरि प्पोर्वे नीक्कि प्पोन्नणि न्तिलंगुकिन्ट्र
वोलिक्कलन्मन्नरुट्कु मुरुच्चुड वलै नोक्कि–
क्कलिक्किरै याय नॅजि न्कट्टियं कार नंमेल्
वलित्तदु काण्डु मेन्ट्रु वालेयिरिलंग नक्कान्

भावार्थ—जिसका कवच व्याघ्र के चमड़े में था उसे हटा कर, शब्दायमान भुजबंद करने वाले राजा लोग देखकर डर जावें ऐसे सोने के चमकदार तलवार को देखकर सत्यन्धर राजा कहने लगा कि दुर्गुणों का भण्डार जो काष्ठांगार है वह मेरे साथ लड़ने आ रहा है; लड़ाई में उसकी शक्ति कितनी है देखें! इस तरह देदीप्यमान दाँतों को कटकटा कर वीरता के साथ हँसने लगा।

[२६७]

नंगैनी नडक्कलवेण्डु नन्पोरुट् किरंगलवेण्डा
कंगुनी यन्ट्रु कण्ड कनवेलां विलैन्द वेन्नक्
कोंगल कोंदै मालिगक्कुलैमुंगं पुडैत्तु वोलन्दु
सेंगय कंण्णि वेय्य तिरुमग र्कवलं सेय्दाल्

भावार्थ—तदनन्तर राजा सत्यन्धर विजया के पास जाकर बोलने लगा कि हे गुणवती, तुम्हारे पास व पेट में एक श्रेष्ठ वस्तु है, उसकी रक्षा के लिये तुम्हें यहाँ से जाना होगा। तुम यहाँ रहकर दुख का अनुभव मत करना। तुमने एक दिन प्रातःकाल जिन स्वप्नों को देखा था, उनका फल अब मिलने जा रहा है। मीन नयनी विजया उसे सुनकर मुर्झा गयी; फूल माला-सी होकर मुँह और पेट में पोट-पीट कर रोने लगी। उसे देखने से ऐसा लगता था कि उसने पेट में रहने वाली शिशु को हानि के बारे में चिन्ता ही नहीं की हो ! ऐसी दयनोय दशा हो रही थी।

[२६८]

मल्ललैत्तेलुन्दुवींगिमलैतिरण्डनैय तोला
नलललुट्रलुंगि वीलन्द वमिर्दमन्नालैयेय्दिप्
पुललिक्कोण्डवलनोक्किप्पोंम्मलवें मुलैयिनाट् कुच्
सोललुवा निवैगलसोन्ना न्सूलकलर्कालिनाने

भावार्थ—लड़ने वाले जो भट हैं उनसे लड़कर मजबूत बने हुए एवं पर्वतवत् बड़े-बड़े भुजवाले और पैरों पर पहने हुए आभूषण वाले सत्यंधर महाराजा ने चिन्ता और शोक के कारण थककर जो गिरी हुई है और रो रही है ऐसी अमृत समान विजया देवी को उठाकर आलिंगन करते हुए उसका दुख निवारण किया। उसके बड़े-बड़े स्तन कलशों से जो भोग सुख मिलता था ऐसी देवी विजया को समाधान की बातें कहकर सान्त्वना दी। उसके बाद आयी हुई आपत्ति के कारण अपने से अलग होने की परिस्थिति के विषय में समझा कर धैर्य बँधाया।

[२६९]

सादलुं पिरत्तरानुं तंविनैप्पयत्तिनागु
मादलु मलिवु मेल्ला मवैपोरुट् कियल्पु कण्डाय्
नोदलुं परिवुमेलला नुण्णुण र्विन्मैयन्ट्रे
पेदैनी पेरिदुंपोललाय् पेयवलैत्तोलि येन्ट्रान्

भावार्थ—हे देवी, तुम समझदार हो ! तुम सब कुछ जानती हो; जो जन्म-मरण है वह अपने-अपने कर्म के अधीन है। जिसने जन्म लिया है उसे एक न एक दिन मरना हो है। संसार में कोई भी शाश्वत नहीं रह सकता। इसी के अनुसार धन-धान्यादि सम्पत्तियाँ मिलना और नाश होना यह भी कर्माधीन है। इसमें कोई शक नहीं है। ऐसी हालत में मरण और संपत्ति के विनाश में दुख करना तथा जन्म और धन प्राप्ति में खुशी मनाना बड़ी मूर्खता की बात है। सोने की चूड़ियाँ पहनी हुई हे देवी ! इस यथार्थ विषय पर तुम्हारी जानकारी नहीं रही हो, यही मुझे आश्चर्य सा लगता है।

[२७०]

तोल्लैनं पिरवियेण्णिर् ट्रोडुकडन्मणलुमाट्रा
वेललैय ववट्रु लेल्ला मेदिलं पिरन्दु नींगिच्
सेल्लुम क्कतिकडंमुट् सेरलं सेर्न्दुनिन्ट्र
विलिलनु लिरण्डु नालैच्चुट्रमे यिरंगलवेण्डा

भावार्थ—हे देवी, सुनो; अभी तक बीते हुए अपने जन्मों को यदि हम गिनने लगेंगे तो वे समुद्र के सिकता के समान गिनती में नहीं आ सकते। ऐसे अनन्त जन्मों के अन्दर अपन लोग कितने ही बार एक साथ जन्म लिये होंगे और कितने ही बार अलग हुए होंगे। जाने दो, अब भविष्य में जो जन्म होने वाला है, उसमें एक साथ आश्चर्य जन्म लेंगे; क्या इसमें कोई आश्चर्य है। कोई आश्चर्य नहीं है अब इस घर में हम लोग मिल-जुलकर जो जीवन बिता रहे हैं वह भी कुछ दिन का ही है। ऐसी हालत में इस मिलन को चिरस्थायी समझ कर तुम दुखित हो रही हो। यह अनावश्यक है। इसमें कोई सार नहीं है। वास्तव में देखा जाय तो यह जीवन चार दिन का है जो आया सो गया। ऐसा वह मरण आज भी हो सकता है और कल भी या दो चार महीने में अथवा दस-पाँच साल में।

इस जीवन का कोई ठिकाना नहीं है। ऐसे विद्युत के समान अस्थिर मायामयी जीवन के बारे में रोने-पीटने की कोई जरूरत नहीं है।

[२७१]

वण्डुमोय त्तरट्रुं पिण्डि वामनालवडित्तनुण्णू
लुण्डुवैत्तनैयनोयुं उणर्विला नीरैयागि
विण्डुकण्णरुवि सोर विंमुयित्तिनैयेयाद
लोंडोडि तगुव दन्ट्रा लोलिग निन् कवलै येन्ट्रान्

भावार्थ—हे देवी, भ्रमरों से गुंजायमान अशोक वृक्ष की छाया में विराजमान भगवान श्री अरहन्त देव के यथार्थ तत्त्वों को विवेचन करने वाले महत्त्वपूर्ण शास्त्रों के सारे विषयों की जानकारी तुम्हें मौजूद हैं। फिर भी धर्म मार्ग के वास्तविक तत्त्वों को यथार्थता को छोड़कर आँखों से अश्रु धारायें सरिता के समान निकाल रही है; रो-रोकर श्वास छोड़ती हुई दुखित हो रही है यह बिलकुल उचित नहीं है। प्रकाशमान चूड़ियाँ पहनी हुई हे प्रेमिका, सर्वथा चिन्ता छोड़ दो।

[२७२]

उरिमै मुन्पोक्कि यलला लोलियुडै मन्नर्पोगार्
करुममी देनक्कु मूर्ति समैन्द दु कवल वेण्डा
पुरिनरं पिरंगुज चोल्लाय् पोवदे पोरुलम ट्रेन्ट्रा
नेरिमुयं कलिंगु बाट्कैयेट्रिलं सिंग मन्नान्

भावार्थ—आग में तपाकर बाहर निकाली गयी चमचमाने वाली तलवार हाथ में लेकर शेर के समान गर्जता हुआ सत्यन्धर महाराजा वीणा के नसों से निकलते हुए तान की उतार के समान मधुर वचन बोलने वाली हे प्रिये, ख्याति प्राप्त राजाओं का कर्तव्य यह है कि अपनी प्रेमिका को सुरक्षित स्थान पर भेजे बिना लड़ाई के लिये कदापि नहीं जायेंगे। मेरा कर्तव्य भी यही है। अपने पुण्य के प्रभाव से एक मोर यन्त्र अपने पास है। तुम उसे चलाना भी जानती हो। इसे भाग्य की बात कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं है। मेरी चिन्ता मत करो। तुम्हें अब उस मोर यन्त्र पर चढ़ कर जाना ही है। नहीं तो तुम्हें भी बड़ी भारी आपत्ति आने की सम्भावना है। बिलम्ब मत करना। जल्दी से जल्दी करने का है।

विशेषार्थ—राजा सत्यन्धर अच्छा समझदार एवं श्रावक शिरोमणी था। फिर भी त्रिवर्ग जो धर्म-अर्थ-काम है इन तीनों का परस्पर अविरोध रूप में उपयोग करता था। इस यथार्थ वचन को भूलकर तीव्र कामभोग वासना में डूब जाने के कारण सुरसुन्दरी सदृश विजया के साथ भोग भोगते हुए अपने कर्तव्य से च्युत हो गया था। विजया परस्त्री नहीं थी। स्वपत्नी थी। फिर भी अपरिमित भोगलालसा के वशीभूत होकर अमूल्य राज्य को काष्ठांगार के हाथ में देने लगा। उस समय अमात्यों ने बहुत कुछ समझाया। उन लोगों की बातों को न सुना। "अविचारितं रम्यं हि रागान्धानांविचेष्टितं" याने मोहान्धकार से जो काम करते हैं, उसके बारे में विचार करना ही बेकार है। इस नीति के अनुसार पथभ्रष्ट हो गया था। बुद्धिमानों का कथन यह है कि भोग लालसा एवं धन लालसा मनुष्य को पथभ्रष्ट कर देती है। इन दोनों का उदाहरण इसी ग्रन्थ में है। भोग लालसा के कारण राजा सत्यन्धर को अपना जीवन, राज्य, पत्नी और सन्तति आदि सबको तिलांजलि देनी पड़ी। छोटी सी गलती के कारण सत्यन्धर को कितना भयंकर कष्ट भोगना पड़ा। यह समझने एवं अपने जीवन में उतारने योग्य है।

धन की लालसा का उदाहरण काष्ठांगार है। पहले काष्ठांगार सत्यन्धर का विश्वासी था। इसमें शक नहीं है। इसी विश्वास के कारण से ही राजा ने उसके हाथ में राज्य सौंपा था। जब काष्ठांगार के हाथ में राज्य आ गया था तब राज्य वैभव की लालसा ने उसे विश्वासघात याने कृतघ्नता व राजद्रोह करने की ओर उत्सुक कर दिया। इसीलिये आचार्यगण अर्थ और काम में तीव्र लालसा का निषेध करते हैं।

काष्ठांगार राजद्रोह करने तैयार हो गया था। राजमहल के चारों ओर सेनाओं को लाकर घेर लिया था। सत्यन्धर को अपनी गलती का पश्चात्ताप दो समय हुआ था। एक विजया को उसके स्वप्न का फल सुनाते समय और दूसरा द्वारपालक का आकर 'काष्ठांगार की सेना ने राजमहल को चारों ओर घेर ली है। वह आपको मार डालने के लिये तैयार हो गया है' इस तरह कहते समय। दोनों समय राजा निःसहाय रह गया था। दण्ड भोगने के सिवाय उसके प्रतीकार करने की शक्ति उसके पास नहीं थी। पश्चात्ताप करने के सिवाय कुछ भी नहीं कर सकता था। जिस पत्नी के कारण राज्य को भी तुच्छ समझा था, वही पत्नी आज शोक सन्ताप के कारण आँसू बहाती हुई मृत सी पड़ी हुई है। उसे राजा किन शब्दों से समाधान करता? न तो काष्ठांगार को जीतने

की सम्भावना थी और न बन्धु-बान्धव राजा लोग सहायक थे। आदर करनेवाली प्रजा भी काष्ठांगार के भय से कुछ कह नहीं पाती थी। ऐसी निःसहाय अकेलेपन की हालत में 'धम्मं शरणं गच्छामि' धर्म के शरण जाता हूँ। इस तरह कहने के सिवाय और कोई शरण लेने का रास्ता ही नहीं था। इसी कारण राजा सत्यन्धर अपनी प्यारी पत्नी विजया को संसार में अशरणों का शरण्यभूत धर्म की शिक्षा देने लगा।

वह कहता है हे प्रिये, संसार में सारे जीवों को अशोक वृक्ष के नीचे विराजमान जिनेन्द्र भगवान से कहे गया सच्चा धर्म ही एकमात्र रक्षक है। अब हमें उसी को अपनाना पड़ेगा। आगे कहता है प्रिये, संसार अनादि है। जो पदार्थ संयोग से प्राप्त है। एक-न-एक दिन उसका वियोग होना अवश्यम्भावी है। अन्य धन-धान्यादि वस्तु की क्या बात है? यह आत्मा मोह से जिस शरीर की इतनी रक्षा की थी, उस शरीर को भी छोड़कर चला जाता है। फिर क्या रखा है? कुछ नहीं। दूसरी बात यह है कि यौवन, शरीर, सुन्दरता और सम्पत्ति आदि पानी के बुल-बुल के समान नष्ट होनेवाले हैं। इसमें कोई आश्चर्य करने की बात नहीं है। यह सब संसार की हालत है। इसलिये शोक करने को कोई जरूरत नहीं है। पापकर्म के उदय से संकट होता हो है। जब पुण्यरूपी दीपक बुझ जाता है, तब पापरूपी अन्धकार बिना बुलाये आ ही जाता है। ऐसे ही अपने को पापकर्म उदय में आया है, उसका फल अपने को भोगना पड़ रहा है। चिन्ता करने से या रोने से न तो रुकेगा और न फल दिये बिना जायगा ही। अतः चिन्ता छोड़कर जो कुछ करना है उसे करने के लिये तैयार हो जाओ। मेरे लिए फिकर करने की कोई जरूरत नहीं है। जो होगा सो होगा। तुम्हारे गर्भ में रहनेवाली अपनी सन्तति की रक्षा के लिये फिकर करना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि तुम्हारे स्वप्न से यह ज्ञात हुआ है कि गर्भ स्थित जीव अत्यन्त पुण्यशाली है। आठ नारी रत्नों का भर्ता होनेवाला है। उस जीव की रक्षा को बड़ी जरूरत है। इस तरह राजा सत्यन्धर ने सम्बोधन कर विजया को अतिशीघ्र मयूर यंत्र के द्वारा यहाँ से चले जाने का आदेश दिया।

[२७३]

एन्बुने क्कुरुरियुल्ल मोलुकुणु सोर यात्त
वन्बु मिक्कवलित्ताट्टा वारुयिक्किलत्ति तन्नै
यिन्बमिक्कुडैय सीत्ति यिरैवनताणै कूरि
त्तुन्बमिलपरवैयूदि सेत्तिन न्तुणैविसेन्दाल्

भावार्थ—उसके बाद मानों हड्डियाँ गल रही हों ऐसी मनोव्यधा हो गयी थीं। प्रेमपाश के आधिक्य से दुखानुभव के साथ रोती हुई प्रेमिका विजया को राजा ने अनन्त सुख के नायक भगवान अरहन्तदेव के उपदेशात्मक "ॐ णमो अरहंताणं" नामक महामंत्र का उच्चारण कर अपनी सहधर्मिणी को किसी भी प्रकार तकलीक न हो सोचकर मयूर यंत्र में बिठाया। वह विजया भी उसी महामंत्र का स्मरण करती हुई उक्त यंत्र में बैठने लगी।

[२७४]

नीरुडै क्कुवलैयि नेडुंगणिन्ट्र वेंपनि
वारुडैं मुलैंमुक ननैप्पमाद सेंन्ट्रुपिन्
सीरुडैक्कुरुसिलुं सिवन्दलन्ट्रोर्तोत्तिरल्
पारुडैप्पनिक्कडल सुडुव दोत्तुलंबिनान्

भावार्थ—पानी सहित 'कुवलै' नामक फूल के समान लम्बी आँखों से आँसू बहकर स्तन कलशों के ऊपर गिर रहे थे। इसी तरह के रुदन के साथ विजया के चले जाने के बाद राजा सत्यंधर का दिल दुःख के मारे पिघल गया था। काष्ठांगार के दुराचार से उसे बड़ा गुस्सा आया। कर्मरूपी अग्नि से घेरे संसार को ओस का सागर सामने पड़ा दीखता है, राजा उसे जला रहा हो ऐसा सिंह गर्जन करने लगा।

[२७५]

मुलैमुक त्तिडियरि वलैत्तवन्नमल्लरिर्
कुलैमुक प्परिसैयुट् कुरुसिरानगप्पड
विलैमुकत्तेरिपडै यिलंगुवाट्कडलिडै
मलैमुकत्त कुजरं वारियुलवलैन्ददे

भावार्थ—पर्वत की गुफा के भीतर वज्रपात के समान गर्जना करनेवाला सत्यंधर, अन्तःपुर के अन्दर हाथियों के झुण्ड के सदृश वीर योद्धाओं के बीच में फँस गया। सेना राजमहल के चारों ओर सागर के समान घिरी हुई थी। हथियार वाले वीर घोड़े तथा हाथियों पर चढ़कर घूम रहे थे।

[२७६]

अयिलि निर्पुनैन्दवाललन्ट्रु रुत्तुरी इयुडन्
पयिलकदिर्प परुमणिप्पन्नमयिच्चेय् केडगं
वेयिलेनत्ति रित्तु विण्वलुक्किकवन्दु वीलन्ददोर्
कयिलणिक्कदिर्नकै क्कडवुलोत्तुलंबिनान्

भावार्थ—राजा सत्यन्धर का तलवार तेज था। उसे गुस्से के साथ कवच से निकाला। उसके साथ प्रकाशमान मणियों से जड़े हुए एवं व्याघ्र के चमड़े के अन्दर लगा गया हो ऐसा जो केडय था वह सूर्य के समान चमकता था। भाग्य के कारण आकाश से गिरे एवं मोतियों की माला से अलंकृत देवता के समान राजा गर्जने लगा।

[२७७]

मारियि र्कडुंकणै सोरिन्दुमललरार्त्तपिन्
वीरियक्कुरुसिलुं विलक्किवेंगणैमलै
वारियि र्कींडदुड नकट्रमट्रवन्पडैप्
पेरियपेरुंकलिरु पिन्निवन्ददैन्दवे

भावार्थ—योद्धा लोग वर्षा के समान भयंकर आयुधों को प्रयोग कर चिल्लाते हुए लड़ने लगे। अत्यन्त साहसी महाराजा ने भी उन योद्धाओं के आयुधों को काटकर काष्ठांगार की सेना को दूर भगा दिया था। तदनन्तर कतार में खड़े शक्तिशाली बड़े-बड़े हाथियों का झुण्ड आकर राजा को घेरने लगा।

[२७८]

सीट्र मिक्क मन्नवन्सेर्न्द कुंजरन्नुतर्
कूट्रुं कुरुदिवालकोडुरवलुत्तलि
नूट्रुडै नेडुवरै युरुमुडन्ट्रिडित्तेन
माट्रुं मदक्कलिरु मत्तकं पिलन्दवे

भावार्थ—क्रोध से उत्तेजित राजा, सामने आये हुए हाथियों के ललाट को खून भरे तलवार से हड्डियों को काटने लगा। जिसके कारण वे हाथियों के झुण्ड एकदम वज्रपात के समान चिल्लाकर भागने लगे।

वह दृश्य ऐसा जान पड़ता था कि हाथियों के मद निकल जाने से वे भाग रहे हो।

[२७९]

वेन्मिडैन्द वेलियुं पिलन्दु वेंगण्वोररै
वान्मयिच्चेंय् केडकत्तिडित्तु बालवलैयरिन्
तूनुडै क्कुरुदियु ललुलक्कु पुत्तिरितर
त्तेन्मिडैन्द तारिना न्सेंकलं चिरन्ददे

भावार्थ—भ्रमर से गुञ्जायमान फूलमाला से युक्त राजा को रण-भूमि का दृश्य शोभायमान था। वेलायुधधारो योद्धा लोग रुकावट को हटाकर सामने आ रहे थे। उन्हें राजा ने अपने चमकदारी केडय से हताहत कर डाला। तलवार वालो सेना जाल को काटकर रक्त प्रवाह में दौड़ रही थी। राजा के सामने सेना टिक नहीं सको। राजा अपनो पूरी शक्ति लगाकर वीरता के साथ लड़ रहा था।

[२८०]

उप्पुडैय मुन्नीरुडन्ट्रुकरै कोलव
तोप्पुडैय तानैयु लोरु तनिय नागि
यिप्पडि यिरैमग निरुंकलिरु नूर
वप्पडैयु लण्णलु मलन्ट्र कलिरुन्दि

भावार्थ—नमक भरा सागर अपना स्थान छोड़कर किनारा तोड़ने के समान जोर से लड़नेवाली सेना के बीच में राजा अकेला सामना कर रहा था। प्रतापो राजा वीरता के साथ हाथियों के मस्तकों को काट-काट कर फेंकते समय, शत्रु दल का नेता काष्ठांगार क्रोध के साथ हाथो पर चढ़कर सामने आ खड़ा हुआ था।

[२८१]

नीडगमिरुन्दनिल नेमिवल नेन्दिक्
केडग मरुप्पनडु वट्रवु सेन्दा
कोडु कदि वंट्टमेन वोय्येन वुलंविक्
काडु कव र्तीयिन्मिगै सीरुपु वेगुण्डान्

भावार्थ—उस दुष्ट काष्ठांगार ने अपने दक्षिण हस्त में चक्रायुध लेकर राजा केडय को तोड़ डाला। वह दृश्य ऐसा दीखने लगा कि आकाश मार्ग में संचार करनेवाले राहुग्रह रूपी सर्प के द्वारा आच्छादित सूर्य प्रकाशवत् वह केडय क्षीण प्रतापी होने लगा। फौरन सत्यंधर राजा, काष्ठांगार के दुःसाहस को देखकर चटपटाते हुए वनाग्नि के समान कोध भरे आवाज से गर्जने लगा।

[२८२]

नेयंमुग मणिन्दु निलरंगियल लपोंगि
वैंमुग मणिन्द नुति बाललल वीसि
मैंमुग मणिन्दमद यानैतव नूरिक्
कैमुद रुणिन्दु कलि रालवदु नोनान्

भावार्थ—ऐसे क्रोधायमान राजा ने आग में लगाने से लाल-लाल एवं तीक्ष्ण तलवार को उठाकर काष्ठांगार व बैठे हुए हाथी को जोर से मारा। जिससे मद से भरा हुआ उस हाथी का सूँड़ कटकर नीचे गिर पड़ा। उसे देखने में काष्ठांगार असमर्थ हो गया। अर्थात् उसे सहन नहीं हुआ।

[२८३]

मालैनुति कोण्डुमलै मिन्नेन विमैक्कुं
वैलैवल नेन्दिविरि तामल कलिय
च्चोलै मयि लार्कडुणै वेंमुलैगडुंचुं
कोलवरै मार्पिनुरु कूट्रेन एरिन्दान्

भावार्थ—दुष्ट काष्टांगार ने अग्रभाग में माला लगाये गये एवं मेघ के अन्दर प्रकाशमान विद्युत् के समान जो वेलायुध था, उसे उठाकर नन्दनवन के मयूर जैसो रमणियों के मोहोत्पन्न करनेवाले स्तन कलशों के द्वारा जिस राजा का पर्वत समान वक्षस्थल स्पर्श किया जाता था, जिसमें मालायें लटक रही थीं, उसको शोभा को नष्ट करते हुए उस वक्षस्थल पर (राजा के वक्षस्थल पर) लगा दिया था। अर्थात् राजा के वक्षस्थल पर पापो काष्ठांगार ने वेलायुध को लगा दिया था।

[२८४]

पुण्णिडं कोण्ड वेकं परिदलिर्पोन्ननादं
कण्णिटं कोण्ड मार्पिर्ट्डायिन कादुवेल्वेन्
मण्णिटं कोण्ड यानै मणिमरु प्पिडैयिट्टम्म
विण्णिड मल्ल र्कोलल मिरैक्कोलि तिरु त्तिनाने

भावार्थ—राजा ने जिस वेलायुधने वक्षस्थल में धंसकर खून किया था, उसे निकाल दिया। वह सुन्दर छाती पर लगने के टेढ़ा हो गया था। उस टेढ़ेपन को मरे पड़े हाथियों के हड्डियों में लगाकर ठीक कर लिया। बस, राजा ने उसो वेलायुध के द्वारा कई योद्धाओं को स्वर्गवासी बनाने के साथ-साथ टेढ़ेपन का अपवाद भो हटा दिया।

[२८५]

एन्दलवेरिरुत्त यानै यिरिन्दन वेरिपोर्कण्णि
नान्दग वलवानण्णा र्कूट्रेन नडुंगि मललर्
साय्दपिन्ट्रुगणाण्मै क्कट्टियं कारन्वेलं
काय्न्दन न्कडुग वुन्दि क्कप्पणं सितरिनाने

भावार्थ—सत्यंधर महाराजा के वेलायुध के टेढ़ेपन को सीधाकर वीरता के साथ लड़ने से हाथी के झुंड भागने लगे। योद्धा लोग भी राजा को यमराज के समान समझकर डर के मारे युद्धरंग से भागने लगे। उसके बाद दुष्ट काष्ठांगार ने उन योद्धाओं को डाँटा। फिर दूसरे हाथी पर चढ़कर आया और 'कप्पणं' नामक काँटेवाले आयुध को राजा के ऊपर फेंकने लगा।

[२८६]

कुन्ट्रमार्परिन्दु वेलवेर्कुडुमिमा मंजैयून्र्दु
निन्ट्रमाल्पुरुवं पोल नेरिमुरिपुरुव माक्किक्
कोन्ट्रव न्वेले वीलप्प मट्रु मोर्कलिट्रिर्पायिन्दु
निन्ट्रमामल्लर्कोल्ला नीण्डमुडि यिलक्कं आनान्

भावार्थ—राजा ने सफेद वेलायुध से 'क्रोंजम्' नाम के पर्वत को भी तोड़ डाला। मोर के ऊपर चलनेवाला षण्मुख के भ्रू के समान अपनी

भृकुटी को टेड़ा करते हुए काष्ठांगार का जो हाथी था उसे मार गिराया। तदनन्तर वह काष्ठांगार दूसरे हाथी के ऊपर चढ़कर आया और राजा से लड़ने लगा। उसे देखकर बाकी योद्धा लोग भी एक साथ मिलकर राजा से लड़ने लगे।

[२८७]

नंजुपति कोण्डवल नागणैयिनान्ट्र
नेंजुपति कोण्डु पडै मूलगनिलं वीसु
मंजुतवलकुन्ट्रनैय तोलोसिन्दु मात्ताट्
कुंजरंगणुरिक्कोलै वालोडिन्दु निन्ट्रान्

भावार्थ—विष से भरा हुआ बड़े सर्प को शय्या पर सोनेवाले कृष्ण के समान जो सत्यंधर था उसके वक्षस्थल को ही लक्ष्य बनाकर सारी सेनायें आकर लड़ने लगीं। फिर भी राजा निडर होकर भूलोकवासियों को खूब देनेवाले मेघाच्छन्न पर्वत सदृश पैरवाले हाथियों के सूँड़ को काट-काट कर फेंकता रहा। जिससे काटनेवाला तलवार टूट गया। इसलिये राजा बिना तलवार के खड़ा रहा।

[२८८]

आरमरु लाण्डकैयु मन्नवगै वोलुं
वीररेरि वैपडेगलवील विमैयानाय्प्
पेरमरुलन्ट्रु पेरुं तातैयोडुं पेराप्
पोरमरु णिट्रविलै योनिर्पोलिवुट्रान्

भावार्थ—यह राजा अभिमन्यु के समान शोभायमान था। और कैसा था? लड़ाई के अन्दर लड़नेवाले वीरों में सत्यंधर अव्वल दर्जे का था। अभिमन्यु कैसा था? लड़ाई में योद्धाओं से फेंके जानेवाले भयंकर आयुध आकर गिरते समय बिना पलक लगाये देखता था। और कैसा था? पहले के जमाने में पाण्डवों की लड़ाई के अन्दर अपने बड़े चाचा कर्ण के साथ बिना पीठ दिखाये अकेला लड़ा था।

विशेषार्थ—अभिमन्यु लड़ाई में वीरता के साथ अकेला लड़ता था। लड़ाई में पीठ नहीं दिखाता था। दुर्योधनादिको अयथार्थ लड़ाई के कारण उसका वीरमरण हुआ। वैसे ही सत्यंधर भी वीरता के साथ अकेला लड़ता

रहा था। राजा ने भी लड़ाई में पीठ नहीं दिखायी। काष्ठांगार के अन्याय के कारण सत्यंधर का वीर मरण हुआ। अतः सत्यंधर अभिमन्यु के समान शोभते थे।

[२८९]

पोलन्दु कदि नेंमियोडु वेलपोरु तलुन्द
त्तालन्दुतरु कण्णिणैगडोयलल विलिया
वीलन्दुनिल मामगड न्वेंमुलै ओमुंग
वालन्दुपडु वेंजुउरि नाण्डकै यवित्तान्

भावार्थ—सत्यंधर महाराजा को परिस्थितियों ने पुरुषत्व से पतित कर दिया। उसकी हालत क्या हुई? एकदम प्रकाशमान चक्र और वेलायुध दोनों ने राजा के वक्षस्थल को घायल कर दिया। जिसके कारण थकावट आ गयी। दोनों आँखें गुस्से के मारे देखती ही रह गयीं। पश्चिम दिशा में सूर्यास्त होने के समान राजा की हालत भी दर्दनाक रही।

[२९०]

तोय्न्द विसुंवेन्नुं तोन्नाट्टगन्तोलुदुपुलंपेय्ति मैन्दरु मालव
एन्दुमलैयारि नैन्दिरंक क्कोडुंगोलिरुलपरप्पवेएपाव
माय्न्द गुरुकुलमा मालकडलिनुण्मुलैत्त अरच्चेंकोलाय्कदिरिनै
वेन्दर्पेरुमानैच्चच्चन्दनै मन्रिमा नागमुडन्विलुंगिट्रन्ट्रे

भावार्थ—अहो पश्चात्ताप! सत्यंधर महाराजा का अमात्य नाम का बड़ा भारी भयंकर सर्प राजा का राज्य, जीवन और सारे के सारे वैभवों को निगल गया। तब वहाँ की परिस्थिति कैसी रही? राजा का हेमांगद नाम का देश था उसे लोग देवलोक कहा करते थे; वह देश उतना समृद्धिशाली था। वहाँ के सारे के सारे महापुरुष एवं प्रजागण राजा के वियोग से रो रहे थे। शीलवती नारियाँ कहने लगीं कि अब राज्य में अन्याय का अन्धेरा छा गया है। राजाधिराज महाराजा, सदाचार की शिक्षा देनेवाले गुरुकुलरूपी महासागर से उत्पन्न धर्ममार्ग पर चलने वाले उत्तम पुरुष थे।

विशेषार्थ—महाराजा सत्यंधर को विश्वासद्रोही काष्ठांगार ने स्वर्गलोक पहुँचा दिया था; जिसके कारण राजा के वियोग से सारी प्रजा

अत्यन्त दुखित हो रही थी। काष्ठांगार के राज्य को अन्यायी का राज्य समझ कर निन्दा कर रही थी।

[२९१]

पालरुवि त्तिगडोय् मुत्तमालैप्पलिप्पिल् नेडुं
कुडैक्कीप्पाय्परिमान्ट्रेर्क्
कोलरुवि वेंसिलैयान्कूर्वालोडु मणिक्केडकमुमरमुमाट्
बालरुवि वामनडित्तामरै मलर्सूडि मन्दिरमेन्सान्दुपूसि
वेलरुवि क्कण्णिनार्मेय् काप्पोंब वेन्दन्पाय् विण्णोर्क्क
विरुन्दायिनाने

भावार्थ—अमृतस्राव के समान प्रकाशमान चन्द्रमा जैसो मोती की माला पहने हुए एवं निर्दोष छत्र के नीचे वेग से दौड़नेवाले घोड़े जिसमें लगे हुए थे ऐसे सुन्दर रथ में राजा बैठा करता था। और बाणों की वर्षा से शत्रुओं को भगाता था। अब रथ आदि सबके सब दूर हो गये। वह तीक्ष्ण तलवार और केडय लेकर वीरता के साथ लड़ा। वे भी हाथ से निकल गये। अन्त में बिचारा क्या करता ? शुभध्यान के साथ अरहंत परमात्मा के स्मरणरूप पंचनमस्कार महामंत्र के शरण में गया। उसने पंचनमस्कार को चन्दन बनाकर सारे शरीर में लगा लिया। अरहंत भगवान के चरण कमलों को फूल बनाकर शिर का अलंकार कर लिया। देवांगनायें आँखों से आँसू की धारायें बहाती हुई देखती रहती थीं। उस समय राजा देवलोक के देवों से पूजने योग्य अमरेन्द्र बन गया।

विशेषार्थ—राजा चन्द्रमा के समान सफेद मोती को माला पहनकर रथ पर सफ़ेद छत्र के नीचे सवार होता था। बाणों से शत्रुओं को मार भगाता था। उसकी गलती के कारण सबके सब हाथ से चले गये। अन्त में जिनेन्द्र भगवान के पंचनमस्कार महामंत्र का उच्चारण होने से अमर लोक में अमरेन्द्र बना।

[२९२]

सेन्दि क्करुंतुलैय तींकुल्यालतेन्देमेन्नुमणिमुललवमु
तंतांकिलैयार्मेलिवरलकटोण्टत्तान्तामैन्ट्रिरंगुन्तण्णुमेगलु
मन्नोंकिलविया रैंज़ू ट्रुवरवैदुरै पोयाड वरैबैयन्ना
रेन्ताय् वेरुनिलत्तु च्चेर्तियो वेन्ट्रिनैदिरंगिप्पल्लिपडुत्तार्कले

भावार्थ—सत्यन्धर राजा के शव को जलाने के वास्ते उचित स्थान पर लाकर रखा गया। उस समय लोग क्या करने लगे? आग में तपाये कोले से छिद्र किये गये मधुर गान वाली बाँसुरी और वीणा "धेम-धेम" शब्द के साथ बजाये गये। मृदंग 'धाम-धाम' शब्द के साथ बजाया गया। इन सब वाद्यों को लाकर नारियाँ अपनी पतली ऊँगलियों से बजाने लगीं। सुन्दर एवं मधुर वचन बोलने वाली पाँच सौ राज परिवार की महिलायें और नर्तन करने में चतुर 'रम्भा' जाति की रमणियाँ सब मिल-कर रोती हुई कहने लगी कि हे हमारे पितातुल्य महानुभाव, हम लोगों को अनाथ छोड़ कर कहाँ चले गये? हमारे रक्षक कोई नहीं है। आपके बिना हम लोग बहुत दुःखी हैं। इस तरह छाती कूट-कूट कर रोने लगीं।

[२९३]

मडैयविलन्द वेल्लिलै वेलंबुपायमणिच्चेप्पगं कडै किन्ट्र वेपोर्
ट्रोडै यविन्दमालै मुत्तुन्तोय्न्द तुणैमुलैयिनुललरंगिमूलकक्कामन्
पडैयविन्द कण्पनिनीर्याय विम्माप्परु मुत्तनामललैक्किकिणियिनार्
पुडैयविन्द कून्दलपुल वुत्तोय प्पोलिमलैयुण्मिन्नु प्पोर्पुलंबियार्त्तार्

भावार्थ—शव को लाकर जलाने रखे गये स्थान पर आई हुई नारियाँ इस तरह रोने लगीं कि पैरों में पायल पहनी हुई मृदुवचन बोलने वाली रमणियाँ खूब रोयीं। वे कैसी थीं? माणिक्य रत्नों के पेटी को बनाने वाली चीजों के समान, लड़ाई में गिर पड़े वेलायुध और बाण लगे हों तथा फूल मालायें एवं मोती की मालायें जिन स्तन कलशों पर पड़ी रही हों। इनके अलावा सैकड़ों रमणियाँ आँखों से आँसू बहाती हुई सिर और छातियों में पीट-पीटकर रोने लगीं। उन नारियों के सिर की बालें जमीन तक नीचे लटक रही थीं। राजा के शव के ऊपर गिर कर रोने से उन बालों में खून लगा हुआ था। उन लोगों का रोना ऐसा दीख पड़ता था कि बरसात के मेघ में चमकने वाले मेघ हो।

[२९४]

अरिमानो मेंललणैमेन्मंजैसूलक्किडन्दांगु वेन्दन्किन्दानैत्तान्
करिमालै नेंजिनान्कण्डान्कण्डे कैतोलुतान्कण्णीर्कलुलन्दु कुत्तपिन्
नेरिमालै यीमत्तिलुदार्कुडमेनैनूरुमेर्पच्चोरिन्दलरियें
पेरुमाने येम्मै योलित्तियो वेन्नाप्पेरिकण्णीर्सारिन्दलरुवार्

भावार्थ—सत्यन्धर का शव रखा हुआ था। उसे देखने से ऐसा लगता था कि मुलायम बिस्तर पर सुलाये गये हों; शिखण्डिनियाँ घेरी हुई हों ऐसी रिश्तेदार नारियों से घेरा हुआ था। ऐसी इस हालत को जिसके मन में अँधेरा हो हो ऐसे निर्दयी एवं कृतघ्न काष्ठांगार ने देखा। हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। तथा नकली अश्रुधारायें निकालीं। उसके बाद नारियों ने जलाने को रखा गया जो शव है उसको अन्तिम क्रिया की लकड़ी में घड़ों घी डाली, चन्दन को लकड़ी भी डाली। खूब चिल्ला-चिल्लाकर कर रोयीं और बोलीं हे राजाधिराज, हम लोगों को छोड़कर कहाँ जाकर छिप गये हैं।

[२९५]

कैयार्वलैकल्पुडैत्तिरंगुवार्कदिर्मूलमे लारं परिन्द लरुवार्
नेय्यार्करुंकुललमे न्मालै सिन्दि निलत्तिडुवार् निन्ट्रु तिरु विलवीसु
मैयार्कडिप्पिणैयुं वार्कुलैयुं कलैन्दिडुवार्कैयालवयिरतुक्कुवा
रैयावो वेन्ट्रलुवार्वेन्द न्सेय् कोडुमैकोडिदेन्वार्कोलवलैयिनार्

भावार्थ—वे नारियाँ कैसो-कैसो रोयीं? उन्होंने दुःख के कारण अपनी चूड़ियाँ तोड़ डालीं; स्तन कलशों पर चमकने वाले मोती की मालाओं को काट कर फेंक दीं; काले मेघ के समान बालों में अलंकृत फूल मालाओं को निकाल कर जमीन पर फेंक दीं; इन्द्रधनुष के समानभूत कर्णों के आभूषणों को निकाल कर फेंक दिया; हाथों से पेट पर पीट-पीट कर हे महाराज, हम लोगों को छोड़कर आप कहाँ चल बसे हैं। यह अन्याय से अन्याय है। इस तरह कह कर रोती थीं। उन लोगों के रुदन को देखने वालों के दिल में एक समान करुणा एवं दया आने के साथ-साथ रोना भी आ जाता था।

[२९६]

पानाट् पिरैमरुप्पिपैंगणवेलंपगुवायो पैंयणन्मानागं वीळ्प्पत्
तेनार्मलच्चोलैच्चेण्वरैयिन्मेचिरु पिडिगलपोलत्तुयरुलन्दुता
मानाद्डियें वन्दव्वुलगि निन्नडियडैदु मेन्ट्रलुदुपोयिनारें
कोनापरिप्प नलंपूत्त विक्कोडि यिनिप्पू वापिरपंरिप्पवे

भावार्थ—मधुमय नन्दन वन से भरे पर्वत पर लम्बे मुँह वाले एवं विष भरे साँप, चन्द्रमा के समान सफ़ेद दाँत वाले एवं छोटे-छोटे आँख-

वाले गजों को मार डालने से उनके बच्चे जैसे रोते हैं, वैसे ये महिलायें खूब रोयीं; और कहने लगीं कि हमारे जजमान महाराज द्वारा जो तोड़ने वाली लतायें हैं उन्हें दूसरों से नहीं तोड़ा जाना चाहिए। अतः इन्हें छोड़ेंगो नहीं। हम लोग भी उसके पास आकर आपके चरणों की सेवा करेंगी।

[२९७]

सेंगट् कुरुनरियोसिगवेट्टैच्चेगुत्तांगदनिडत्तैच्चेन्दालोप्प
वेंकट् कलियानै वेलवेन्दनैविर लेरियिन्वाय् प्पेय्दवन्पेयन्दुप्पोय्
प्पेंगट् कलिट्रिन्मेलतन्पेयरिनार्परैयरैन्दान्वेन्मारि पेय्दालोप्प
वेंकणवरु मिनैन्तिरं गिनारिरुण्मनत्तान्पूमगलै येय्दिनाने

भावार्थ—लाल-लाल आँखवाली एक स्यार बड़े भारी शेर को मार कर उसके निवास स्थान को छीन लेने के समान क्रोध भरे मत्त गज और वेलायुध इन दोनों में एक जमाने में पूर्ण थे ऐसे राजा सत्यन्धर का शव जला देने के बाद काष्ठांगार वहाँ से निकल गया। क्योंकि राजा के शव को जला देने के बाद निश्चिन्त हो गया था। तदनन्तर वह वहाँ से राजा के राजमहल में जाकर हाथो पर चढ़ा शौर ढिंढोरा पोटा कि मैं (काष्ठांगार) राजा हो गया हूँ। वह आवाज वेलायुध के समान जाकर सब लोगों के दिल में धँसा; जिससे सुनने वाले सबके सब दुखित हुए इस तरह द्रोही काष्ठांगार पृथ्वोपति बन गया।

[२८९]

जीवक का जन्म

कलिमुकच्चुंरुंपुण्कोदै कयिलेरुत्तसैन्दु सोर
वलिमुगच्चुडरिनिलला मनत्तोडु मयंगियिप्पार्
सुलिमुग क्कलिरनान्ट्रन्सोन्नय नेरियिर्पोय
किलिमुगक्किलविक्कुट्र तिट्रेनक्किलक्कलुट्रेन्

भावार्थ—इस महान ग्रन्थ के कर्ता कवि चक्रवर्ती आचार्यरत्न श्री तिरुतक्कदेव महाराज कहते हैं कि तोते की बोली बोलने वाली विजया महादेवी की क्या दशा हुई? इसके बारे में कहने वाला हूँ। विजया किसमें गई थी? सत्यन्धर से पहनी हुई फूल की माला में मधुमक्खी मधु पीती थी; भ्रमर रींकार करते हुए चारों ओर घूमते थे; ऐसी जो माला थो वह उ

समय मुरझाई हुई थी, हवा के सामने हिलने वाले दीपक के समान सत्यंधर का मन चंचल था; मुख की शोभा क्षीण हो गई थी; गज के समान होते हुए भी आपत्ति से व्याकुल जो सत्यन्धर था उससे कहे गये अच्छे उपदेश को सुनकर विजया मयूर यन्त्र में बैठी हुई गई थी।

[२९९]

एहेन विलंगुवाट्क णेरिकडलमिर्द मन्ना
लहिहय मदुगैतन्नालाय् मयिलूरु मंगण्
वेहिहय पुगलिनान्ट्रन्वेन्ट्रि वेंमुरसमार्प्प
वेहहेरि पिणैयिन्माल्ग यिरुगि मेय्म्मरन्दु सोर्दाल्

भावार्थ—सूक्ष्मबुद्धि सम्पन्न, तलवार सदृश नयनाभिरामिनी, सागर में उत्पन्न अमृत के समान जो विजया थी; वह पति वियोग के कारण हतोत्साह के साथ आकाश में मयूर यन्त्र को धीरे-धीरे चलाती जाती थी; उस समय विश्वास द्रोह से राजा बना हुआ काष्ठांगार अपनी जीत का जो ढिंढोरा लगाया था न, वह शब्द कान में पड़ा। उसे सुनते ही वेलायुध से मारी गयी हिरणी के समान मूर्च्छित हो गयी।

[३००]

मोडुडै नगरि नींगि मुदुमरन्तुवन्ट्र युल्लं
पीडुडै यवरु मुट्कप्पिणंपल पिरंगि येंगुं
काडुडै यलवैयेललां कलुकिरुं तुरंगुनीलर्
पाडुडैमयिलन्तोकै पैप्पय वीलन्द दन्ट्रे

भावार्थ—विजया के मूर्च्छित हो जाने के बाद यन्त्र चलाया नहीं गया; अतः मयूर यन्त्र में वाम भाग के अन्दर वेग कम हो जाने से प्रख्यात नगर भाग के आगे जिसमें ऊँचे-ऊँचे पेड़ हों, धैर्यशाली पुरुषों को भी डराते हों, कई शव पड़े रहते हों एवं गरुड़ आदि मांसाहारी पक्षियाँ निवास करते हों ऐसे जुगुप्सामय श्मशान में आकर वह यंत्र अपने आप उतरा।

[३०१]

मंजुसूल् वदनैयोत्तु प्पिणप्पुगै मलिन्दुपेयु
मंजुमं मयानं तन्नुलपोसिल्वयिरान्दं कोदै
पंजिमेलवीलवदेपोर्पलक्कुडुमि नेट्रि
क्कुंजिमा मंजै वींलदु कालकुवित्तिरुन्द दन्ट्रे

भावार्थ—उस श्मशान भूमि के अन्दर मेघ घेरने के समान जलने वाले शवों की धुआयें फैली हुई थीं। शिशाच भी डर जावें ऐसे भयंकर श्मशान भूमि में 'अकिल' नामक वस्तु को सुगन्धता से भरी सुन्दर रुई के बिस्तर पर पड़ जाने के समान, कई बिन्दुओं से शोभित और पंखों वाला वह बड़ा मयूर यन्त्र धीरे से उतरा और पैरों को मिला कर रखा था।

[३०२]

वार्तरु तडंगणीर्तन्वनमुलै ननैप्प वेलपेर्
ट्रूर्कडलनैय काट्टु लच्चमोन्ट्रानुमुल्ला
लेर्तरु मयिलंजाय लिरैवनुक्किरंगि येंगिच्
सोर्दुकि रिरुत्तरेर्ट्रा डुणैपिरि मगन्ट्रि लोत्ताल्

भावार्थ—मोर के समान शोभावाली विजया अपने बड़े-बड़े आँखों से अश्रु निकालते हुए हो रही थी। वे अश्रुपात छातियों को गोला कर रहे थे। मन में अत्यन्त व्याकुल हो रही थी। सागर के समान विशाल उस श्मशानरूपी जंगल में किसी भी भयंकर वस्तु को देखकर नहीं डरती थी। क्या कहा जाय ? उसके दिल में ऐसी चिन्ता एवं विरक्ति हो गई थी जिसके कारण उसे सोचने और डरने का विचार ही नहीं आ सका। फिर भी उसके अन्तरात्मा में यह चिन्ता हो रही थी कि अपने पतिदेव महाराजा की क्या हालत हुई होगी। उसे याद करते-करते रो रही थी। इसी दुःख में डूब जाने के कारण अपने कपड़े को ठीक नहीं कर पा रही थी। उसकी दशा ऐसी थी कि मानो अपने साथी से अलग हुआ दुखाक्रान्त पक्षी हो।

[३०३]

उण्डेन वुरैयिकेट्पारुयिरुरु पाव मेल्लां
कण्डिनित्तेलिक वेन्ट्रु काट्टुवाल्पोलवागि
विण्डोट निवन्द कोयिलिवण्णवर्मगलिर्सेन्ट्राल्
वेएडलै पयिन्ट्र काट्टुलिवलंगिलै तमियनानाल्

भावार्थ—विजया कई तरह के अमूल्य रत्नाभरणों को पहले पहनती थी; आकाशचुंबिनी हवेली में निवास करती थी। पुण्य की महिमा से देव स्त्री के समान रहती थी। ऐसी महासती की हालत यह है कि शास्त्रों

के अन्दर जन्म-जन्मान्तर में सम्प्राप्त पापों का दुःख अवश्य भोगना पड़ता है इस तरह कहा गया है। यह तो अप्रत्यक्ष है। "प्रत्यक्ष उसके उदाहरण के रूप में किसी को देखना है तो मेरे सामने आकर देखें और पाप के फल का स्वरूप जान लें" मानो इस तरह दिखा रही हो। चारों ओर कपालों से भरे श्मशान भूमि में "पाप ही रूप धारण कर आयी हो" ऐसी अकेली पड़ी रो रही थी।

[३०४]

इरुलकेड विकलियेंगु मणिविलक्केरिय वेंदि
यरुलुडै मनत्तवागि यणंकोलां वणंगि निर्प्प
प्पोरुकडर्परुदिपोल प्पोन्ननान्पिरन्द पोलदे
मरुलुडै मातरुट्र मंमर्नोय् मरैन्द दन्ट्रे

भावार्थ—सब जगह अँधेरा हट गया। रत्नों की ज्योति चमकने लगी। उस श्मशान में रहने वाली देवतायें "यह महापुरुष मोक्ष प्राप्त करेगा।" इस तरह विचार कर भक्ति के साथ प्रणाम करती हुई खड़ी थीं। ऊर्मी से भरे सागर के ऊपर जन्म देने वाले मार्तण्ड के समान स्वर्णिम जीवन का जन्म हुआ। पुत्ररत्न को देखकर शोकाकुल माता विजया का सारा दुःख चम्पत हो गया।

[३०५]

पूंगलर्कुरुसिरन्द पुदलवनैप्पुगन्ट्र नोक्किक्त्
तेंगम लोति तिंगालवेण्कदि पोलिवदे पोल्
वींगिल मुलैग लिवम्मित्तिरन्दु पाल्पिलिट्र वाट्राल्
वांगुपु तिलकं सोत्तित् तिलगनै त्तिरुन्द वैत्ताल्

भावार्थ—मधु भरे फूलों को जिस विजया ने अपने सिर के बालों में लगायी थी, वही विजया वीरातिवीर सत्यन्धर से प्राप्त पुत्ररत्न को देखकर खुश हुई। जैसे चन्द्रमा अपने सफ़ेद किरणों को निकालती है वैसे ही विजया अपने स्तन कलशों में से दूध आने तक सहन न कर सकी। खुद ही दूध को निकाल कर पुत्र के मुँह में पिलायी और मानवों का तिलक जो पुत्र था उसके ललाट में तिलक लगाकर नीचे सुलाया।

[३०६]

करैपन्नीराण्डुडन्विडुमिन्कामसालै तलिनिरुमिन्
सिरैसेय् सिगम्पोन्मडंगिच्चेरामन्नसिनमलुंग
वुरैयुं कोट्टमुडन्सीमि नोप्पोर्कुन्ट्रन्तलैतिरान्तट्
टिरैवन्सिरुवन्पिरन्दानेन्ट्रे पक्कूर्तोरुयत्तीमिन्

भावार्थ—विजया देवी ने अपने पुत्र की परिस्थिति को देखकर बहुत पश्चात्ताप किया। वह कहने लगी कि यदि यह पुत्र राजमहल में जन्म लिया होता तो राजा अपने पुत्रोत्पत्ति की खुशी में बारह साल तक कर (टैक्स) वसूल नहीं करते। धर्मशालायें और मन्दिरों को बनवाते। शत्रु राजाओं को जेलखाने से छुड़ा देते। सोने-चाँदी का खजाना खोलकर गरीबों को दान देते। ऐसा सारा वैभव अब धूमिल हो गया है। क्या करूँ ? कैसे रोऊँ ?

[३०७]

माडमोंगु मणिनगरु ल्वरंबिलपण्डन्तलैत्तिरन्तिट्
टाटै सेंपोनणि कलंगल्यावुं यारुं कवर्न्दलुनाल्
वीडलिन्ट्रक्कोलप्पेरुवाविक्कलवेण्डावीलन्तीवर्कुक्
कोडिमून्ट्रोडरैच्चेंपोन्कोमानलगुमेनवरैमिन्

भावार्थ—आगे कहने लगी कि सर्वश्रेष्ठ राजमहल में अनेक वस्तुओं में भरे भाण्डागार को खोलकर सोना, चाँदी, कपड़े, आभूषण आदि चीजों को आज से सात दिन तक जिस किसी को जितना ले जाना है उतना खुशी से ले जा सकते हैं। सरकार के कोई भी कर्मचारी रोके नहीं। इस तरह तुम्हारे पिता पुत्रोत्पत्ति खुशी के मारे दान देते। यदि और किसी की जरूरत है तो आकर माँगें तो राजाधिराज महाराज साढ़े तीन करोड़ सोना दान करेंगे। इस तरह तुम्हारे पिता ढिंढोरा पिटवाते। क्या करें बेटा, राजमहल में रहनेवाले हम दोनों दुर्भाग्य से इस दुर्गन्ध श्मशान में अनाथ पड़े हैं। न तो कोई पूछने वाला है और न कोई सहायक है।

[३०८]

अरुंपोर्पूणुमारमुमिमैप्पक्कणिकलकन्कोयि
लोरुंगुकूडि च्चादकंचेय् तोगैयरसक्कुंडन्डपोक्किक्
करुंगै क्कलिरुं कंबलमुं कासुं कविकल् कोलवीसि
विरुंबप्पिरप्पाय् विनैसेय्देन्काण विह्तोओ पिरक्कुमा

भावार्थ—और आगे कहने लगी बेटा, तूने राजमहल में जन्म लिया होता तुम्हारे पिता बड़े भारी राजमहल के अन्दर चमकदार सोने की माला दान में देकर ज्योतिषो लोग को बुला ले जाते। और उनसे जन्म कुण्डली तैयार कराते। अलावा इसके तुम्हारे जन्मोत्पत्ती की खुश खबर काले सूँड़वाले हाथी, पीताम्बर, सोने का सिक्का आदि के साथ अपने अधीन राजा लोगों को भेजते। इस तरह सारी प्रजा को खुशी के साथ जन्म लेनेवाले तूने मेरे दुर्भाग्य के कारण ऐसे दुखदायक परिस्थिति में जन्म लिया है। मैं क्या कहूँ ? किसके लिये रोऊँ ? और कैसे तसल्ली प्राप्त करूँ ? कौन से जन्म का पाप उदय में आकर कष्ट दे रहा है ? और क्या-क्या होनेवाला है ? भगवान जाने !

[३०९]

वेव्वायोरिमुलवाग विलिन्दारोमं विलक्काग
वोव्वाच्चुडुकाट् टुयररंगि निललपोनुडंगिप्पेयाड
वेव्वाय् मरुंगु मिरुन्दिरंगि क्कूगै कुलरिप्पाराट्ट
विव्वारागि प्पिरप्पदोइदुवो मन्नक्कियलवेन्दे

भावार्थ—हे राजकुल तिलक, भयंकर एवं विकार मुँहवाले स्यार की आवाज वाद्य विशेष हो, शव को जलानेवाली आग का प्रकाश दोपक हो, ऐसे इस भयंकर श्मशान में अवांचनीय ऊँचे स्थान पर पिशाच की छाया हिलता हो, सब तरफ़ से आनेवाला खोटे पक्षियों का नाद दया से तुम्हारी तारीफ़ कर रहा हो; क्या इसी हालत में तुम्हारा जन्म होना था ? क्या यह राजपरंपरा को अनुकूल हालत है। बोलो बेटा ! बोलो न !

[३१०]

पट्टामन्त न्नगर्पुरमाल्पायल्पिणंचूलसुडुकाडा
लुट्टारिललात्त मियेना लोदुंगलागात्तूंगिरुलान्
मट्टिजाल मुडैयाय् नी वलरुमारु मरियेना
लेट्टेयिदुकण्डेगादे यिरुत्तियाले न्निन्नुयिरे

भावार्थ—आगे कहने लगो कि हे राजपुत्र अब तुम जो रहते हो यह शत्रुओं की जमीन है। जिस जगह पर तुम सो रहे हो यह शवों से भरी श्मशान भूमि है। मैं बिना बन्धु-बाँधवों के निःसहाय अकेली होकर इस जंगल में खड़ी हूँ। यहाँ से चले जाने का विचार करें तो एकदम अँधेरा ही अँधेरा है। इस भयंकर अँधेरे में मैं अकेली कैसे जा सकती हूँ। दूसरी बात यह है कि तुम्हारी कैसे रक्षा करूँ? समझ में नहीं आता। तुम्हारे पालन-पोषण की परिस्थितियाँ मेरे सामने भयंकर रूप में खड़ी हैं। हे मेरी प्यारी आत्मन्, इस तरह असहनीय दुःख की हालत में भी इस शरीर से अलग नहीं हो पा रही हो! यह कितनी व्यथा की बात है?

[३११]

पिरन्द नोयुं पूंपिण्डिप्पेरुमानडिकलपेररमुं
पुरन्दन्तेन्बाट्रुयर्कडलै नीन्दुं पुणैमट्राक्काक्कार–
सिरन्दारुलरेलु रैयायाचिन्तामणिये किटत्तियान्
मरंकूनुंकोन्सोर्चेय्देन् मंम्नर्नोयिन्वरुन्दुको

भावार्थ—हे चिन्तामणिरत्न, तू तो मेरी बात सुनकर कुछ नहीं बोल रहा है! मेरे कष्ट को निवारण करने के वास्ते जन्म लिया हुआ तू और अशोक वृक्ष की छाया में विराजमान भगवान अरहन्तदेव के सद्धर्म ये दोनों मेरे सहायक रहकर दुख सागर के किनारे पहुँचाने में जहाज के समान नहीं होंगे तो तुम्हारे और अरहन्त भगवान को छोड़कर इस दयनीय परिस्थिति में और कौन आकर सहायता करेगा? कोई नहीं आता। मैं ऐसो अनाथ हो गयी हूँ कि मुझे आँख उठाकर देखने वाला कोइ नहीं है। प्रतापी तुम्हारे पिता राजराज के कहे अनुसार चलकर अब रो रही हूँ।

[३१२]

अन्दो विसयैं पट्टेन कोण्डगंकै पुरंगै यानार्पोर्
कन्दार्कलिट्रुत्तंगोमान्कलिय मयिलोर्मयिलून्दु
वन्दार्पोलप्पुरंकाट्टु ल्वन्दाटमिये येनमरंगल्
सिटितिरंगि यलुवन पोंपनिसे कंण्णीसोरिन्दनवे

भावार्थ—जैसे हाथ की हथेली उल्टी होने में जितनी देर लगती है वैसे ही बहुत जल्दी विजया ने जिन-जिन दुःखों को पाया है उन्हें याद करती रही। खम्भे में बाँधे गये हाथी वाले राजाधिराज सत्यन्धर मर जाने के बाद एक मयूर दूसरे मयूर को ले आया हो ऐसी यह विजया इस श्मशान भूमि में अकेली आयी हुई है। उसकी हालत को देखकर वहाँ खड़े रहने वाले सारे पेड़ ओस की पानी के जरिये मानो आँसू बहा कर रो रहे हों। हन्त! हन्त!! हन्त!!!

[३१३]

अडर्पोपैपूण्रसलिय वरुं पोर्पुदलवर्पेट्रिरुन्द
विडर्कोणंजत्तिरैवियु मिरुंकण्आलत्तिरुल्परुगि
च्चुडर्पोय् मरैयत्तुलं कोलिय कुलविमतिपे ट्गंकुलिन्दं
पडतोरिन्दि यदुवोत्ताल्पणैसेय् कोट्टु प्पडामुलैयाल्

भावार्थ—जो राजा सोने के अत्यधिक आभूषणों को पहनता था वह स्वर्गवासी हो गया। मुश्किल से प्राप्त करने योग्य स्वर्ण सदृश पुत्ररत्न को जिस विजया ने पाया, उसने पहले दिल में असीम दुःख पाया। सुन्दर स्तन भारों से विकसित विजया को अब थोड़ा सा दुख भार कम हुआ। जैसे अँधेरे को विनाश करने वाले सूर्य का अस्त मन हो जाने पर कलामय चन्द्रमा का उदय संतोषदायी रहता है वैसे ही सूर्य समान सत्यन्धर को मृत्यु के पश्चात् चन्द्रमा जैसी पुत्रोत्पत्ति उसे आनन्ददायिनी बनी। अर्थात् विजया सन्ध्याकाल के समान शोभती रही।

[३१४]

श्मशान में देवता की सहायता

तेनमर्कोदैमार्दतिरुमगन्ट्रिरत्ते योराल्
यानवन्सेवलेन्ट्रेयवलिया विरुन्द पोलितर्
ट्रानमर्न्दुलैयि नींगाच्चण्बगमालैयेन्नुं
कूनिय दुरुवं कोण्डो र्देय्वतं कुरुकिट्रन्ट्रे

भावार्थ—जिस विजया ने मधुर भरी फूलमाला पहनी थी वह आज दुख रूपी सागर में डूबा हुई तड़प रही है। अपने प्यारे पुत्र की सातिशय पुण्य की महिमा को न जानती हुई "अनाथ मैं इस शिशु को कैसे

पालूँगी" क्या होगा ? इस तरह चिन्तित रहती थी तब उसके साथ राजमहल में हमेशा रहने वाली सहेली चंपकमाला के रूप में उसके पास आकर देवता (जिसका कमर टेढ़ा हो ऐसा रूद्र धारण कर) खड़ी हुई।

[३१५]

विंमुरु विलुम वेन्नोयवणुरै देय्वंसेरक्
कोंमेन वुयिर्त्तु नेंजिकोंट्पुरु कवलैनींग
वेंमनै तमियैयागि यिव्बिडरुट्र तेल्लां
सेंमलर्त्तिरुविन् पावा यान् सेय्द पावमेन्ट्राल्

भावार्थ—विजया के रुदन के कारण करुणा से उसके पास आयी हुई देवता को देखकर विजया को तसल्ली हुई। उसने लम्बी श्वांस लेकर दुख को हल्का किया। उस समय सखी के रूप में आई हुई देवता कहने लगी कि भो माँ! लाल-लाल कमल पर विराजमान लक्ष्मी देवी सदृश देवी, आप अकेली रह कर जो कष्ट उठा रही हैं, ये सब पापकर्म का ही फल समझना चाहिये। आप धैर्य धारण कीजियेगा।

[३१६]

पूविनुट् पिरन्द तोन्ड्र पूर्णिय ननैय नंबि
नाविनु ल्लुगमेलला नउक्कुमोन्ट्रादु विन्ट्र
कोविनैयडक्कं वन्दु कोण्डुपो मोरुव निन्ने
कावियंकण्णि नाया मरैवदु करुम मेन्ट्राल्

भावार्थ—वह देवता विजया को देखकर कहने लगी कि नील कमल के समान सुन्दर नयनोन्मीलिनी देवी, कमल फूल के अन्दर प्रकाशमान षण्मुख के समान भूत इस पुण्यशाली पुत्र की आज्ञानुसार सारा संसार चलेगा। शत्रु के रूप में जो राजा अब अपने सामने (काष्ठांगार) उपस्थित है, यह पुत्र उसको निश्चय से विनाश करने वाला है। ऐसे इस अदृष्टशाली पुत्र को ले जाने एक महान व्यक्ति आनेवाला है। अतः हम दोनों को जरा छिपकर रहना अतीव आवश्यक है।

[३१७]

सिन्मणि मललैनाविकिण्किणिसिलंपोटेंगप्
पन्मणि विलक्किनील नंबियै प्पलिल सेर्त्ति
मिन्मणि मिलिरत् देवि मेललबे योदुंगु किन्ट्रा
णनमिण योन्ट्रु मुन्नीर्च् चलंजलं पुगुव दोत्ताल्

भावार्थ—चमकने वाले रत्नरूपी दीपक की छाया में तैयार किये गये बिस्तर पर (विजया देवी को जानकारो के बिना देवता से तैयार की गयी बिस्तर) पुत्ररत्न को सुला कर, बच्चों की बोली की सी आवाज करने वाली किंकिणी, पायल, रत्नाभरण और पीताम्बर आदि फीका कर रहे हों। ऐसे समय पर धीरे-धीरे छिप कर जाने वाली विजया उस शंख के समान शोभित हो रही थी जो सागर में 'सलंजल' नामक बढ़िया शंख मोती को जन्म देकर समुद्र के अन्दर चला जाता है, ठीक वैसे ही विजया पुत्ररत्न को जन्म देकर छिप रही थी।

[३१८]

एदिला रिडर्पन्नूरु सेय्यिनुंसेय्दवेल्लां
तोतिलवागवेन्ट्रु तिरुमुलैप्पान्मडुत्तु
क्कातला न्पेयर्सुमन्त कदिर्मणियालिसेर्त्ति
क्कोदै तालकुललिनालै क्कोण्डपोय् मरैयनिट्राल्

भावार्थ—उस देवता ने, दुष्ट शत्रु लोगों से सैकड़ों कष्ट (अहित) देने पर भी वे सारे के सारे पुण्य की महिमा से सुख देने वाले हो जाते हैं। ऐसा कहकर शिशु को विजया के स्तन कलशों से दूध पिलवाया; राजा सत्यन्धर नामांकित अंगूठी को उस शिशु के ऊपर धर दिया। उसके बाद जो अपने बालों में फूल मालायें पहनती थीं ऐसी देवी विजया को साथ में लेकर छिपने लगीं।

[३१९]

नलिवनै सेय्दिलाते नंबिनी तमियै यागि
क्कोलिवनै माक्कलसूल क्किडत्तियोवेन्ट्रु विम्मा
प्पुलिलय कोंबु तानो कर्रुविलै पूत्तदेपो
लोलिकयो कोंम्बु पट्रि ओरुकणानोक्किनिन्ट्राल्

भावार्थ—उस समय विजया कहने लगी कि बेटा, तुम्हारा जन्म देने का भाग्य तो मुझे मिला है। परन्तु रक्षा कर बड़ा करने का भाग्य मुझे नहीं मिला है। यह बड़ी अफसोस की बात है। क्या करें ? परवश हूँ। बेटा, तुम्हें अकेला इस भयंकर वन में दुष्ट वनचर जीवों के बीच छोड़ कर जा रही हूँ। इस तरह बिलख-बिलख कर रोयी। जैसे आधार के लिए

लकड़ी पर लगी हुई एक लता मनोहर फूल के साथ शोभती हो वैसे ही एक लकड़ी को पकड़ कर एक तरफ खड़ी माँ विजया एक आँख से अपने जीवन से भी प्यारे पुत्ररत्न को देखती खड़ी रही।

[३२०]

नालोडु नडप्पदु वलुक्कि मिन्नोडूर्
कोलोडु कुलिर्मति वन्दु वीलदेनक्
कालग वुडैयिन न्कन्दु नामनुं
वालोडु कनैयिरु लंवन्दु तोन्ट्रिनान्

भावार्थ—विजया देवी देवता के साथ छिप कर जब खड़ी रहती है तब चन्द्र नक्षत्र के रास्ते से जाना छोड़ कर विद्युत् के साथ जाने वाला जो मेघ है उससे मिल कर नीचे जमीन पर आ गिरा हो, इस तरह काला कपड़ा पहना हुआ व्यापारी गन्धोत्कट अंधेरे से भरे श्मशान भूमि में तलवार के साथ आ गया था।

[३२१]

वाल्कडैन्दलुत्तिय कण्णिना र्कंकडन्
तोलकडैन्दलुत्तिय मार्बन्ट्रिं गिरु
णीलसुडर्निलन्मणि किलिप्पनोक्किना
नालकडिन्दणंगिय वणंगु काट्टुले

भावार्थ—तलवार के समान आँख वाली नारियों के छाती के साथ आलिंगन करने से दृढ़तर वक्षस्थल से युक्त व्यापारी गन्धोत्कट एक स्थान पर खड़ा था। लोगों को हर तरह से कष्ट पहुँचाने वाली देवताओं के निवास स्थान उस श्मशान में काफी अँधेरा था। फिर भी उस अँधेरे के अन्दर एक जगह रत्नों का प्रकाश दिखाई देता था। अतः वह वणिक् गन्धोत्कट उस ओर आगे बढ़ा।

[३२२]

अरुप्पिल मुलैयवर्क्कनंग नाकिय
मरुप्पिलं पिरैनुद लमदर्वै वेंकदिर्
परप्पुपुकिडन्देन विकडन्द नविये
विरुप्पुल मिगुदियिन्विरैवि नेय्दिनान्

भावार्थ—जिसका दो अग्रभाग युक्त पूर्व पक्ष चन्द्रमा के समान ललाट हो, अविकसित कमल फूल के सदृश स्तन भार हो ऐसो नारियों के प्रेमी बनने वाला, वर्तमान में प्रातःकालोन सूर्य अपने किरणों को फैलाया हो इस तरह के अति सुन्दर शिशु को देखकर वणिक् के दिल में अत्यधिक लालसा होने के कारण वह झटिति उस शिशु के पास गया।

[३२३]

पुनैकदित्तिरुप्पणि प्योन्सेय् मोदिरं
वनैमलर्त्तारिना न्मरैत्तु वण्कैयार्
ट्रुनैकदि र्मुगन्देन मुगप्पत्तुंबिनान्
सिनैमरै न्दोरुकुरल् 'सीव' एन्ट्रदे

भावार्थ—फूलों की माला पहना हुआ गन्धोत्कट ने श्रेष्ठी, सुन्दर एवं प्रकाशमान सोने की अँगूठी को छिपा लिया। क्योंकि दूसरे लोगों को इसे देखना नहीं चाहिये। अन्धकार को निवारण करने योग्य प्रकाशों को किरणों को सँवारने के समान जाज्वल्यमान शिशु को उठा लिया। उस समय वह बच्चा छींकने लगा। उसे सुनकर पेड़ के पीछे छिपी देवता ने "जीव" चिरंजीवो रहो। इस तरह का आशोष दिया। विजया ने डर के मारे अपने दिल में ही शिशु के प्रति आशीष दिया।

[३२४]

एन्पेलुं तुरुकुपु सोर वोण्डिय
वन्पेलुं तरसनु क्कवलि त्तैयनै
नुन्पलं पकैतव नूरु वायेन
विन्पल क्किलविंयि निरैंजि एत्तिनान्

भावार्थ—तब विजया महादेवी, जो बच्चा अपने रुधिर में जन्म लिया है उस बच्चे के कारण अपने को त्याग कर रही है। फिर भी प्रेम का पारावार उमड़ पड़ा। याने बच्चे की रक्षा का भाग्य न होने से बच्चे को वणिक् के हाथ त्याग रही है। फिर भो माँ का प्रेम अलप नहीं है। वह रुक थोड़ी सकता है। वह अपने आप निकल आता ही है। फिर सोचती है कि पतिदेव (राजा सत्यन्धर) को अपने पुत्र को आँखों से देखने का सौभाग्य नहीं मिला। यह बड़ी अफसोस की बात रही। इस तरह की वेदना के साथ उस देवता को कृतज्ञता के साथ नमस्कार किया।

फिर अपने पुत्र को देख कर बोली बेटा, तुम्हारे कुल के महान शत्रु को समूल नाश करना। तुम चिरंजीवी होकर दिगंत यश प्राप्त करोगे। उसका आशीर्वाद मधुर फल के स्वादु समान प्रिय था।

[२२५]

ओलुक्किय लरुन्दवत्तुडंबु नींगिना
रलिप्परुं पोन्नुडं पडैन्द तोप्पवे
वलुक्किय पुदलवनं कोलिय मामणि
विलुत्तगु मगनोडुं विरैवि नेगिनान्

भावार्थ—गन्धोत्कट का दिल खुशी के मारे भर आया जैसे सच्चारित्रमय तप के द्वारा नश्वर शरीर को नाश कर अविनाशी देव शरीर को प्राप्त व्यक्ति के समान सन्तुष्ट हुआ हो। उसके बाद अपने मरे हुए बच्चे को वहीं (श्मशान में) छोड़ कर, अमूल्य रत्न के समान प्रकाश-पुंज दूसरे बच्चे को लेकर जल्दी से जल्दी घर चला।

[३२६]

मिन्नडु कनैयिरु णीन्दि मेतगु
पोन्नुडै वलनग पोंलिय प्पुक्कपिन्
रन्नुडै मतिसुड त्तलरुं तैयलुक्
किन्नुडै यरुण्मोलि यिनिय सेप्पिनान्

भावार्थ—गन्धोत्कट श्रेष्ठी ने अन्धकारमय जंगल से निकल कर धनधान्यादि वैभव से समृद्ध नगर में प्रवेश किया। जिस श्रेष्ठी का सौध महान् उत्तुंग था ऐसे अपने भवन में प्रवेश कर पुत्र वियोग से दुखित भार्या से कहने लगा कि हे प्रिय भार्ये! तुमने बिना देखे बच्चे को मरा कह दिया। देखो तुम्हारा बच्चा एकदम जीवित है। अच्छी तरह देख भाल करके कहना चाहिये था। इस तरह नकली गुस्सा दिखाया। इस तरह से आनन्ददायक वचन कह कर भार्या को एकदम सन्तुष्ट किया।

विशेषार्थ—गन्धोत्कट श्रेष्ठी का बच्चा मर गया। यह बात सच है। फिर भी अपनी भार्या से यों कहा कि तुम्हारा बच्चा जीवित है मरा नहीं। तुमने बिना देखे कह दिया। इस तरह छिपाने का कारण यह है कि नारियों का स्वभाव यह है कि चाहें दूसरे का बच्चा कितना भी

सुन्दर हो उस पर प्रेम नहीं दिखा सकतीं। अतः दूसरे का बच्चा न कह कर उसी का बच्चा कहा। दूसरी बात यह है कि अंगूठी से सेठ जी को मालूम है कि यह राजा सत्यंधर का पुत्र है। यह बात जाहिर हो जायगी तो राजा काष्ठांगार आकर बच्चे को मार डालेगा। अतः इस रहस्य को छिपाना भी आवश्यक था। तीसरी बात यह है कि सेठ जी को मुनिराज के द्वारा पुत्र रत्न मिलने का आदेश भी था। इन सभी कारणों से सेठ जी को बच्चे का रहस्य छिपाना आवश्यक हो गया था।

[३२७]

पारुन्दिय वुलकिनुट् पुकल्कण्कूडिय
वरुन्ददियकट्रिय वासिलकर्पिनाय्
तिरुन्दिय निन्मगन्ट्रीतिनींगिनान्
वरुन्दनी एम्मनै वरुग वेन्नवे

भावार्थ—संसार के ख्याति से समृद्ध देवी 'अरुन्दति' से भी सौभाग्यशालिनी एवं निर्दोष सतीत्व से सम्पन्न मेरी जो सुनन्दा है उसका पुण्य बलवान है। हे पुण्यवती सुनन्दा, तुम्हारे भाग्य से तुम्हारा बेटा मरण से बच गया है। अतः तुम दुखित मत होओ खुशी के साथ मेरे पास आओ।

[३२८]

कलललै त्तिलितरुं कलिको ल्कोदैतन्
नुलललै त्तेलुत्तरु मुवगैयूर्तर
वल्ललै वलिवरैन्देय् नंबियै
वेलिललै वेलिनान्विरगि नीट्रिनान्

भावार्थ—भ्रमरों के रींकार के साथ मधुभरी माला पहनी हुई सुनन्दा, अपने मन के अन्दर उत्पन्न उमंग के अतिरेक से बच्चे को लेने के लिये पतिदेव के पास वेग से गई। उस समय सफेद पत्ते के समान तीक्ष्ण वेलायुधधारी गन्धोत्कट श्रेष्ठी ने बच्चे के ललाट में विजया द्वारा लगाया गया जो तिलक था उसे मिटा दिया और जो राजकीय अंगूठी थी उसे भी छिपा लिया। तदनन्तर सुनन्दा, इस बच्चे को अपना बेटा समझकर पालन-पोषण करें इस विचार के साथ शिशु को अपने पत्नी के हाथ में दिया।

[३२९]

सुरिमुग वलंपुरि तुवैत्त तूरियं
विरिमुग विशुंबुर वाय्विट्टार्त्तन
वेरिमुग नित्तिल मेन्दिच्चेन्द पोर्
करिमुग मुलैयिना र्काय्पोन्सिन्दिनार्

भावार्थ—सुनन्दा के द्वारा बच्चे को लेते समय स्वतः शंख वाद्य बजने लगे। आकाश में वाद्य विशेषों का नाद सुनाई दिया। शोभायमान मोतियों को पहनने से लाल-लाल दिखाई देने वाले एवं काले मुँह वाले स्तन भार से शोभित महिलायें सोने के मुहर और अन्य वस्तुओं को खुशी के मारे गरीबों के लिये खूब दान में देने लगीं।

[३३०]

अलुकुर लमदंगिय वल्ल लावण
त्तेलुकिलै मगिलदेमदरसु वेण्डिनान्
कलिपेरुं कादलान्कन्दु नामनेन्
रुलितरु पेरुनिधि युवप्प नलिकनान्

भावार्थ—राजा सत्यंधर मर जाने के कारण सारा संसार दुख सागर में डूबा हुआ था। सब जगह रोने की आवाज सुनाई देती थी। सारा बाजार दुख के कारण बंद दिखाई देता था। ऐसे समय में वणिक् गन्धोत्कट के द्वारा पुत्र प्राप्ति के कारण बड़े कोलाहल के साथ पुत्रोत्सव मनाया जा रहा था। इस उत्सव के कारण से अनभिज्ञ दुष्ट काष्ठांगार, अपने राज्य प्राप्ति से उत्पन्न सन्तोष के कारण से ही उत्सव मनाया जा रहा है, ऐसा समझ कर विचार करने लगा कि गन्धोत्कट श्रेष्ठी हमारे ऊपर असीम प्रेम रखते हैं; उसी के कारण उत्सव मना रहे हैं। वे महाशय सात पीढ़ी तक हमारे राज्य को हो चाहते हैं। अतः वह सेठ खुश हो जाय इसी उद्देश्य से काष्ठांगार ने सेठ को खूब धन आदि वस्तुओं को देकर भेजा।

विशेषार्थ—राजा का पुत्र पुण्यशाली है। दुर्भाग्य से पिता का वियोग और परिस्थिति के कारण माता का अलग होना हुआ है। फिर भी राज्य की सम्पत्ति उसी को है। अतः वह सम्पत्ति काष्ठांगार को इच्छा के बिना

पुत्र के जन्मोत्सव में आ गयी है। इसे पुत्र के पुण्य की महिमा कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं है।

[३३१]

तिरुमग पेंट्रेन च्चेंपोर्कुन्ट्रेन
प्पेरुनल नितितलै तिरन्दु पीडुडै
यिरुनिल त्तिरवल क्कर्त्तियिन्नणं
सेरुनिलं पयप्पुर च्चेलवन्सेल्लुमे

भावार्थ—धन-धान्यादि सम्पत्ति से एकदम सम्पन्न गन्धोत्कट श्रेष्ठी ने शिशु (जीवक) के पालन-पोषण में अपने को धन्य माना। सुवर्ण पर्वत के समान समृद्ध भाण्डागार को खोल दिया और कह दिया कि जो कोई भी गरीब या भिखमंगा आवें उन सबको भरभूर दान दिया जाय। उसका उद्देश्य यह था कि अपना बेटा युद्ध में शत्रुओं को जीतने वाला हो। अलावा इसके वह दान देने में भी उदार हो। इन उद्देश्यों की पूर्त्ति के निमित्त भरपूर दान-धर्म करता रहा।

[३३२]

नल्लुयि नींगलु नन्माण्बुडैयतोर्
पुल्लुयि र्तन्नोडु निन्ट्रु लिप्पुल्लुयिर्
कल्लुयि र्कीट्टि र्करप्प क्कलंगविलत्
तल्ललु ट्रीलुट्र नाट्र बुरैप्पां

भावार्थ—विजया महादेवी, अपनी आत्मा से भी अमूल्य जो पतिदेव सत्यंधर महाराजा थे; उनके वियोग के पश्चात् उसका सम्बन्ध महिमामय एक बच्चे के (जीवक) साथ रहा। उसके अशुभ कर्मोदय के कारण जीवन स्वरूप उस बच्चे को भी श्मशान के अन्दर एक अनजान व्यक्ति के हाथ में देना पड़ा। उसका दुख ऐसा था कि पारावार के अन्दर डूबे हुए जहाज वाले व्यक्ति हो। इसके अलावा उसको और क्या-क्या दुख भोगना पड़ा; उसके बारे में आगे विस्तार से कहेंगे।

[३३३]

पोरियरु पानैयि पोंमेन विम्मि
वेरियुरु कोदै वेरुनिल मेय्द
इरुमुरै येलुच्चियि नेय्दुवदेल्ला
नेरिमैयिर्कूर निनैवि नगन्ट्राल्

भावार्थ—जो विजया सुगन्ध फूलमाला पहनती थी, वह रोकर जाती हुई जमीन पर गिर पड़ी। उसको हालत ऐसी दीख पड़ी कि जैसे बिना यन्त्र के नकली चित्र हो। देवता ने विजया को प्रारम्भ से लेकर आखिर तक जो हुआ और होने वाला है, उन सबको विस्तार से बताया। उसे ध्यान से सुनने से एवं अपने स्वप्न फल के बारे में विचार करने से विजया देवी का दुख जरा हलका हुआ।

[३३४]

पेरुमग र्कक्कं पिरुलिवन्ट्रिक्केट्टे
तिरुमगल्ता निनिच्चेय् वदै येल्ला
मोरु मनत्तन्ना युरैयेन लोडुं
तेरुमरु देय्वदं चेप्पिय दन्रे

भावार्थ—विजया ने अपना पुत्र जोवक, महापुरुष बननेवाला है और उसके सारे सुख-भोग-वैभव आदि के विषय में सविस्तार सुना। लक्ष्मी के समान विजया ने देवता से प्रार्थना को कि आप मेरे दुख में दुखी और सुख में सुखी हैं। अतः आप बता दोजिये कि अब मुझे क्या करना है? और भविष्य में मेरी हालत कैसी रहेगी? इसके जवाब में देवता ने कहना शुरु किया।

[३३५]

मणियरैन्दन्न वरियर लैंबार्
पणिवरुं कर्पिन्पडैमलर्क्कण्णाय्
तुणियिरुट् पोर्वैयि र्ट्रुन्नुपु पोगि
यणिमण पेर्या र्ट्रमरिकै सार्वां

भावार्थ—देवता कहने लगा, नोलमणि के समान काले बालों वाला, सारी दुनियाँ के लोगों से नमन करने योग्य सतीत्व से युक्त एवं फूल के सदृश नयनवाली हे देवी, अपन लोग अन्धकार में छिपते-छिपते जाकर सुन्दर सिकता सी भरो 'अमरिकै' नाम को नदी पार करेंगे। इसे ध्यान में रख लेना।

[३३६]

अमरिकै वकोसनै यैंबदु सेन्ट्रार्
कुमरि वकोडिमदि कोंपुर मुदूर्
तमरियल् ओंबुन्धरणि तिलकं
नमरदु मट्रदु नण्णल मागि

भावार्थ—देवता आगे कहने लगी कि अमरिकै नदी पारकर पचास योजन दूर जावें तो वहाँ पर लताओं से शोभित परकोटा और गोपुर मिलेंगे। वह बहुत पुराना शहर है। उस नगरो में सबलोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं। उस नगर का नाम है 'धरणोतिलक'। वहाँ अपने रिश्तेदार रहते हैं। इसलिये वहाँ जाना नहीं चाहिये। उससे आगे जाना जरूरी है।

विशेषार्थ—देवता के द्वारा रिश्तेदार रहनेवाले शहर में जाने से इन्कार करने का मतलब यह है कि विजया के पतिदेव राजा सत्यंधर युद्ध में मारा गया। अतः वह विधवा एवं अनाथ हो गयी। पुत्र को श्मशान के अन्दर किसी अनजान व्यक्ति के हाथ में दे दिया है। सन्तति भी उसके साथ न रहो। ऐसी दलित एवं दयनीय अवस्था में बन्धु-बान्धवों के घर जाना उचित नहीं है क्योंकि वहाँ पर नोचता को दृष्टि के द्वारा अपमान प्राप्त करने के सिवाय आदर-सत्कार नहीं मिलेगा। ऐसे स्थान पर क्यों जावें ? नहीं। उससे आगे जाना हो उचित है। यही देवता का आशय है।

[३३७]

वण्डार कुवलैय वावियुं पोय्गैयुं
कण्डार्मनंकव र्कावुं कञलिय
तण्डारणियत्तु त्तापद प्पलिलयोन्
रुण्डां कदनुल लुरैगुव मेन्ट्राल्

भावार्थ—देवता आगे कहती है कि उससे आगे 'दण्डकारण्य' नामक तपोधनों का एक निवास स्थान है। वह स्थान भ्रमरों से गुञ्जायमान 'कुवलै' नामक फूल से एवं तटाकों से शोभित है। उसे देखने से सभी लोगों का मन आकर्षित हो जाता है। वह स्थान अपन लोगों के निवास के लिये उचित है। इसलिये अपन लोग वहीं पर चले चलेंगे।

[३३८]

पोरुलुडै वाय्मोलि पोट्रिनल्कूर
मरुलुडें मादं मंदित्तन लागि
यरुलुडै मातव रत्तिसै मुन्नि
यिरुलिडैमिन्नि निलंगिलै सेन्ट्राल्

भावार्थ—देवता विजया से सच्ची बातें प्रेम से कहती थीं। इसलिये विजया मूर्च्छित अवस्था में रहने पर भी देवता की बातों को बड़े आदर के साथ सुनने लगी। क्योंकि उसे देवता के सिवाय न कोई आदर करनेवाली है और न कोई प्रेम से बोलनेवाली है। इसे भी छोड़ दें तो लकड़ी को छोड़े गये अन्धे के समान हो जायगी। अनाथ अवस्था में कोई न कोई सहारा तो अवश्य चाहिये। अतः देवता की बात पर विश्वास कर अन्धेरे में ही दयामयी तपोधनों के निवास स्थान की ओर चलने लगी। विजया उस समय कैसी थी? अन्धेरे में विद्युल्लता के समान थी और प्रकाशमान आभूषणों को पहनी हुई थी।

[३३९]

उरुव मामति वाण्मुगत्तोडिय
विरुविलुंमेरि मामगरक्कुलैत्
तिरुविलुंमिवै तमोलि मादरैप्
पोरुवि नीलत पोक्कुव पोन्ट्रवे

भावार्थ—विजया का मुखमण्डल पूर्णचन्द्र के समान था। उसके मुख के अन्दर शोभायमान आँखें सुन्दर थीं। उसके कानों के आभूषण चमक रहे थे। ये सब (इनका प्रकाश) हित-मित और प्रिय वचन बोलने वाली उस विजया को अन्धकार से पूर्ण जंगल में मानों रास्ता दिखा रहे हों। इसका मतलब यह है कि अन्धकार होते हुए भी उन आभूषणों के प्रकाश के कारण विजया को जाने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती थी।

[३४०]

सिलंबि रंगिप्पोट्रिसैप्प त्तिरुवि र्कैपोय् मेय्काप्प
विलंगु पोर्किकिणियुंकलैयु मेंग वेरिवेर्कण्
मलंग मणिमलर्न्द पवलक्कोंबु मुलु मेय्युं
सिलंबु वलन्दवु पोर्पोर्वै पोर्त्तुच्चेल्लु ट्राल्

भावार्थ—पन्ने की लता पर लगे धागे के समान दुखित विजया देवी सारे शरीर पर कपड़ा ओढ़कर जा रही थी। वह कैसी जा रही थी? पैर के पायल करुणा से आशीश दे रहे थे। देदीप्यमान कर्णभूषण शरीर की रक्षा कर रहे थे। सोने से निर्मित मेखलाभरण आकुल व्यक्त कर रहे थे। वेलायुध सदृश आँखें अश्रुपात कर रही थीं; इस तरह की परिस्थिति में चिन्ताक्रान्त होकर देवता के साथ जा रही थी।

[३४१]

पंजि यडरनिच्च नेरुंजि योन्ट्र पलमालेन्
रंजु मलरडिग लरंगण्डन्न वरुं काट्टुट्
कुंजित्तसै न्तसैन्दु कुरुदि कान्ट्र वेय्दुयिरा
वंजि इडैनुडंग मयिलकैवीसि नडन्दरदे

भावार्थ—मुलायम रुई का गद्दा, 'अनिच्च' नामक कोमल फूल इन दोनों को काँटे के समान कष्टदायी समझकर डरनेवाली विजया के पुष्प सदृश चरणद्वय थे। फिर भी तलवार के तीक्ष्ण छोटे-छोटे कंकड़ से भरे भयंकर कानन के रास्ते में बैठ-बैठकर धीरे-धीरे चलती थी; जिससे उन चरणों में रक्त बहने लगा। लम्बा श्वास लेती थी; लतासी कमर मुरझाती थी। ऐसी दयनीय हालत में मयूर सदृश विजया हाथों को हिलाती हुई आहिस्ते-आहिस्ते जा रही थी।

[३४२]

तडंको डामरैत्तातुरै देवियुं
कुडंगै पोलुण्कट् कूनियुं कूर्पर्र्
कटंगलुं मलैयुं कडन्दार्पुन
लिडंकोलयाट्रग मेय्दिन रेन्बवे

भावार्थ—विकसित कमलपुष्प के अन्दर विराजमान लक्ष्मीदेवी के समान विजया देवी थी। वह और देवता दोनों तीक्ष्ण कंकड़ से भरे वन-वनान्तर और पहाड़ों को लाँघ कर "अमरिकै" नाम के नदी के पास पहुँच गये।

[३४३]

एललै एय्दिय वायिरच्चेंकदिः
मललन्माक्कड़ ट्रोन्ट्रलुं वैकिरुं
टोललै नल्विनै मुर्पटत्तोन्ट्रिय
वल्लल्वेव्विनै पोल वगन्ट्रदे

भावार्थ—अंधकार से भरी रात्रि निकल रहीं थी। प्रातःकालीन दिवाकर अपनी करोड़ों किरणों के साथ महासागर में उदय हो रहा था। पुराने शुभ कर्म का उदय होने से दुख देने वाला अशुभ कर्म का विनाश होने के समान चारों तरफ़ घेरा हुआ अन्धकार नष्ट होने लगा। और प्रकाश आने लगा।

[३४४]

नुणंगु नुण्कोडि मिन्नोर्मलैमिसै
मणंकोलवा र्पोलिल्वन्दु किडन्दतोत्
तणंगुनुण्डुकि न्मेलसैन्दालरो
निणंकोलवैन्नुति वेनेडुं कण्णिनाल्

भावार्थ—अत्यन्त तीक्ष्ण वेलायुध सी आँख वाली विजया, सुगन्धमय एक बगीचे के अन्दर बहुत ही पतले कपड़े ओढ़ कर लेटी हुई थी। उसे देखने से ऐसा लगता था मानों बरसात का मेघ विद्युल्लता के साथ पड़ा हुआ हो।

[३४५]

वैकिट्टैम्मनै वालिय पोलदेनक्
कैयिनानटि तैवरक्कण्मलर्क्
तैयवो वेन्ट्रेलुन्दन लाय्मति
मोय्कोलपूमि मुलैप्पदु पोलवे

भावार्थ—रात्रि खतम हो गयी। दिन निकल आया। हे मेरी माँ, जीते रहो; कृपा कर उठ जाओ। देवता ने इस तरह प्रेम भरे वचनों से आवाज देकर चरणों पर हाथ लगाती हुई जगाई। विजया उसकी आवाज़

सुनकर 'माँ' कहती हुई आँख खोलकर जाग उठी। उसे देखने से ऐसा लगता था मानो कान्तिविहीन चाँदनी जमीन से निकल रही हो।

[३४६]

तूवियंचिरै यन्नमु न्तोगैयु
मेविमेन्पुन मानिन मादिया
नावि नारेलिन्मेनियै क्कण्डुकण्
टाविर्त्तार्ट्टुकि लातलु तिट्टवे

भावार्थ—विजया देवी जब नींद से जाग उठी तब कोमल पंखों वाले हंस, मोर और जंगल के सात्विक स्वभाव हिरण के झुण्ड आदि सबके सब वहाँ आये। सुगन्धमय विजया देवी के शरीर को देख कर जम्हाई लेते हुए उसकी हालत से चिन्तित होकर रोने लगे।

[३४७]

कोंमै वेंमुलै प्पोदि कोंडियना
लुम्मै निन्ट्रदो रुलविनै युण्मैया
लिम्मै यिव्विड रुट्रन लेय्दिनाल्
सेम्मै मादव सेंय् तव प्पल्लिये

भावार्थ—सुन्दर स्तन कलशों से शोभित एवं कमल पुष्प में विराजित लक्ष्मी के समान जो विजया थी। उसने पूर्व जन्म में जो पाप कर्म किया था उसका उदय आने से इस जन्म में कठिन से कठिन दुःख उसे भोगना पड़ा। उस कर्म की निर्जरा हो जाने से। (हट जाने से) वह श्रेष्ठ तपोधनों के आश्रम में पहुँच गयी।

[३४८]

वालुरै नेडुंगनालै मातव मगलिरेल्लां
तोलुर प्पुल्लु बार्पोर्ट्रोक्केदि कोंण्डु पुक्कुत्
तालुरु वरुत्त मोंपित्तवनेरि प्पडुक्कलुट्टु
नालुर त्तिलूर नल्लणि नीक्कु किन्ट्रार्

भावार्थ—विजया के वहाँ पहुँचने के बाद तपस्विनियाँ सब मिलकर तलवार के समान मनोहर आँखों वाली विजया को प्रेम से आलिंगन कर

स्वागत करने लगीं। पैदल से बहुत दूर आने के कारण उसके पैर दुखने लगे। उन लोगों ने शुश्रूषा के उपाय से निवारण किया। विजया देवी का विचार जान कर उसे त्याग मार्ग पर लगाने का प्रयत्न किया गया। पूर्व पक्ष के शुभ दिन में उसके अलंकारभूत सारे आभूषण निकाले गये। याने उसे तपस्विनी बनाया गया।

[३४९]

तिरुन्दु तकरच्चेन्नेरुप्पि ट्रुन्ट्रोय् तमिदं कोलवुयिक्कुं
करुंगा लगलि नरुंपुगैयि र्कलुमि क्कोदै कण्पडुक्कं
तिरुन्दु नान क्कुलल्पुलं बत्तेनुं वण्डु मिसैप्पुलंब
वरुपोन्मालै यलंगलो डारं पुलंबवकगट्रिनाल्

भावार्थ—अत्यन्त सुगन्ध पेड़ की आग में मधु डाली गयी। उसमें खुशबूदार 'अखिल' नाम की लकड़ी डाली गयी। उससे आने वाली धुंआ से उसके बाल (सर्वांग स्नान करने के कारण) सुखाये गये। मधुमक्खी और भ्रमर मधुरसों को न पीने से गाना नहीं गाते थे। ऐसी परिस्थिति में विजया ने ललाट के आभूषण और मोती की माला आदि आभरणों को विसर्जन किया।

[३५०]

तिंगलुगिरि सॊलिप्पदुपेट्रिलगं विरलिट्रानीक्किप्
पैंपोन्मकर कुण्डलमुं पावै कलुत्ति नणिकलमुं
वेंगण्वेन्द र्कमिर्दागि वेर्कट् पावै पगैयाय
वंगण्मुलैयि नणिमुत्तु मरुंपोर्पूणु मकट्रिनाल्

भावार्थ—विजया ने चन्द्रमा को लकीर से निकालने के समान ललाट के तिलक को ऊँगलियों से मिटाया। सोने से निर्मित कर्णभूषण, मकर कुण्डल और गर्दनों के आभरण इन सबको निकाल फेंका। राजा को जो वस्तु प्रिय थी ऐसी स्तन कलशों पर लटकने वाली मोती की माला और सोने के जेवरों को भी निकाल दिया।

[३५१]

पंजियनैय वेय् मेट्रोट् पकुवाय् मकरं कान्ट्रिट्ट
तुंजाक्कदि र्कोडु णैमुत्तन्तोलुदेनुंमै येनत्तुरन्दु
वंजि वरुन्दुं नुसुप्पिनाल्वलैकैयुटैत्तु मणिकान्त
लंजच्चिवन्द मेलिवरलसू लरुंपोनालि यकट्रिनाल्

भावार्थ—आभूषणों को वहन करने में दुखित कमर वाली विजया के रुई सदृश एवं नरम बाँस के समान भुज थे। उसका आभूषण भुजबंध कहलाता है। वह मकर मत्स्य के खुले मुँह सा था। उस मत्स्य के समान सोने के भुज बंध में मोतियाँ भी लगी हुई थीं। विजया जब इस आभूषण के साथ शोभती थी तब राजा को उसे आलिंगन करने में बड़ी सुविधा होती थी। इसी कारण से राजा इस पर ज्यादा मोहित था। अति प्रेम के कारण से ही उसकी यह हालत हुई। ऐसे उस आभूषण से विजया कहती है कि आपत्ति के कारणभूत तुम्हारे लिये नमस्कार हो! इस तरह उपहास करती हुई उसे भी निकाल दिया। फिर हाथ की चूड़ियों को तोड़ कर फेंक दिया। सुन्दर लाल ऊँगलियों में पहनी हुई सोने की अँगूठी को भी निकाल दिया। इस तरह क्रमशः निकालती गयी।

[३५२]

पूप्पेय् सॅपोर्कोडिगमुं पोन्नाराल वट्टमु
माक्कुमणिसेय् तेतंट्टु मरविन्पैयु मडुमलगुल्
वोक्किमिन्नुं कलैयेल्लां वेन्दन्पोगियरंपैयरै
नोक्कि नुम्मै नोक्का नोर्नावादोलि मिनेनत्तुरन्दाल्

भावार्थ—विजया देवी कहने लगी कि अब राजा स्वर्ग चले गये। अब वे देवस्त्रियों को ही चाहेंगे। तुम्हें नहीं। अतः तुम लोग चले जाओ। इस तरह कहकर फूलों को रखने वाली सोने से निर्मित फूल की थाली, सोने का 'आलवट्ट' सोने के रथ की थाली इन सबके साथ-साथ कमर के मेखलाभरण आदि सबों को निकाल फेंका।

[३५३]

पिडिक्कै पोलुन्तिर लकुंरंगि नणियुनोक्कि प्पिणैयन्ना
लडिक्किणिकिगियु मंलिलंबु विरन्मोदिरत्तो डकट्टियपिन्
कोडिप्पू त्तिदिर्न्द ताट्रं पोर्का ल्लत्तोन्ट्रि यणगलर
वुडुत्ताल्कट्राय् नुण्कलिग मुरवों न्सिरुव नुयर्कॅनवे

भावार्थ—हिरणी के समान जो विजया थी उसने हथिनी के सूँड़ सदृश बड़े और सुन्दर जंघा में पहने हुए 'कुरंगिसेरि' नाम का आभूषण और पैर के किंकिणी एवं पायल आदि सबको निकाल दिया। इन सब

आभूषणों को निकाल देने के बाद विजया ऐसी लगती थी कि फूलों से भरी मनमोहक लता, उन फूलों के गिर जाने से जैसी फीकी लगती है तद्वत् शोभा विहीन विजया को देखकर साथ आयी हुई देवता सिसक-सिसक कर रोयी। विजया अपने दिल में प्रार्थना करने लगी कि "मेरा पुत्र महाविद्वान् बनें और महोन्नत पथ पावें" इस तरह मन में आशा करती हुई गेरुवा कपड़ा पहनकर तपस्विनी बन गयी।

[३५४]

पालुडै यमिदं पैंपोर्कलत्तिडै प्पावैयन्न
नूलडु नुसुप्पि नल्ला रेन्दवु नेर्न्दु नोक्काच्
सेलडु कण्णि कान्तट् टिरुमणि त्तुडुप्प, मुन्कै
वालड करुलिच्चेय्य वनत्तुरै देय्वमानाल्

भावार्थ—विजया देवी को पहले धात्रियाँ दूध मिले हुए अमृत समान भोजन को नये सोने के बर्तन में देती थीं, उसे आँख उठाकर देखे बिना उदासीन करती थी। वही मीननयनी विजया अब कान्तमणि के पत्ते के समान जो अपना हाथ है उसे पसार कर उसमें जो भोजन दिया जाता था उसे प्रेम से खाती थी। देखो कर्म की लीला बड़ी विचित्र है। ऐसे उस विजया को देखने से लगता था कि मानों यह एक वन देवता हो हो।

[३५५]

मेलिवरन्मेलिय क्कोय्द कुल नेललुं विलैन्द आंब
लल्लियु मुणंगु मुन्ट्रि लणिलिवलि त्तिरिय वामान्
पुल्लिय कुलवि त्तिगट् पोलिकदिक्कुंप्पै पोलु
नललेलि र्कवरियूट्ट नंबियै निनैक्कु मन्ट्रे

भावार्थ—तपस्विनियों द्वारा अपने हाथों से काटकर लाये गये नोवार धान सुखाये गये थे। उसे वनचर जीव खा रहे थे। इसके बीच वन के बालों वाली हिरणी जंगल में गाय के बछड़े को दूध पिला रही थी। उसे देखकर विजया चिन्तित होने लगी कि मेरा बच्चा भी मेरे स्तन के दूध को न पीता हुआ किसी अन्य माँ को दूध पीकर बढ़ रहा है। यह बात उसे खटक रही थी।

[३५६]

पेण्मैनाण्वनप्पु च्चायल्पेरु मडमादु पेसि
नोण्मैयि नोरुंगु कूडि युरुवु कोण्डनैय नंगै
नण्णिय नुंगट् केलला मडैक्कल मेन्ट्र नाडुं
कण्णिय कुलनुन्देय्वं करन्दुरै त्तेलुन्द दन्ट्रे

भावार्थ—नारी धायरूप जो देवता विजया के साथ आयी थो। वह तपस्विनियों को देखकर कहने लगी कि हे देवियों, मेरे साथ आयो हुई देवी के पास नारियों के योग्य सारे गुण मौजूद हैं। अच्छे गुणों से परिपूर्ण आप लोगों के साथ रहने लायक है। यह एक राजकुलोत्पन्न राजा की पत्नी थो। परन्तु विधिवश यहाँ आयी हुई है। आप लोग आदर के साथ रखना। इस देवी के लिये आपलोग हो सर्वे सर्वा हैं। इस तरह कहकर वहाँ से जाने के लिये उद्यत होने लगी।

[३५७]

उरुदि सूलन्दव णोडलि नायिडै
मरुविलेवण्कुडै मन्नव न्काद लञ्
सिरुवन्तन्मैयै च्चेन्दंरिन्तिव्वलिक्
कुरुक वंमेन क्कूनियै प्पोक्किनाल्

भावार्थ—इस तरह वह देवता जब विजया के अनुकूल वचनों को तपस्विनियों से कहकर अपने स्थान जाने के लिये तैयार होने लगी तब विजया देवता से कहने लगी कि निर्दोष सफेद छत्र के नीचे विराजमान होकर जो सत्यंधर महाराजा राज्य करते थे, उनके प्रिय पुत्र का क्षेम समाचार राजमापुर जाकर जान लेना और वहाँ से यहाँ आकर समाचार अवश्य बताना होगा। सुनी है न ! बस, आपको तो जाना है। जाइयेगा। मैं अपने भाग्य को कोसते हुए जोवन बितातो रहूँगी।

[३५८]

नेंजिनोत्तिनियालै येन्नोमेयाल्
वंजित्तेनेन वंजियं कोंबनाल्
पंजिमेललडि प्पलकल नार्प्प च्चेन्
रिंजिमानगर्त्तन्निड मेय्दिनाल्

भावार्थ—लता सदृश उस देवता ने प्रेम ही जिसका स्वरूप हो ऐसी विजया को ठगा दिया था। पहली बात यह है कि मैं एक देवता हूँ यह कह नहीं सकी। दूसरी बात यह है कि जान बूझकर झूठ बोल आयी हूँ कि तुम्हारे पुत्र की हालत जानकर आऊँगी और तुम्हें बताऊँगी। यह दोनों खटकने की बात रही। क्या किया जाय ? वह देवता वहाँ से निकलकर चलते समय आवाज करती हुई परकोटे से आक्रान्त राजमापुर के एक कोने में स्थित जो श्मशान भूमि है वहाँ आ पहुँची।

[३५९]

तानु तन्नुर्णवट्रलन्र्दाट्रवु
मानिन्नोक्कि वरुंवलि नोक्किनिन्
ट्रानियंबल वासैयिच्चेल्लुमे
तेनियंबु मोतें पोलि र्पलिलये

भावार्थ—हिरणी के समान चंचल नयनवाली विजया, धाय के रूप में जो सहायता करती थी उसे देवता न जान सकी। उसे सचमुच सहायता करनेवाली एक नारी ही समझती थी। वह अबला होने के नाते उसका मन घबराया हुआ था। वह इन्तजार कर रही थी कि गई हुई वह धाय आज आयगी अथवा कल आयगी। इसी चिन्ता में भ्रमरों से गुंजायमान मधुमय फूलों से भरे उस तपस्विनियों के आश्रम में जैसे-तैसे अपना जीवन बिता रही थी।

[३६०]

मट्टविलको दै वालन कुण्कण्मयिलन्नाल्
कट्टल लेव्वंकैंमिगनोक्कि वकलिकूर
विट्टलवाट्रा वेट्कैयिनोडुं पोलुदिर्पार्
पट्टदै येल्लां पल्लवकेट्ककप्पगर्कुन्ट्रेन्

भावार्थ—मधुभरे फूलों की माला, तलवार सी आँखें, मयूर की सी चाल इन सब गुणों से युक्त सुनन्दा देवी का (जो कि गन्धोत्कट की पत्नी) पुत्र मर जाने से शोकाकुल होकर तड़प रही थी। उसके पति के द्वारा अपना पुत्र मरा नहीं, जीवित है; ऐसा कहने के साथ-साथ उनसे सूर्य के समान पुत्र रत्न को प्राप्त कर आनन्द सागर में डूबी हुई रात को बिता

रही थी। उसके बाद उस भाग्यशाली पुत्ररत्न के बारे में सविस्तार कहा जायेगा।

[३६१]

कूट्रं मंजुं कोन्नुनै येहकि निलैयानु
माट्रं मेजुं मन्निय कर्पिन्मडवालुं
पोट्रित्तन्द पुण्णिय कूटि प्पुगलोर्नेच्
सीट्रत्तुप्पि जोवक नेन्ट्रे पेयरिट्टार्

भावार्थ—यमराज भी देखकर डरें ऐसे हिंसात्मक वेलायुधधारी गन्धोत्कट तथा पति के वचन के विरोध में बोलने के लिये डरने वाली सती सुनन्दा इन दोनों के अलावा सज्जन लोगों से भी आदर के साथ पुकारा जानेवाला कोर्त्तिमान एवं चिरंजीवो जो पुत्र है उसका नाम देवता से पहले दिये गये आशोर्वाद के अनुरूप 'जोवक' शब्द से प्रसिद्ध होने लगा। सबके सब उसे जीवक के नाम से पुकारने लगे।

[३६२]

मेगंमोन्ट्र मिन्ननैयाडन् मिलिपैंपू
णागं मोन्ट्र वंमुलै इन्बा लमिर्देन्दप्
पोगंमोन्ट्र पुलिण्णय नेय्द कणैये पोन्
मागंमोन्ट्रमामति यन्नान्वर्लकिन्ट्रान्

भावार्थ—मेघमाला के अन्दर उत्पन्न विद्युत् के समान जो सुनन्दा देवी है उसके सोने के आभूषणों से अलंकृत सुन्दर स्तन कलशों का स्वादिष्ट दूध जोवक के द्वारा पिया जाता था। अर्थात् जीवक सुनन्दा देवी के स्तनों का दूध पीता था। शिव से मारे गये बाण से कृष्ण का जन्म हुआ। (इस तरह की कथा है। वह कृष्ण, छिपकर नन्दगोप के घर पलता था। वैसे हो आकाश में प्रकाशमान सुन्दर चन्द्रमा के सदृश जीवक भी गन्धोत्कट के घर पर पलता है।

[३६३]

अंपोर्कैविनायिलै यैवर्नलनोंबप्
पैंपोर्पूमि प्पलकदि र्मुत्ता संकडमुं
सेंपोट्रेरुं वेलमु मून्र्दु निधि सिन्दि
नंबन्सेल्लु नालिनु नालु नलमिक्के

भावार्थ—शोभायमान आभरणों से विभूषित सोने की लता के सदृश पाँच दाइयाँ जीवक की सभी तरह की देखभाल करती थीं। सोने से निर्मित होकर रत्न जड़े हुए जमीन पर, मोतियाँ लगाकर तैयार की गयी गाड़ी, सोने का रथ और हाथी इन खिलौनों के साथ जीवक खेलता था। दिनोंदिन उसकी शोभा बढ़ती जाती थी। इस पुण्यशाली बालक की खुशी में गरीबों को सोना आदि वस्तुओं का दान खूब दिया जाता था।

[३६४]

पलपूं पोय्कैत्तामरै पोन्द्रु पणिवानत्
तेल्ला कंण्णु मिन्पुरवूरु मतिपोन्द्रुं
कोल्लुं सिंगक क्कुट्टियुं पोन्ट्रिव्वुलकेत्तच्
सेललुं मन्नो जीवकन्ट्रे वप्पगैवेन्ट्रे

भावार्थ—बच्चों को होनेवाली सभी तरह की आपत्ति से दूर होकर पुण्यशाली जीवक बढ़ रहा था। वह और कैसा था? कई फूलों से भरे सरोवर में कमल जैसा था। आकाश मार्ग में सब लोगों को सन्तुष्ट करने वाले चन्द्र सदृश था। प्रतापी जो सिंह का बच्चा है उसके समान था। संसार के सारे लोगों से तारोफ़ किया जाता था। चन्द्र सूर्यादि ग्रहों का दोष भी नहीं लगता था।

[३६५]

मणियुं मुत्तुं मासरु पोन्नुं पवलमुं
अणियुं पेय्युं मारियि नेर्पार्क्कवैनलिकक्
कणितं मिला क्कर्पगं कन्दुक्कडनोत्तान्
इणैवेलुण्कणन्दैयु मिन्बक्कोडियोत्ताल्

भावार्थ—गन्धोत्कट श्रेष्ठी रत्न, मोती, सोना-चाँदी, पन्ना, आभूषण आदि वस्तुओं को सारे लोगों को लिये मेघ वृष्टि के समान भेदभाव के बिना दान देने से कल्पवृक्ष की उपमा का पात्र बना हुआ था। उसकी पत्नी सुनन्दा देवी ने भी कल्पवृक्ष के ऊपर फैलने वाली कामवल्ली की उपमा प्राप्त कर ली थी।

[३६६]

सातिप्पैंपोन्ट्रन्नोलि वौवित्तगैकुन्ट्रा
नोतिच्चेलवं मेन्मेनीन्दि निरैवेय्दिप्
पोदिचेलवं पूण्डवरेत्तुं पोलि विन्ना
लादिक्कालत्तन्दणन्कादल्मगनोत्तान्

भावार्थ—पहले के जमाने में जगत् विख्यात भगवान् आदिनाथ के सुपुत्र जो भरत चक्रवर्ती थे जीवक उनके समान शोभता था। भरत चक्रवर्ती कैसे थे ? खरे सोने के समान थे। उत्तम चारित्रवान् थे। समय पर अच्छी तरह अध्ययन करने से शास्त्र में निपुण थे। उनके शास्त्रज्ञान के विषय में शास्त्र के विशेषज्ञ लोग तारीफ करते थे।

[३६७]

ननन्तलै युलगिन्मिक्क नन्नुतन्मगलि तंगण्
मनन्तलै परियनिन्ट्रमतलैमैयाडु केन्ट्रे
पोनंकोडि यिरैंजिनिन्ट्रु पूमगलपुलंबि वैग
वनंगनुक्कवलं सेय्युं अण्णनर्ट्रायुरैत्ताल्

भावार्थ—मन्मथ भी शरमा जाय ऐसा जो सुन्दर जीवक है उसकी माँ सुनन्दा सोने की लता जैसी थी। उसका कहना यह था कि विशाल संसार में वीर लक्ष्मो, निर्दोष यश आदि सबको प्राप्त करने के लिये अध्ययन को बड़ी आवश्यकता है। अध्ययन करते समय घमण्ड नहीं रहना चाहिये। विनय होना चाहिए। फिर तुम हल्दो लगाया हुआ जो ताड़पत्र है उसे ग्रहण कर अध्ययन करना शुरू कर दो। यह प्रेमपूर्ण आदेश माता सुनन्दा का पुत्र जोवक के वास्ते है।

विशेषार्थ—चाहे राजा-महाराजा व श्रीमन्तों के लड़के क्यों न हों। सबको अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। अध्ययन के बिना वीरता और ख्याति लाभ आदि प्राप्त करना असंभव है। अध्ययन करते समय घमण्ड न हो, नम्रता हो; इस तरह की वृत्ति होनी चाहिये। कहा भी है—"विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पत्रतां" याने विद्या विनय देती है और विनय से विद्या आता है। इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध है। विद्या से पात्रता भो प्राप्त होतो है। अर्थात् वीरता, ख्याति, ऐश्वर्य, पात्रत्व

विवेक, सज्जनता आदि सभी महत्त्वों को प्राप्त करने के लिये विद्या सीखने की बड़ी आवश्यकता है। विद्या पहली सीढ़ी है। उसके बिना संसार में धन-धान्यादि सारी वस्तुएँ फ़ीकी सी समझी जाती है। अतः योग्य समय में बड़े लोगों से विद्याध्ययन करने का आदेश दिया जाता है। साथ ही साथ विद्याध्ययन कराया भी जाता है।

[३६८]

मुलवेनत्तिरण्ड तिण्डोन्मूवेरिं च्चिलैयिनानुं
अललेनक्कनलुं वाट्क णव्वलैत्तोलिनालु
मललैयाल् मरुट्टुं तींसोन्मतलैयै मयिलं सायर्
कुलैमुग ञानमेन्नुं कुमरियैप्पुणक्र्क लुट्टार्

भावार्थ—बड़े भुजवाले एवं ख्याति प्राप्त धनुः वाले गन्धोत्कट श्रेष्ठी और तीक्ष्ण तलवार के सदृश आँखों वाली सुनन्दा देवी उन दोनों ने वीणा से भी मधुर तोतली बोलने वाला जो जीवक है उसको सरस्वती के साथ विवाह करने का निश्चय किया। अर्थात् पढ़ने योग्य जीवक को पढ़ाने का इंतजाम किया।

[३६९]

जीवक और विद्यागुरु आर्यनन्दी जी

अरुंपोनु मणियुमुत्तुं काणमुं कुरुणि यागप्
परन्देलाप्पिरप्पुं वैत्तु प्पैंपोन्सेय् तविसिनुच्चि
यिरुन्दु पोन्नोलै सेंपोन्नूसिया लेलुदि येर्पत्
तिरुंनदु पोर्कण्णियार्कु च्चेलिवयैच्चैत्ति नारे

भावार्थ—बढ़िया सोना, रत्न, मोती, सोने का सिक्का, चावल आदि इन चीजों को फैलाकर, उस पर सोने का आसन लगाया गया। उस आसन पर गुरु-शिष्य दोनों बैठे। सोने की माला पहने हुए जीवक को सोने के पत्र पर सोने की लेखनी से "ओं नमः सिद्धेभ्यः" ऐसा कहलवाकर अध्ययन का काम शुरू किया गया। अर्थात् जीवक की शादी सरस्वती देवी से होने लगी। विद्याभ्यास शुरू किया गया।

[३७०]

नामक णालत्तैयेलला नयत्तुडन्परुगिनन्नू
लेमुदलाय वेलला प्पडैकलत्तोलिलुमुट्रि
क्कामनुं कनिय वैत्त पुलंकरै कण्डु कण्णा
पूं मगलपोलिन्द मार्बन्पुविमिसैत्तिलग मोत्तान्

भावार्थ—जिसके वक्षस्थल पर श्रीदेवी विराजमान है, ऐसा जीवक वाग्देवी को युद्ध कला और संगीत कला आदि सकल कला में निपुण हो गया—अर्थात् सर्व कला वल्लभ हो जाने के साथ-साथ भूमण्डल के अन्दर अनुपम तिलक की तरह शोभने लगा।

[३७१]

मिन्ट्रेलित्तेलुति यन्न विलंगु नुण्णुसुप्पि नलला
र्पोन्ट्रे लित्तेलुदियन्नपूंपुरप्पसलै मूलिकमक्
कुन्ट्रोलित्तोलिय निन्ट्र कुंकुमत्तोलिनार्कुक्
कन्ट्रोलित्तगल वैत्त करवैयिर्कनिन्दु निन्ट्रार्

भावार्थ—विद्युत् से उत्पन्न हुए अवयव के समान शोभायमान नारियाँ अपने सोने के सदृश शरीर से प्रज्ज्वलित थीं। फिर भी वे कहती थीं कि हम सब जीवक की भुज के सामने तुच्छ हैं। बछड़े को दूध न पिलाकर जाने वाली गाय के समान वे युवतियाँ बार-बार जीवक को स्मरण करती हुई चिन्तित रहती थीं।

[३७२]

विलैपगन्र्द लकुलविकुं वेलिनुं वेय्य कण्णार्
मुलैमुगन्दि लैयर्मापंमुरिविल रेलुदिवालुं
कलैयिगन्दिनिय सोल्लार्कगुलुं पकलुमेल्लां
सिलै यिकन्दुयन्र्द तिण्डोट् जीवक र्करट्रियाट्रार्

भावार्थ—वेलायुध से भी सुन्दर नयन वाली, प्रेमियों को हर तरह से खुश करने वाली एवं कामकला के आवश्यक कुतूहल बातों में निपुण कामिनियाँ, रात हो या दिन सभी समय में धनुर्विद्या के अन्दर दिल लगाने वाले एवं भुजबल पराक्रमी जीवक कुमार को स्मरण करती हुई हमेशा शोकाकुल रहती थीं।

[३७३]

वान्सुवै यमिर्द वेललं वन्दिवण्डोक्क तेन्नत्
तान्सुवै क्कोण्ड तेललान्तणप्पर क्कोडुत्त पिन्ट्रैत्
तेन्सुवैत्तरट्टं पैन्दार्च जोवक कुमरनेन्ट्र
ऊन्सुवैत्तोलिरुं वेलार्कुरुदि योन्ट्रु रैक्क लुट्रान्

भावार्थ—विद्यागुरु आर्यनन्दी जी महाराज, सारा मधुर प्रवाह आ भरा हो ऐसे जिन जिन उत्तमोत्तम कलाओं को सिखाना था उन सारी कलाओं को भ्रमरों से गुंजायमान फूलमाला पहने हुए कामदेव जोवक कुमार को सिखा देने के बाद एक रहस्यपूर्ण समाचार बतलाने लगे।

[३७४]

नूनेरि वगैयिनोक्कि नुण्णिति नुलैन्दु तीमै
प्पानेरि पलवु नीक्कि प्परुदियं कडवुलन्न
कोनेरि तलुवि निन्ट्र गुण्तोडु पुणरिन्मादो
नानेरि वगैयि निन्ट्र नललुयि क्कैमिर्द मेन्ट्रान्

भावार्थ—गुरु महाराज फिर से कहने लगे कि परमागम के अन्दर जो बताया गया है, उससे सत् और असत् को विवेकपूर्वक जान लेना चाहिये। तदनन्तर मन लगाकर बुराई को हटाना आवश्यक है। प्रकाशमान सूर्य के समान जो अरहन्त परमात्मा हैं उनके अहिंसामय मार्ग में चलकर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र इन रत्नत्रयों को प्राप्त कर लेंगे तो उसके माहात्म्य से मनुष्य गति, देवगति, तिर्यंचगति और नरकगति इन चारों गतियों में रहने वाले जीवों का उद्धार हो जायगा।

[३७५]

अरिविना पेरिय नीरारुविनै कलिय निन्ट्
नेरियिनैक्करुगि इन्ब निरैकडलगत्तु निन्ट्रार्
पोरियेनुं पेयरवैवाय, प्पोंगल लरविन्कण्णे
वेरिपुलं कन्टि निन्ट्रा वेंदनैक्कडलु णिन्ट्रार्

भावार्थ—वे गुरु महाराज आगे बताने लगे कि जो सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान से विभूषित् हैं, वे पापकर्म से सुदूर होकर सम्यक्चारित्र को

आराधना से आत्मा के अनुभव रूप अनन्तज्ञान आदि सुख का अनुभव करेंगे। उसके विपरीत पाँच इन्द्रियों की लालसा में फँसकर स्पर्शन, रसना आदि भोग सुख में तल्लीन हो जायेंगे तो वे उन्हीं इन्द्रियों के दास बनकर संसार सागर में डूबते हुए दुःख पायेंगे।

[३७६]

कूट्रुवन्कोडिय नागि क्कोलैत्तोलि कैरुवि सूलन्दु
माट्रुं वलैयै वैत्तान्वैत्तदै यरिन्दु नामु
नोट्रवन्वलैयै नींक्कि नुगर्च्चियिलुलग नोक्कि
याट्रुरप्पोद रेट्रा मलियमो ओ पेरिय मेकाण्

भावार्थ—उसके बाद वे गुरु महाराज कहने लगे कि कर्मरूपी यमराज ने हिंसा के योग्य कार्यकलापों को तैयार कर रखा है। उसके द्वारा व्याधिरूपी जाल में फँसाने के वास्ते उस जाल को चारों तरफ़ फैलाकर रखा गया है। उस जाल के बारे में हमें जानना जरूरी है। उससे बचने के लिये तप धारण कर लेना चाहिये। उस तप के द्वारा इसके पहले कभी भी अनुभव न किया हो ऐसा वास्तविक आत्मानन्दमय मोक्षस्थान जाने का मार्ग हम न तो जाने और न उस मार्ग पर चले। यही पश्चात्ताप करने का है। अहो कष्ट ! कष्ट !! कष्ट !!!

[३७७]

पेरंज रिडुंबै येललां पिलन्दिडुं फिरप्पु नीक्कु
मारमिर्तरिदि पेर्ट्रा मदन्पयन्कोडरेट्रा
मोरु मैं पोरियु मोंबि युलपगल्कलित्त पिन्ट्रै
क्कूरेरि कवरुं पोल्दि कूडुमो कुरित्त वेललां

भावार्थ—उसके बाद बताने लगे कि जो अत्यन्त भयंकर सब तरह के दुःखों को नाश करनेवाला है और दुखों के कारणभूत जन्म परम्परा को हताहत करनेवाला है; ऐसे अमृतमय इस मनुष्य जन्म को हमने बड़ी कठिनाई से पाया है। (अर्थात् इस मनुष्य जन्म के द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति हो सकती है। न कि अन्य गति से। फिर भी हम इस मनुष्यगति के महत्व को जान नहीं पा रहे हैं। पंचेन्द्रिय विषय के अनुकूल चलकर भोग सुख में काल यापन करने के बाद, जब अपना शरीर अग्नि में जलने लगता है

तब सोचने से क्या फायदा है ? क्या उस समय धर्मकार्य करने का अवसर है ? क्या उस धर्म कार्य से आत्मकल्याण कर सकते हैं ? नहीं ! नहीं !! उस समय इस पर सोचना बेकार है। अरे, सोच भी नहीं सकते।

[३७८]

तलंकुरन्मुरसिर्चोट्टित्तत्तुवन्तलुवलवेण्डिच्
सेलुंकलियाल मुंन्न रिरुलरच्चेप्पिनालु
मुलंकल नरगिन्मूलगु मुर्याचियरागिनिन्ट्र
कोलुंकलि युणर्विनारै क्कुणवतं कोलुत्तलामो

भावार्थ—गुरु महाराज का कहना यह है कि जिसको मोहनीय कर्म का उदय है उसको हमेशा सच बोला करो। इस तरह हजारों बार उपदेश दें तो भी वह उसे ग्रहण नहीं करेगा। क्योंकि वह आशा से परिपूर्ण होकर नरक जाने के लिये तैयार बैठा है ऐसे पापी जीव के दिल में गुणव्रत का उपदेश कामयाब नहीं हो सकता।

विशेषार्थ—शास्त्रकार का कहना यह है कि "पित्त ज्वरवतः क्षीरं मधुरं नावभासते" अर्थात् जिसको पित्त का ज्वर है उसे मीठी वस्तु भी कड़ुआ लगती है। वैसे ही जिसको मोहनीय कर्म का उदय है वह कभी भी व्रतों को धारण नहीं करेगा। उसको व्रत का नाम ही कड़ुआ लगेगा। पापी को पाप कार्य ही रुचेगा।

[३७९]

पवलवाय् च्चेरुवुतन्नु णित्तिलं पयिल वित्ति
क्कुलविना रेलुन्दु कालै क्कौलुं कतिरीन्ट्रु पिन्नाक्
किलवुता निवलैक्कुं पैंकूलकोट्टिरेर्पिणिसेय् पन्मा
कुलविर्काण्मेयुंसोलवेलियुय् त्तिडुमिनेन्ट्रान्

भावार्थ—हे गृहस्थरूपी किसान, पन्ने के मुँह जैसे गर्भोत्पत्ति को जमीन में मोती सरीखे धान के बीज को लगायेंगे तो वहाँ बच्चारूपी पौधा उगेगा। फिर वह यौवनरूपी धान होकर अन्त में वृद्धावस्थारूपी फल देगा। आगे सुनो, रोग के कारणभूत पापरूपी गाय-बैल आदि तिर्यंच उसे खा जायेंगे। अतः उस मानुष जन्मरूपी धान के पौधे को कोई भी जीव खा न जाय उसके लिये चारित्ररूपी द्वार लगाना जरूरी है। अर्थात्

मनुष्य जन्म एक अमूल्य चीज है। उसकी हर तरह हिफाजत के साथ रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि यह मानुष जन्म बार-बार नहीं मिलता।

[३८०]

सूलकरि र्मदियमन्न सुडर्मणिप्पूणिनानुं
वीलतरु कदियि नींगि विलंगुपोन्नुलकत्तुयक्कु
मूलिवनै तुरत्तलानु मुणर्वुसेन्ट्रेरित्त लानु
मालकड र्पुणैयिनन्न वरिवरन्सरणडैन्दान्

भावार्थ—जिसने गुरु महाराज का उपदेश सुना ऐसा वह प्रकाशमान चन्द्रमा जैसा जेवर डाला हुआ जीवक, नरकगति में जाने के कारणभूत बुरे आचरण से दूर हो गया। जिनेन्द्र भगवान का परम पवित्र जो (समवशरण जैसा) मन्दिर है जिसमें पुण्यकर्म और सम्यग्दर्शन आदि प्राप्त किये जाते हैं; तथा उसी के द्वारा संसार सागर पार किया जाता है अर्थात् पुण्यशाली जीवक, जिनेन्द्र भगवान के शरण पहुँच गया अर्थात् गुरूपदेश के द्वारा जिनधर्म का महत्व समझकर अरहन्त भगवान का भक्त होते हुए उसने सम्यग्दर्शन प्राप्त किया।

[३८१]

काटिच नन्निलैयिन्ज्ञानक्कदिर्मणिक्कदवुसेर्त्ति
प्पूट्टिचसा लोलुक्कमेन्नुं वयिरत्तालकोलुवि प्पोलला
माट्टियिलक दिकलेलला मटैत्तपिन्वरंपिलिन्बत्
ताट्टियि लुलगमेर त्तिरन्दन नलर्न्द तारान्

भावार्थ—सुवास फूलों का पहने हुये जोवक कुमार ने सम्यग्दर्शनरूपी सौध के लिये सम्यग्ज्ञानरूपी मजबूत किवाड़ लगा दिया। ताले के बिना सौध सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कामराज कुमार सम्यक्चारित्ररूपी वज्र समान ताले लगाने से भूला नहीं। झटप लगा ही दिया। इससे नोच गतियों में जाने का जो खुला रास्ता था उसे एकदम बन्द कर दिया। कहीं जाने का कोई न कोई रास्ता तो होना चाहिये न! वह कौन सा रहा? जो अनन्त सुखवाला मोक्षमहल का था न, वही खोल दिया गया। इसका मतलब यह रहा कि जीवककुमार गुरु महाराज का उपदेश सुनकर मोक्ष महल के नायक होने का पात्र बन गया।

[३८२]

नल्लरत्तिरैवनागि नालवगै च्चरणमेय्दि
त्तोललरक्किलमैपूण्ड तोडुकलक्कालिनार्कु
प्पुललर नेरिकण्णिन्ट्रु पोरुलवयिर्पिलैत्तवारु
मिल्लरत्तियैपु मिललामिरुलरक्कूरियिट्टान्

भावार्थ—सद्धर्म का पात्र बना हुआ जीवक, अरहन्ते शरणं गच्छामि, सिद्धे शरणं गच्छामि, साहू शरणं गच्छामि, केवलिपण्णत्तो, धम्मं शरणं गच्छामि इस तरह के चारों के शरण में पहुँच गया। यह सत्कार्य उनके कुल परम्परागत था। इन्हें प्राप्त करने से निजो का और कुल का गौरव मिला। इसका कारण यह रहा कि सद्गुरु का सहयोग। यह उसे भाग्य से मिला। तदनन्तर गुरु महाराज का कहना यह रहा कि दुराचारी लोग अपने नीच आचरण से गृहस्थाश्रम को अवनति करने के साथ-साथ मोक्ष का पात्र बनने से भी पतित हो जाते हैं। जो गृहस्थावस्था में सदाचार के साथ चलते हैं वे अविनाशी सुख याने मोक्ष सुख का पात्र बनते हैं। इस तरह सभी विषयों को अच्छे ढंग से संबोधन किया। अलावा इसके व्यावहारिक एवं राजनैतिक विषयों को भी बताने में चूका नहीं। इसका मतलब यह रहा कि गुरु आर्यनन्दी महाराज ने जीवक कुमार को धार्मिक, व्यावहारिक और राजनैतिक आदि सारे विषयों में योग्य बना दिया।

[३८३]

आर्यनन्दी महाराज जीवन्धरकुमार को उनके जन्मोत्पत्ति का रहस्य बतलाते हैं

एरिमुयंकिलंगु वैवे लिलैयव र्कुलात्ति नींगि
त्तिरुमयं कलंगन्मार्पि जीवक र्कोण्डुवेरा
विरिमलवर्क्कण्णिकट्टि विलैतक वेय्न्दपोलु
न्तेरिमलक्कावुसेन्र्दु पिरप्पिनैत्तेरुट्टि लुट्रान्

भावार्थ—आर्यनन्दी महाराज ने, आग में लगाकर तप-तपायमान वेलायुधधारी युवक द्वय से (नपुल-विपुल, भाई और दोस्त) लक्ष्मो कटाक्ष और मालालंकृत जीवन्धरकुमार को अलग बुलाये और विकसित

फूलों से युक्त मनोहर उद्यान में पहुँचे। वहाँ पर कुमार के जन्मोत्पत्ति के बारे में साफ-साफ बताना शुरू किया।

[३८४]

पूवैयुं किलियुमन्नरोट्टेनप्पुणक्कुं जाति
यावैयु मिन्मै यारायुन्तन्तलि प्पिण्डिनोल
पूविय रविसि नुच्चि प्पोलिविनो डिरुन्द पोलिद्
लेवियलिसलैयिनानै यिप्पोरु लकेण्मोवेन्ट्रान्

भावार्थ—वे आर्यनन्दी महाराज, कोई राजा के रहस्यवाहक व्यक्ति (सी० आई० डी०) और तोते आदि हैं क्या ? इसे इधर-उधर अच्छी तरह देख लेने के बाद हरे-भरे अशोक वृक्ष के नीचे स्थित आसन पर विराजमान हुए। उसके बाद धनुषधारी जोवन्धरकुमार को देखकर बोले, भैया, मैं एक अच्छी कथा सुनाता हूँ। उसे ध्यानपूर्वक सुनो।

[३८५]

वैयग मुडैय मन्नन्सच्चन्दनवर्कुत् देवी
पेविरि पसुंपोनलकुपैन्दाडिविसैयै येन्बाल्
सेय् कलल्मन्न न्ट्रेन्दु देवियै प्पोरियिर्पोक्कि
मैयलको णेंचिर्कल्ला मन्दिरि विलुंगप्पट्टान्

भावार्थ—सत्यन्धर नामक एक राजा अपने भुजबल पराक्रम से सारे देश को एक छत्रछाया के नीचे रख कर राज्य करता था। उसकी रानी का नाम था विजया देवी। वह मेखलाभरण और चूड़ियाँ आदि आभूषण पहनने से और स्वभाव से अत्यन्त सुन्दर दीखती थी। राजा उसके रूप लावण्य में मोहित होकर अपने राज्य को काष्ठांगार के हाथ में दे दिया और वह अपनी रानी के साथ भोग विलास में रहने लगा। तत्पश्चात् विजया ने स्वप्न देखा। उसके फल से काष्ठांगार का रहस्य जानकर विजया को बचाने के लिये मयूर यन्त्र में भेज दिया। चिन्ता से व्याकुल चित्त सत्यन्धर महाराजा को अमात्य काष्ठांगार ने एकदम मार डाला।

[३८६]

पुलंपोडु देविपोकि प्पुरंकरुं काडु नण्णि
वलंपुरियुलगंविर्कु मामणि यीन्ट्र देन्न

विलंगिलै सिरुवन्ट्रन्नै प्पयन्दु पून्दविसिनुच्चि
नलंपुरि नंगैवैत्तु नल्लरं काक्कवेन्ट्राल्

भावार्थ—पतिवियोग दुख से दुखित विजया महादेवी मनुष्यों के निवास से शून्य श्मशान में जा पहुँची। जैसे ऊँचे शंख से अमूल्य मोती उत्पन्न होता है वैसे ही विजया ने देदीप्यमान पुत्ररत्न को जन्म दिया। धर्म रक्षार्थ एक देवता सहायता करने आयी। उसने उस पुण्यशाली बच्चे को एक शय्या पर सुलाया। उस समय विजया ने अपने मन ही मन आशीर्वाद दिया कि मेरे व्रत और तप का पुण्य मेरे बच्चे की रक्षा करें।

[३८७]

वानत्तिन्वलुक्किर्तिगट् कोलुन्दुमोन्कुलांकल्सूल
क्कानत्तिकिडन्दे पोर्कडलगमुडैय नम्बि
तानत्तु मणियुन्तानु मिरटटुरत्तोन्ट्रिनाने
यूनत्ति ट्रीन्दसोत्तियुत्तिरट्टादियाने

भावार्थ—समुद्र से घेरे हुए इस विशाल भू-मण्डल पर उस पुण्यवान् पुत्र ने उत्तिरट्टादि नक्षत्र में जन्म लिया था। जो इस नक्षत्र में जन्म लेता है वह सारे संसार में कीर्तिमान एवं धनवान बनता है। श्मशान में जन्म लिया हुआ वह पुत्र ऐसा दीखता था कि आकाश से चन्द्र नक्षत्रों के साथ नीचे गिरा हो। उसकी कान्ति रत्नों की कान्ति से भी अतिक्रान्त थी।

[३८८]

अरुन्तवन्मुन्दुकूर वलंगल्वे नाय्कन्सेन्ट्रु
पोरुन्दुपु सिरुवर्कोण्डु पोलिवोडु पुकन्ट्रु पोक
त्तिरुन्दिय नंबियार त्तुम्मिनन्ट्रेय्वं वाल्त्तिर्
ररुंपोनाय् कोण्डु मोवेन्ट्रानवै कडलिवरुं बिर्कोण्डाल्

भावार्थ—एक वणिक् को हमेशा बच्चा जन्म लेते ही मर जाता था। फिर उसने एक मुनि महाराज के पादमूल में जाकर निवेदन किया। मुनि महाराज ने कहा कि इस वक्त भी तुम्हारा बच्चा जन्म लेते ही मर जायगा। उसे तुम जब श्मशान ले जाओगे तब वहाँ तुम्हें एक पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी। उसे ले आना और अच्छी तरह पालन-पोषण करना। उस पुण्यशाली पुत्र के आने के बाद तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी। इस तरह

जब मुनि महाराज ने उस व्यापारी को आशीर्वाद सहित आदेश दिया था; तदनुसार वह व्यापारी अपने मरे हुए बच्चे को लेकर श्मशान गया तब वहाँ एक अत्यन्त कान्तिमान् पुत्ररत्न देखा। देखते ही अपार प्रेम के साथ उसे उठाने लगा तो बच्चा छींकने लगा। उस समय वन की देवता ने उसे आशीर्वाद दिया। तदनन्तर वह वणिक् बड़े प्रेम के साथ उस बच्चे को ले आया और अपनी पत्नी से कहने लगा कि सोने के समान प्रकाशमान हे प्यारी, तुम्हारा बच्चा जिन्दा है मरा नहीं; ले लो। उस वनिता ने सागर उमड़ पड़ा हो ऐसे आनन्द के साथ बच्चे को ले लिया।

[३८९]

करियवन्कन्नर्कन्ट्रु पिरप्पिनैत्तेट्टियांग
प्पेरियवन्यावनेन्न मीयेनप्पेसलोडुं
सोरिमलर्तारुं पूणु मारमुं कुलैयच्चोर
त्तिरुमलर्क्कण्णि सिन्दत्तेरुमन्दु मयंगिवीलदान्

भावार्थ—काला रंग वाला कृष्ण जैसे कृष्ण के जन्मोत्पत्ति के बारे में बताया था वैसे ही आर्यनन्दी महाराजा जीवक के बारे में बताने लगे। उसे सुनकर जीवक कुमार कहने लगा कि वह भाग्यशाली व्यक्ति कौन है? महाराज ने कहा कि तुम ही हो। इस बात को सुन कर कुमार की फूल-माला मुरझाने लगी, मोती की माला गिरने लगी, सिर की मालायें चारों तरफ छिटकने लगीं, ऐसी हालत में जीवक मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

[३९०]

कर्पगं कलंगिवीलन्द वण्णंपोर्कालैवील
च्चोर्पगर्पुलवन्वलले तोन्ट्रलै च्चार्न्दु पुल्लि
नर्पल कुलोइय तंमानवैयरत्तेट्टत्तेलरि
क्कर्पुनै तिणितिण्डोलान्कवलैनोर्क्क डलुट्पट्टान्

भावार्थ—कल्पवृक्ष गिर पड़ा हो ऐसे जीवक के जमीन पर गिर पड़ने के बाद गुरु महाराज ने फौरन जाकर उसे उठाया। सुगन्ध शीतल चन्दन आदि वस्तुओं को उसके मुँह पर छिड़कने लगे। जिससे खम्भा सरोखा भुजवाला जीवककुमार उठ बैठा और चिन्ता में डूबने लगा।

[३९१]

इनैयेनीयाय तेल्ला मेंमनोर्सेयदपाव
निवैयनी नंबियेन्ट्रु नेडुंगणीर्तुडैत्तु नीवि
प्पुनैयिलै मकलिर्पोल प्पुलंबनिन्पगैव निन्ट्रा
निनैवेला नींगुगेन्न नेडुंतकै तेरिनाने

भावार्थ—आर्यनन्दी महाराज, शोकसागर में डूबे हुए जीवक को देखकर बोलने लगे कि तुमको इस तरह की हालत पाने का कारण हम सरीखे लोगों का पाप ही है। भैया, जो कुछ हुआ है, उसे स्मरण कर चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। उससे कोई फायदा भी नहीं है। अब तो होशियारी से काम करना है, इस तरह कहकर कुमार की आँखों से निकलनेवाले आँसुओं को पोंछकर कहने लगे कि बेटा, तुम्हारा शत्रु अब भी मौजूद है। उसको जीतना है। उसे छोड़कर स्त्रियों के समान रोना नहीं। चिन्ता को छोड़ो। ऐसा कहते हुए उसे समाधान किया।

[३९२]

मलैपगविडिक्कुंसिग मडंगलिन्मुलंगिमानी
रलैकडट्रिरैयि सींरि यवनुयिर्पूरुगलुट्रुच्
सिलैयोडु पगलियेन्दि क्कट्रेनच्चिवन्दु तोन्ट्रु
मिलैयुडै क्कण्णियानै यिन्नणं विलक्किनाने

भावार्थ—गुरु महाराज से कहा गया सारा समाचार सुनकर जीवन्धर कुमार को गुस्सा आ गया। वह जीवित काष्ठांगार को मार डालने के लिये तैयार हुआ। वह कैसा था? वह सिंह के बच्चे के समान गर्जता था। सागर की लहर सा उमड़कर धनुष-बाण लेते हुए यमराज के समान मुद्राकार सा लड़ने को उद्यत था।

[३९३]

वेण्डुव नंबियानो विलुप्पोरु लेन्ट्रु सोल्ल
वाण्डकै क्कुरवि कोंण्मिन्यादुनो कंरुविट्रेन्न
याण्डु नेल्लै याग अवंट्रिरत्त लंटि यिन्मै
वेण्डुवलेन्ट्रु सोन्नान्विलवलानदनै नेर्दान्

भावार्थ—क्रोधाकार जीवन्धर कुमार को देखकर आर्यनन्दी महाराज बोले बेटा, मैं तुमसे एक चिह्न गुरु दक्षिणा के रूप में माँग रहा हूँ। शायद वह चीज तुम्हें अप्रिय भी हो। कुमार बोले, महाराज, आप क्या माँग रहे हैं? जो कुछ भी हो आप खुशी से ले सकते हैं। आपके लिये तो मेरा जीवन ही समर्पित है। तदनन्तर गुरु महाराज बोल उठे, बेटा, तुमसे माँगने को चीज यह है कि काष्ठांगार के साथ एक साल तक लड़ाई नहीं करना है। लड़ाई में चतुर कुमार ने गुरु महाराज की आज्ञा को नम्रता के साथ स्वीकार कर लिया।

[३९४]

वेविव्वनै वेगुण्डु सारा विलुनिघियर्यिदं मिन्नोर्
कव्विय वेहिक निन्ट्र कयक्किमिनिलैमै नोक्कि
यव्विय मगन्ट्रु पोंगु मलर्पंडु वेगुलि नोक्कि
यिव्विय लोरुव र्कुट्र तिर्ट्रेन क्किलक्क लुट्रान

भावार्थ—आर्यनन्दी महाराज द्वारा कुमार के गुस्से को शान्त कर देने से उसका मन निश्चल था। वह और कैसा था? पाप कर्म को दबाने से फल नहीं देना हो; तपा हुआ लोहा पानी को अपने साथ ले लेता हो। इस तरह क्रोध दब जाने से निश्चल था। ऐसे जीवन्धर कुमार को देखकर गुरु महाराज दूसरी कथा सुनाने लगे।

[३९५]

आर्यनन्दी महाराज कुमार को अपनी कथा सुनाते हैं

वानुरै वेलिल वेर्पिन्वारण वासिमन्न
नूनुरै परुदि वेलवे लुलोकमा पालनेन्बान्
ट्रेनुरै तिरुन्दु कण्णिच्चिरुवनु क्करसु नाट्टिटप्
पानिर क्कुरुगिनाय्न्दु पण्णवर्पडिवं कोण्डान्

भावार्थ—विद्याधर लोक के अन्दर वारणासि नाम का एक नगर है। उसमें सूर्य के समान देदीप्यमान वेलायुध धारी लोकपाल नाम का राजा राज्य करता था। वह मिले हुए दूध और पानी में जैसे भिन्नता हो वैसे ही संसार की असारता को जाना और अपने प्रिय पुत्र के हाथ में राज्य भार देकर वन की ओर चल पड़ा। अर्थात् मुनि बन गया।

[३९६]

वॅचिनंकुरैन्दुनींग विलुत्तवन्तोडंगि नोकुं
वंजमिलकोलगैयाकुप्पावंवन्दडैन्ददाग
क्कुंजर मुलंगु तोयिन्कोलकैयिन्मेलिदिमूदूर्
मंजुतोय् कुन्ट्रमन्न माडवीडगं पुगुन्दान्

भावार्थ—क्रोध-मान-माया-लोभ को दबाकर छल कपट के बिना उत्कृष्ट तप तपने वाले उस मुनिराज को पाप कर्म के उदय से भस्मकाख्य नामक एक महारोग उत्पन्न हुआ। वह रोग जितना भी खावें उसे एकदम भस्म कर देता था। उस रोग से पोड़ित वे मुनिराज उसे सहन करने में असमर्थ होकर तप से भ्रष्ट हो गये। उसके बाद उन्होंने घूमते हुए जिसमें पर्वत के समान मेघाच्छन्न प्रासाद थे ऐसे इस नगर की वीथी में प्रवेश किया।

[३९७]

उरैविलै यामै मैन्दन्केदिकय वुवन्दु नोक्कि
वरै विलैयाडु मार्बन् यारवन्वालियेन्न
विरैविलै याडुं तारोय् यानेन विरुंवित्तोंपार्
रिरै विलै यमिर्दमन्न कट्टुरै सेलक वेन्ट्रान्

भावार्थ—वह कथा पूरी होने के पहले ही जोवन्धर कुमार बड़ी प्रसन्नता के साथ गुरु महाराज से पूछने लगे कि पर्वत को अपने समान समझ कर उसके साथ खेलने वाला सुन्दर वक्षस्थलधारी महान् व्यक्ति कौन हैं ? वह जोते रहें ! इस तरह उत्साह से कहते समय गुरु महाराज बोले हे सुगन्धमयमाला पहने हुए महाभाग, वह व्यक्ति मैं ही हूँ। उसे सुनकर कुमार ने समुद्र में उत्पन्न अमृत समान जो मधुर कथा थी उसे आगे कहने की प्रार्थना की।

[३९८]

पूत्तिन्ट्र॰ पुकन्ट्र॰ सेत्ताप्पुणर्मुलै पोलिन्द तींपा
नीत्तरच्चेललवेवित्तट्टविन्नमिर्द मुण्बान्
पात्तरुं पशुं पोट्रालं परप्पिय पैंपोर्मूमि
येत्तरुन्तविसिनंपि तोलरोडेरिनाने

भावार्थ—लाल गायों फूलों को खाकर खुशी से दिया हुआ मधुर दूध अच्छी तरह तपाकर रखा हुआ था। उसमें तैयार किये गये अमृत सदृश मिष्टान्न भोजन को खाने के लिये गन्धोत्कट श्रेष्ठी बैठे हुए थे। वे कैसे बैठे हुए थे? सोने से निर्मित जमीन पर तारीफ़ न कर सकें ऐसे आसन पर विराजमान थे।

[३९२]

पुडैयिरु कुलैयुमिन्नप्पून्दु गिलसेरिन्द वलगु
नडैयरि मगलिरेन्द नललमिर्दुण्णं पोदि
निडैकलि निन्ट्रवेन्नै नोक्किकप्पोन्देरु किन्ट्रान्
कडलकेलु परुदियन्न पोर्कलत्तेनक्कु मिट्टार्

भावार्थ—दोनों कानों में प्रकाशमान कर्णभूषण एवं पोताम्बर साड़ियाँ पहनी हुईं तथा खाना खिलाने में होशियार रमणियाँ भोजन परोसती थीं। उसे जीमने के लिये गन्धोत्कट श्रेष्ठी तैयार बैठे हुए थे। उस समय बरामदे में खड़े हुए मेरे को देखकर कहने लगे कि आइये, भोजन करने बैठिये। वैसे ही मैं भी जाकर बैठ गया। महिलायें सोने की थाली में मेरे को भी भोजन परोसने लगीं।

[४००]

कैकवि नरुनेय् पेय्दु कन्नलं कुडंकलकूट्टि
प्पेय् पेयेन्ट्रु रैप्प यानुं पेरुंकडलवेल्लिक्कुन्ट्रं
पेयदुतूक्किकन्ट्र वण्णं विलाप्पुडै पेरिदुंवींग
वैयन तरुलि नाल्यानन्दणतोंलिलनानेन्

भावार्थ—महिलायें भोजन में मना करने पर घी और शक्कर डालती जाती थीं। श्रेष्ठी महाराज और डालो और डालो कहते रहते थे। इसलिये खूब परोसा गया। मैंने समुद्र में चाँदी के पहाड़ को डालकर भरने समान खूब खाया। आपको देखने मात्र से मेरा भयंकर रोग शान्त हो गया। जिससे साधु महात्माओं के मन के समान मेरी पूरी तृप्ति हो गयी।

[४०१]

सुरुंपुडै यलगन्मालैच् सुनन्दैयुं तुणैवन्ट्रानुं
विरुंबिन रेतिर्कोण्डोंब वेलवेन्तोयिनींगि

यिरुन्दन नेममुन्नी रेरिसुर वुयुर्त्त तोन्ट्रल
करुंपुडै क्कालैयन्न कालैं निन्वलैप्पट्टेन्ट्रान्

भावार्थ—गुरु महाराज फिर से बोले कि भ्रमरों से गुंजायमान फूल माला पहनी हुई सुनन्दा देवी और उसके पतिदेव गन्धोत्कट श्रेष्ठी दोनों ने मेरे को प्रेम के साथ जो आदर किया है। उसने मेरे मन को द्रवित कर दिया। दूसरी बात यह है कि संसार की रक्षा करने वाला मीन चिह्न का झण्डा जिसका हो और गन्ना ही जिसका धनुष हो ऐसे कामदेव के सदृश हे महाभाग, तुम्हारी कृपा के कारण मैं भयंकर भस्मक रोग से मुक्त हुआ हूँ। मैं तुम्हारे लिये कृतज्ञ रहूँगा।

[४०२]

निलंपोरु क्कलाद सेंपो नीणिति नुन्दै यिलल
नलंपोरु क्कलाद पिंडो नान्मुगन्ट्मर्कट् केलला
मुलं पोरु क्कलाद तोला यादला लूडु पुक्केन्
कलं पोरु क्कलाद साय लवरुलै निन्नैक्कपडेन्

भावार्थ—गुरु महाराज आगे कहने लगे कि भूदेवी से भी ढोने में अशक्य सोना-चाँदी आदि निधि से सम्पन्न तुम्हारे पिता गन्धोत्कट का गृह, अत्यधिक हित पहुँचाने वाला जो अशोक वृक्ष है उसकी मनोहर छाया में विराजमान श्री अरहन्त देव के मार्ग पर चलने वाले सारे लोगों के लिये निजी घर कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं है। इसलिये मैं बिना रुकावट के घर के अन्दर गया। पत्थर के खम्भे के समान भुजबल पराक्रमशाली हे महाभाग, आभूषणों से भरे एवं कोमल स्वभाव महिलाओं के बीच में मैंने तुम्हें देखा।

[४०३]

एयनैक्कण्णिर्काण यानैत्तो यदकं कण्ड
पैयग नागं पोल वटकया न्पेरिदु मुट्कित्
देय् वं कोलेन्ट्र तेवैर कमिर्दुलाय निमिर्न्ददे पोन्
मोय्कुरन्मुरसनाणुं तलंकुरन्मुलंगक्केट्टेन

भावार्थ—गुरु जी आगे कहने लगे कि हे पुण्यपुञ्ज, जैसे दवाई को देखने मात्र से सर्प का विष निकल जाता हो वैसे तुम्हें आँखों से देखने

मात्र से ही मेरा भयंकर भस्मक रोग एकदम शान्त हो गया। मुझे आश्चर्य तो हुआ, साथ ही साथ डर भी होने लगा; क्योंकि शायद यह एक शक्तिमान देवता हो। इस तरह मैं चिन्ता में डूब रहा था। उस समय अमृत ही मनुष्य के रूप में आ रहा हो ऐसा तुम्हारे देवतुल्य बदन से किंकिणीनाद को किसी मधुर आवाज सुनने मिली। अर्थात् आप मधुर वाणी से बोलने लगे।

[४०४]

कोट्टिटलिन्तिगलसून्दु कुलवियतिरुविर्पोल
मोट्टोलि मुत्तं सून्दु मुरुगु कोप्पलिक्कुं तारोय्
केट्टलप्परिय सोल्लुं किलरोलि वनप्पुनिन्नैच्
सेट्टिटलं सिंह मन्नाय् सालकं जेय्ट् वेन्ट्रान्

भावार्थ—आगे गुरु महाराज कहने लगे कि पूर्वपक्ष चन्द्र के पास देदीप्यमान विद्युत् के समान तेजोमय कान्तिधारी बेटा जोवक, तुम्हारे शरीर के कारण से मोती की माला और मधुमय सुगन्ध फूलमाला आदि शोभा प्राप्त कर लेती हैं। जवान सिंह के सदृश हे वीर प्रतापी, मैं क्या कहूँ ? तुम्हारा वाक्सौरभ और शरीर की कान्ति तुम्हारे कुल की गरिमा को प्रकट करती थी।

[४०५]

आर्यनन्दी महाराज का पुनर्दीक्षा ग्रहण

कोलियं कुलुवै यन्न कोलुंसिलै युलनन्केट्टे
तालियरवंगडाया त्तन्दै नीयागि येन्नै
वालियं कुरुवप्पूणोय् पडैत्तेनै वालियेन्न
मोलियं कलिर नायान्मेय्नेरिनिर्प लेन्ट्रान्

भावार्थ—भयंकर धनुष को धारण करने वाले वीर जोवन्धर कुमार महाराज से कहे गये सारे विषयों को सुन लेने के बाद कहने लगे कि प्रकाशमय गुणरूपी आभूषणधारी महात्मन् आपके सत्प्रयत्न से समुत्पन्न तप ही माता हो और तप ही पिता हो इस रूप में आप त्यागमय तप को उन्नत पथ पर लाये हैं। आपका जीवन धन्य है। इस तरह नम्रता के

साथ कहकर उनके चरणों में नमस्कार किया। कुमार की मधुर वाणो सुनकर गुरु जी कहने लगे कि गौरवमय हाथी के सदृश हे वीर पुरुष, मैं पुनर्दीक्षा लेने वाला हूँ।

[४०६]

मरुवर मनैयि नींगिमातवं सेय्वलेन्ट्रार्
पिरवर मललपेसार्पेररिवुडैय नीरार्
तुरवरं पुणर्ग वेन्ट्रे तोन्ट्राडोलु दुर्निट्रा
नरवर मलर्न्दकण्णि नन्मणि वण्ण नन्नान्

भावार्थ—मधु भरे विकसित फूलमाला से अलंकृत एवं नोलवर्ण कृष्ण सदृश जोवन्धर कुमार कहने लगे कि हे महात्मन् एक व्यक्ति अपनो संसार परम्परा को विच्छेद कर मोक्ष प्राप्ति के वास्ते प्रयत्नशील है तो कौन बुद्धिमान व्यक्ति उसे रोकेगा ? कोई भी नहीं। बुद्धिमानों का कर्तव्य यह है कि हर व्यक्ति को सन्मार्ग पर लगाना है और दुर्मार्ग से छुड़ाना है। अतः आप फिर से त्याग मार्ग पर आरूढ़ होना चाहते हैं तो उसे तहे-दिल से स्वागत करता हूँ। ऐसा कहकर गुरु चरणों में भव्यता के साथ प्रणाम किया।

[४०७]

कैवरै यन्ट्रि निल्लाक्कडुंजिन मडंगलन्नान्
ट्रेव्वरै च्चेरु क्कुनीति मनत्तगत्तेलुनिच्चें बोर्
पैविरि यलगु लाट्कु पडुकडल्नितियिन्वैगुं
मैवरैमार्पिनार्कुं मनमुरत्तेटि् यिट्टान्

भावार्थ—उसके बाद आर्यनन्दी महाराज ने सदाचार को सोमा को उल्लंघन न करने वाले एवं क्रोध से भरे शेर के समान रहने वाले जो जीवन्धर कुमार हैं उनके मन में अपने शत्रु को जोतने का मार्ग बता देने के बाद मेखलाभरण से अलंकृत एवं सुन्दर सुनन्दा देवी और सागर के समान भरपूर सम्पत्ति सम्पन्न एवं पर्वत के समान विशाल वक्षस्थल वाले गन्धोत्कट श्रेष्ठी इन दोनों को अपने तप धारण करने के विषय को समझाया।

[४०८]

अललुरु वेण्णेय् पोल वगंकुलै न्दुरुगिराट्राल्
कुललुरु किलवि सोर्ट्टु कुमरनैत्तमियनाग
निललुरु मदिय मन्नाय नीत्तियो वेनवुनिललान्
पलविनै परिय नोर्पाल्विजैयर्वेन्दन्सेन्ट्रान्

भावार्थ—सुनन्दा देवी, आर्यनन्दो महाराज, तपधारण करने वाले हैं। इस बात को सुनकर उसका मन आग में रखे गये मक्खन के समान ढीला हो गया अर्थात् दुखित हुई। फिर बाँसुरी के समान मधुर वचनों से कहने लगी कि प्रकाशमान चन्द्र सदृश हे महानुभाव, क्या आप जीवन्धर-कुमार को अकेला छोड़ कर जायेंगे ? नहीं-नहीं। यह नहीं हो सकता। फिर भी उसे समाधान कर विद्याधर लोक के अधिपति लोकपाल (आर्य-नन्दी) रुके नहीं। अपने पूर्वभव के कर्मों के विनाशार्थ तप करने के लिये भगवान देवाधिदेव श्री वर्द्धमान स्वामी के समवशरण की ओर चलने लगे। शुभम् भवतु।

●

जीवकचिन्तामणि दूसरे भाग का कथासार

आर्यनन्दी महाराज ने घोर तपश्चर्या के द्वारा मोक्ष को प्राप्ति की। जीवन्धर कुमार हाथी पर सवार होकर घूमने लगे। उन्हें देखकर युवतियाँ आसक्त होने लगीं। कुमार सर्वकलाओं में सर्वोपरि थे। आनन्द से दिन बीत रहे थे।

इसके बीच में शक्तिशाली व्याध लोगों ने नन्दगोप की गायों को पकड़ लेने का विचार किया था। उनमें एक निमित्तक व्याध एक चिड़िया की आवाज सुनकर कहने लगा कि राजा की सेना आकर अपने लोगों से लड़ेगी और हार कर भाग जायगी ! बाद में एक व्यक्ति रथ पर बैठ कर आयेगा और लड़ेगा। उस लड़ाई में हम लोग हार कर भागेंगे। उसकी बात को अन्य व्याध लोग न माने और गायों को पकड़ ले गये।

ग्वाले लोग, गायों को पकड़ ले जाने से घर पहुँच कर ग्वालिनियों से सारी बातें सुनाने लगे। ग्वालिनियाँ रोने लगीं। हारे गये अहीर लोग भाग कर राजमहल पहुँचे और राजा के दर्बान से सारी बातें कह सुनायीं। वह राजा से कहने लगा। राजा ने गुस्से के साथ व्याधों को जीतने एवं गायों को छुड़ाने हेतु सेना भेजी। सेना व्याधों से लड़ी और हार कर भाग निकली। काष्ठांगार अपनी सेना हार गयो। यह समाचार सुनकर बहुत दुखित हुआ कि अब क्या किया जाय यह सोचने लगा।

इसके बाद नन्दगोप ने ढिंडोरा पिटवाया कि जो वीर व्याधों से लड़-कर गायों को छुड़ा लायेगा। उसे सात सोने की पुतलियाँ तथा अपनो लड़की का दान कर दूँगा। यह समाचार कुमार के कानों में पड़ा। कुमार सोचने लगा कि असहायों को सहायता करना आवश्यक है। इस विचार से व्याधों के साथ लड़ने एवं गायों के झुण्ड को छुड़ाने रथ पर सवार होकर निकल पड़ा। व्याधों के साथ लड़ कर जोत गया।

जीते हुए जीवक ने नगर प्रवेश किया। उसे देखकर नारियाँ नाना-विध कल्पनायें करने लगीं। ऐसी महत्ता के साथ कुमार ने घर में प्रवेश किया। उसके बाद नन्दगोप नाम का श्रेष्ठी आकर कुमार से कहने लगा कि बेटा सुनो, इस नगर का राजा सत्यन्धर था। उसने अति सुन्दरी अपनी प्यारी पत्नी से अत्यधिक प्रेम कर राज्यभार को काष्ठांगार के हाथ

दे दिया था। बाद में उसी काष्ठांगार ने वंचना के साथ राजा को मार डाला। राजा को कोई संतति नहीं थी। मैंने उसी दिन मर जाना चाहा। परन्तु मेरा विचार यह रहा कि कहीं कोई सन्तति की जानकारी होने के बाद ही मरना उचित है इसी विचार से अब तक जीवित हूँ। मेरी गोविन्दा नाम की अति सुन्दर कन्या है। उसके रूप लावण्य को देखकर बहुत से युवा लोग उसे पाने के लिए तरसते हैं। अतः आप उसे परिणयन कर लेना इत्यादि।

कुमार ने सोचा कि हम क्षत्रिय कुल के हैं। हमें पहले क्षत्रिय कुल की कन्या से विवाह करना है। अतः गोविन्दा को अपने मित्र पद्मास्य के साथ विवाह कराने का निश्चय कर लिया।

बाद में ठाट-बाट के साथ विवाह मण्डप अलंकृत किया गया। वहाँ नन्दगोप के द्वारा जलधारा छोड़ी गयी थी। कुमार ने उसे अपने मित्र पद्मास्य का नाम कहकर ले लिया था। तदनुसार पद्मास्य के साथ गोविन्दा का विवाह हुआ था। पद्मास्य गोविन्दा के साथ प्रेम सागर में डूबता हुआ भोग भोगता रहता था।

गान्धर्वदत्ता लम्ब

राजमापुर में जोवन्धर कुमार आदि सभी लोग आनन्द के साथ रहते थे। उसी नगर के व्यापारी श्रोदत्त श्रेष्ठी ने धन कमाने के विचार से देशान्तर जाने का निश्चय किया। उसके अनुसार अच्छे मुहूर्त में जहाज के द्वारा निकल पड़ा। जहाज वेग से जाकर एक द्वोप पर पहुँचा। सेठ उतर कर भेंट के साथ राजा से मिला। राजा से व्यापार करने को अनुमति लेकर खूब माल खरोद लिया। स्वदेश लौटने के लिये राजा से अनुमति माँग लो थी। अच्छे शुभदिन में सेठ रवाना हुआ। जहाज पर जा बैठा। जहाज वेग से चली। बाद में एक भयंकर आँधो आयो। जहाज डूबने को परिस्थिति में आ गयो थी। उस समय सेठ जहाज में बैठे हुए लोगों से संबोधन करते हुए बोला—देखो, संसार असार है। इसमें कोई भी वस्तु निरन्तर रहने वाली नहीं है। दुख आते समय डर के बिना सन्तोष रखना चाहिये। वही सन्तोष दुख को नाश करने वाली सेना है। जो कुछ होना है वह होगा हो, डरने से रुकेगा नहीं। शरोर में रहने वाली आत्मा का जीवन काल यदि खत्म हो जायगा तो थोड़ा-सा पानी भो उसे खत्म नाश कर देगा। अपना पीछा करने वाला पूर्वजन्म का कर्म भला रहेगा तो समुद्र में डूब जाने पर भी बच जायेंगे। अतः डरने को कोई

जरूरत नहीं है। धैर्य से रहना। अब करना यह है कि ठंडे फूलों से अलंकृत अशोक वृक्ष के नीचे विराजमान अरहन्त भगवान के जो दिव्य चरण हैं उन्हें स्मरण कीजियेगा। वे चरण आपकी रक्षा करेंगे। इस तरह अमूल्य उपदेश दिया था। बाद में जहाज डूब गया था। सामने समुद्र के एक लकड़ी मिली। सेठ उसी के सहारे समुद्र के किनारे पहुँचा।

इसकी प्रतीक्षा करने के लिये एक व्यक्ति खड़ा था। उस अनजान व्यक्ति से श्रीदत्त ने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर उस व्यक्ति ने तसल्ली दी और अपना सारा वृत्तान्त कहने के साथ अपना नाम 'धरन' है तथा हमारे राजा के साथ आपका कुल परम्परागत सम्बन्ध है। हमारे राजा ने आपको लिवा लाने के लिये भेजा है। इसलिये मैं इस तरह नाटक रचाकर आपको ले जा रहा हूँ। आपकी सारी वस्तुएँ ज्यों की त्यों हैं। नष्ट नहीं हुई हैं। आप चिन्ता मत करें। इस तरह कह कर ले जा रहा था।

धरन श्रीदत्त को विद्याधर लोक ले जाकर राजमहल में पहुँचाने के साथ कहने लगा कि इस नगर का राजा गरुड़वेग है। उसकी रानी का नाम है तारणि। उन दोनों को गान्धर्वदत्ता नाम की कन्या है। ज्योतिषी के कहे अनुसार उसका पति राजमापुर में है। अतः राजा आपके पास अपनी लड़की को सौंपना चाहता है।

उसके बाद श्रीदत्त राजा से मिला। राजा ने उसको बहुत आदर सम्मान दिया। आपस में बातचीत हुई। तदनन्तर गान्धर्वदत्ता श्रीदत्त के साथ भेजी गई। राजा ने दत्ता को अनगिनत वस्तुएँ दीं। श्रीदत्त लौटते समय अत्यन्त सन्तुष्ट होकर अपनी जहाज, दत्ता आदि सबके साथ घर पहुँचा।

बाद में श्रीदत्त ने काष्ठांगार राजा से अनुमति लेकर संगीत मण्डप (स्पर्द्धा का मण्डप) बनवाया। उसकी शोभा अवर्णनीय थी। ऐसे सुन्दर मण्डप में सभी तरह के राजा लोग एवं ब्राह्मण और वैश्य लोग भी आये हुए थे। इस तरह की परिस्थिति में हर तरह से शोभायमान दत्ता और भी अलंकृत कर स्पर्द्धा मण्डप में आ पहुँची। वीणा बजाने लगी वह वीणा के अनुकूल 'गाने' भी लगी।

स्पर्द्धा शुरू हुई। एक-एक राजा लोग उसमें हारते गये। फिर ब्राह्मण लोगों का नम्बर आया। वे सारे लोग भी हार गये। उसके बाद यज्ञोप-

वीत पहने हुए वैश्य लोगों का नम्बर था। वे भी सबके सब हार गये। यहाँ पर समझने की बात यह है कि वैश्य लोगों को कहते वक्त यज्ञोपवीत का चिह्न बताया गया है। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में सभी वैश्य लोग यज्ञोपवीत धारण करते थे। अब भी दक्षिण में यह परम्परा पूर्ववत् है।

सब लोग हार जाने के बाद जीवन ने बुद्धिसेन नाम के ब्राह्मण व्यक्ति को पिता गन्धोत्कट श्रेष्ठी के पास स्पर्द्धा में शामिल होने की अनुमति माँगने भेजा। उससे यह बात कही गयी थी कि दत्ता पर मोहित होकर स्पर्द्धा में शामिल नहीं होना चाहते बल्कि संगीत विद्या को दिखाने के लिये ही है।

बुद्धिसेन सेठ के पास पहुँचा था। उस समय एक लड़की ने अपने सिर की बालों से पत्र निकाल कर सेठजी के हाथ में दिया। वह पत्र नागमाला ने भेजा था। उसमें यह लिखा हुआ था कि काष्ठांगार कुमार को हर तरह से मार डालने पर उद्यत है। अतः कुमार की रक्षा की जरूरत है। फिर उस लड़की को सम्मान देकर भेज दिया गया।

सेठजी नागसेन को बता रहे थे। (यह बात इस काव्य में नूतन है।) वह यह है कि शहर के कुछ लोग मिलकर एक नाटक तैयार करने लगे। उस समय कुमार को बुलाया गया। कुमार भी भाइयों सहित वहाँ पहुँचे। कुमार से कहा गया कि आप ही इस कला में चतुर हैं। आप मंच के अनुसार पात्र का अलंकार करें। कुमार ने नायिका को तदनुकूल अलंकृत किया। फिर वह मंच पर आकर नाटक करने लगी। उसका नाम था अनंगमाला।

काष्ठांगार नाटक समाप्त होने के बाद अनंगमाला को बलात्कार से खींचकर राजमहल ले गया। तब भी वह उस पर मोहित न थी। उसकी इच्छा कुमार पर थी। इसी बात को नागमाला ने सूचित किया था।

उसके बाद गन्धोत्कट श्रेष्ठी ने कुमार को स्पर्द्धा में शामिल होने के लिये अनुमति दे दी। उनका कहना यह था कि अकेले मत जाना। बल्कि सेना लेकर जाना। इससे पता लगता है कि राजा लोगों के समान श्रेष्ठियों के पास भी सेना होती थी। बस, कुमार, सेना सहित गान्धर्वदत्ता का स्पर्द्धा में शामिल होने के लिये वीणा मण्डप जा पहुँचा।

स्पर्द्धा शुरू हुई थी। सुन्दर लता जैसी दत्ता वीणाओं को देती गयी थी। कुमार उसमें दोष बताते हुए निकालते गये। वीणा वाद्य में कुमार

स्वयं गाने लगे उसे सुनकर लोग सिर हिलाने लगे। देवगण और मानव भी मूर्च्छित हुए। पत्थर ओर पेड़ गलने लगे। इस तरह वीणावाद्य के लय के अनुसार आलापना के साथ कुमार गाने लगे। वीणावाद्य की स्पर्द्धा में दत्ता हार गयी और कुमार के गले में माला पहना दी।

इन सबको देखकर काष्ठांगार को सहन नहीं हुआ। आये हुए राजा लोगों को भड़काकर कुमार के साथ लड़ाई करने के लिये तैयार कर दिया था। उसका कहना यह था कि जो ऊँची वस्तु है उसे पाने का अधिकारी राजा लोग होते हैं न कि वैश्य कुल का लड़का। अतः उसे जीतकर दत्ता को पाइयेगा इत्यादि। उसकी बात को सुनकर मूर्ख राजा लोग दत्ता को पाने की लालसा से कुमार के साथ लड़ने तैयार हो गये थे।

युद्ध के लिये तैयार हुए राजाओं से पद्मास्य कहने लगा कि भुजा से जीतकर जो प्राप्त करना था उसे छोड़कर प्राप्त की हुई वस्तु को तलवार के बल से छीन लेना चाहें तो आप लोगों को युद्धकला को धिक्कार हो। जीवन्धर कुमार को जीत लेना आसान नहीं है। अतः उससे होनेवाले दुख को विचार कर युद्ध को छोड़ दीजियेगा। यही गौरव की बात है।

दत्ता जीवन्धर स्वामी को पति ग्रहण कर आनन्द में थी। ऐसी अवस्था में दुष्ट राजा लोग लड़कर अपने को अपहरण करने तैयार बैठे हैं। इस बात को सुनकर उसका मन कैसा रहा होगा, इसका अनुमान कर सकते हैं। उसका विचार यह रहा कि शायद राजा लोग जीत जायेंगे तो अपनी हालत क्या होगी? सभी राजा लोगों को सेना के साथ लड़कर प्राणनाथ कुमार कैसे जीत सकते हैं? भगवान भला करें। इस तरह चिन्तित होकर रोती रहतीं थी। उसको तसल्ली देकर कुमार युद्ध रंग में जा पहुँचे।

वहाँ कुमार डरपोक राजा लोगों से कहने लगे कि आप लोग अपनी स्त्रियों के सुख को छोड़कर दत्ता से सुख प्राप्त करने आये थे। परन्तु स्पर्द्धा में बुरी तरह से हार गये। अब बलात्कार से दत्ता को प्राप्त करने के लिये कोशिश कर रहे हैं। इसमें भी निश्चित हारेंगे इतना ही नहीं आप लोग बिलकुल खतम हो जायेंगे। आप लोगों को न उधर का सुख रहेगा और न इधर का सुख रहेगा। दोनों से हाथ धोकर यमराज के अतिथि बन जायेंगे। देख लेना।

इस तरह कहने के बाद दोनों में भयंकर लड़ाई हुई थी। राजा लोगों की लड़ाई अन्याय युक्त थी। कुमार की लड़ाई नीति से परिपूर्ण थी।

अन्याय को खतम करने के लिये कुमार और उनके साथी वीरता के साथ लड़े। अतः राजा लोग युद्धरंग से भाग खड़े हुए। कुमार की जीत हुई।

उसके बाद कुमार दत्ता को अपने घर ले आये। विधिवत् विवाह हुआ था। उसका वर्णन करना अशक्य है। कुमार और दत्ता दोनों आनन्द के साथ भोग सागर में डूबते हुए भोग भोगते रहे। इसका वर्णन ग्रन्थ में देखें।

उस समय कुमार के श्वसुर जो राजा कलुषवेग थे उनसे एक पत्र लाकर कुमार के हाथ में दिया गया। उस पत्र में कुमार को खूब तारीफ़ की हुई थी।

जीवकचिन्तामणि : गोविन्दै लम्ब

दूसरा भाग

[४०९]

आर्ववेररिन्दु अच्चणन्दि पोय
वीरन्ताल् निलल् विलंग नोट्रपिन्
मारि मोक्कुलि न्मायन्दु विण्तोलच्
सोर्विल् कोलकैयान्तोट्टं नींगिनान्

भावार्थ—आर्यनन्दी महाराज, जीवन्धर कुमार को छोड़कर जाने के बाद आशा-पाश को काटकर भगवान श्री वर्द्धमान जिनदेव के चरणों की भक्ति करते हुए घोर तप में लीन हुए। निश्चल तप के कारण जल बुद्बुद के समान भूत इस अनित्य शरीर को छोड़कर देव लोगों से यूजनीय मुक्ति के पात्र बन गये।

[४१०]

नम्बनित्तलै नाग नन्नकर्प
पैम्पोन् ओडै सूल परुम यानैयुं
सेन्योन्नील कोडित्तेरुं वासियुं
वेंबिऊर्न्दु उलांवेनि लानिने

भावार्थ—जीवन्धर कुमार, नागलोक के समान जो राजमापुर है उसके अन्दर नये सोने से बनाये गये महल, मुखाभरण से अलंकृत हाथी, ऊँचे ध्वजा सहित रथ, तेज दौड़ने वाले घोड़े आदि को चलाते हुए कामदेव के समान राजवीथी में विहार करने लगे। कुमार के यौवन एवं सौन्दर्य को देखकर युवतियाँ काम से आसक्त होकर चिन्तित होने लगीं।

[४११]

कलैयिन दगलमुं काट्टिच विकन्बमुं
सिलैयिन दगलमु वीणैच्चे लवमुं
मलैयिनिन् अगलिय मार्पनललदिव्
वुलकिनिल् इलैयेन ओरु वनायिनान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार ऐसे शोभायमान हो रहे थे कि कलाओं के विकास स्वरूप, देखने से दिल खुश होने वाली सुन्दरता, युद्ध सन्नद्ध होने का अभ्यास आदि विषयों में सर्वोपरि समर्थ थे। पर्वत के समान विशाल छाती वाले जीवक को छोड़कर अन्य कोई नहीं है। इस तरह उपमातीत होकर देदीप्यमान हो रहे थे।

[४१२]

नामवेन्ट्रिवे लनकै कोल मार्पनैक्
कामने एन क्कन्नि मंगैयर्
तामरै क्कणार्परुग त्तालन्दुला
कोंमगन्तिरत्तु उट्र कूरुवां

भावार्थ—शत्रुओं के मन में भीति पैदा करने वाला वेलायुध एवं छाती में मोती की माला अलंकृत होने के कारण शोभित जीवन्धर कुमार को देख कर यह सचमुच कामदेव ही हैं। दूसरा कोई नहीं है। इस तरह समझने एवं कहने वाली युवतियाँ अपने कमल नयनों से कुमार के सौन्दर्य को देखकर मोहित होती थीं। उस समय कुमार के साथ-साथ क्या-क्या घटनाएँ हुई थीं, उन्हें विस्तार से कहेंगे।

[४१३]

शवर लोगों का गायों को ले जाना

सिल अं पोदिन्मेल् निरैन्दु तेन् उलाम्
मुलले कारेन प्पूप्प मोयन्नि रै

पुलल्लु कन्ट्रु उलि प्पोलिन्दु पालपडुं
'क' एन् सुम्मै ओर कडलि न्मिक्कदे

भावार्थ—कुछ विकसित चमेली के फूल के ऊपर भ्रमर घूम रहे थे। उस समय गाय के झुंड अपने बछड़े को याद कर दूध झराने लगे। इस वातावरण से मालूम होता था मानो वर्षा काल ही आ गया हो। इस तरह गायों का अपने स्तन से दूध गिराने का 'गिर-गिर' शब्द समुद्र के लहरों की आवाज से ज्यादा होता था।

विशेषार्थ—देश की अभिवृद्धि के बारे में बता रहे हैं। चमेली के फूल विकसित हैं। सुगन्धी के कारण भ्रमरें रींकार करते हुए उन फूलों पर घूम रहे हैं। गायें अपने बछड़ों को याद से स्वयं दूध गिरा रही हैं। तथा दूध गिरने का शब्द समुद्र की आवाज को जीत रहा था।

[४१४]

मिक्कनालिना वेल मुंमदं
उक्कदेनिनोडु अरि वार्सुनै
ओक्कवाय् निरैन्दु ओलुगु कुन्ट्रि न्मेल्
मक्कलीण्डिनार् मडंगल् मोय्पिनार्

भावार्थ—इस तरह कोलाहल से सम्पूर्ण दिनों में हाथी से गिरनेवाले तीनों मदों के साथ शहद भी मिलकर बह रहा था। ये सब पास के जलाशय में जा मिले। पहाड़ पर सिंह के समान दृढगात्र वाले शबर लोग एकत्रित होकर विचार करने लगे।

[४१५]

मन्नवन्निरैवन्दु नण्णुरं
इन्न नालिना लकोडुं नाम् एनच्
सोन्न वायुले ओरुवन् पुट्कुरल्
मुन्नं कूरिनान् मुलुदु उर्णिनान्

भावार्थ—एक व्याध इस तरह कहने लगा कि राजा की गायों का झुण्ड इस ओर आयेगा। इस वसन्त काल में हम अन्य लोगों को पकड़ कर अपने अधीन बनायेंगे। इस तरह वार्तालाप होते समय एक चिड़िया कुछ आवाज देने लगी। एक निमित्त ज्ञानी उस चिड़िया की आवाज को पूरे के पूरा जाँच कर उसका फल नीचे लिखें अनुसार कहने लगा।

[४१६]

अडैतुं नाम् निरै अडैन्द कालैये
कुडैयुं पिच्चमुं ओलिय क्कोन्पडै
उडैयुं पिन्नरे ओरुवन् तेरिनाल्
उडैदुं सुडुविन्तेन् उडैन्द वण्णमे

भावार्थ—हम लोग तो गायों को पकड़ लेंगे। उसमें कोई कठिनाई नहीं रहेगी। लेकिन उन गायों को पकड़ने के बाद राजा की सेना आकर अपने लोगों के साथ लड़ेगी। दोनों की घमासान लड़ाई होगी। उस लड़ाई में राजा का छत्र और ध्वजा दोनों नष्ट-भ्रष्ट होकर बिखर पड़ने के साथ-साथ राजसेना हार के मारे भाग निकलेगी। उसके बाद एक व्यक्ति रथ पर बैठ कर लड़ाई के मैदान में आयगा। आग की ज्वाला लगने से जैसे शहद को मक्खियाँ भाग जाती हैं वैसे ही अपन लोग हार के मारे भाग निकलेंगे। याने हम लोग उससे हार जायेंगे।

[४१७]

एन्ड्रु कूरलुं एलै वेट्टुवीर्
ओन्ड्रु तेरिनाल् ओरुवन् कूट्रमे
एन्ड्रु कूरिनुं ओरुवन् एन्सेयुं
इन्ड्रु कोडुं नां एलुगेन्ड्रु एगिनार्

भावार्थ—उस व्याध के इस तरह कहने के बाद एक व्यक्ति कहने लगा कि है अबोध निषाद लोगों! आप लोग डरना नहीं। क्योंकि इतनी बड़ी राजा की सेना जब हार जायगी तो एक ही रथ पर आने वाला अकेला वह व्यक्ति क्या करेगा? उसके पास अपन सबको मार डालने की शक्ति होने पर भी अपन लोगों को आसानी से जीतना न मुमकिन है। अतः अपने लोग आज गायों को घेर कर पकड़ लेंगे। तैयार हो जाना! उसकी बात सुन कर सब लोग गायों के पास जाने लगे।

[४१८]

वण्डु मूसुअरा नरवं आर्न्दु अवर्
तोण्डगप्परै तुडियोडु आर्तु एल

विण्डु देयव तं वणंगि वेलग एन
मण्डिना निरै मणन्द कालैये

भावार्थ—वे व्याध लोग, जिसमें मधुमक्खियाँ ज्यादा घूमती हुई मधु पोतो थीं; ऐसे मधुर मधु को खूब पोने लगे। बाद में उन लोगों का जो वाद्य विशेष था उसे खूब बजाने लगे। उसके बाद उनको कुल देवता जो कालो माता थी, उससे प्रार्थना करने लगे कि हे माँ, ऐसा वर दो कि लड़ाई में हम लोगों की जोत होवें। तदनन्तर जिस ओर से गायें आने वाली थीं उस ओर उन्हें घेर कर लाने चल दिये।

[४१९]

ग्वाले लोगों का आनेवाली आपत्ति जानकर रक्षार्थ जाना

पूत कोगुपो लपोन्सुमन्दुलार
आत्तिय र्नलक्कु आ सेल् तूण् अनान्
कोत्त नित्तिलं कोदैमार्पिनान्
वाय्त्त अन्निरै वल्लुव न्सोनान्

भावार्थ—नन्दगोप की गायों में आने वाली विपत्ति को एक निमित्तक नन्दगोप से ज्यों का त्यों कहने लगा। नन्दगोप कैसा था? खुले फूलवाला जो 'कोंगु' नाम का पेड़ है; उसके समान आभूषणों से अलंकृत ग्वालिनियों के सहायक जो गायें थीं वे गायें कभी-कभो नन्दगोप के शरोर पर घिस कर जाती थीं। उस समय वह खम्भा सरोखा मजबूत था। अलावा इसके वह पिरोये गये मोतियों को माला पहना हुआ था। ऐसे नन्दगोप की गायों पर चोरों को आपत्ति आई हुई है।

[४२०]

पिलल्लै उलपुगुन्दु अलित्तदु आदलाल्
एलल्लन्मिन्निरै इन्ट्रु नीर एन
वेल्लि वल्लिचिन विलंगु तोलनलार्
मुलगुंआयरुं मोयं बोडु एगिनार्

भावार्थ—निमित्तक से कहा गया था कि 'कारि' नाम को एक चिड़िया ने गायों के समूह में घुस कर यह झुण्ड सर्वनाश होने का जिक्र

दिखाया है। इसलिये आज गायों के झुण्ड को होशियारी से सम्हालना है। तुम नवयुवकों को इस काम को ठीक तरह से करना होगा। अतः चाँदी की चूड़ियाँ पहनो हुई नव विवाहित युवतियों के भुजाओं को प्रेम से आलिंगन करने वाले सारे युवकगण उत्साह के साथ गायों के रक्षार्थ निकल पड़े।

[४२१]

कायंमीन एन क्कलन्दु कान्निरै
मेय्वेन्तोलिल वेडर् आर्त्तुडन
पायु मारिपो ल्पकलि सिन्दिनार्
आय र्मत्तु एरि तयिरि नायिनार्

भावार्थ—आकाश और नक्षत्र के समान मिल-जुल कर गायें चर रही थीं। हिंसक व्याध लोग सर सर नाम की चिल्लाहट के साथ बरसात जैसे बाणों को बरसाने लगे। अहीर लोग दही को मथने वाली मथानी के समान उन बाणों को सहन करने में असमर्थ होकर तितर-बितर होकर भागने लगे।

[४२२]

कुललुं नवियमुं ओलिय क्कोवलर्
कलल क्काडुपोय् क्कन्ट्रु तामरिन्दु
उललै पायन्दुलां मुन्ट्रिलपलिलयुल्
मललै तींजोला र्मरुग वाय् विट्टार

भावार्थ—डर के मारे भागते हुए अहीर लोगों के बंशी और हथौड़े नीचे गिरने लगे। ये लोग वहाँ पहुँच गये जहाँ बछड़े जंगल को छोड़ कर अपनी रस्सी को काटते हुए खेलते हैं और लट्ठे उन्हें रोकते हैं। बाद में ये लोग तोतली एवं मीठी बोली बोलने वाली अहीर (अपनी) की औरतों के पास जाकर सारी बातें कहने लगे। वे नारियाँ उस बात को सुनकर मन में दुखित हुई और चिल्लाती हुई रोने लगीं।

[४२३]

मत्तं पुलिलय कयिट्रि न्मट्वर्
अत्तलै विडिन् इत्तलै विडार्

उय्त्तनरेनउडै तयिर्प्पुलि
मोय्त्त तोलनला मुंलुदुं ईण्डिनार्

भावार्थ—दही को मथन करते समय मथानी में लगी रस्सी एक तरफ़ खींचते समय दूसरी ओर ढीली होती है। दूसरी तरफ़ खींचते समय पहली वाली ढीली होती है। ऐसा न होने के समान व्याध लोग गायों के झुण्ड को दोनों तरफ़ घेरकर ले गये थे। इस बात को सुनी हुई अहीर की औरतें दही को मथन करते समय उछल कर गिरनेवाले बूँदें सारे भुजाओं में पड़ी हुई थीं। इस तरह की हालत के साथ अहीरीनियाँ एकत्रित हुई थीं।

[४२४]

वलैप्पडुं मानेन मंजै एनत्तं
मुलैप्पडु मुत्तोडु मोय्कुलल वेयन्द
तलैप्पडु तण्मल मलै पिणंग
अलैत्त वयिट्रिनराय् अलु दिट्टार

भावार्थ—वे अहीर की महिलायें जाल में फँसे हिरण और मोर के समान, अपने स्तन कलश पर पहनी हुई मोतियों की मालायें हों, अपने सिर के बालों में अलंकृत ठंडे एवं चमेली की मालायें बिखर पड़ी हों, इस तरह की शोकाकुल परिस्थिति में पेट पर हाथों से ठोक-ठोक कर जोर-जोर से रोने लगीं।

[४२५]

एम्मवैमारिनि एंगनं वालगुवोर्
नुंअनै मार्कलै नोव अदुक्कि
वेंमुनै वेट्टुवरुय्त्तनरो एनत्
तम्मनै क्कन्ट्रोडु तां पुलंपुट्रार

भावार्थ—हे हमारी प्यारे बछड़ों, आप इसके बाद कैसे जोयेंगे? भयंकर समर में व्याध लोग तुम्हारी माताओं को खूब मार-पीटकर भगाते हुए ले गये हैं। इस तरह अहीर की महिलायें अपने-अपने घर पर रहे गाय के बछड़ों को आलिंगन करती हुई रो रही थीं।

[४२६]

पारैपडुतयि पालोडु नेय् पोरुदु
आरुपड प्पलि्ल आगुलं आग
मारुपड मलैन्दु आय्प्पडै नेक्कदु
सेरुपड मलसिन्द विरैन्दे

भावार्थ—ग्वालाओं के निवास स्थान पर चट्टान के समान वाला मजबूत दही, दूध और घी सब मिलकर नदी सदृश बहने लगा। हारे गये ग्वालाओं की सेना तितर-बितर हो गयी थी। वह सेना हार के मारे दौड़ते समय चमेली फूल का जो मधु है उसे जमीन पर गिराते जाने से जमीन कीचड़ सी हो गयी थी।

विशेषार्थ—हार के मारे दौड़नेवाली ग्वाले की सेना सामने क्या चीज है, उसे देख नहीं पायी थी। डर के मारे भागते समय सामने की वस्तुओं को कैसे देख सकती हैं? अतः हार के साथ दौड़नेवाली ग्वाल की सेना सामने जो चीज पड़ी थी उन सबको लताड़ कर दबाती हुई दौड़ रही थी। उसकी हालत ऐसी हो गयी थी कि जीवन बचाना मुश्किल हो।

[४२७]

(यह समाचार काष्ठांगार राजा के पास भेजा गया था)

पुरवुअणि पूविरि पुन्पुलं पोगि
नरवु अणि तामरै नाट्टकं नोन्दिच्
सुरवु आर्ण सूलकिडंगु आरुएयि लमूदूर
इरैयणि केट्क उय्त्तिट्टन पूसल्

भावार्थ—बुरी तरह से हारे गये ग्वाले लोग, भागते-भागते जहाँ चमेली के फूल बहुत विकसित थे; उस स्थान के जरिये आगे बढ़े। उससे आगेवाली जमीन 'मरुदजमीन' कहलाती थी। वहाँ पर मधु से भरे कमलों के फूल विकसित रहते थे। उन्हें भी लाँघकर सुरा नाम के मत्स्यों से भरी जो खाई थी उसके चारों ओर परकोटा था। उस स्थान का नाम 'मूदूर' था। वहाँ पहुँच कर राजा का जो दर्बान था, उससे अपनी सारी कठिनाइयों को सुनाने लगे।

विशेषार्थ—हारे गये अहीर लोग भागकर मूदूर पहुँचे। राजा के दर्बान से सारी कथा सुनायी।

[४२८]

वोडुमर एयिन रीण्डिक्कोट्टुमिलेरु सूंलद
पडुमणिनिरैयै वारिप्पैं दुगिलरुविनेट्रि
नेडुमलै अत्तं सेन्ट्रारेन्ट्रु नेय् पोदिन्द पित्तै
वडिमलरायपूं सलवलनगर्परप्पिनारे

भावार्थ—हाथ में बाण आदि हथियार लिये हुए अहीर लोग हार के बाद एक साथ मिलकर, सफ़ेद कपड़े पहने हुए व्यक्ति के समान गिरते हुए झरनी से युक्त जंगल के रास्ते से चलते-चलते आ रहे थे। उनके गायों के सींग में घण्टे लगाये हुए थे वे किंकिणीनाद से शब्दायमान न हो रहे थे। ऐसे झुण्ड को ही चोर भगा ले गए थे। इसी बात को बताने (लोगों से) आ रहे थे।

विशेषार्थ—ग्वाला लोग सिर के बालों में घी लगाये हुए थे। घी की सुगन्धी आ रही थी। तथा वे अपने बालों में शादी के समय लगाने वाले फूलों को भी लगाये हुए थे। ये अहीर लोग सारे शहरों में गाय के चोर के भयंकर अत्याचार को फैलाने लगे। उन लोगों का विचार यह था कि राजा के सिवाय अन्य कोई समर्थ व्यक्ति के द्वारा (चोरों से) गायों की रक्षा हो जाय।

[४२९]

कासु इल मामणिच्चामरै कन्नियर्
वीस मामकर क्कुलै विल्लिड
वासवान्कलुनीर्पिडित्तु आंगु अरि
आसनत्तु इरुन्दामडल् मोयंबिनान्

भावार्थ—उस समय बलिष्ट काष्ठांगार अपने सिंहासन पर विराजमान था। वह कैसा था ? उसके दोनों तरफ़ चामरधारिणी नारियाँ चामर डुलाती थीं। राजा के मुकुट और कुण्डल जाज्वल्यमान चमकते थे। हाथ में कमल फूल लिया हुआ था। राजा इस तरह शोभायमान हो रहा था।

[४३०]

कोण्डवालोडुं कोलोडुं कूप्पुपु
सण्डमन्ननैत् तालतोलुदु आयिडै

उण्डु ओर्पूसलेन्ट्रर्कु उरैया येनक्
कोण्डनिरै पोन्ट्रु एन क्कूरिनान्

भावार्थ—हाथ में तलवार एवं दण्ड लिया हुआ द्वारपालक आया और राजा के चरणों में विनती के साथ प्रणाम कर बोलने लगा कि हे सर्वरक्षक प्रभो, जंगल में एक भयंकर कलह हुआ है। यह सुनकर राजा आज्ञा के साथ बोल उठा कि क्या बात हुई है। जल्दी बोल! उसके उत्तर में द्वार पालक का उत्तर यह था कि जंगली शबर लोग गायों के झुंड को बलात्कार के साथ ले गये हैं। ग्वालों से उसे रोकना एकदम कठिन हो गया है।

[४३१]

काष्ठांगार को सेना हार जाती है

सेंकण्पुन्मयित्तोलितरैच्चेंमलं
वेंगण्नोक्कि न्कुप्पाय मिलेच्चनैच्
सेंगण्तीविलियात्तेलित्ता न्केयुल्
अंगण्पोदु पिसेन्दु अडु कूट्रु अनान्

भावार्थ—लाल-लाल आँखें हो, घने रोंमों से भरे चर्म हो, कृश एवं लालिमामय मुख हो, भयंकर दृष्टि हो ऐसा कमीज पहना हुआ जो द्वार-पालक था उसे, आँखों में अग्निज्वाला के समान गुस्से से देखकर मार डालने वाले यमराज सा जो काष्ठांगार राजा था, उसने अपने गुस्से के कारण लालिमा आँखों से भरे से देखा और अपने हाथ में विकसित नयन सदृश जो फूल था उसे गुस्से के मारे मसल कर फेंक दिया था।

[४३२]

कूट्रिनिडिक्कुं कोलै वेलव न्कोवलर्वाय्
माट्रं उणन्दुं मरंकू र्कडल्तानै नोक्कि–
क्काट्रि न्विरैन्दु तोरुमोदक एनक्कावलमन्नन्
एट्रै अरिमानिडि पोल इयंविनाने

भावार्थ—यमराज के समान चिल्लाने वाला एवं वेलायुधधारी राजा काष्ठांगार ने ग्वालाओं की शिकायत सुनो। उसके बाद वीरता में प्रसिद्ध तथा समुद्र के समान विशाल अपनी सेना के दलपति को देखकर सिंह

की गर्जना एवं वज्रपात के समान ऊँची आवाज से कहा कि तुम्हें जल्दी करना यह है कि हवा से भी अधिक वेग से जाकर चोरों से गायों के झुण्ड को छुड़ा ले आना है।

[४३३]

कार्विलै मेगंअन्न कवुलालि कडात्तवेलं
पोर्विनै इवुलि त्तिण्ते पुंनैमयि प्पुरवि कालाल्
वार्विनै मुरसं विम्म वानुला प्पोन्दते पोल
नोर्विलै सुरिशंखार्प्प निलं नेलि परन्द अन्ट्रे

भावार्थ—वर्षाकाल में उत्पन्न होने वाले काले मेघ के समान जो हाथी का मस्तक था, उससे मद जल निकल रहा था ऐसे हाथीगण, लड़ाई के लायक घोड़े बाँधे हुए रथ की पंक्तियाँ गर्दन में भरे सुन्दर रोम वाले घोड़े, वीर-शूर योद्धागण आदि चार तरह की सेनायें लड़ाई के लिये मैदान में तैयार की हुई थीं। भेरी वाद्य का 'धम-धम' शब्द गुंजायमान हो रहा था। शंख वाद्य भी जोर से आवाज करने लगा। इन सबको देखने से ऐसा लगता था कि मानो मेघ गर्जना के साथ घूम रहा हो; जिसके कारण जमीन हिलने लगी। इस तरह बड़े ठाठ-बाठ के साथ लड़ाई के वास्ते सेना जा रही थी।

[४३४]

कालगं पुडैप्प मुन्ननीर क्कडल्किलर्न्दु एलुन्दते पोल
वेलगं मिडैन्द तानै वेंञ्चिचन एयिन तार्क्क
वालवलै अलर वाय्विट्टु इरलैयुं तुडियुं आर्प्प
प्पालवलैन्दुइरवु सेट्रु प्पगलोडु मलैव दोत्तात्

भावार्थ—तीन तरह के पानी से भरे समुद्र वेग से हवा घुसने के कारण पानी उगल रहा हो ऐसे वेलायुधधारी राजा की सेना के साथ भयंकर क्रोध से जगमगाने वाले व्याध लोग जोर से लड़ने लगे। शंखनाद ध्वनि अन्य वाद्य विशेष की आवाज धड़ाधड़ शब्द कर रहे थे। रात-दिन के युद्ध के समान एक तरफ़ घेर कर अत्यन्त वेग के साथ गुस्से से झगड़ने लगे।

[४३५]

विलपलुत्तु उमिलन्द वेय्य वेनुंनैप्पकलि मैन्दर
मलपलुत्तगन्ट्र मार्पत्तिडंकोण्डु वैकै सेन्नाच्
सोलपलुत्तवक्कुं आण्मै सोल्ललां तन्मैत्तन्ट्रिक्
कोलपलु त्तेरियुं वेला कोडुं चिलै कुलै वित्तारे

भावार्थ—व्याधों के झुण्ड, रस्सी खाचने से टेढ़े हुए धनुष से निकला हुआ बाण, राजा के युद्ध सन्नद्ध वीरों के विशाल वक्षस्थल में जा लगा। फौरन युद्ध करने वाले राजा के वीर शूर योद्धागण कविराजों से भी वर्णन करने में असमर्थ होने के कारण युद्ध में एवं हिंसा करने में चतुर थे। अतः उन्होंने अत्यन्त प्रकाशमान वेलायुधधारी व्याधों के धनुषों को अपने तीक्ष्ण तलवारों से तोड़ डाले।

[४३६]

वालपडै अनुंग वेड वंणसिलै वणंग वांगिक्
कोलपुलि इनत्ति न्मोय्त्ता कोंलिनुनै प्पकलितम्माल्
वोट्टिना मैंन्द तंम्मै विलित्तमा कविलन्द तिप्तेर
पाट्टरुं पकडु वीलन्द पनिवरैं कुनिवतोत्ते

भावार्थ—व्याध लोग राजा की पैदल की सेना खतम हो जाने हेतु अपने धनुष को खूब खींचकर बाणों को लगाते हुए बाघों के समूह के समान चारों तरफ़ घेर लिये गये थे। उन बाणों के अग्रभाग अच्छी तरह तपाये हुए होने से तीक्ष्ण थे। ऐसे बाणों से राजा को पैदल सेना खतम कर दी गई थी। उसके साथ-साथ घोड़े को सेना भी मारी गयी। शक्ति सम्पन्न रथ की सेना भी तोड़कर उलट-पलट कर दी गयी थी। बाकी उपयोगी हाथियों की सेना जैसे ओस भरे पहाड़ गिर जाते हों वैसे ही काट-काट कर खतम कर दिये गयी थी।

[४३७]

वेन्ट्रि नां कोडुं इन्ने बेल्लिडै प्पडुत्तु एन्ड्रेण्णि
ओन्ट्रि उलवांगुक एन्न ओलिकड लुडन्ददे पोल्
पोन्तव लकलिरु पायमा पुनैयिर्कुजि पिच्चं
मिन्तवल कोडियोडिट्टु वेर्पडै उडैन्द दन्ट्रे

भावार्थ—राजा की सेना में जो बाकी थे; उन लोगों का विचार यह था कि अभी हम लोग व्याधों को निकालकर जीत लेंगे। इस तरह विचार कर वे लोग एक साथ मिलते हुए झगड़ा करने के वास्ते वीरों के द्वारा प्रोत्साहन दिये और झगड़ने लगे। फिर भी समुद्र का लहर, शब्द करते हुए किनारे को तोड़कर दौड़ने के समान सोने के मुखबंध से अलंकृत हाथी, हवा जैसे दौड़ने वाले घोड़े, मोर के पंख से अलंकृत सफ़ेद छत्र, प्रकाशमान ध्वजा इन सबको छोड़कर काष्ठांगार की सेना पीठ दिखाती हुई भागने लगी। याने काष्ठांगार की सेना बुरी तरह से हार गयी।

[४३८]

पल्लिना लसुकिन्र्दनारि ल्पनिमल र्पयिल प्पेयद
मुल्लयं कण्णिसिन्द क्कालविसै मुरुक्किआयर्
'ओल' एन ओलिप्प ओडिप्पडै उडैन्दिट्टदेन्न
अलललुट्टुलिंगि नेंजि कंट्टियंकार नालन्दान्

भावार्थ—राजा के सैनिक सम्बन्धी बात यह है कि दाँतों से निकाले गये धागे से बाँधे हुए सुन्दर चमेली फूल की पंखुड़ियाँ गिरने के साथ-साथ ग्वालों के पैरों में दौड़ की जोर लगायी गयी थी। जिसके कारण झल-झल नाद करते हुए दौड़ने लगे। अपनी सेना हार गयी। यह बात सुनकर काष्ठांगार अत्यधिक दुख सागर में डूब गया।

विशेषार्थ—हार के कारण राजा के सैनिक एवं ग्वाले लोग दोनों दौड़ने लगे। काष्ठांगार अपनी सेना हार गई, यह समाचार सुनकर बहुत ही दुखित हुआ। वह सोच में पड़ गया कि अब क्या किया जाय ?

[४३९]

वम्बु कोण्डिरुन्द मादर्वनमुलै माले त्तेन्सोर
कोबु कोण्ड अन्न नल्लार कोलुंगयल्तडंगण्पोलुं
अम्बु कोण्डु अरस र्मीण्डार अक्कींडु मरवर्पोनार्
सेम्बु कोण्ड अन्न इंजित्तिरुनगर च्चेलव एन्ट्रार्

भावार्थ—सेना हार जाने से राजा काष्ठांगार दुख में था। उस समय विस्तार से समाचार बतलाने आये हुए लोग राजा से कहने लगे कि चरण पायलों से अलंकृत है। प्रेमोत्पादक स्तनभार मधु झरनेवाले लकड़ी जैसा सीधा है। मनोहर नारियों के 'कथल' मत्स्य के सदृश बड़ी-बड़ी

आँखों के समान बाणों का अग्रभाग था। व्याध लोग ऐसे बाणों को अपनी सेना की पीठ पर लगाने लगे। व्याध लोगों के लगातार बाण वर्षा को सहन न कर अपनी सेना के वीर लोग भाग निकले। बाद में व्याध लोग गायों के झुंड को लेकर चल पड़े।

विशेषार्थ—काष्ठांगार की सेना हारकर भाग गयी। कविवर इसे मनोरंजना के साथ वर्णन करते हैं। वह यह है कि लकड़ी के समान नारियों का सीधा स्तन है। यह उपमा बाण के पिछले भाग के साथ है। नारियों की आँखें बाण के अग्रभाग के समान है। इसका मतलब यह है कि नारियों के स्तन और आँखें उपमान रहे। बाण उपमेय रहा।

[४४०]

मन्निरै पेयत्तुं मैन्दर्वन्दन कोंलक वालकण
पोन्निलै सुडरुं मेनि प्पूंकोडि अनैय पोर्पिन
कन्नियै त्तरुंदु एन्ट्रु कडिमुरसु इयंबक्कोट्टि
नन्नग वीयितोरुं नन्दको नरैवित्ताने

भावार्थ—गायों का अधिपति नन्दगोप ढिंढोरा पिटवाकर यह समाचार प्रकट कराया था कि जो महान वीर पुरुष व्याधों को हराकर गायों के झुण्ड को छुड़ा लायेगा, उसे धनुष के समान आँखें हो; सोने के समान जाज्वलयमान शरीर हो; फूलों की लता के समान सौन्दर्य हो ऐसी मेरी कन्या को भेंट के रूप में दूँगा। हर एक वीर पुरुष को चाहिये कि अपना प्रयत्न कर देखे।

[४४१]

जीवन्धर कुमार लड़ाई के लिये तैयार हुए

वेतिङ्गं तैच्चापं कान्ट्र वेंनुनै प्पकलिमूलिक
उदिरन्दतु सेनै ईट्टं कूट्रोडु पोरुदु कोल्लुं
करुन्तडं कण्णि अन्ट्रि क्काय मारागएगुं
अरुंपेर लवलुमाग एन्ट्राडव र्तोलुदुविट्टार

भावार्थ—वीर लोगों ने व्याधों से लड़कर जीतने का जो साहस था इसे छोड़ दिया था। क्योंकि बाँस से बने दोनों तरफ़ रस्सी बाँधकर खींचे गये टेढ़े धनुष में अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों के सामने राजा की सेना भी टिक नहीं सकी। अर्थात् भाग खड़ी हुई। ऐसी हालत में यमराज के

समान जो व्याध हैं उनसे लड़कर जीतनेवाली, काली और लम्बी आँखों वाली गोविन्दा देवी ही है। क्योंकि उसको पाने के मोह के कारण कोई महान् वीर लड़कर जीत सकता है। यह काम सभी से होनेवाला नहीं है। अलावा इसके आकाश के रास्ते से आने-जानेवाली शक्ति सम्पन्न देवकन्या भी क्यों न हो! तो भी उसे प्राप्त करने के लिये व्याधों से लड़कर जीतना हम लोगों से सम्भव नहीं है। इस तरह सोचकर वीर लोगों ने व्याधों से लड़ने का विचार ही छोड़ दिया।

[४४२]

कार्विरिमिन् अनार्पोल कामुक नॅजिनोडुं
तेर्परिकडावित्तेन्दार्जीवकनरुलि पोंकित्
तार्पोलि पुरविवट्ट तान्पुकक् काट्टुकिन्ट्रकुं
अर्परिवुट्रदु एल्लां ओरुमगन उणर्त्तिनाने

भावार्थ—शहद टपकनेवाली माला पहने हुए जीवन्धर कुमार ने काले मेघ के अन्दर प्रकाशमान दामिनी के समान, सुन्दर लड़कियों पर दौड़नेवाले कामुक पुरुषों के मन के समान, वेग से दौड़ने वाले रथ को उसी रास्ते पर चलाया। उसके बाद गर्दन पे रोम से शोभायमान घोड़ों को उसी की गोलाकार में चलना सिखाया। उस समय उस जीवन्धर कुमार को, उसी की कृपा से जाकर जानकारी किये समाचार वाहक एक व्यक्ति ने आकर शहर के लोगों के सारे दुखों को स्पष्टता के साथ कह सुनाया।

[४४३]

तन्पालमनैयाल् अयलान्तलै क्कण्डु पिन्नुं
इनपालडिसिर्कुं इवर्किन्ट्र कैप्पेडि पोलाम्
नन्पालपसुवे तुरन्दा पॅण्डि पालर्पार्पार
एन्वारै ओंबेन एनिन्यान वनाग एन्ट्रान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार का विचार यह था कि सच्चारित्र, गायें, त्यागीगण, महिलायें, बच्चों, ब्राह्मण आदि लोगों को हम आपत्ति से बचाये हैं। अपने पास रहनेवाली वीर माता दूसरों के पास देखने के बाद भी मीठे दूध के चावल को प्रेम से खानेवाला नपुंसक काष्ठांगार के समान हो जाऊँगा। इसलिये अपने वीरत्व को दिखाने की जरूरत है। सोचने का समय नहीं है। जल्दी से काम करके दिखाना है।

[४४४]

पोर्पण अमैत्तु नुगंपूट्टि प्पुरवि पाण्णत्
तेर्प्पण अमैत्तु च्चिलै कोलि प्पगलि आय्न्दु
काक्कोण्मु मिन्नि न्निमिन्र्दान् कलिमान्कुलंविन्
पार्क्कण्णिलुन्द दुगला र्पकल् माय्न्ददु अन्ट्रे

भावार्थ—वह जीवन्धर कुमार व्याधों के साथ लड़ने को तैयार हो गया था। घोड़ों को रथ में बँधवा कर लड़ाई के लिये रथ को तैयार कर लिया था। धनुष को टेढ़ा कर उसमें बाणों को लगाते हुए उद्यत हो गया था। उस समय दृश्य ऐसा मालूम पड़ने लगा कि काले मेघ के भीतर विद्युच्चमक रहा हो। उस समय रथ में वेग से दौड़नेवाले घोड़ों के पैर से निकला हुआ धूल सूर्य को छिपा दिया था। जिससे अन्धेरा दीखने लगा।

[४४५]

इलुदुन्ट्रु वाल कण्णिलैयारिलैया र्कण्नोक्किन्
पलुदिन्ट्रि मूलगुं पकलित्तोलिल वल्ल कालै
मुलुदोन्ट्रु तिण्तेमुखं सेय्दवन्तन्नोडु एकुं
पोलुदन्ट्रु पोदुं एनप्पुलमोलिन्दान्मोलिन्दान्

भावार्थ—पहले चिड़िया की आवाज सुनकर जो आदमो भविष्यवाणी कहा था वही निमित्तक अब उन व्याधों से कहने लगा कि घो लगाये गये हथियार के समान नयनधारिणी नारियाँ अपने प्रेमो को जैसे देखती हैं वैसे ही बराबर लक्ष्य पर बाणों को चलाने वाले एवं यौवन से परिपूर्ण, चाहे किसी भी दिशा हो सभी जगह अपने रथों को वेग से चला कर लड़ने में समर्थ इस महापुरुष के साथ लड़ना उचित नहीं है। यहाँ से चले जाना ही युक्तियुक्त है।

[४४६]

मोट्टुं मुदुनी र्मुदलैक्कु वलियदु उण्डेल्
काट्टुल् नमक्कु वलियारै युंकाण्डुं नां एन्ट्रु
एट्टै प्पसियिन् इरै कव्विय नागमे पोल्
वेट्टु अन्निरैयै विडलिन्ट्रि विरैन्दतु अन्ट्रे

भावार्थ—व्याध लोग कहने लगे कि जैसे गहरे पानी में मकर से बढ़कर कोई जीव शक्तिशाली हो सकता है क्या ? नहीं। वैसे ही इस जंगल में अपने लोगों से बढ़कर कोई रह सकता है ? ऐसा कोई है तो वह कौन है ? उसे भी देख लें ! उदाहरण के द्वारा समझाते हैं कि भूख के मारे थका हुआ साँप, पकड़े गये अपने खाने की चीज को छोड़ता नहीं उसी के समान व्याध लोग पकड़े गये गायों के झुंड का बिना छोड़े लड़ने के वास्ते आगे बढ़ने लगे।

[४४७]

निमित्तक व्याधों को रोकता है

कडलपडै अनुंग वेन्ट्र कानवरेन्नुं कूट्रत्तु
इडैप्पडादु ओडि प्पोमिन उय्य एन्ट्रु इरलै वाय्वैत्तु
एडुत्तन विलियुं संगु वीलैयुं परैयुं कोडुं
कलत्तिडै मुलंगक वकारुं कडलुमोत्तेलुन्द दन्ट्रे

भावार्थ—काष्ठांगार राजा के समुद्र समान जो सेना थी, उसे व्याध-रूपी यमराजाओं ने (हम लोगों ने) सर्व नाश कर भगा दिया था। इसलिये इन लोगों की पकड़ में मत आइयेगा; भाग जाइयेगा। इस तरह व्याध लोगों ने अपने वाद्य विशेषों द्वारा जोर-जोर से चिल्ला कर घोषणा की। इधर उस घोषणा के विरोध में जीवन्धर कुमार की सेना शंख आदि वाद्यविशेषों द्वारा घोषित कर प्रत्युत्तर देने लगी। इस तरह दोनों सेनायें मेघ और समुद्र के समान आपस में झगड़ने लगीं।

[४४८]

व्याध लोग हार कर भागने लगे

कैविसै मुरुक्कि वीसुं कोल्लियुं करंगु एय् प्यच्
सेय्कलल् कुरुसिल् तिण्ते विसैयोडु तिसैकल् एंल्लां
ऐयेन वलैप्प वोर रातंनर् अवरुं आर्त्तार्
मोय् अम र्नाल् सेय्दु ऐयन्मुदलिवलैयाडिनाने

भावार्थ—चक्रव्यूह के समान हाथ से घुमाने वाली आग की लकड़ी, पतंग के समान वीरता से भरा हुआ जीवन्धर कुमार का प्रकाशमान रथ, चारों तरफ़ घूमकर व्याध सेना को घेरने लगा। कुमार के वीर लोग जोत

वे नाद से आवाज उठाने लगे। व्याध लोग भी आक्रोश करने लगे। कुमार आगे होने वाले घोर युद्ध को तैयारी में पहले दिन बच्चों के खेल सरीखा खेल खेलता था। अर्थात् यह लड़ाई वीर कुमार के सामने खेल सरीखा दिखाई देती थी। अनुपम वीरता का प्रदर्शन था।

[४४९]

आलिया नूदिप्पुल्लिनं सिरगु ओलियिन्नागं
मालगिप्पै अविन्दवण्णं वल्लल् तेर्मुलक्किनाङुं
सूलदुगल मयक्कत्तानुं पुलिञरु लसुरुंगिच्चेक्कै
क्कोलिपो लकुरैन्दु नेंञिन् अरंएन मरमुं विट्टार

भावार्थ—विष्णु (कृष्ण) का वाहन जो गरुड़ है, उसकी छाया से जैसे सर्प अपनी फणा को समेट कर छिप जाता है; वैसे ही जीवन्धर कुमार का जो रथ था उसके दौड़ की आवाज से और चारों तरफ़ फैले हुए धूल से व्याधों का उत्साह घट गया। पिंजरे में डाले गये मुर्गे के समान कार्य प्रणाली कम हो गयी। व्याधों के धर्म रहित दिल के समान वीर भी हो गया था।

[४५०]

पुल्लोन्ट्रे सोलु मेन्ट्रु इप्पुन्तलै वेडन्पोय्त्तान्
वेल्लं तेर वलैन्द नम्मै वेन्ट्रींगु अरिदु वेयना
उललंपोल् पोदुं नामोरेडुपेडुय्य एन्ना
वल्ललमेलप्पुमारि आर्पोडु सितरिनारे

भावार्थ—चिड़िया यह बताती है कि "एक ही रथ आयेगा" इस तरह छोटे सिरवाला निमित्तक झूठा ज्योतिष बोला था। लेकिन बाढ़ के समान अनेकों रथ आकर अपन लोगों को घेर लिए थे। इसलिये यहाँ अपन लोगों को जीत होना कठिन-सा दीख रहा है। अब हम सब लोगों को मिलकर एक निर्णय पर आना है। इसमें भेदभाव रखने की कोई जरूरत नहीं है अपन को ऐसा करना है कि सब मिलकर लड़ते-लड़ते यहाँ से निकल जायेंगे। इस विचार के साथ सभी व्याध लोग एक होकर चिल्लाहट के साथ जीवन्धर कुमार के ऊपर बाणों को वर्षा करने लगे। उस समय घमासान युद्ध हो रहा था।

[४५१]

मालवरै तोडुत्तु वीलंद मणिनिरमारि तन्नैक्
कालिरै त्तेलुन्दु पार क्कल्लेन प्पुडैत्तते पोल
मेलनिरै त्तलुन्द वेडर वेंनुनै अबुमारि
कोलनिरै त्तुमिलुं विललाल् कोमगन् विलक्किनाने

भावार्थ—वोर जीवन्धर कुमार ने बड़े-बड़े पहाड़ों में भर कर नीचे गिरने वाली सफेद वर्षा को हवा के वेग से चारों तरफ कल-कल नाद के द्वारा छिन्न-भिन्न करने के समान अपने ऊपर (कुमार के ऊपर) व्याध लोगों के द्वारा लगातार छोड़े गये बाण वर्षा को अपने धनुष एवं बाणों द्वारा रोक डाला ।

[४५२]

कानवरिरिय विलवाय् क्कडुं कणै तोडुत्तलोडुं
आनिरै पेयर्न्द आयरार्त्तन रणिसेय् तिण तोल्
नानोन्ट्रु मुडंगि ट्रोंट्रु निमिर्न्दंदु सरं पेय् मारि
पोलनिन्ट्र एन्व मट्र प्पोरु वरु सिलैयिनार्कें क

भावार्थ—जीवन्धर कुमार, व्याध लोग डर के मारे भाग जाय, इस तरह धनुष में बाणों को चढ़ाकर मेघवृष्टि के समान बाण वर्षा करने लगे । व्याध लोग हार कर भागने लगे । गायों के झुंड वापस आ गये । ग्वाले लोग हर्ष के मारे कोलाहल करने लगे । कुमार के भुजाओं में दक्षिण भुजा टेढ़ी हुई । दूसरा वाम भुजा लम्बा हुआ । इसका मतलब यह है कि धनुष में बाणों को चढ़ाकर चलाने का वर्णन है ।

[४५३]

एन्नूरुनूरु तलैयिट्ट आरायिरवर्
मेयन्नूरु नूरु नुति वेंगणै तूविवेडर्
कैन्नूरु विललुं कणैयुं अरुत्तान्कणत्तिन्
मैन्नूरु वेलकल् मडवा र्मनंपोल मायन्दार्

भावार्थ—चतुर जीवन्धर कुमार ने छप्पन हजार व्याधों के शरीरों को चूर-चूर करने योग्य तीक्ष्ण बाणों को वर्षा कर व्याधों के हाथों में

रहे सैकड़ों धनुष एवं बाणों को काट डाला। उस समय काजल लगाये गये एवं वेलायुध के समान सुन्दर नयनों वाली वेश्याओं के मन जैसा चंचल हो, वैसे व्याध लोग एक मिनट के अन्दर अपने स्थान से भाग गये।

[४५४]

वाल् वायुमिन्ट्रि वडिवेंगणैवायुं इन्ट्रिक्
कोल्वाय् मदियं नेडियान्विडुत्तांगु मैन्दन्
तोल्वांच्चिलैयिन् ओलियाल् तोरुमीट्टु मोलवान्
नाल्वाय निरैन्द नगैवेण्मदि सेलवदु ओत्तान्

भावार्थ—विष्णु के द्वारा राहु के मुँह से निकाले गये चन्द्रमा के समान भूत, धीर-वीर-शूर जीवन्धर कुमार पर न हथियार से किसी तरह का चिह्न लगा और न भयंकर बाणों से घाव लगा। ऐसे महान् व्यक्ति कुमार ने भुज बल प्रभाव के साथ धनुष की नाद से गायों के झुंड को छुड़ाया। वही महापुरुष दिन-प्रतिदिन कला से परिपूर्ण-पूर्ण चन्द्र की तरह शोभायमान होते थे।

विशेषार्थ—विष्णु ने चन्द्रमा को राहु के मुँह से छुड़ाया था। इस तरह पौराणिक कथा है। कवि परम्परा यह है कि काव्य के वर्णन में पौराणिक कथा को उपयोग करने में कोई दोष नहीं है। इस कथा के साथ सैद्धान्तिक मत को नहीं जोड़ना चाहिए। कवि परंपरा अलग है। सैद्धान्तिक बात अलग है। दोनों भिन्न-भिन्न है।

[४५५]

आलट्रमिन्ट्रि अलर्तारवन् तोलरोडुं
केलुट्र कोव न्निरै मीट्टनन् एन्ट्रु कूर
वालुट्रपुण्णुल् वडिवेलेरिन्द इट्रर्द पोल
नालुट्रुलन्दा न्वेगुण्डान्नगरार्त्त दन्ट्रे

भावार्थ—जीवन्धर कुमार, दोनों तरफ नुकसान न हो ऐसी चतुरता के साथ, व्याधों से बलात् ले गये गायों के झुंड को अपने दोस्तों के साथ जाकर छुड़ा लाया। अन्तिम समय की परिधि में खड़ा हुआ काष्ठांगार यह समाचार सुनकर इतना क्रोधित हुआ कि तलवार से काटे गये घाव

में, वेलायुध लग जाने के साथ वह टूट कर उसी में रह जाय, ऐसी हालत में कैसा दुख होगा ? वैसे तड़पता रहा। नगर के सारे लोग आनन्दसागर में डूब कर उल्लास के साथ खुशी मना रहे थे।

[४५६]

इरवि तोय् कोडि कोलमाडत्तु इडुपुगै तवलच्चुण्णं
विरवि प्पून्दामं नाट्टि विरैतेलित्तारं तांगि
अरवुय र्कोडियिना न्तन् अगन्पडै अनुगवेन्द्र
पुरवित्ते र्क्कलै अन्न कालैयै प्पोलिक एन्ट्रार्

भावार्थ—जिस महल की खिड़की में सूर्य का प्रकाश पड़ता था; ध्वजायें खूब भरी हुई थीं। वहाँ रहने वाली नारियाँ सुगन्ध धुआँ, चूर्ण की धुआँ इनसे मिश्रित फूलमालायें लटकाती थीं। सुगन्ध चूर्णों को सब जगह डालती थीं। मोतियों की मालायें पहनी हुई थीं। ऐसी वे नारियाँ रथ पर जाते हुए जीवन्धर कुमार को देखकर 'चिरंजीव' इस तरह के मंगल वचनों को कहती हुई भगवान से कामनायें करती थीं। वह जीवन्धर कुमार कैसा था ? सर्प ध्वजावाले दुर्योधन की भारी सेना को ध्वंश करने निमित्त घोड़ों से शोभायमान रथ पर जाते हुए अर्जुन के समान था।

[४५७]

इन् अमिर्दु अनैय सेव्वप्प् इलंकिलि मललै अंचोल्
पोन् अविर्सुणंगु पूत्त पोंगु इल मुलयिना तं
मिन् इवं र्नुसुप्पु नोव विडलैयै क्काणओडि
अन्नमुं मयिलुपोल अणिनक र्वीथि कोण्डार

भावार्थ—मोठी एवं अमृत भरे लाल-लाल मुँहवाली, तोते की तरह मधुर तोतली बोली बोलने वाली, सोने के कलश के समान शोभायमान स्तन वाली सौदामिनी के समान जो कमर है उसको कष्ट देनेवाली उस नगर की नारियाँ जीवन्धर कुमार को देखने के लिये हंस और मोर के समान दौड़कर आयीं और वहाँ की राजवीथी में खड़ी हो गयीं।

[४५८]

सिल् अरिच्चिलम्बिन्वलवा र्सिरुपरै करंगच्चेंबोन्
अल्गुलते रणिन्दु कोम्मै मुलैयेनुं पुरविपूट्टि

नललेलि लनेडुंगण् अंबु आय् पुरुवविल् उरुवक्कोलिच्
सेलवप्पोर्क्कामन्सेनै सेम्मलमे लेलुन्दन्ट्रे

भावार्थ—कुछ 'परले' नाम के कायिन से भरे पायलरूपी 'परै' नाम का वाद्यविशेष शब्दायमान होता था। कैसा था वह पायल ? छोटे नस से अच्छी तरह बाँधा हुआ था। नारियों का जो मेखलाभरण है वह मर्म-स्थान को अलंकृत करता था। मन्मथ की सेनारूपी वे नारियाँ जीवन्धर कुमार के साथ युद्ध करने निकल पड़ी थीं। कैसी थीं वे नारियाँ ? बड़े-बड़े अपने स्तनों को घोड़े बना लिया था। (अभ्यन्तर सुन्दर एवं लम्बी जो आँखें हैं उन्हें बाण बना लिया था)। अपनी भौं को टेढ़ा धनुष बना लिया था। हमेशा धन सम्पत्ति के साथ खेलने वाली थीं।

विशेषार्थ—यहाँ नारियों का जो वर्णन है। वह वर्णन कुलवधू का नहीं है। ये नारियाँ जीवन्धर कुमार को देखकर मोहित होती थीं। परन्तु कुमार इन्हें आँख उठाकर भी देखते नहीं थे।

[४५९]

नूलपोर अरियनुण्मै नुसुप्पिनै ओसिय वोंगिक
कालपरित्तिरुन्द वेंगण् कदिरमुलै कच्चिन्वीक्किक्
कोलपोरच्चिवन्द कोल मणिविरलकोदै तांगि
मेलवरलकरुदि निन्ट्रार्विण्णव र्मंगलिरोत्तार्

भावार्थ—धागे की भी उपमा न दे सकें ऐसी पतली कमरवाली, निचला भाग बड़ा होने के साथ-साथ आकांक्षा को बढ़ाने वाली, काले नयनवाली, प्रकाशमान स्तन भारों को जाकेट से अच्छी तरह बाँधने वाली, वीणा के नसों को बार-बार बजाने से लाल-लाल एवं सुन्दर उँगलियों से सिर के बालों को उठाने वाली और जीवन्धर कुमार के आगमन की प्रतीक्षा करने वाली जो नारियाँ थीं वे सारी की सारी नारियाँ देव स्त्रियों के समान थीं।

[४६०]

आगमुमिडैयुं अः क अडिपरन्देलुन्दुवींगिप्
मोगमुं पोरुलं ईन्ट्र पुणर्मुलैत्तडंगलतोन्ट्रप्
मागमे मरैय निन्ट्र पडैमलर्त्तडंगण्नललार्
नागं विट्टेलुन्दु पोन्द नागर्तंमगलिरोत्तार्

भावार्थ—वहाँ की कन्यायें नागलोक (भवणलोक) को छोड़कर बाहर आयी हुई नाग कन्याओं के समान दोखती थीं। कैसी थीं वहाँ की कन्यायें! उनके शरीर और कमर कृश थे। निचला भाग मोटा था। प्रेम-वासना के साथ सुख देने वाले स्तन कलश बाहर दिखाई देते थे। शरीर का अधोभाग पहनने के कपड़े से अलंकृत था। कमल नयनी वे कन्यायें कामदेव की सेना ही ऐसी शोभित थीं।

[४६१]

वालरं तुडैत्तवैवेलिरण्डुडन्मैन्दवे पोल्
आलवल वकोलिय नीण्ड अणिमलर्त्त डंगणेललां
नील्सुडर्नेरियै नोक्कुं निरैयितलनेरु ज्रिप्पूप्वोल्
कार्ले तन्तेसेंलवीति कलन्दुडन्तोक्क अन्ट्रे

भावार्थ—तलवार को तोखा करनेवाले से तीक्ष्ण किया हुआ दो वेलायुध आपस में झगड़ा करने के समान, पुरुषों के आगमन को हटाकर (जीवन्धर कुमार को छोड़कर बाको लोगों को) लम्बी और सुन्दर कमल जैसी नारियों की बड़ो-बड़ो आँखें, सूर्य गमन के मार्ग को देखनेवाले फूलों के समान जीवन्धर कुमार को चलनेवाले वीथियों में जाकर (आँखें) मिल गयीं।

विशेषार्थ—वहाँ की सुन्दर नारियाँ जोवक को छोड़कर अन्य लोगों को देखना नहीं चाहती थीं। उनको कमल जैसी लम्बी आँखें रथ पर चलनेवाले जोवन्धर कुमार को देखती रहती थीं।

[४६२]

वडकमुं तुगिलुं तोडुं मालैयुं मणियुं मुत्तुं
कडगमु कुलैयुंपूणुं कदिरोलि कलन्दु मूदूर
इडवकै एल्लै एल्लां मिन्निरै त्तिट्टदे पोल्
पडरवु अलगुलारै प्पयन्दन माडमेललां

भावार्थ—ऊपर का दुपट्टा, पीताम्बर, कुण्डल, माला, माणिक्य, मोतियों से जटित हाथ की चूड़ियाँ, कान के आभरण आदि सभी आभूषणों की कान्ति, चन्द्रमा का प्रकाश और सूर्य का प्रकाश दोनों मिलकर प्रकाशमान हो रहा था। अत्यन्त पुरातन राजमापुर सभी दिशाओं में

सौदामिनियों को क्रम से रखी गई हों ऐसा जाज्वलयमान होता था। हर घर में सर्प के फणा के समान मर्मस्थान से अलंकृत नारियाँ शोभायमान हो रही थीं।

[४६३]

मादुगुं मयिलिन्नलला मंगल मरपुकूरिय्
पोदक नंबिएन्बार् भूमियुं पुणर्ग एन्बार्
तोदकं आग एंगुं सुण्णं मेलसोरिन्दु तण्णेन्
तादुगु पिणैयल वीसिच् सान्दु कोण्डेरिन्दु निर्पार

भावार्थ—प्रेम बरसानेवाली मोर के समान जो वेश्यायें हैं वे कुमार के लिये मंगल कामना वचन यों बोलेंगी। हे सौन्दर्य के प्रतिबिम्ब, आप का स्वागत हो। यह क्रम पद्धति है। और आगे यों कहेंगी कि भूदेवी आपसे प्रणयन करें। शरीर दुखित होने के योग्य सुगन्ध चूर्णों को कुमार के ऊपर डालेंगी। ठंडे एवं मकरन्द गिराने वाली फूलमाला को उसपर फेंकेगी। चन्दन को हाथ में लेकर उसे भी कुमार के ऊपर डालेंगी।

[४६४]

कोडैयुलुं ओरुवन्कोल्लुं कूट्रिनुं कोडिय वाट्पोर्प
पडैयुलुं ओरुवनेन्ट्रु पयंकेलु पनुव लनुण्णूल
नडैवला र्सोल्लिट्टेल्लां नंबि जीवकन्कणकण्डां
तोडैयलं कोदै एन्ट्रु सोललुपु तोलुदु निर्पार

भावार्थ—बाँधो गयो सुन्दर माला को पहननेवाले हे कुमार! दान करने में एक हो व्यक्ति दिखाई देता है। यमराज से कठिन एवं मारने योग्य तलवार के युद्ध में एक हो व्यक्ति सामने आयेगा। इस तरह पुरातन नीतिमार्ग का जो गहरा ग्रन्थराज है, उसे खोज करनेवाले लोग जो कुछ कह रखे हैं वे सबके सब हे कुमार! आपके पास देखते हैं। इस तरह कहकर कुछ महिलायें नमस्कार करती हुई खड़ी हो जायेंगी।

[४६५]

सेंमलैप्पयन्द नट्राय् सेय् तवं उडैयल एन्बार्
एम्मलै त्तवं सेय्दाल् कोल एयदुवं यामुं एन्बार्
अम्मुलै अमुदं अन्नारगंपुलन्र्दमन्र्दु नोक्किक्
तंउरु विलुम वेन्नोय् तं तुगैक्कुरैत्तु निर्पार्

भावार्थ—कुछ नारियाँ कहने लगीं कि ऐसे महापुरुष को किस माता ने जन्म दिया है ? उसने अवश्य तप किया है। आगे और कुछ कहती हैं कि उसने किस पहाड़ में तप किया है; चलो ! हम भी वहाँ जाकर तप करेंगी। सुन्दर स्तन भारवाली अमृत के समान कुछ स्त्रियाँ उस कुमार को देखते रहने से कण्ठ सूख गया है और देखने से कामवेदना होती है। इस बात को अपनी सखी के पास कहकर खड़ी हो गयीं।

[४६६]

सिनवु नर्क्कडन्द सेलवन् सेंमलरगलं नालैक्
कनविनिलरुलि वन्दु काट्टियां काण एन्बार्
मनविरिरलगुलातं मनत्तोडु मयंगि ओन्ट्रं
विनवुनर् इन्ट्रि निन्ट्रु वेण्डुव कूरुवारुं

भावार्थ—शत्रुओं को जीते हुए सेल्व कुमार ! लाल-लाल कमल से अलंकृत अपने छाती को कृपा कर मेरे स्वप्न में आकर दिखाओ इस तरह कुछ नारियाँ कहती थीं। प्रकाशमान मेखलाभरण से अलंकृत मर्मस्थानवाली कुछ महिलायें मन की बातों को सुननेवालों के बिना खड़े हुए स्थान से ही जीवक से अपनी इच्छा को कहती रहती थीं।

[४६७]

विण्णगत्तुलकोल् मट्रु इव् वेन्ट्रिवेलकुरु सिलोप्पार्
मण्णगत्तिवर्गलोव्वा र्मलकलिरु अनैय तोन्ट्रल्
पण्णगत्तुनैय सोल्लार् नल्नलं परुगवेण्डि
अण्णलैत्तवत्तिन्तन्दार् यार्कोलो ललिय रेन्बार्

भावार्थ—देवलोक में रहनेवाले विजय वेलायुध के समान हैं। सारे भूलोक वाले छोटा हाथी जैसा जो कुमार हैं उसके सदृश हैं। ऐसा नहीं है इसे गाने के साथ मीठी बोली बोलने वाली महिलायें जीवन्धर कुमार की बढ़िया जो सुन्दरता है उसे देखकर अनुभव करने के साथ कहती हैं कि इस उत्तम पुरुष को तप महिमा के साथ जिसने जन्म दिया है वे करुणावाले हैं।

[४६८]

वट्टुडै प्पोलिन्द तानै वलललै वकण्डपोलदे
पट्टुडै सूलन्द कासु पंजिमेलअडियैच्चूल

अट्टर क्कनैय सेव्वाय् अणिनलं करुकि क्कामक्
कण्तलल एरिप्पनिन्ट्रा कॅंवलै कललनिन्ट्रार्

भावार्थ—घुटने तक कपड़ा पहनने से सुन्दर दीखनेवाला जो दानी जीवन्धर कुमार है उसको देखते ही, पीताम्बर पहना हुआ मेखला पतले चरणों के साथ सम्बन्ध करने लगा। तपाये गये लाक्षा के समान लाल-लाल कुमार का मुँह था, उसकी शोभा लाभार्थ सूख रहा था। इस तरह कामवेदना से दुखित महिलायें हाथ की चूड़ियाँ निकल जाने के साथ खड़ी थीं।

[४६९]

वार्सेलच्चेल्ल विम्मुं वनमुलै मगलिर्नोक्कि
एर् सेलच्चेल्ल एत्तित्तोलुदु तोल् तूक्क इप्पाल
पार् सेलच्चेल्ल च्चिन्दि प्पैन्दोडि सोरिन्द नम्बन्
तेर सेलच्चेल्लुं वीति पीर्सेल च्चेल्लुं अन्ट्रे

भावार्थ—चोली, ऊपर चढ़ती थी। उसे निकाल कर बाहर आनेवाले स्तन कलशों से सम्पन्न महिलायें जीवन्धर कुमार को देखकर अपनी सुन्दरता घिसते-घिसते हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगीं। कुमार के जाने के बाद हाथों को नीचे डाल दिये। जिसके कारण भुजों पर रहनेवाला दुपट्टा धीरे-धीरे नीचे गिरने लगा। जीवक का रथ जिस मार्ग पर चलता था उस वीथियों में रहनेवाली नारियों के शरीर में एक तरह की खुजली होने लगी।

[४७०]

वालमुगत्तु अलन्र्द पोलुं मलै मलर्त्तंडंकण् कोट्टित्
तोल् मुदल्पसलैत्तीर त्तोन्ट्लै प्परु गुवार् पोल्
नाण्मुद ल्पासं तट्प नडुंगिना र्निर्प निल्लान्
कोलमुग प्पुलियोडोप्पान्कोलुनिति प्पुरिसै पुक्कान्

भावार्थ—प्रकाशमान मुख में विकसित फूल के समान ठण्डे एवं बड़े-बड़े आँखोंवाली नारियाँ तृष्णा के साथ कुमार को देखने लगीं। देखते समय उन्हें लज्जा आती थी। इसलिये देखना बन्द कर दिया था। वे डर के मारे खड़ी थीं। कुमार खड़े नहीं रहे। फिर भी उनके चले जाना जैसे

बाघ को देखकर डर के मारे मरण हो जाता है वैसे ही उनके कारण मरण होने की सम्भावना थी। उसके बाद कुमार ने धन सम्पत्ति के महत्त्व से शोभायमान प्रासाद के परकोट के अन्दर प्रवेश किया।

[४७१]

पोन्नुगं पुरवि पूट्टुविट्टु उडन्पंत्ति पुक्क
मन्नुग वेन्ट्रि एन्ट्रु मणिवललं निरैय वाक्कि
इन्मधुप्पलियुं पूवुं सान्तमुं विलक्कुं एन्दि
मिन्नगु सॅंपोन्कोट्टि लिवलंगुतेर् पुक्कुदन्ट्रे

भावार्थ—रथ में जो घोड़े बँधे हुए थे वे खोल दिये गये थे और फौरन उसके बाँधने के स्थान पर ले जाकर बाँधे गये थे। जीत की घोषणा करने के साथ-साथ माणिक्क कटोरों में मद्य भरकर लायी गयी थी। फिर मद्यरूपी बलि, फूल, चन्दन, दीपक इन्हें लेकर लोग रथ के आगे-आगे चलते थे और पीछे-पीछे ले जाकर उसके स्थान पर खड़ा किया गया था।

[४७२]

इट्टउत्तरियं मेल्लेन् इडैसुवल् वरुत्त ओलिक
अट्ट मंगलमुं एन्दि आयिरत्तु एण्मर् ईण्डिप्
पट्टमुं कुलैयुं मिन्न प्पलकलन् ओलिप्प च्चूलन्दु
मट्टविल कोदैमात मैन्दनै क्कोण्डपुक्कार्

भावार्थ—मधु गिरनेवाली माला पहनी हुई एक हजार आठ (१००८) महिलायें मिलकर आठ तरह के मंगल वस्तुओं को हाथ में लेकर आयी थीं। वे पीताम्बर पहनी हुई थीं। बालों को खोल रखती थीं। और धीरे-धीरे चलती थीं। उस समय उनके कर्णाभूषण प्रकाशमान चमकते थे। कई आभरणों की आवाज होती थी। ये नारियाँ सामने आकर कुमार का स्वागत कर अन्दर ले रही थीं।

[४७३]

नाय् उयर्मिक्क तन्दै वन्देति क्कोण्डु पुक्कुक्
काय् कदिर्मणि सेय् वेलवेल् कालैयै क्कावलोंवि

आय् कदिरुमिलुं पैंपूण्, आयिर च्चेंगणान्तन्
सेय् उयरुलगं एय्दि अन्नतोर् सेलव् मुट्टार

भावार्थ—प्रकाशमान रत्नों से शोभित जीवन्धर कुमार को माता और पिता दोनों सामने आकर ले गये थे। आरती उतार कर दृष्टि दोष को निकाला। वे दोनों जाज्वलयमान नूतन वस्त्राभरणों से अलंकृत लाल-लाल सहस्राक्ष जो इन्द्र है उसके देवलोक को पा लिया हो ऐसे अमूल्य सम्पत्ति स्वरूप कुमार को प्राप्त कर शोभित हुए।

[४७४]

नकैमति एलिलै वाट्टुं तामरै पूविनंगण
पुगैनुति अलल वालकण् पोन्ननाल् पुल्ल नोण्ड
वकैमलि वरैसेय् मार्पिन् वल्ललैक्कण्डु वण्तार्त्
तोकै मलि तोरुवै आलुं नोन्ट्रल् मट्रिन्न कूरुं

भावार्थ—लक्ष्मी कैसी है? महिमा सम्पन्न चन्द्रमा को कष्ट देनेवाली कमल फूल पर विराजमान है और अत्यन्त तोक्ष्ण सिरा से प्रकाशमान तलवार के समान सुन्दर आँखों से शोभित है। ऐसी वह कमलालया लक्ष्मी आकर कुमार के वक्षस्थल को आलिंगन करती है। विशाल शोभा सम्पन्न एवं पर्वत के समान बहुत बड़े वक्षस्थल से शोभित कुमार को देखकर, सुन्दर माला से अलंकृत और अत्यधिक गोधन से परिपूर्ण नन्दगोप नाम का श्रेष्ठी आकर आगे के वृत्तान्त को कहने लगा।

[४७५]

केट्टिदु मरक्क नंबि केलमुद ल्केडु सूलन्द
नाट्टिरै विसैयै एन्नुं नारु पूंकोबंनालै
वेट्टिरै प्यारमेल्लां कट्टियंकारन्तन्नैप्
पूट्टिमट्रवन्तनाले पोरिमुदलडक्कंप्पट्टान्

भावार्थ—प्यारा बेटा, मेरी बात को सुन लो और भूल जाओ। सत्यन्धर महाराज ने दोस्ती के कारण देश सत्यानाश होनेवाले कार्य करने का विचार किया। महाराज ने विजया नाम की अत्यन्त अपूर्व सुन्दरी एवं लता सदृश कन्या के साथ विवाह किया। उन्होंने यह गलती

की कि राज्य के सारे भार को काष्ठांगार के हाथों में सौंप दी। बाद में उसी काष्ठांगार के द्वारा मारा गया।

[४७६]

कोलिलुक्कुट्र आन्ट्रे कोडुमुडि वरै ओन्ट्रेरिक्
कालिलुक्कुट्र वीलन्दे करुन्दलै कलैयलुट्रेन्
मालवलि उलतन्ट्रायिन्वाल्विनै मुडिप्पलन्ट्रेन्
आलंवित्तनैयदेण्णि अलिविनुल्लगन्ट्र निन्ट्रेन

भावार्थ—राजा को जिस दिन मारा गया था, उसी दिन ऊँचे पहाड़ के ऊपर चढ़कर वहाँ से गिरते हुए आत्महत्या कर लेना चाहा। लेकिन जो राजा स्वर्गवासी हुआ था उसको सन्तति कोई नहीं है, इसकी जानकारी होने के बाद ही मरना उचित समझ कर मरने के विचार को छोड़ दिया। वटवृक्ष के बीज के समान विश्वास को याद करते हुए बिना मरे जीवित रहता हूँ।

[४७७]

कुलत्तोडु मुडिन्द कोन्तन्कुडिवलि वाराविन्ट्रेन्
नलत्तगु तोरुवि नुल्लेन् नामं गोविन्द नेन्वेन्
इलक्कणं अमैन्द गोदावरि एन इसैयिन्पोन्द
नलत्तगुमनैवि पेट्र नंगै गोविन्द एन्बाल्

भावार्थ—कुल के साथ मरे राजा की वंश परम्परा में आया हुआ मैं हित पहुँचाने वाली गायों को पालता हूँ। मेरा नाम गोविन्द है। सत्कुल के जीवन स्वरूप गोदावरी नाम से प्रसिद्ध मेरी पत्नी की कुक्षी से उत्पन्न लड़की का नाम गोविन्दै है।

[४७८]

वंबुडै मुलैयिनाल् एन् मडमगल् मदवै नोक्कं
अंबडि यिरुत्ति नेंजत्तलु त्तिट्टदनैय दोप्पक्
कोंबडु नुसुप्पिनालै क्कुरैइरन्दुलन्दु निन्ट्र
नंपडै तम्मुल एललां नगैमुंग अलिन्दु निन्ट्रेन्

भावार्थ—गायों के नायक श्रेष्ठी गोविन्द कहते हैं कि सुन्दर स्तन कलशवाली मेरी कन्या की काम वेदना समुत्पन्न करने योग्य दृष्टि है। वही बाण बनकर युवा गणों के भुजा में लगा। बाद में वह जाकर हृदय में वेदना करने लगा। अतः वे युवा लोग उसे पाने के लिये तरसते थे। लता सदृश कमरवाली गोविन्दै कन्या को प्राप्त करने के लिये बहुत से लोग मुझसे प्रार्थना करते थे। अब तक मैं उन सब लोगों को उत्तर नहीं देता रहता था।

[४७९]

पाडकं सुमन्द सेंपोन् सोरडि प्परवै अल्कुल्
सूडकं अणिन्द मुन्कै च्चुडर्मणि प्पूणि नालै
आडकं सेंपान् पावै एलुट न्तरुवल् ऐय
वाडलिल् वदुवै कूडि मणमकनाग एन्ट्रान्

भावार्थ—वे श्रेष्ठी गोविन्द फिर से बोल उठे कि पैर में पायल पहनी हुई, लाल सोने के समान चरण द्वय वाली, विशाल मर्मस्थानवाली, हाथ में चूड़ियाँ पहनी हुई एवं प्रकाशमान रत्नाभरणों वाली जो मेरी पुत्री गोविन्दा है उसे खरे सोने से निर्मित सात पुतलियों के साथ देता हूँ समृद्धि के साथ विवाह कर वर बन जाइयेगा।

[४८०]

वेण्णेय् पोन्ट्र॰ अरिनियल् मेंपालपोल् तींज्सोल्लल्
उण्णउरुक्किय आन् नेय्पोल मेवियल्
वण्ण वनमुलै मातर्मडनोक्कि
कण्णुं करुविलंपोदु इरण्डे कण्डप्प्

भावार्थ—वे ही श्रेष्ठी गोविन्द बोलते हैं मेरी पुत्री मक्खन के समान स्पर्श में प्रीति प्रदान करने वाली, मीठे दूध का-सा प्रियवचन बोलने वाली, तपाकर तैयार किये गये गाय के घी के समान मुखारबिन्द वाली है। रंग और सुन्दरता दोनों से भरे स्तनकलश हैं। मोह उत्पन्न करने वाली दृष्टि है। इत्यादि गुणों से सम्पन्न मेरी लड़की के नयन द्वय को कमल फूल ही समझ लीजियेगा।

[४८१]

सेतानरु नेय्युं तींपाल् सुवैत्तयिरुं
पातालं एल्लां निरैत्तिडुवल् पैन्दारोय्
पोदुआर् पुनै कोदै सूडिन् अडित्तियै
यादावदेल्लां अरिन्दरुलि एन्ट्रान्

भावार्थ—वे सेठ और कहते हैं कि लाल रंग वाली गाय की सुगन्ध घी, मीठा दूध, मलाई भरे दही, इन सबको पाताल लोक तक भरने के लिये कहें तो भर दूँगा। नयी माला पहने हुए सुन्दर कुमार, जो जैसे होना है उन सबको अच्छी तरह विचार कर आपकी चरण सेवा के लिये मेरी लड़की गोविन्दा को फूल माला पहनाकर स्वीकार कर लीजियेगा।

[४८२]

कुलंनिनैयल् नम्भि कोलुंकयर्कण् वल्लि
नलं नुगन्र्दानिन्ट्रे तरुन्दा र्मुरुगन्
निलमगट्कु क्लेल्वनुं नील्निरै नप्पिन्नै
इलवलर्वाय् इन्नमिदं एयिदिनानन्ट्रे

भावार्थ—कुमार, बड़े मीन के समान आखों वाली 'वल्ली' नामक कन्या के साथ अति सुगन्धित फूल की माला पहना हुआ 'मुरुगन' नामक व्यक्ति ने शादी कर भोग किया है। भू-देवी के पति जो कृष्ण था, उसने गायों को नायिका 'नप्पिन्नै' नाम की कन्या के फूल के समान जो मुख था उसके अमृत को (जूठन को) पिया है। अतः कुल भेदभाव के बारे में सोचने की कोई जरूरत नहीं है।

विशेषार्थ—तामिलनाडु में "मुरुगन" शिव का पुत्र और कृष्ण इन दोनों की कथा प्रचलित है। इन दोनों को भगवान् मान कर पूजते हैं।

मुरुगन की कथा यह है कि उसने भगवान् शिव का पुत्र होकर भी नीच जाति की कन्या 'वल्लि' के साथ विवाह किया है। इस तरह नीच जाति की लड़की से विवाह कर लेने पर भी वे दोनों को भगवान् और भगवतीके रूप में पूजे जाते हैं। उसमें किसी तरह की कमी नहीं है। मुरुगन तामिलनाडु का देवता है। अन्य प्रान्त में इसकी मान्यता नहीं देखी जाती है।

दूसरी कृष्ण की कथा है। कृष्ण गोपिका स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करता था। वह स्त्री लोल (मोही) के रूप में कथा प्रचलित है। एक बार कृष्ण ने गायों की नायिका 'नपिन्नै' नाम की सुन्दर कन्या के मुख के अमृत कहलाने वाले जूठन को पिया है। फिर भी उन दोनों को भगवान-भगवती मानने में किसी तरह की कमी नहीं देखी जाती है।

अतः नन्दकों का कहना यह है कि मुरुगन और कृष्ण दोनों को भगवान मान कर पूजते हैं। फिर भी दोनों नीच जाति की लड़की के साथ विवाह किये हैं। उससे उन दोनों को भगवान मान कर पूजने में किसी तरह की बाधा या कमी नहीं पड़ी है। अतः आपको जाति के बारे में विचार करने की कोई जरूरत नहीं है।

[४८३]

कन्निय कुलत्ति न्मिक्का र्कति र्मुलै क्कन्नि मार्पम्
मुन्निन र्मुयंगिन् अल्लान् मुरिमिडै पडलै मालैप्
पोन्निलै मकलिरोव्वा तवरैमुन्पुणर्दल सेल्लार
इन्नदाल् मुरैमै मान्दक्र्कु एनमन त्तुण्णिनाने

भावार्थ—सेठ-नन्द कोन (नन्दगोप) की बात सुनकर जीवन्धर कुमार ने सोचा कि ऊँचे कुल की कन्या के सुन्दर स्तनों से युक्त वक्षस्थल को खोजकर आलिंगन करना है। उसे छोड़कर सुगन्ध फूलों से तैयार की हुई माला और सोने का आभूषण इनसे अलंकृत भिन्न कुल वाली कन्या के साथ बड़े लोग सम्बन्ध नहीं रखेंगे। यही संसार में रहने वाले मानवों का कर्तव्य पालन है। अतः कन्या गोविन्दा का अपने मित्र पद्मास्य के साथ विवाह कराने का अपने मन में निश्चय किया।

[४८४]

कोट्टिलंकलिरु पोलवान् नन्दकोन्मुगत्तैनोक्कि
मोट्टिल मुलैयिनाल् निन् मडमगल् एनक्कु मामान्
सूट्टोडु कण्णियन्ट्रे एन्सेय्वा निवैकल् सोल्लि
नीडित्तल् गुणमो एन्ट्रु नेंजगं कुलिर्प्प च्चोन्नान्

भावार्थ—बढ़िया आभूषण पहना हुआ एवं छोटे हाथो सदृश कुमार जीवक, नन्दगोप के मुख को देखकर बोला हे श्वसुर, सुन्दर स्तन भारों

से अलंकृत आपकी कन्या मेरे ललाट में रखने योग्य कन्यका है। अतः ज्यादा कहकर समय को टालने से क्या फायदा है? इस तरह नन्दगोप का हृदय सन्तुष्ट होने योग्य प्रियवचन कहकर खुश कराया।

विशेषार्थ—कुमार ने गोविन्दा को अपना दोस्त पद्मास्य को देने को नन्दगोप से प्रार्थना की। नन्दगोप ने उस बात को मंजूर कर लिया था। इसलिये "हृदय संतुष्ट" शब्द का प्रयोग किया गया है।

[४८५]

तन्सोरिमुल्लै ककण्णिच्चेन्दुवरा डैयायर्
केन्पेरि दुवन्दु पोकि क्कुडै तयिर्कुलुमप्पुक्कु
मान्करि कट्रकूलै मौवलसूल् मयिलेप् पन्दर्च्च
कान्सेरि मुल्लैत्तारान् कडिविनै मुडिक एन्ट्रान्

भावार्थ—शहद टपकने वाली चमेली माला, गेरुआ वस्त्र पहना हुआ और गोकुल के नायक नन्दगोप ने सुगन्ध फूलमाला पहनकर खुशी के साथ दही का मथन करने की आवाज को सुनते हुए प्रवेश किया। हिरन आकर प्रेम से काटने की आदत से अभ्यस्त नन्दगोप कहने लगा कि चमेली, गुलाब आदि फूलों से सजे हुए पण्डाल में विवाह महोत्सव होगा।

[४८६]

कनिवर्लकिलवि कामसिरुनुल् पुरुवं कामन्
कुनिवल सिलैयै क्कोन्ट्र कुवलै क्कण कयलै क्कोन्ट्र
इनियुल रलल राय रेन सिलंबु इरंगत्तन्दु
पनिवल कोदै माद पर्विैयै प्परवि वैत्तार्

भावार्थ—गोविन्दा नाम की कन्या को परिपक्व फल के समान मीठी बोली, सुन्दर ललाट और भ्रू ये तीनों कामदेव के टेढ़ी धनुष को मार डाले (जीत लिये) 'कुवलै' नाम के फूल के समान आँखें 'कयल' नाम के मत्स्य को जीत लीं। अतः इसके बाद ग्वाले लोग इस गोविन्दा को देखेंगे तो जिन्दा नहीं रह सकते। इस तरह पैर के पायल चिल्ला कर बोलने लगे। ठण्डी-ठण्डी मालायें पहनी हुई नारियों ने पुतली सदृश गोविन्दा नाम की कन्या को बुला बुलाकर आशीर्वाद देते हुए पण्डाल में बिठा दिया।

[४८७]

नालियुलिलुदु नागु आनकन्द्रु तिन्द्रु ओलित्तपुल तोयत्तु
ऊलितोरु आवुं तोलुंपोन्द्रु उडन्मूक्क एन्द्रु
तालिरुं कुललिनालै नैय् तलैप्पेयुदु वालत्ति
मूलै नीर्सोरिन्दु मोय्कोल् आयच्चियर् आट्टिनारे

भावार्थ—छोटी-सी नाप में बचे गये घी को गाय का बछड़ा खा लिया था। उससे खाकर छोड़े गये 'अरुगन पुल' नामक घास को उठाकर उससे निकाले गये घी के एकदम काले बाल वाली गोविन्दा के सिर पर लगाया गया। फिर ग्वालिनियाँ कहने लगीं कि अदृष्ट (भाग्य) के साथ गाय और उसके बाँधने की जगह सरीखे तुम और तुम्हारे पति दोनों एक होकर जीवनयापन कीजियेगा। उसके बाद वृद्धावस्था पाकर चिरंजीविनी रहियेगा। इस तरह शुभाशीर्वाद देकर बड़े चमचे से पानी डालकर ग्वालिनियों ने उसे नहलवाया था।

[४८८]

नेय्विलै प्पसुं पोन्तोडुं निलल् मणिक्कुडैयुं नीक्कि
मैविरि कुलविनालै मंगल क्कडिप्पुच्चेर्तिप्
पेय्दनर्पिणयलमालै ओरिलै च्चन्दुपूसिच्
सेयदन सिरुपु न्कोलं तोरुत्तिय र्तिकैत्तु निन्ट्रार्

भावार्थ—ग्वाले की नारियाँ काली-काली सिर की बालों वाली गोविन्दा को, घी बेचकर मिले पैसे से खरीदे गये कान के सोने के आभूषणों को निकाल दिये। उसके बदले मंगल कार्य के योग्य कर्णाभूषण जो थे उन्हें पहना दिये थे। सुन्दर फूल की माला पहना कर, एक पत्ते पर लाये गये चन्दन लगाकर विवाह के योग्य सुन्दर से सुन्दर अलंकार किये गये थे। ग्वाले की जाति वाले इस अलंकार को देखकर एकदम चकित हुए थे।

[४८९]

एरंगोल मुलंग आयर् एडुत्तुक्कोडेगि मूदूच्
सारेंगु मयरप्पुक्कु नन्दकोन् तन्कै एन्दि

वीरुयर् क्लसं नन्नीर् सोरिन्दनन्वोरनेट्रान्
पारुकोल् परुतिवैवेल् दुगकुमर केन्ट्रे

भावार्थ—मंगल वाद्य विशेष के साथ ग्वाले लोग गोविन्दै कन्या को ले जाकर पुराणा जो राजमापुर नगर था उसके चारों ओर विवाहोत्सव का अलंकार किया गया था। ऐसो ठाठ-बाठ के साथ गन्धोत्कट के गृह पर प्रवेश किये थे। उसके बाद नन्दगोप सुन्दर से सुन्दर पानो सहित कलश को लेकर जलधारा छोड़ने लगा। उसे जीवन्धर कुमार ने गरुड़ से घेरे गये सूर्य के समानभूत प्रकाशमान तीक्ष्ण वेलायुधधारो पद्मास्य के लिये कहकर जलधारा को ले लिया था।

[४९०]

नलत्तकै अवट्कुनागा नायिर त्तिरट्टि नन्पोन
इसक्कणप्पावै एलुं कोडुत्तनन्पोगइप्पाल्
अलैत्तदु कामन्सेनै अरुनुनै अम्बुमूलक
मुलैक्कुवट्टिटटैप्पट्रान् मुत्तुग मुयंगिनाने

भावार्थ—गुणवतो एवं अतिसुन्दर गोविन्दा देवी को अच्छो दो हजार गायें और सोने से निर्मित शास्त्रानुकूल तैयार किये गये सात पुतलियों को नन्दगोप ने दान दिया। यहाँ पर पद्मास्य को कामदेव की सेना ने तीक्ष्ण बाणों से बेधकर दुख देने लगे। अर्थात् पद्मास्य को गोविन्दा को अति सुन्दरता ने कामवेदना उत्पन्न कर दी थो। उसने (पद्मास्य ने) गोविन्दा देवो के स्तन कलशों के बोच गिर कर तृप्ति न होने के साथ-साथ मोतियों की माला भो टूट कर बिखर गया था ऐसो हालत में उसे गाढ़ आलिंगन किया था।

[४९१]

कल्वाय् विरिन्द कलुर्नीर्पिणैन्द अन्न आगि
वेलवेल् मिलिर्न्द नेडुंकण्विरै नारु कून्दल्
मुलवायेयिट्टनूरु अमुंद मुनियादुमान्दिक्
कोल्लाद् इन्बक्कटल्पट्टन न्कोटै वेलान्

भावार्थ—शहद को बाहर फेंकने वाले एवं मिले हुए फूलों के समान आलिंगन कर, सफेद वेलायुध सदृश, प्रकाशमय आँखों वाली, सुगन्धित

मालाओं को पहनी हुई गोविन्दा देवी के तीक्ष्ण दाँतों में से निकलने वाले अमृत को घृणा न करते हुए पीकर माला पहने हुए वेलायुधधारो पद्मास्य प्रेमसागर में डुबकी लगाने लगा।

[४९२]

तींपालकडलै त्तिरै पोंग क्कडैन्दु देवर्
तांपालपडुत्त अमिर्दो तडमालै वेयतोल्
आंपाल् कुडव र्मकलो एन्ट्रु अरिवै नैय
ओंपा ओलुक्कत्तु उणर्वु ओन्ट्रिल नायिनाने

भावार्थ—देवलोक क्षीरसागर को लहर के साथ मथन कर निकाले गये अमृत हो, अथवा बड़ी-बड़ी मालाओं को पहनी हुई और बाँस के सदृश भुजावाली तथा फल देने योग्य दूधवाली ग्वाला की लड़की हो! इस तरह भ्रम में पड़कर, गोविन्दा देवी कष्ट होने पर भी रोकती नहीं थी। पद्मास्य गोविन्दा देवी के प्रेम पाश में डूब कर अपने को भूल जाता था।

गोविन्दै देवी का लम्ब पूर्ण हुआ

३. गान्धर्व दत्ता देवी लम्ब

[४९३]

श्रीदत्त श्रेष्ठी का धन कमाने देशान्तर जाना

इंगिवर्गलिव्वारिरुन्दु इमिदु वालच्
संगुतरु नोलिनधियं सालउडै नाय्कन्
पोंगुतिरै मीदुपोरुं माल् कलिरु पोन्ट्रोर
वंगमोडु पोगिनिधि पोन्ट्रार

भावार्थ—राजमापुर के अन्दर जीवन्धर कुमार आदि सब लोग आनन्द के साथ कालयापन करते रहते थे। उसी नगर के श्रीदत्त नामका व्यापारी ने व्यापार में अपने धन को खो दिया था। बाद में उसका यह विचार हुआ था कि देशान्तर जाकर धन सम्पादन करें। इसी उद्देश्य के साथ समुद्र के लहर से झगड़ने के लिये निकले हुए हाथी समान धन-सम्पदा करने निकल पड़ा था।

[४९४]

मिन् ओलुगु सायलिमगु पूण्पदुमै केलवन्
कोन् ओलुगु वेल् यवदत्तन् कुलित्तूंगुं
तन्वलिय कालैश्रीदत्तनवन्तन्पोल्
पोन् आलुगु कुंट्रिल उरै पोप्पुलियो डोप्पान्

भावार्थ—श्रीदत्त प्रकाशमान एवं अतिसुन्दर आभूषणों से अलंकृत पद्मा देवी का पति था। डराने वाले वेलायुधधारी यवदत्त के वंश परंपरा का था। उस परंपरा के लोगों के घर में रहने वाले बैल के समान वीर था। अपने पिता जैसा सोने के पहाड़ो पर रहने वाले युद्ध-सन्नद्ध बाघ के समान धैर्यशालो था।

[४९५]

इम्मि अन नुण्पोरुलकल् ईट्टि नितियाक्कि
कम्मियरुं ऊर्वर्कलिरु ओडै नुदल सूट्टि
अम्मि मिदन्दु आलन्दु सुरै वीलन्ददरं सालग एन्ट्रु
उम्मै विनै नोन्दु पुलन्दु ऊडलुणर्वन्ट्रे

भावार्थ—(सूक्ष्म-सूक्ष्म) छोटे-छोटे वस्तुओं को मिलाने से धन-सम्पत्ति की अभिवृद्धि होती है। उसके बाद दूसरों के अधोन काम करने वाले भी हाथी के ऊपर बैठ कर चलेंगे। पत्थर पानी के ऊपर रहना, लौकी पानी के नोचे रहना धर्म विरोध बात है। अतः शान्ति से रहें, इस तरह कहकर पुरातन भाग्य के अधोन होते कर्मफल के दुख से चिन्तित होना बुद्धिमत्ता नहीं है।

विशेषार्थ—भाग्य के ऊपर भार डाल कर बैठे रहने की अपेक्षा पुरुषार्थ करना अत्यन्त आवश्यक है।

[४९६]

उल्ल मुडैया न्मुयर्ट्रि सेय्य ओरु नाले
वेल्लं निति वीलुं विलैयातु अतनि निल्लै
तोल्लै उणर्वु इन्नवर्ककसोल्लि न्मडिकिर्पिन्
एल्लुन र्कदकु एक्कलुत्तं पोल इनिदु अन्ट्रे

भावार्थ—प्रयत्न पर दृढ़ रहने वाला एक के ऊपर एक की अपेक्षा से उद्यम करे तो एक दिन अत्यधिक धन संपत्ति बढ़ेगी। पुरुषार्थ न हो तो ऐसी बात नहीं है। इस तथ्य को छोड़कर बुद्धिहीन लोगों की बात पर विश्वास कर बैठे रहेंगे तो वह, अपने को जो नीचता की दृष्टि से देखते हैं, उनका सिर ऊँचा उठाने का कारण बन जायगा।

विशेषार्थ—पुरुषार्थ के सामने भाग्य की कीमत कुछ भी नहीं है। अतः पुरुषार्थ करो। भाग्य के पीछे पड़े मत रहो। भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ बलवान है।

[४९७]

सेय्क पोरुलयारुं सेरुवारै च्चेरुकिकुं
एकु पिरिदिललै इरुन्दै उयिरुं मुण्णुं
ऐयल्लिल्लै इन्बं अरनोडु एवैयुमाक्कुं
पोय्यिलु पोरुले पोरुमट्र अल्लपिरपोरुले

भावार्थ—सब लोगों को चाहिये कि धन सम्पत्ति को सम्पादन करें। शत्रुओं को जोतनेवाला वही धन है। उसे छोड़कर दूसरा कोई नहीं है। वह जिस स्थान पर है वहीं से शत्रुओं को खतम कर डालेगा इसमें कोई शक नहीं है। धन ऊपर कहे गये कार्यों की पूर्त्ति करने के साथ-साथ भोग सुख और धार्मिक कार्य इन सबकी अभिवृद्धि करता है। पुरुषार्थ से कमाया हुआ धन ही वास्तव में धन है। अन्य मार्ग से आया हुआ धन, धन नहीं है।

[४९८]

तुंगुसिरै बावलुरै तोलमरंग लेन्न
ओंगु कुलं नैय् अदनुल् पिरन्द वीरर्
तांगल् कडनागुं तलै साय्क्क वरुं तीच्चोल्
नींगलमडवार्गल् कटनेन्ट्रेलुन्दु पोन्दान्

भावार्थ—लटकने वाली डैना से युक्त जो चमगीदड़ है, उसके निवास स्थान वटवृक्ष के समान, कीर्त्ति से युक्त गृहस्थी पतन की ओर आ जाय तो उस कुटुम्ब में जन्म लिये वीर पुरुषों का कर्त्तव्य यह है कि अपना सिर नीचा न होने पावें। कुटुम्ब की रक्षा न करते हुए भाग जाना

कायरों का कृत्य माना जायगा। इस तरह श्रीदत्त श्रेष्ठी अपने कुटुम्ब गौरव के प्रति विचार विनिमय कर विदेश में धन कमाने के लिये निकल पड़ा।

[४९]

मोदु पऊ पण्डं मुनियादु पेरिदेट्रि
मादु पडु नोक्किनव वाट्कण् वडुवुट्र
तादु पउ तंकिलिय तुंगु वरै मार्पन्
कोदु पडुलिल्ल कुरिक्कोण्डेलुन्दु पोन्दान्

भावार्थ—भरपूर धन-दौलत को घृणा के बिना जहाज पर भरकर, मोहवासना से सम्पन्न दृष्टिवालो नारियों के नयन बाण के लांछन युक्त एवं माला पहने हुए पर्वत के समान वक्षस्थल वाला श्रीदत्त निर्दोष मुहूर्त का समय देखकर समुद्र के किनारे आया।

[५००]

वानमुर नीण्डपुगलमारि मलै वल्लल्
दानमेन वेण्डनर्कल् वेण्डुवन नलिग
नानमिग नारुकमल् कुंजियवनेरि
ऊनमेनु मिट्रिनिदु ओडुक इदेन्ट्रान्

भावार्थ—आकाश तक फैला हुआ कीर्तिमान, वर्षाकाल को वर्षा के समान दान कर्ता, सुगन्धी से भरे सिर के रोमवाला श्रीदत्त श्रेष्ठी लोग जो कुछ माँगे याने मुँह माँगे दान देता था। उसके बाद जहाज पर बैठकर प्रार्थना करने लगा अथवा मनोकामना करने लगा कि यह जहाज किसी तरह को दिक्कत व कठिनाई के बिना चले और हमारा काम सानन्द सम्पूर्ण होवें।

[५०१]

आडुकोडि उच्चि अणि कूंबिनुयर्पाय् मुन्ट्रु
ईडु पउच्चेय्दु इलैयर एत्त इंमिल्मुन्नीर्
कोडुपरै आपक् कोलुन्दल् पवलं कोलला
ओडु कलिरु ओप्प इनिदु ओडियदु अन्ट्रे

भावार्थ—सेठ श्रीदत्त का जहाज समुद्र में आनन्द के साथ चलता था। जहाज कैसा था ? उसके ऊपर के खम्भों में ध्वजा फहरा रहा था। तीन चारपाइयाँ बँधी हुई थीं। इस तरह धन्धा करने वालों से तारीफ़ करने योग्य था। सागर के अन्दर शंख वाद्य और परै नाम का वाद्य बजता था। पन्ना की लताओं को तोड़कर भागनेवाले हाथी के समान वेग से जाता था।

[५०२]

तिरैगलनरुं संगु कलं ताक्किक्तिरलमुत्तं
करै कडलुलकालक्कणै पिन् ओलिय मुन्नीर्
वरैकिडन्दु कीण्डदेन क्कोरिवल तींविन्
निरै इडपरिप्पायुन्दु इरिय एगियदु मादो

भावार्थ—समुद्र में जहाज और कैसे चलता था ? लहरें जिन शंखों को देती थीं वे जहाज पर जोर से मार खाते थे। उन शंखों में से मोतियाँ निकलते थे। सागर में जो-जो पहाड़ थे उनपर जोर से लगते हुए जाते थे।। जहाज को चलानेवाली लकड़ो पोछे ढकेलती थी। मगर जहाज आगे वेग से जाता था।

[५०३]

मिन्नुं मिलि पूँगोडियुं मेन्मलरुं ओप्पार
अन्तमोडु न्तोगै नडै सायलमिर्दन्नार्
तुन्निनिदु आगउरै तुप्पुरविन् मिक्क
नन्मैशुडै नन्पोन्विलै तोवमडैन्दते

भावार्थ—जहाज छोटे से द्वीप में जा पहुँचा। वह द्वीप कैसा था ? जहाँ विद्युत का प्रकाश हो, चलने-फिरनेवालो फूल की लता जैसी कामिनी हो, कोमल फूल के समान हो, हंसपक्षो को चाल हो, मोर के समान चलन हो ऐसो अमृत के समान जो महिलायें थीं वह द्वीप उनके निवास स्थान था। उपयोग की आवश्यक चीजें भरमार होने के साथ हित पहुँचाने वाला और सोने को जन्म देनेवाला था वह द्वोप।

[५०४]

झंझावात के कारण जहाज उलट गया

तीविनुल्लिलुन्दु तेन्ताच्चेम्मलुं तिरुमुत्तु आरम्
कोविनक्कुरिप्पिन् कण्डु कोडुचरुलसुमन्दु सेंपोन्

पुविनुल्ललैयन्न पोंगिल मुलैयिनातं
नाविनुल्लमिदं केट्टु नाटकं नयन्दु सिन्नान्

भावार्थ—मधु मिश्रित माला पहना हुआ श्रीदत्त श्रेष्ठी उक्त द्वीप पहुँच गया था। उस द्वीप के राजा से उचित समय पर भेंट की थी। उस राजा को सुन्दर मोती की माला समर्पण कर उसका कृपापात्र बन गया था। लाल-लाल कमल फूल पर विराजमान लक्ष्मी के समान और स्तन कलशों से शोभित नारीमणियों के मुँह से निकलनेवाले अमृत से भी मधुर संगीत सुनते हुए, नाटक देखते हुए वहाँ पर कुछ दिन काल यापन किया था।

[५०५]

पुणर्न्दव पिरिदलाट्राप्पोग मोन्ट्रिनुं सायल्
अणंगिनुक्कणंगनारोडरुमति कलिन्द पिट्रैक्
कोणर्न्दन पण्डं विट्र कोलुनिधिक्कुप्पै एल्लाम्
उणर्न्दु तन्मथलै एट्रि ओरुपडुत्तुक्कु मीलवान्

भावार्थ—जो प्रेम से मिले हुए थे वे अलग होने में असमर्थ हो रहे थे। कोमल देवताओं से भी देवता स्वरूप नारी मणियों के साथ छह दिन निकाले थे। उसके बाद जो माल लिया था उन सबको क्रमशः उसकी तारतम्यता के अनुसार अपने जहाज पर चढ़ाकर अपने देश वापस आने लगा।

[५०६]

अरसनैक्कण्डु कण्णुट्रवर्कलैविडुत्तु नन्नाल्
इरैवति वियाल ओरै इरुंजिलै मुलैप्प एरिक्
करैकड ललुवं नींन्दिक्कर्ट्रिनुं कडुकि ऐंजुरु
उरैयुडैक्कादमोडि ओसनै एललै सार्न्दे

भावार्थ—उक्त द्वीप के राजा से अनुमति ले ली थी। जो अत्यन्त स्नेही थे उनसे वियोग होना कठिन था। फिर भी उन लोगों से भी अनुमति ले ली थी। रवाना होने के लिये शुभ दिन देखा, वह यह था कि रेवती नक्षत्र, गुरुवार, धनु लग्न जहाज पर चढ़ा था। शब्दायमान सागर के जलप्रवाह में वह जहाज हवा से भी ज्यादा वेग से चलता था। करीब

पाँच सौ योजन सीमा को पारकर खुद उतरने का जो किनारा था वह सिर्फ एक योजन था। ऐसी दशा में।

[५०७]

कलित्तलै मयंगि इप्पालिरुत्तलुं कलंदोर काट्रिल
तुलित्तलै मुगिलकलीण्डित् तुंगिरुलमयंगिमान्ट्रु
विलिप्पदु पोलमिन्नि वेडिपड मुलंगि क्कूट्रुं
ओलितुलैन्दोलियवेंपि उररिनिट्रिडिप्प नायक्कन्

भावार्थ—जहाज पर जो लोग बैठे हुए थे वे आनन्द सागर में डूबे हुए थे। ऐसी अवस्था में जल बिन्दुवाला काला मेघ चारों ओर फैल गया था। एकदम अन्धकार सा दीखने लगा। सबको नाश करनेवाला हो इस तरह चमचमाता हुआ विद्युत दीखने लगा। फट जाता हो ऐसा डमार-डमार भयंकर शब्द से वज्रपात गिरने लगा। यमराज भी ऐसी हालत में डर के मारे भाग जायगा; इस तरह गर्जना हो रही थी। श्रीदत्त ने ऐसी भयंकर परिस्थिति को देखा।

[५०८]

एण्तिसै वलियुमीण्ड एदिरेदिर् कलाविप्पव्वं
कोण्डुमेलेलुवदोप्प क्कुलिरिन्ट्रु ड्रदिर्न्द मेघं
तण्डतुलि पलिक्कु क्कोलपोल तारैयायच्चोरिन्दु देयवं
कोण्डदोर् सेट्रंपोलुं कुलुंगन्मिन् एन्ट्रु कूरुं

भावार्थ—आठों दिशाओं में से हवा निकल कर, आमने-सामने जोर मार कर समुद्र को लाँघकर समुद्र के ऊपर उबलने के समान, संसार का अवसान काल याने प्रलय सरीखा दीखने लगा। मेघ का जोर गर्जना से ऊपर उठने के समान कतार-कतार से मेघ वृष्टि जोर से होने लगी। इसे देखकर श्रीदत्त लोगों से बोल उठा कि "यह किसी देवता का प्रकोप है।" इसके लिये डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। थोड़ी देर में सब ठीक हो जायगा। इस तरह जहाज में बैठे हुए लोगों से कहकर सान्त्वना के साथ समाधान करने लगा।

[५०९]

इडुक्कणवन्दुट्र कालै एरिगिन्ट्रबिलक्कुपोल
नडुक्कमोट्रानुमिन्ट्रि नकुक तांनक्क पोलतव

इडुक्कणै अरियुं एकांइरुन्दलुदु यावरुय्न्दार्
वडुपडुत्तेन्नै आणै वरुपवन्दुंगलन्ट्रे

भावार्थ—दुख आते समय, जलने वाला दीपक हवा से हिलने के समान दिल में थोड़ा सा भी डर के बिना सन्तोष रखना चाहिये। यदि सन्तोष रखेंगे तो वही उस दुख को नाश करनेवाली सेना है। अलावा इसके उस दुख को यादकर रोते रहने से किसने उससे मुक्ति पायी है? किसी ने नहीं। जो कुछ होना है वह होगा ही। डरने से रुकेगा नहीं। इस तरह श्रीदत्त श्रेष्ठी ने सभी लोगों को उपदेश देकर धैर्य बँधाया था।

[५१०]

आडक च्चेंबोन्किण्णत्तु एन्दिय अलंग ल्तेण्णीर
कोडकं कोण्डवालनालु लन्द देलकोल्लुं पव्वत्तु
ऊडकं पुक्कुमुन्नी रलुत्तिनुं उय्वर्नल्लार्
पाडकं पोलच्चूलन्द पलविनैप्पयत्ति नेन्ट्रान्

भावार्थ—आगे कहने लगा कि शरीर में रहनेवाली आत्मा का जीवन काल यदि खतम हो जायगा तो आटक नाम के सोने की कटोरी में रहने वाला साफ़-साफ़ पानी भी उसे तोड़ डालेगा। पाटक नाम के चप्पल के सदृश बिना छोड़े पोछा करनेवाला पूर्वजन्म का कर्म रहेगा तो समुद्र के बीच में जाकर उस सागर में डूब जाने पर भी अच्छे लोग बच जायेंगे। इस तरह सेठ ने उपदेश दिया।

[५११]

विनैयदु विलैविन्वन्द वीवरुं तुन्ब मुन्नीर्क
कनैकड लुलुवं नीन्दि क्कण्कणिन्दुरंगल् वेण्डा
ननैमलप्पिण्डि नाथन्नाल् मलर्प्पादमूलम्
निनैयुमिन्नीविरेललां नींगुमिन्नच्चं एन्ट्रान्

भावार्थ—और कहने लगा कि पूर्वजन्म के पापोदय से जो दुख प्राप्त हो रहा है, उसके लिये इस सागर में रोने से कोई फायदा नहीं है। ठंडे फूलों से अलंकृत अशोक वृक्ष के नीचे विराजमान अरहन्त भगवान के कमल फूल के समान जो दिव्य चरण हैं उन्हें स्मरण कीजियेगा। वे चरण आपकी रक्षा करेंगे। डर को छोड़ दीजियेगा।

[५१२]

परुमित्त कलिरुनानुं पैयेनक्कविलन्दु निपंक्
कुरुमित्तु मदलैपोंगि क्कूबुरप् पाय्न्दु वल्ले
निरुमित्त वगैयि नोडि नीनिरैन्दालन्द पोतिल्
उरुमिडित्तिट्टतोप्प उल्लवरोरुंगु माय्न्दार

भावार्थ—कई तरह से अलंकृत हाथो के समान जो श्रीदत्त श्रेष्ठो था वह जैसे दूसरों को उपदेश दिया था वैसे हो अरहन्त परमात्मा के दिव्य चरणों को स्मरण कर, नमस्कार कर, सिर झुकाकर खड़ा था। इतने में जहाज की लकड़ियाँ टूटकर जहाज मनमानी चलने लगा। बाद में डूबते समय वज्रपात के समान आवाज कर जहाज समुद्र में डूब गया। इसलिए उस जहाज पर जितने लोग बैठे थे वे सबके सब स्वर्गवासी हो गये।

[५१३]

आंबिप्पडैत्त पोरुलुं उरु कादलारुं
वेंबुट्र मुन्नो विलुंगलिवरैयादु निन्ट्रान्
कूंबुट्र तुण्डं तलुबिक्किडन्दा न्कोलित्तुत्
तेन्पेट्र पैन्दा रवनै त्तिरै उय्त्तदु अन्ट्रे

भावार्थ—बुरे मार्ग को छोड़कर भले मार्ग से कमाया हुआ धन और प्रेमी जन इन सबको समुद्र का खारा पानी खा लेता है। याने धन भी पानी में डूब गया और लोग भी पानो में डूब कर मर गये। इन सबको सामने देखते हुए भी निश्चल रहनेवाला श्रीदत्त श्रेष्ठो ने जहाज की लकड़ी के एक टुकड़े को पकड़ लिया था। मधुमय माला से शोभित श्रीदत्त को समुद्र की लहर ने लकड़ो के साथ किनारे पहुँचा दिया था।

[५१४]

नावा यिलन्दुनडुयारु मिलयामम् नोन्दिप्
पोवाय् तमिये पोरुलै प्पोरुलेन्ट्रु कोण्डाय्
वीवायेन मुन्पडैयाय् पडैत्ताय् विनै एन
पावायेन पोय्प् पडुवेण्मणलितट्टै सेन्र्दान्

भावार्थ—श्रीदत्त श्रेष्ठी पागल सा हो गया। अपने आप भाग्य का

कोसने लगा। कहने लगा कि हे भाग्य (कर्म) तुम क्या-क्या नहीं करोगे ? अर्थात् सब कुछ करोगे। जहाज को तिलांजलि देकर कोई भी सहारा नहीं है, अकेला अनजान होकर इस अर्धरात्रि में समुद्र को तैरकर जाना पड़ेगा। इस तरह मेरी सृष्टि की गयी है क्या ? धन सम्पादन कार्य को प्रधान मान कर आया हुआ तू मर जा, इस तरह पहले सृष्टि किये बिना क्यों छोड़ दिया ? इस तरह अपने आप कहते हुए एक सिकता के ढेर पर जा पहुँचा।

[५१५]

पोरियरै आललुं पुन्नैयुं पूत्तु
वरितरु वण्डोडु तेनिनं-आक्कूं
तिरिविरि पूंपोलिलसेव्वनं सेन्दींगु
अरुवरैमापनवलित्तिरुन्दान्

भावार्थ—कोन्ट्रै नाम का पेड़, पुन्नै नाम का पेड़ फूला हुआ था। भ्रमर और शहद को मक्खियाँ रींकार करती थी। सुन्दरता से विकसित फूलों की खुशबू को अनुभव करनेवाला एवं पहाड़ के समान विशाल छाती वाला श्रीदत्त श्रेष्ठी चिन्ता के साथ खड़ा था।

[५१६]

ओडुं तिरैकल् उदैप्प उरुण्डुरुण्डु
आडुं अलवनै अन्न अरुल् सेय
नोडिय नेय्तलं कानल् नेडुंतकै
वाडि इरुन्दान्वरुं कलं नोक्का

भावार्थ—लम्बे एवं ऊँचे श्रीदत्त श्रेष्ठी, लम्बे-चौड़े विशाल 'नेय्दल' वन के किनारे समुद्र का लहर आता है वापस जाता है। उस लहर में आनेवाले केकड़ का हंसपक्षी आदर करता था। सेठ श्रीदत्त इसे एक शुभ शकुन समझने लगा। उनका विचार यह था कि इसी के समान अपनी रक्षा करने कोई जहाज आयेगा। इस तरह मन में विचार करते हुए चिन्ता के साथ सागर को देखता रहा।

[५१७]

आलिय मोय्बनिरुन्द अप् पूंपोलिल
तालवलिया नोर मकनैतलैप्पट्टुक्

केलिर एनक्कुट्र केण्मि न्नोरेनत्
तोलवलि मिक्का न्तोडन्दुं उरैक्किट्रान्

भावार्थ—शेर के समान शक्तिशाली एवं भुजबल पराक्रमवान श्रीदत्त श्रेष्ठी जहाँ खड़ा था वहाँ पर एक उद्योगी और चतुर (उसका नाम है 'धरन') व्यक्ति दिखाई पड़ा। श्रीदत्त उस व्यक्ति से कहने लगा कि प्यारे दोस्त, मेरे ऊपर जो-जो आपत्तियाँ आ पड़ी हैं उन्हें आपको सुनाना चाहता हूँ। आप कृपाकर सुनियेगा। इस तरह कहकर आगे बताना शुरू किया।

[५१८]

करुंगड ल्पोयिट्रुं काट्टिल कविलन्दु
तिरुन्दिय नन्पोरु ल्तीदुट्र वारुं
अरुं पुणै सार्वा अवनुवन्द वारुं
इरुन्दवर्क्कु एललां एडुत्तु मोलिन्दान्

भावार्थ—काले पानी के समुद्रों में धन सम्पादन करने जाना, झंझावात के कारण जहाज पानी में डूब जाना, धर्म मार्ग से सम्पादन किया हुआ सारा धन नाश हो जाना, जहाज के टूटे लट्ठे को पकड़ कर उस द्वीप के किनारे आना आदि सारे विषयों का सविस्तार वर्णन उस व्यक्ति को सेठ श्रीदत्त ने कह सुनाया।

[५१९]

मानुं मरनुं इरंग मनवलि
तानुट्र तुन्बं तरनुक्कु उरैत्त पिन्
तेनुं अमिलदुं तिलैत्तांगु इनियन
ऊनं इल् कट्टुरैक्कु उल्लं कुलिन्दान्

भावार्थ—तिर्यंच जीव और पेड़-पौधे सभी अपने ऊपर करुणा दिखावें, इस तरह श्रीदत्त ने धरन से सारा वृत्तान्त कह सुनाया। उक्त धरन श्रीदत्त की सारी बातें सुनकर श्रीदत्त से मधु और अमृत दोनों मिले हुए के समान बोला कि डरने को कोई बात नहीं है। निर्दोष एवं आदर सूचक वचन सुनकर श्रीदत्त पूर्णरूप से सन्तुष्ट हुआ।

[५२०]

विंजैकल् वल्लेन्विसिन्द निन्तोलरोडु
एंजिय वान्पोरु लेललां इमैप्पिनुल्
वंजमोन्ट्रिट्रि मरित्ते तरुगुवन्
नेंजिल् कुलैन्दु निनैयन्मिन् एन्ट्रान्

भावार्थ—धरन का कहना यह है कि मैं कई विद्याओं में निपुण हूँ। आपकी जितनी वस्तुएँ नष्ट हुई हैं और जितने लोग मर गये हैं उन सबको एक क्षणभर में लाकर आपके सामने रख दूँगा आप ऐसा दुखित मत होना कि अपनी चीजें नष्ट हो गयी हैं। इस तरह 'धरन' नाम के उस व्यक्ति ने श्रीदत्त से विश्वास के साथ बताया।

[५२१]

उरंयगं कोल्ल उणर्त्तिननागि
वरैयगं एर वलिमिन मेन्ना
विरैसेलल् वेंबरि मेलगमेट्रिक्
कूरैकल लुमैन्दनै क्कोण्डु परन्दान्

भावार्थ—इस प्रकार के सद्भावना से श्रीदत्त का मन उसे अंगीकार करने के अनुकूल बन गया। उसके बाद धरन बोलने लगा कि आप "इस पहाड़ पर चढ़ने का धैर्य धारण करना।" ऐसा कहने के बाद घोड़े के समान जो बकरा था उसपर श्रीदत्त को बिठाया और शब्दायमान एवं पायल पहने हुए श्रीदत्त को साथ लेकर आकाश मार्ग पर चल पड़ा।

[५२२]

विशुंबिव मेंगं विरैविन् पोक्लन्दु
पशुपुय लतण्तुलि प्पक्कं ननैप्प
नयन्दन पोंकि नलिर्मलच्चोलै
असुबिव सार लरुवरै सार्न्दार

भावार्थ—चलते हुए उन दोनों ने मेघों के बीच आकाश मार्ग पर वेग से प्रवेश किये। काले मेघ को ठंडी जलबिन्दु ने उनके एक भाग को गीला किया था। आगे चलकर सुगन्ध फूलों से भरे कुञ्ज, जल प्रवाह से युक्त प्रदेश इस तरह के पहाड़ पर पहुँच गये।

[५२३]

कण्डालिनियन काण्कंरियन
तण्तामरैयव ल्तालुं तकैयन
कोण्डा न्कोलुंकनि कोट्टिडै त्तुंगुव
उण्डानमिलदोत्तु उडंबु कुलिन्दान्

भावार्थ—देखने में मीठा एवं बढ़िया दीखनेवाला, लेकिन देखने में बहुत छोटा दीखनेवाला, कमल फूल पर निवास करनेवाली लक्ष्मीदेवी से वांछा करनेवाला पेड़ों को डाली पर लटकनेवाले जो-जो फल थे उन्हें श्रीदत्त ने चुनकर खाया। उससे अमृत पीये हुए के समान सन्तुष्ट होने लगा।

[५२४]

मलैतवल्सोलै मलैमिसै नीण्ड
कुलैतवलकुंकुमं कोलरै नागं
तलै तवल् सन्दनच्चोलैयि न्नोक्कि
इलै तवल् मार्बन इनितिनुणन्दान्

भावार्थ—मेघ छूकर जोने योग्य नन्दन वन से सम्पन्न उस पहाड़ पर लम्बे कोमल पत्तों से भरे कुंकुम वृक्ष, बहुत बड़े निचले भागवाले "सुपुन्नै" नाम के वृक्ष, पत्तों से भरे चन्दन वृक्ष इन सब वृक्षों को देखता हुआ एवं आभूषणों से अलंकृत वक्षस्थल वाला श्रीदत्त श्रेष्ठी अत्यन्त संतोष प्राप्त किया।

[५२५]

कोदैयरुविक्कुलिर्वरै मेल्निन्ट्रु
कातं कउन्द पिन् कन्निक्कोडि मतिल्
नाथ न्नुरवेतार्नन्नगरुण्डु अंगुप्
पोदुं एलुगेन प्पोयिन सान्दार

भावार्थ—फूल की माला के समान जहाँ झरने हों वहाँ पहाड़ के ऊपर दस मील की दूरी पर स्थित अविनाशी लतामय परकोटा से घेरे भगवान का निवास स्थान स्वरूप एक मन्दिर है। अपन दोनों वहाँ

जायेंगे इस तरह श्रीदत्त से धरन के द्वारा कहने के बाद दोनों मिलकर वहाँ जा पहुँचे।

[५२६]

मेघमे मिडैन्दु ताल इरुलकोण्ड वेल्लिक क्कुन्ट्रं,
मागत्तु विलगित्तोन्ट्रं, वनप्पुनां वगुक्कलुट्राल्
नागं तान्करियदोन्ट्र, कील्मिन्ट्र, नडुंगक्कव्विप्
पागमे विलुंगप्पट्ट पालमतिपोन्ट्र दन्ट्रे

भावार्थ—पहाड़ का निचला भाग मेघों से घेरा हुआ था। चाँदी के पहाड़ के ऊपर का भाग स्वर्ग तक ऊँचा एवं सुन्दरता से शोभायमान होता था। इसकी शोभा को यदि हम वर्णन करने लगें तो काले साँप के द्वारा आधे निगले गये और आधे छोड़े गये सफ़ेद चन्द्रमा के समान दीख पड़ता है।

[५२७]

तुलंगु पोन्नगरिन्तन्मै सोल्ललां सिरितोर देवन्
विलंगु पोन्नुलगत्तुल्ल तुप्पुर विडंगलेललां
अलन्दु कोण्डिन्बं पूरित्तणिनगराक्कि मेलाल्
इलंकदिर्प परुदि सूट्टि इयट्रिय देन्नलामे

भावार्थ—जाज्वल्यमान इस सोने को नगरी के बारे में थोड़ा सा बतायेंगे। एक देव प्रकाशमान सोने के लोक में जितना भी सुख के हेतु भूतस्थान हो उन सारी जगहों को खोजकर नाप से जान कर सारे भोग सुखों को इकट्ठा कर अति सुन्दर नगर की सृष्टि उस पहाड़ के ऊपर निर्माण कर देदीप्यमान सूर्य को परकोटा बनाकर यह नगर बनाया गया हो ऐसा कह सकते हैं।

[५२८]

पोंगि आयिरं तामरै पूत्तपोल्
सेंगण् आयिरं सेन्र्दवन् पोन्नगर
कोंगु तोय् कुललारोडुं कुन्ट्रिन्मेल्
तंगु किन्ट्रदु पोल्लकै सान्ट्रदे

भावार्थ—कमल अधिक होने से एक हजार कमल के फूल विकसित होने के समान एक हजार आँखों वाली इन्द्र की अमरावती हो, सुगन्धमय वालों वाली रम्भादेवी हो ऐसे वे दोनों आकर इस चाँदी के पहाड़ पर ठहरे हो ऐसा वह देदीप्यमान हो रहा था।

विशेषार्थ—वह नगरी अमरावती के समान थी और वहाँ रहनेवाली नारियाँ रम्भा (देवदासी) के समान सुगन्धमय एवं सुन्दर थीं।

[५२९]

किडंगु सूल्मदि ल्केलकिल पूंकोडि
मडंगण्नोक्किय वण्मुखं पोलुमेन्ट्र॰
उडंगु वेण्मति उल् कुलिरत्तं
कुडगैयाल् कोम्मै कोट्टुवपोन्ट्रवे

भावार्थ—खातिका से अलंकृत परकोटा का जो रंग है वह उज्वल था। उसकी लतायें चन्द्रमा को सिंह की दृष्टिवाली नारीमणि के उद्योत मुखमण्डल समझती थीं। अतः वह अत्यन्त सन्तोष प्राप्त कर अपनी हथेली से उस चन्द्रमा के ऊपर के भाग को (अच्छा-अच्छा तू नारी वदन के समान है) इस तरह कहकर स्पर्शन कर प्रेम दिखाती थीं।

विशेषार्थ—नगर का परकोटा चन्द्र को छूने तक ऊँचा था। इसलिये उस परकोटे की लतायें चन्द्रमा को स्पर्श करती थीं।

[५३०]

तिरुव मेगलै तेल्लरिंक्किकिणि
परवै यालकुलल् पण्णमै मेन्मुला
अरुवं यारुडै यारेन्ट्रोलिनगर्
अरवं वाय्निरन्दार्प्पदु पोन्ट्रते

भावार्थ—शोभायमान उस नगरी को ललनाओं को मेखला, साफ़-साफ़ नाद देनेवाली किंकिणी नाम की छोटी घण्टी, मधुर वीणा, सुस्वर वाली वंशी आदि इनका नाद मानों कहते हों कि मेरे समान सुन्दर कौन है ? याने कोई नहीं। इस तरह मुँह खोलकर पूछते हुए हाँ-हाँ आनन्द शब्द करते हो ऐसा मालूम पड़ता था।

[५३१]

सेंपोन्माडंगल्सेन्नियलुत्तिय
अंपोन्तिण्णिलै आय् मणित्तूविकल्
वेंपुनीलसुडर्वीलन्दु सुडुत लिन्
पैंपोन् कोप्पुल परन्दन पोन्ट्रवे

भावार्थ—लाल-लाल सोने के ठाण के शिखर पर लगाये गये सुन्दर सोने से बनाये गये वस्तु मजबूत होने के लिये खोजकर स्थापित किये गये रत्न स्तूपियाँ हैं। उन पर दिवाकर के उष्ण किरणें गिरकर गरम करने से उन स्तूपियों पर रहनेवाला सोना गलकर नीचे बिन्दु-बिन्दु के रूप में दिखायी देते थे।

[५३२]

उरुलिमामति ओट्टोलि त्तुंगिय
वेरुलि माडंग ल्मेल्तुयिलेयदलिन
मरुलि मान्पिणै नोक्कि न्नललार्मुगत्तु
अरुलिना ललल् आट्ट्व पोन्ट्रवे

भावार्थ—रवि के रथ में बाँधे गये घोड़े सोम के व्यय को हटाकर ऊँचा और डरानेवाले ठाणों पर सोते थे। वे घोड़े डर के मारे हिरणियों के समान चंचलता के साथ देखने से नारियों के मुख में दीखनेवाली कृपा की झलक से अपनी गर्मी को कम करने समान दिखाई देते थे।

[५३३]

असुंबु पोन्वरै आय्मणिप्पूण् गलुं
पसुंपोन्मालैयुं पट्टुलि प्पट्टवै
नयन्दुकोलपव रिन्मैयिन्नन्नगर्-
विसुम्बु पूत्तदु पोन्ट्रदु वीथिये

भावार्थ—सोना जहाँ वृद्धिगत होता हो ऐसे पहाड़ पर खोज के रत्नों से बनाये गये आभूषण, नयी-नयी सोने की माला आदि सबके सब नीचे पड़े हैं। इस तरह नाचे पड़ी वस्तुओं को उठाने वाले (चोर) नहीं हैं। अतः उस नगरी की वाथियाँ, आकाश में मत्स्यों के फूल के समान यहाँ की जमीन भी सुन्दर दिखाई देती थी।

[५३४]

तेक्कणिन्नकिल् तेनोडु कूट्टमैत्तु
आक्कप्पट्टलविल् कोलुं बुकै
वीक्कि माडं तिरन्दिउ मेल्लवे
ऊक्किवाय् विट्टु उयिर्प्पन पोन्ट्रवे

भावार्थ—घी डालने से अति सुगन्ध वाली 'अखिल' नाम की वस्तु को, शहद के साथ अन्य सुगन्धित एवं मिश्रित वस्तुओं को मिलाने से उत्पन्न जो सुगन्धमय चीज है उसे जला कर उससे होने वाली सुगन्ध जो धूम है उसे, ठाण के द्वारों को बन्ध कर पीछे के छिद्रों के द्वारा निकालने से वह ठाण मानो उस धुआँ को सहन न कर मुँह खोलते हुए वमन कर रहा हो ऐसा दीख पड़ता था।

[५३५]

तप्पिल वाय्मोलित्तानव वैंकिय
ओप्पिल मानगर ओण्मै मट्टु यादेनिल्
कप्पत्तिन्दिर न्कामुरु मामणिच्
सेप्पुवाय्तिरन्ददु अन्नदोर् सेम्मट्रे

भावार्थ—निर्दोष बातें करने वाले विद्याधर लोगों का निवास स्थान जो नगर था, उसके महत्त्व के बारे में और कुछ कहना चाहें तो वह यह है कि देवेन्द्र की इच्छा से आभूषणों को रखने वाला रत्नकरण्डक मुँह खोला हो ऐसा देदीप्यमान हो रहा था।

[५३६]

नन्तग नोक्कि नाय्कन नागं कोलपुगुन्ददेन्नप्
पोन्नपर्पोलियप्पुक्कुप् पोंगुमामलैकल् तंगुं
मिन्नविर्सेम्बोन्माट त्तिरुवरुं इलिन्दु पुक्कुप्
पिन्नव न्विरुन्दु पेणिप्पेसिन न्परंगु तारान्

भावार्थ—इस तरह शोभायमान नगर को देखकर श्रीदत्त सोचने लगा कि क्या यह नागलोक है? हम वही नागलोक में आये हो! इस तरह विचार करने लगा। इतने में ऐसे सोने के नगर के अन्दर प्रवेश

किया। जो बरसने वाला मेघ है। वहाँ ठहरने और बिजली से प्रकाशमान घर के लाल सोने के ठाण में दोनों ने उतर कर अन्दर प्रवेश किया। उसके बाद जाज्वल्यमान माला पहने हुए 'धर' नाम के विद्याधर ने श्रीदत्त श्रेष्ठी को अति मधुर भोजन खिला कर उपचार किया। तदनन्तर आगे का समाचार कहने लगा।

[५३७]

माडियं तन्नै मन्नर्मामणि नागमाग
केडिलसीकलुलनाय कलुलवेक र्कुत्तेवी
तोडल र्कोदैत्तोल्सी र्तारणि सुरुंबुण् कण्णि
आडव ररिवु पोलुं अणिमुलै अणंगिनन्नाल्

भावार्थ—शरीर पर कवच पहने हुए राजा लोग, बड़े-बड़े रत्नों से भरे सर्प के समान हैं। अविनश्वर कीर्तिमान 'गरुड़वेग' पक्षियों का राजा जो गरुड़ है उसके समान है। उसकी भार्या विकसित फूलमाला से अलंकृत एवं पुराने गौरव से सम्पन्न 'तारणि' नाम की रानी है। उन दोनों की लड़की भ्रमरों में मधु पीने वाले नेत्र और युवा पुरुषों की बुद्धि को पागल बनाने वाली एवं सुन्दर स्तन भार से शोभित देवता के समान है। ऐसी मनोहर कन्या का नाम है गन्धर्व दत्ता।

[५३८]

विण्णकं वणंग वेण्कोट्टु इलंपिरै मुलैत्तदे पोल्
पण्णगत्तिनिय सोल्लाल् पावैयै प्पयन्द आन्ट्रे
एल्लिट मिन्ट्रिमन्नर् इम्मलै इरैकोण्डोण्डि
अण्णलं कलिट्रिनुच्चि अरुंगल वेरुक्कै ईन्दार्

भावार्थ—देवलोग भी झुके और सफ़ेद हड्डी की लकड़ी वाली, पंचमी के चन्द्रमा के समान जो वीणा थी उसके लगने से मीठे वचन वाली देवी के समान उस लड़की के जन्म दिन में ही, तिल डालने की भी जगह नहीं थी। इस तरह सारे राजा लोग इस पर्वत पर एकत्रित हुए थे। वे लोग गौरव के लिए हाथी पर बैठे हुए थे। वहीं से अमूल्य आभरण और धन इन सबको मुँह माँगे लोगों को दान देते थे।

विशेषार्थ—राजा लोगों का विचार यह था कि दान के माहात्म्य से

जन्म ली हुई लड़की अपने को मिले। इस तरह हर कोई चाहता था। इसी उद्देश्य से दान देते थे।

[५३९]

मन्दिरत्तरसन्वलले निमित्तकन्वरुकेन्ट्रार्कु
अन्दरत्तोडु कोलिन्सादक मवनुं सेयदान्
इन्दिर तिरुविलेय्प्पक् कुलविय पुरुवत्ताट्कु
वन्दडै पान्मैमण्मेल् इरासमापुरत देन्ट्रान्

भावार्थ—विद्याधर लोक को राजा गरुड़ वेग ने फौरन निमित्तक को बुला लाने को आज्ञा दी। वैसे ही निमित्तक लाया गया। उस निमित्तक ने आकाश में चलने वाले ग्रहों के आधार से जन्मकुण्डली तैयार की थी। आकाश धनुष के समान टेढ़ी भ्रूवाली इस कन्या का शुभ मांगल्य पुण्य का फल भूलोक के राजमापुर में है। इस तरह वह निमित्तक ने जन्म-कुण्डली के आधार से कह सुनाया।

[५४०]

अवनुरै तेलिन्दु वेन्दन् आसैयुल् अरसर्निर्पक्
कवनं कोल् पुरविक् कोट्पिर्कादलुं करन्दु वैत्तान्
अवनते करुत्तिर्ट्कोल् अन्ट्रु कोल्लरिय लाका
इवणडवुं अरिदुं एन्ट्रु कोयिलुक्केगिनाने

भावार्थ—बाकी राजा लोग अपन को राजा लड़की देगा इस आशा-पाश के साथ थे। निमित्तक की बात को जानते हुए राजा ने सोधा-टेढ़ा जाने वाले घोड़े के (चंचल) मन के समान अपने अभिप्राय को किसी से कहे बिना गुप्त रखा था। राजा का विचार निमित्तक के वचनानुसार है ? अथवा और कोई दूसरा है ? इसे जानने में कठिनाई होती थी। इस समय उसको भी जान लेंगे इस तरह विचार कर श्रीदत्त को साथ लेकर राजा के राजमहल की ओर चल पड़ा।

[५४१]

पालपरन्तन्नै पट्टार्पूवणै प्पसुंपोन्कट्टिल
काल्परन्दिरुन्द वेंकण् कतिर्मुलै वक्कच्चिन्वीक्कि

वेलपरन्तनैय वण्णार्वेण्मति वक्कतिर्पेय् कट्टै
पोलिव र्कवरि वीस मन्नवन इरुन्दपोलदिन

भावार्थ—विद्याधर राजा गरुड वेग सन्तोष के साथ पलंग पर बैठा हुआ था। वह पलंग कैसा था ? वह सोने से निर्मित था। एक दम सफेद पीताम्बर चादर बिछा हुआ था। देखने से लालच होने योग्य प्रकाशमान एवं बड़े-बड़े स्तन भारों को कपड़े से बाँधी हुई और बेलायुध के समान लम्बी आँखोंवाली रमणियाँ सफेद चन्द्रमा के किरणें गिर रहे हों ऐसे सफेद चामर डुलाती थीं।

[५४२]

एन्वरवु इसैक्क एन्न वायिलो निसैप्प एकि
मन्नतं मुडिकल्वेय्न्द वयिरंपोलन्दुलुदु सेन्द
पोन्नवि र्कलल्कोल् पादं पोलिमलैत्तडक्कै कूप्प
इन्नुरै मुगमन्कूरित्तानत्ति लिरुक्क एन्ट्रान्

भावार्थ—गरुड वेग राजा के राजमहल पहुँचने के बाद 'धरन' ने द्वारपालक से कहकर भेजा कि "मेरे आने का समाचार राजा से कहो" द्वारपालक गया और राजा से कह कर उनकी आज्ञा ले आया। राजा की आज्ञा को धरन से कह दिया। धरन और श्रीदत्त दोनों भीतर गये। राजा के चरणों में सामन्त राजा लोगों ने आकर नमस्कार करते समय, उन राजाओं के किरीट रगड़ने के कारण कलुषवेग का चरण लाल हो गया था। ऐसे लाल-लाल चरण वाले एवं सोने के आभूषणों से अलंकृत गरुड वेग के चरणों में मेघवर्षा के समान दोनों हाथों को जोड़कर नमस्कार करने लगे। राजा ने प्रेम भरे वचनों से आदर भाव दिखा कर उन दोनों को उचित स्थान पर बिठाया था।

[५४३]

मुदिर्पेय लमूरिवानं मुलंगि वाय् विट्टदोप्प
अदिर्कुरलमुरसं नाण अमिर्दु पेयमारि एय्प्पक्
कदिर्विरि पूणिनार्कुत्तन्दै ताय् तारं कादल्
मदुर मामक्कलसुट्टं विनवि मट्रिदुवुं सोन्नान्

भावार्थ—अत्यधिक वर्षा करने वाला मेघ मुँह खोला हो; वज्रायुध

के समान गर्जना करने वा ा मेरी लज्जा प्राप्त हुई हो; अमृत वर्षा करने वाला मेघ हो; इस तरह ाग, प्रेम और माधुर्य आदि से संपन्न अपनी ध्वनि से गरुड वेग राजा, प्रकाशमान आभरण वाले श्रीदत्त से कहने लगा कि हे दोस्त, आपके पिता, माता, पत्नी, बच्चे, भाई-बन्धु आदि सब लोग कुशल तो हैं न! इस तरह कुशल समाचार पूछने के बाद कहने लगा कि—

[५४४]

इन्ट्रैय दन्ट्रु केण्मै एमनुमरेलुवर्कारुं
निन्ट्रदु किलमैनींगा वज्जिर याप्पिन ऊलाल्
अन्ट्रियुं अरनुं ओन्ट्रे अरसन्यान् वणिगन्नीये
एन्ट्रिरं डिललै कण्डाय् इदुनिन दिललं एन्ट्रान्

भावार्थ—अपन दोनों की मित्रता आज की नहीं है। हमारा और आपका बान्धवत्व सात पीढ़ी से वज्र के द्वारा लिखा हुआ अक्षर के समान मिटे बिना स्थिरतर बन कर खड़ा हुआ आ रहा है। इसके अलावा अपन दोनों का सिद्धान्त भी एक है। मैं राजा हूँ आप वणिक् (व्यापारी) हैं ऐसा भेदभाव भी नहीं है। आप मेरे घर को अपना घर समझ कर रहें। यह आप से मेरी विनती है।

[५४५]

मन्दिर मन्नन्सोलनीर् मारियाल् वट्रिनिन्ट्र
सन्दनं तलिर्त्तदेपोल् सीदत्तन् तलिर्त्तु नोक्कि
एन्दैक्कुत्तन्दै सोन्ना निन्नणमेन्ट्रु केट्प
मुन्दैत्तान्केट्टवारे मुलुदु मेडुत्तियंबुगिन्ट्रान्

भावार्थ—सूखा हुआ चन्दन का वृक्ष बरसात के कारण हरा-भरा होने के समान, विद्याधर राजा गरुड वेग के वचन रूपी अमृत से श्रीदत्त का मन एकदम सन्तुष्ट हो गया था। वह खुशी के मारे राजा से कहने लगा कि हे राजन्, आप जैसे कहते हैं वैसे ही मेरे पितामह ने कहा था। उसने अपने दादा से जो कुछ सुना था उन सारी बातों को राजा से ज्यों का त्यों कहने लगा।

[५४६]

वेल्लिवे तण्डत्तंगण वीविल्ते न्सेडिप्पालिल्
कल्लविल् कैदै वेलिक्कासिलकान्धार नाट्टुप्
पुल्लणि किटंगिन्विच्चा लोगमानगरिन्पोका
वेलिलवे र्कलुलवेगन्वेदण्ड वेन्द र्वेन्दन्

भावार्थ—चाँदी के पहाड़ में मनोहर स्थान को प्राप्त किये हुए एवं किसी तरह नुकसान न होने वाला दक्षिण भाग में मधु गिरने वाले केतकी फूल के पेड़ ही सीमा हो ऐसे निर्दोष गान्धार देश में पक्षियों का निवास स्थानभूत खंदक से घेरे हुए विद्याधर लोक में स्थिरता से रहने वाले चाँदी के वेलायुधधारी गरुडवेग, पहाड़ के राजाओं का राजा है। अर्थात् राज-राज है।

[५४७]

संगुडैन्दनैय वेण्तामरै मलर्ततडंगलपोलुं
नंगुडित्तेय्वं कण्डीर्नमरंगालरिमिन्नेन्नक्
कोंगुडै मुल्लैप्पैंपो दिरुवडं किडन्द मार्प
इंगडि पिलैप्पदेन्ट्रालेंकुल मेन्ट्रु सोन्नान्

भावार्थ—"वह राजा, शंख विकसित हो गया हो ऐसा सफेद कमल से भरे तालाब के समान अपने कुटुम्ब के लिये दैव के समान है। हे बन्धु-बांधव! इसे जान लेना।" इस तरह मेरे पितामह ने कहा था। मधु गिरने वाली चमेली फूलों की माला से शोभित राजन! आपकी चरण सेवा के लिये हमारी सन्तति गलती नहीं करेगी। इस बात पर विश्वास रखना।

[५४८]

पेरुन्त क्कुरिसि ल्तोल न्पेरुविलै क्कटक मुन्कै
तिरुन्दुपु सेरिय प्पट्टि च्चेन्ट्रुतन् उरिमैकाट्टप
पोरुन्दुपु पोर्प ओंबिप्पोन्निलै सुउर निन्ट्र
करुंकण्णि तिरन्दुवेरा क्कट्टुरै पयिट्रु किन्ट्रान्

भावार्थ—गौरवशाली राजा गरुडवेग, मित्र श्रीदत्त के अनमोल आभ-

रण से विभूषित हाथ को प्रेम से पकड़ कर घर के भीतर ले गया। अपनी पत्नी तारणि देवी से परिचय कराया। उस रानी ने भीं श्रेष्ठी का वात्सल्य के साथ आदर सत्कार किया। वहाँ पर सोने समान चमकने वाली एवं काली-काली आँख वाली जो गन्धर्व दत्ता थो उसके बारे में और एक विश्वसनीय बात बताना शुरू किया।

[५४९]

एरिमणि प्पॉलिगु माडत्तेलुन्ददो र्कामवल्लि
अरुमणिक्कोडि कोल मिन्कोल अमरकोन्नेलुतिर्वेत्त
ओरुमणि कुयिन्ट्र पावै ओन्ट्रु कोल्लेन्ट्रु नायक्कन्
तिरुमणिक्कोडियै ओरान्तेरुमर मन्नन् सोन्नान्

भावार्थ—शोभायमान रत्नजटित ठाण में उत्पन्न उपमातीत काम-वल्ली है ? माणिक्कवल्ली है ? विद्युल्लता है ? देवलोकाधिपति अपने दिल में लिखी हुई उपमारहित रत्नों से बनाई गई पुतली है ? इस तरह अत्यन्त सुन्दर रत्नवलली सदृश गान्धर्वदत्ता कौन है ? इस तरह चिन्ता में पड़े हुए श्रोदत्त को देखकर राजा गरुडवेग कहने लगा।

[५५०]

तूसुलाय्क्किडन्द अलकु ल्तुप्पुरल तोण्डैच्चेव्वाय्
वासवान्कुललिन्सिन्पोलवरुमुलैच्चान्दुनक्किक्
ऊसलपाय्न्दाडि क्कादिल कुण्डमिलंग निन्ट्राल्
कासिलयालक्कणं कोलदेयवक् गान्धर्वदत्तै एन्बाल्

भावार्थ—यह लड़की गान्धर्वदत्ता के नाम से पुकारी जाती है। वह कैसी है ? कपड़ों से आच्छादित मर्मस्थानवाली, पन्ना और लाल-लाल 'कोवै' नाम के फल के समान लाल मुँहवाली, सुगन्धमय बालोंवाली, विद्युल्लता के समान रहनेवाली, वृद्धिगत होनेवाले स्तन कलशों पर चंदन आदि सुगन्ध द्रव्य लगाने से हिलनेवाला कर्णकुण्डल उस पर लगने के कारण सुन्दर दोखनेवाली, निर्दोष संगीत भरे वीणावाद्य के भेदों को आश्रित देवमातंगि के समान है।

[५५१]

विलंगिनाल् उलगं एल्लां वीणैयिन्वनप्पिनाले
अलन्दुणर्वरिय नंगैक्करुमणि मुकिलत्तवेपोल्

इलंकदिर्मुलैयुमागत्तिडं कोण्डु परन्दमिन्निन्
तुलंगु नुण्नुगप्पुं तोन्ट्रा दुरुअरु एन्न उण्डे

भावार्थ—इस गन्धर्वदत्ता के वीणावाद्य की चतुरता और इसकी खूबसूरत इन दोनों के कारण यह कन्या लोक प्रसिद्ध है। अनगिनत सद्गुणों के साथ इस कन्या के छाती में मणियों के समान जो स्तन निकले हुए थे अब वे प्रकाशमान स्तनकलश का रूप धारण कर छाती को घेर रखे हैं। पहले विद्युल्लता के समान चलने-फिरनेवाला कमर वर्तमान में है या नहीं इस तरह अदृश्य सा दीख रहा है।

[५५२]

निन्मगलिवलै नीये निन्पति कोण्डु पोगि
इन्निसै पोरुदु वेलवा न्यावने यानुमाग
अन्नर्कुं उरियलेन्न अडिपणि सेय्वलेन्ट्रान्
तन्नमर्देविकेट्टु त्तत्तैक्के तक्कदेन्ट्राल्

भावार्थ—गरुडवेग श्रीदत्त से कहने लगा कि इसे तुम्हारी पुत्री ही समझो। इस कन्या को अपने साथ अपने शहर ले जाना। वहाँ वीणावाद्य में जो कोई इसे जीतता है वह कोई भी हो उसको दासी बनाकर उसके साथ शादी करा देना। इस बात को सुनकर श्रीदत्त कहने लगा कि आपकी इच्छा के अनुसार सेवा करूँगा। गरुड वेग की प्रियपत्नी तारिणी महादेवी, इन बातों को सुनकर कहने लगी कि यह मेरी बेटी गन्धर्वदत्ता के लिये उचित ही है। इस तरह चिन्ता के साथ कहने लगी। अर्थात् अपनी पुत्री का वियोग उससे सहन न होने के कारण दुखित हुई है।

[५५३]

मुनिवरुं पोकभूमिय् पोंगं मुट्टादु पेट्रुं
तनियवरागि वालदल् सातुय रदनिनिल्लै
कनिपडु किलवियार्तं कातल र्कवानि लंतुंजिन्
पनिइरु विसुंबिन्देवरं पान्मैयिट्टन्ट्रु सोन्नान्

भावार्थ—पत्नी की चिन्ता को जानता हुआ गरुडवेग कहना लगा कि "घृणा रहित प्रेम संसार में सांसारिक प्रेम, बिना रोक-टोक प्राप्त

होने पर भी सहायक (पति) के बिना अकेले जीवन बिताना तो मरने से कठिन है। इससे बढ़कर दूसरा दुख कोई नहीं है। मीठे फल के समान मीठी बातें बोलनेवाली नारीमणी (मेरी बेटी) अपने पति के गोद में सुख भोगना वह ठंडे एवं बड़े देवलोक के देवसुख से श्रेष्ठ है।

[५५४]

नूलपडु पुलवन्सोन्न नुण्पोरु ल्नुलैन्दु यानुं
वेल्कड लतानै मन्न वोलन्दु इरन्दालुं नेरेन्
सेल्कडै मतवैं नोक्किकन्सिल् अरित्तडंगण्नंगे
पालपडु कालंवन्दाल् पान्मैया विलक्कुसिर्पार

भावार्थ—राजा आगे कहने लगा कि अनेक शास्त्रों का जानकार जो निमित्तक था उसके द्वारा कही गई सच्ची और सूक्ष्म बातों को मैंने भी खोजकर विचार किया। जिससे इस नतीजे पर पहुँचा कि वेलायुध-धारी एवं समुद्र के समान विशाल सेना वाले बहुत से राजा लोग प्रार्थना के साथ मेरी इस लड़की को माँगते थे। फिर भी निमित्तक की बात पर विश्वास कर उन लोगों को मना कर दिया। मत्स्य के पूँछ के समान तीक्ष्णता, मोहोत्पन्न करनेवाली दृष्टि, सूक्ष्मबुद्धि से सम्पन्न विचार, लम्बे-लम्बे नयन ऐसी मेरी बेटी को पति प्राप्त होने का समय आ गया है। उसके भाग्य को कौन रोक सकता है। सब कुछ भाग्य के अधीन है। उसी के अनुसार ही सब चलेगा। इसमें कोई शक नहीं है।

[५५५]

पडैप्परुं कर्पिनाल्तन् पावैयैप्परिवु नोक्किकक्
कोडैक्कु उरिय पाल एल्लां कोडुत्तपिन्कूट्टुमुट्टुं
विडैप्पुरुं तानै वेन्दन्वेण्डुव वेरुप्प नलिक
तोडुत्तल कोंदै वीणापतिक्किदु सोल्लिनान

भावार्थ—दूसरों से अनुत्पन्न करने योग्य सतीत्व को धारण करने-वाली तारिणी महादेवी को अपनी लड़का के वियोग का जो दुख हुआ था उसे हटाकर उसके देने योग्य सारी वस्तुओं को देने के बाद, यमराज भी डर जाय ऐसे पराक्रमी, अन्य लोगों से भेद न करने योग्य सेनावाले राजा गरुडवेग ने खुद अपनी लड़की को जो कुछ देना था वे सब अधिकता

से देकर तैयार की हुई माला पहने हुए वीणापति को लक्ष्य कर आगे की बातों को कहना शुरू किया।

[५५६]

उडंबिनो डुयिरुं पिन्नि ओरुवयि न्नींगलसेल्ला
नेडुंगणुं तोलुं नेरिलै अरिवै नोनिन्
तडंकण्णि तनिमै तीरत्तन्दैयुं तायुमागि
अडंगलरट्ट वेलान् आणैयि रामिनेन्ट्रान्

भावार्थ—शरीर और आत्मा के समान मिलकर, कभी अलग न होनेवाली लम्बी आँखें और भुज के सदृश, सहायक रहनेवाले सुन्दर आभूषणों को पहनी हुई हे बुद्धिशालिनी तू और तुम्हारी लम्बी नयनवाली गन्धर्वदत्ता की जो अकेलापन है उसे निकालने के लिये तू ही पिता और माता हैं। तुमको दोनों विरोधियों को जीते हुए श्रीदत्त के आज्ञानुसार चलना है। इस तरह राजा कहने लगा। (इस तरह सहेलियों से कहा गया)।

[५५७]

अरुमणि वयिरं वेयन्द अरुंगलप्पेलै ऋरु
एरिमणि सेपोन्नार्न्द ईरायिरं एवनप्पेलै
तिरुमणिप्पूणिनार्कुच् चिनन्दलै मलुंग लिन्ट्रिक्
कुरुमणि मुडियिन्तेयुत्त तरन्तमर्कोलगएन्ट्रान्

भावार्थ—राजा गरुडवेग के द्वारा लड़की गान्धर्वदत्ता के लिये बहुत बढ़िया रत्न और हीरे से तैयार किये गये श्रेष्ठ आभूषणों को पेटियाँ पाँच सौ, शोभायमान रत्न और सोने से भरे यवन देश की दो हजार पेटियाँ दी गयी थीं। सुन्दर रत्नाभरणों से अलंकृत कलुषवेग महाराजा को शत्रुओं पर गुस्सा करने की आवश्यकता न होने के कारण (शत्रु ही नहीं है) अर्थात् सभी राजा लोग अधीन होने से, उन राजाओं के सुन्दर रत्न किरीट राजा गरुडवेग के चरणों में घिसते थे। राजा ने धरन के बन्धुजनों को भी साथ ले जाने के लिये कह दिया था।

[५५८]

पल्विनै प्पवल प्पाय्काल् पसुमणि यिलिगै वंपार
नल्लकिलिवम्मु कट्टिल् तविसोडु निलैक्कण्णडि

मेल्लिय दूपमुट्टि मेतगु नानचचेप्पेडु
अल्लवुं कोलक अणंगुंडै निणंकोल्वेलान्

भावार्थ—दुःख देने वाला जो बेलायुध है उसे धारण करने वाले राजा गरुडवेग, कई तरह की कारीगरी से शोभित एवं पन्ना से बनाये गये पैर जिसका हो, नूतन रत्नों से निर्मित तलवार का म्यान हो, बहुत बढ़िया धूप घट हो, सोने के लिये चारपाई हो और बैठने के लिए कुर्सी हो, खड़े-खड़े देखने के लिये आयना हो, सुगन्ध द्रव्य रखने के लिये पात्र हो, इसके अलावा और भी कई चीजें अपनी लड़की के लिये दीं।

[५५९]

विलक्कुल लुरुत्तपोलुं विसुउरु पोवैत्तन्देन्
तुलक्कर ओलिगि अन्न तुय्यर त्तिरण्ड तिण्कोल
कोलत्तगु तिव्वुत्तिग ल्कोलिनरैत्तनैय आणि
अलप्परुं सुवैकोल् नलयाल् आयिर ममैग एन्ट्रान

भावार्थ—दीपक की शिखा मिलाने पर प्रकाश कम न हो ऐसे ओढ़े गये ओढ़न हो, मीठा मधु गिरने के समान मिले हुए साफ सुथरा नसें हो, गृहण करने योग्य लकड़ी हो, अर्धचन्द्राकार कीलें हो, ऐसे बेशुमार प्रिय एवं निर्दोष एक हजार वीणायें लाने को राजा ने आज्ञा दीं।

[५६०]

अरक्केरि कुवलैवालकण्णव्वलैत्तोलिनालैप्-
परप्पमै कातलतायर्पल्काल् पुलिलक्कोण्डु
तिरुप्पुर क्कोडुत्त सेंपोन्तामरै पोन्ट्रु कोयिल्
पुरिक्कलल् मडन्दै सेल्लप्पुलंपोडु मडिन्ददन्ट्रे

भावार्थ—सम्बन्ध छोड़कर जाने के कारण रोती हुई, रोने के कारण लाल-लाल एवं 'कुवले' फूल के समान नयन वाली, सुन्दर चूड़ियाँ पहनने से अलंकृत भुजवाली एवं सौन्दर्यवती गान्धर्वदत्ता देवी को उसकी माँ ने कई बार आलिंगन कर आश्वासन देने लगी। लक्ष्मी चले जाने के बाद मुरझाई गई कमल फूल के सदृश एवं माला से अलंकृत बालों वाली गान्धर्वदत्ता के छोड़कर जाने से राजमहल शोक में डूबा हुआ था।

[५६१]

कांपुपोन्सेय्द पिच्चं कदिर्मणिक्कुडैयोडेन्दित्
तांपलर्कवरिवोस किंककिणि तदुम्बनागप्
पांबु पैत्तनैय अलकुल् पलकलै मिलट्रएगि
आंबल् नारमिद च्चेव्वा यरसनै त्तोलुदुनिट्रान्

भावार्थ—सोने से निर्मित हाथ पकड़ने वाला छाता था, रत्न जड़ा हुआ छाता था इनके साथ कई नारियाँ चामर ढुलाती थीं। घण्टे का टणार-टणार शब्द निकलता था। सर्प फणा के समान विकसित होते हुए मर्मस्थान के ऊपर पहना हुआ मेखलाभरण था। उसकी घण्टियाँ शाब्दायमान होती थीं। फूल समान सुगन्धमय एवं अमृतमय लाल मुँह वाली गान्धर्वदत्ता पिता के चरणों में नमस्कार कर खड़ी हुई थी।

[५६२]

अडिक्कलमरट्र एकि अरुंपरलतातै पादं
मुडिक्कलं सोरियच्चेन्नि यिरंजलुं मुरिन्दु मिन्नुक्
कोडिप्पल नुडंगिआंगुत्तोलिय र्कुलात्तुल् निर्प
अडुत्तनन्पुल्लिवेन्द नार्ट्रुगि लादु सोन्नान्

भावार्थ—दत्ता के चरणों में पहनी हुई पायल शब्द करती थीं। पिता के चरणों पर सिर में पहने आभूषण गिरने लगे। ऐसी अवस्था में सिर नवाकर नमस्कार किया। विद्युल्लतायें हिलने के समान वहाँ खड़ी हुई सखियों के साथ दत्ता भी खड़ी थी। उस समय पिता जो गरुडवेग था वह अपनी लड़की के पास जाकर प्रेम के साथ आलिंगन करते हुए वियोग परिस्थिति के साथ कहने लगा।

[५६३]

वलुंपुरिईन्ट्र मुत्तं मण्मिसे यवर्कट् कल्लाल्
वलंपुरि पयत्तै एय्दादनयरे मगलिरेन्न
नलंपुरिन्दनैय काद लदेवितन्नवैयै नींगक्
कुलंपुरिन्दनैय कुन्ट्रिक्कतिपति कूरिनानं

भावार्थ—शंख में उत्पन्न हुआ मोती भूगोचरी लोगों को ही उपयुक्त होता है न कि वह शंख उसका फल पाता है। लड़कियाँ भी उसके माँ

बाप को उसी तरह की हैं। उसे हित का एक रूप धारण कर आयी हो ऐसा समझना है। प्रेमिका जो राजा को पत्नी थी उसके पुत्रो वियोग दुःख को निकालने के लिये, अच्छे कुल का एक रूप धारण किया हो ऐसा चाँदी के पहाड़ का राजा गरुडवेग कहने लगा।

[५६४]

इन्सुवै यालोडु अन्नं इलंकिलिमललै मंजै
पोन्पुनै युगं मन्दि पोरि मयिर्पुरवं पोन्नार्
मेन्पुन मरुलिन्नोक्किन्मानिनं आदि यागत्
तन्पुरं सूलप्पोकि त्तलिरियल् विमानं सेन्दाल्

भावार्थ—अच्छी एवं इष्ट वीणा के साथ हंसपक्षी, जवान और तोतली भाषा बोलने वाला तोता और मोर, सोने से निर्मित काला बन्दर, मादा बन्दर, बिंदों के पंखवाला कबूतर, चंचल और प्रिय नेत्र वाले हिरण आदि इन सब चीजों को लेती हुई कोमल पत्तों के समान मृदुल शरीर वाली गान्धर्वदत्ता देवी विमान के पास पहुँची।

[५६५]

वेट्रिवेल् मणिमुटि क्कोद्रव नोरुमगल्
अट्रमिल्पेरुपडै च्चुट्रमोडु इयंगिनाल्

भावार्थ—जोत का चिन्ह वेलायुध और रत्न किटीरवाल राजा गरुडवेग को उपमातीत पुत्री जो दत्ता है उसको वियोग का दुख न हो, इस उद्देश्य से बहुत से बन्धु-बान्धवों को साथ भेजा गया था।

[५६६]

कण्णयलकलिप्पन अण्णल् यानै आयिरं
विण्णग त्तियंगुत्तेर एण्णवट्रु इरट्टिये

भावार्थ—आँखों के पास मदजल गिरने वाले गौरवपूर्ण एक हजार हाथी तथा आकाश में उड़ने वाले रथों की गिनती दो हजार, ये सब दत्ता के साथ गये थे।

[५६७]

विर्पडै विलक्कुव, पोर्पुडैप्पुरवियुं
मुर्पडक्किल वट्रिन् नर्पुडैय नाट्रिये

भावार्थ—बाणों को अपने वेग से रोकने वाले सोने से निर्मित सामग्री वाले घोड़े, पहले कहे गये हाथी की अपेक्षा चार गुणो गिनती के साथ चारों ओर फैले हुए थे।

[५६८]

पारुडैप्परितिवेल, वीरुडै यिलैयरुं
आरिरट्टायिर कूरुदर्करियरे

भावार्थ—गरुड आकर झपटे ऐसे मांसवाले एवं शोभायमान वेलायुधवाले एवं गौरवशाली वीर बाहर हजार लोग थे। ये कहने में अशक्य धीर और अतिवीर थे। ये सभी साथ भेजे गये थे।

[५६९]

मागनील् विसुंपिडै, मेगंनिट्रिडित्तलिन्
नागं निन्ट्रु अधिर्न्दवक्कुं एकलाव तिल्लैये

भावार्थ—दिशा के अन्दर आकाश में मेघ पानी बरसने के वास्ते वज्रपात करने लगे। उसको सुनकर हाथी के समूह अपनी जाति के हाथी की गर्जना समझ कर खुद गर्जने लगे। इसी कारण से वीरों की सेनायें आगे जा नहीं सकीं।

[५७०]

वेंजिन वेगुलियिन्कुंजरं मुलंगलिन्
मंजुतं वयिरलिन्दु अंजिनीर् उगुत्तवे

भावार्थ—इस तरह हाथी समूह भयंकर गुस्से के साथ गर्जना करने से मेघ डर के मारे एकदम पानी बरसाने लगे।

[५७१]

वेलमुं मतत्तोडु ताल् पुयलकलन्दुडन्
आलकड लगंपुरं वीलतर विरैन्ददे

भावार्थ—गहरे समुद्र का पानी किनारे से बाहर जाने के समान हाथी समूह के तीन तरह का जो मद जल था उसके साथ, मेघ नीचे आकर बरसे हुए पानी के कारण चार तरह की सेनायें वेग से जाने लगीं।

[५७२]

मल्लल्मावकडलिडै वकल्लेन वकलं कलिन्दु
अल्ललुर्ट्र लुंगिय सेलवनुट्र सेप्पुवां

भावार्थ—सभी तरह की सम्पत्ति से भरे बड़े सागर में दुख की आवाज निकलने से उस जहाज को डुबाकर दुखित परिस्थिति में बाहर आये हुए श्रीमान श्रीदत्त श्रेष्ठी के जहाज की क्या हालत हुई उसे जरा विचार करेंगे।

[५७३]

पालिनर प्पनिवरै मेलिनर मिगुन्दन
नीलिनर निललमणि तान्निरैत्तगमेलां

भावार्थ—दूध के समान सफ़ेद रंग वाले ओस के पहाड़ में रहनेवाले माणिक्य, नील रंगवाले हीरे आदि सबको 'धरन' ने जहाज के अन्दर खूब भर दिया था।

[५७४]

वंजमिलमनत्तिनान् नॅजगं पुकन्ट्रुक
विंजयं पेरुमगन्वंजमॅरुणत्तिनान्

भावार्थ—जिसका दिल कपट से सुदूर हो ऐसे श्रीदत्त का मन संतुष्ट होवें इस तरह अमूल्य वस्तुओं को भरने के बाद विद्याधर धरन ने कहा, कि ये सब माया है।

[५७५]

नंगै तन्नलत्तिनाल् मंगुलवेल्लि मालवरै
एंगु मन्नरोण्डिना सँगुविम्मु तानैयर्

भावार्थ—पहले मेघ से आच्छादित सारे चाँदी के पहाड़ पर दत्ता की सुन्दरता की लालसा से शंखवाद्य सेनावाले राजा लोग एकत्रित हुए थे।

[५७६]

ईरलंगलेन्दुवेल् आरलंग ल्मार्पिनान्
कार्विलंगु कैक्कणि, सीर्कलन्दु सेप्पिनान्

भावार्थ—(उस समय) माला पहने हुए शत्रुओं के छातो को भेदन करनेवाले वेलायुधधारो और खुद माला से वक्षःस्थल को अलंकार करने वाले राजा को, मेघ समान दान देनेवाला एवं ऐसे महत्त्वपूर्ण हस्तद्वय के कर्ता निमित्तक दत्ता के भाग्य के बारे में इस तरह कहने लगा।

[५७७]

मादर्वालवु मण्गते, आदलाललंगलम्
तादविलद मार्प निन् कातलान् कडलुलान्

भावार्थ—माला के सुन्दर पल्लव गिरानेवाले राजन्, आपकी पुत्री दत्ता की जीवन शृंखला भूलोक में बढ़िया चलेगी। लेकिन आपका दोस्त समुद्र के ऊपर दौड़ रहा है।

[५७८]

एन्ट्ऺकूर एन्नैये तुन्ट्ऺ कातल् तोलनैच्
सेन्ट्ऺ नो कोणर्कन अन्ट्ऺ वन्द वण्णमे

भावार्थ—इस तरह निमित्तक के कहने से राजा मेरे को देखकर कहने लगे कि तुम जाकर अत्यन्त प्रेमी मित्र (श्रीदत्त) को बुला लाओ। ऐसा कहने के कारण मैं आपको लिवा लाने के लिये उस रूप में आया था।

[५७९]

तुन्बमुट्ऺवक्कलाल् इनबमिललै याद्लिन्
अन्बमट्ऺ यान्निनैत् तुन्बपत्ताल् तोटंगिनन्

भावार्थ—जो दुःख भोगे हैं उन्हें छोड़कर दूसरे कोई सुख नहीं है। इसलिये हे दोस्त, कारणवश मैंने आपको दुखित किया था।

[५८०]

पिलैसेयदु पेट्ऺनन्, वालिएन्ट्ऺ माक्कडल्
आलवित्तिट्ट अंबियै त्तोलच्चुट्टिक्कट्टिनान्

भावार्थ—हे दोस्त, मैंने पहले आपको दुःख देकर बाद में मित्रता प्राप्त कर ली है। इसके बाद आप कष्ट के बिना सुख भोगते रहें, यह मेरी कामना है। बड़े भारी सागर में सिर्फ श्रीदत्त के नजर में जो जहाज डूब जाने के समान दीख पड़ता था उन और उसके साथियों को अब उन्हें दिखा दिया था।

[५८१]

तन तरुमारि पोन्ट्रु तीविय कलवि तम्माल्
ऊन तरु कुरुदि वेलान् उल्लगं कुलिन्दुंवि ऐक्
कोन्तरु तुन्बं मट्रेन्कुलत्तोडु मुडिक एन्ट्रान्
कान्ट्रुविल् वयिरं वीसुं कनमणिक् कुलैयिनाने

भावार्थ—अमृत की वर्षा के समान प्रिय वचन सुनकर प्रकाशमान हीरा जड़े हुए कर्ण भूषण और वेलायुधधारी श्रीदत्त बहुत ही खुश होकर कहने लगा कि "विद्याधर राजा ने जिस दुख को दिया था, वह मेरी परम्परा रहने तक बराबर याद रहेगा।

[५८२]

तोडवलतेरिय लान्तन्तोलरै वकण्डु कादल्
ऊडलन्दैलुन्दु पोंग उरुवत्तार्कुलैयप्पुल्लिप्
पाडिरुं पौवमुन्नी पंट्टदु पकर्त लोडुं
नाडकं नांगलुट्टु एन्ट्रु कैयेरिन्दु नक्कार

भावार्थ—उसके बाद विकसित फूल-माला पहने हुए श्रीदत्त अपने साथियों को देखकर उसका दिल प्रेम से बहने लगा। उसने अपनी माला घिस जावें इस तरह उन लोगों को आलिंगन किया। शब्दायमान समुद्र में जो कष्ट हुआ था उसे जब वह कहने लगा तब वे लोग उसे सुनकर हाथ से तालो बजाने के साथ हँसते हुए कहने लगे कि "अपन लोगों ने जो देखा है वह सब एक नाटक है।"

[५८३]

कट्टलल् कदिय पुण्णिल् करुवरै यरुवि आरं
पट्टदुपोन्ट्रु नायकन परिवुतोन्दिनिय सूल
मट्टविल कोदैयोडु मण्कनै मुलवंमूडुकं
कट्टविल् तारिनान्तन्कडिमनै मगिलन्दुपुक्कान्

भावार्थ—अग्नि से हुए घाव में झरने का पानी, गोला चन्दन इन दोनों को लगाने से जैसे कष्ट दूर हो जाता है वैसे ही अपने साथी लोगों के साथ अमृत झरनेवाली माला पहनी हुई गान्धर्वदत्ता के साथ हो, डीले

माला पहना हुआ श्रीदत्त श्रेष्ठी भेरी के ताडन से होनेवाला जो शब्द है उससे पूर्ण राजमापुर में रहनेवाले सुरक्षित अपने महल में सानन्द आ पहुँचा।

[८५४]

पेरुमनै कुरुगलोडुं पिरैयेन विलगित्तोन्ट्रुं
तिरुनुदलमनैविसॅपोन कोडियेन इरैंजिनिर्प
वरुमुलै पोतिर्प्प वांगि वण्डिनं इरिय प्पुल्लिक्
कदिर्नकैमुरुवलमाद कॅण्णुरु कवलै तीर्त्तान्

भावार्थ—श्रीदत्त श्रेष्ठी के अपने बड़े भारी महल पर जा पहुँचने के बाद पूर्वपक्ष चन्द्रमा के समान सुन्दर ललाटवाली अपनी भार्या सोने की लता जैसी नमस्कार कर खड़ी हुई। उसका स्तनभार विकसित हो ऐसा उसे आलिंगन करने से उसके बालों के फूलों में जो भ्रमर बैठे हुए थे वे सब भाग गये थे। शोभायमान दाँतोंवाली उसकी भार्या की आँखें वियोग से (पति) दुखित थीं। उसने उस दुख को निवारण किया।

[५८५]

चन्दिरकान्तमेन्नुं तण्मणि निलत्तिन् अंगण्
वेन्तेरि पशुंपोन्वेलिलपलिगोडु पवलं पाय्त्तिक्
कन्देरि मणियि लसेय्द कन्निया माडं एय्दिप्
पैन्दोडिप्पावै ओन्डु परिविललवैगिनाले

भावार्थ—चन्द्रकान्त नाम के ठंडे रत्न पत्थरों से बने हुए जमीन पर अच्छी तरह तैयार किये गये खरे सोने से निर्मित एवं चाँदी और पन्ने जड़े हुए दीवार तैयार किया गया हो, तथा प्रकाशमान रत्नों के खम्भे हो ऐसे कन्या के निवास स्थान में जाकर नयी चूड़ियाँ पहनी हुई गान्धर्वदत्ता थोड़े भी दुख के बिना आराम से रहती थी।

[५८६]

पासिवै परवै अलगुल् पसुंगति वर्कलापं वोंगक्
कासुकण् परिय वैकि क्कडन्तलै कलिन्द पिन्नर्त
तूशणि परवै अलगुल् तुलंगु नुण्नुसुप्पिन्पावै
आसरु वरवुं तन्दै वलित्तदुं अरियच्चोन्नान्

भावार्थ—सोने के आभूषण से भूषित विशाल मर्मस्थल एवं शोभायमान मेखलाभरण बन्धन रहने के कारण उसमें स्थित रत्न गिर कर चारों तरफ़ फैल गये थे। जो-जो सुख देनेवाली वस्तुएँ थीं वे सबके सब दत्ता के पास थीं। साड़ी पहनी हुई विशाल मर्मस्थान के साथ चलने-फिरने योग्य कमरवाली दत्ता का निर्दोष आगमन और उसके पिता की अभिलाषा अर्थात् जो वीणा में निपुण होकर इसे जीतता हो उसी के साथ विवाह कराने का विचार आदि सारी बातों को श्रीदत्त श्रेष्ठी ने अपनी भार्या के पास विस्तार से कह सुनाया।

[५८७]

स्वयंवर मण्डप की तैयारी

वण्डुण मतन्दै कोदैवर वोरुप्पट्टुनेरत्
तेण्कड लिंमद पेय्द सेप्पेन च्चेरिन्दु वींगिप्
पेण्डिरुं आण्मै वेकिप् पेदुरु मुलैयिनालैक्
कण्डव र्मरुल नालै क्कडिविनै मुडित्तुं एन्ट्रान्

भावार्थ—भ्रमरें मधु पीवें ऐसे विकसित फूलमाला पहनी हुई पद्मा, उसके विचार के अनुकूल होने पर, साफ़-सुथरे सागर के अमृत को भर कर रखे हुए प्याले के समान पास में आने से, नारियाँ भी नरों को चाहने एवं मोहित होने के कारणभूत सुन्दर स्तन भारवाली दत्ता को जो कोई देखते हैं वे मोहित होने का जो दिन आयेगा उस दिन दत्ता को शादी करा देंगे।

[५८८]

मालवरै वयिरु पोलन्दु वल्लव र्मदियिन्तन्द
पालवरै मणियुं पोन्नुं पर्पल कोण्डु पुक्कुक्
कालपोरु कललि नानुं कावलन्कण्डु सोन्नान्
वेल पोरु तानैयानुं वेण्डुव विवियिन्नेर्दान्

भावार्थ—बड़े पहाड़ों को तोड़कर, शास्त्रविज्ञ अपनी बुद्धि के बल से दिये गये रत्न और सोने आदि को भेंट के रूप में काष्ठांगार को देकर वीर श्रीदत्त ने उस काष्ठांगार से अपनी इच्छा (गान्धर्वदत्ता स्वयंवर) प्रकट की थी। वेलायुध युद्ध में समर्थ सेनावाला वह राजा काष्ठांगार ने श्रीदत्त की इच्छानुसार शादी कर लेने की अनुमति दे दी।

[५८९]

मैयलमदयानै निरै मन्नन्मकिन्दानाप्
पोय्यिल् पुगल नाय्क्कन् मत ओलियिनोडु पोगि
नोय्दिन्मनै येय्दि यिदु सेय्केन नोडित्तान्
मोय्कोल् मुलैपायमुकै विण्डु अलर्न्द तारान्

भावार्थ—गर्विष्ठ काष्ठांगार के सन्तुष्ट होने से सच्चे कीर्त्तिवाला व्यापारी श्रीदत्त अत्यन्त सन्तोष के साथ झटिति घर जाकर, पत्नी के स्तन भार लगा हुआ और विकसित माला पहना हुआ श्रीदत्त ने अपने रिश्तेदारों से शादी के लिये सभी तरह की व्यवस्था करने की आज्ञा दी।

[५९०]

नानक्किडंगु आडै नगर्नागत्तिडै नन्पोन्
वान्नक्किडु माट्टिय दोरु मण्डपं सेय्केन्न
मीनत्तिडै नाल् किलमै वेल्लिसैयै पक्कं
कानत्तिडै वेंगै येलक्कण्णिन र्कलन्ट्रे

भावार्थ—'पुनुगु' नामक द्रव्य को कपड़ा बनाकर, स्वर्ग के बीच में खरे सोने से बनाये गये आकाश महल को हरा कर सुन्दर मण्डप तैयार किया जाय। साथ ही शुक्रवार, तृतीया तिथि, उत्तराभाड नक्षत्र, सिंह राशि, सूर्योदय प्रातःकाल मण्डप बनाने का मुहूर्त किया जाय। इस तरह निमित्तक ने बताया था।

[५९१]

नट्पुप्पकै उट्किनोडु नन्पोन्विलै कलनि
पट्टिनोडु पंजु तुगिल् पैंपोनोडु काणं
अट्टसुवै वलिचयिनोडु यादुमोलियामल्
ओट्टिप्पदिनायिरव रुट्ट मुयलिकन्ट्रार्

भावार्थ—दोस्त से मिल कर, बाद में अलग होकर (अच्छे बुरे को) खोज कर, बढ़िया सोना उत्पन्न होने वाली जमीन, पीताम्बर, धागे का कपड़ा, सोना, पुराना टका, षड्रस से तैयार किया हुआ दिन का भोजन

आदि इन सबकी कमी न हो ऐसा निश्चय कर दश हजार लोग मण्डप तैयार करने के कार्य में दिल लगाकर काम करने लगे।

[५९२]

वण्डु पडु तेरलनर वाय्विडोडु परुकिक्
कण्डतोलिल् कणिच्चिकलिन् कयंपड ननगिडित्तांगु
एण्दिसैयु मेर्प्पपडु त्तेट्रियद न्मेलाल्
कण्डुरुगु पोन्निन्निलं कामुरुव पुनैन्दार्

भावार्थ—काम करने वाले कारीगर लोग, भ्रमरों से गुंजायमान शहद और मद्य को पोकर, कार्य करने के लिये रहने वाले लोग हथियारों से जमीन को गहरा बना कर, आठों दिशाओं में बराबर होने के लिये निचले भाग को ऊँचा उठा कर, उसके ऊपर ऊँचाई के लिये जितना चाहिये उतना खड़ा कर उस पर सोने को तपाकर डालते हुए सुन्दर बनाते जाते थे।

[५९३]

पोन्सेय् कुडं कोत्तनैय एरुत्तिर्पोलि पोन्तूण्
मिन्सेय् पसुं पोन्निलत्तु वीरुपेर नाट्टि
मन्पवल मेलनविन्द्रु पलिक्कलगु परप्पि
नन्सेय्वेलि वेय्न्दुसुवर्तमनियत्ति नमैत्तार्

भावार्थ—सोने से निर्मित घड़ों के गर्दन में लगातार बाँधे गये हों ऐसे उन पर प्रकाशमान सोने के खम्भों को सोने की जमीन पर खड़ा कर उसके ऊपर शोभायमान पन्ने से निर्मित 'बीम' को जमा कर उस पर प्रकाशमान लकड़ियों को फैलाया गया था। उसके ऊपर चाँदी के पत्ते से उसे ढकाकर सोने से दीवालें खड़ी की गई थीं।

[५९४]

पावैयव लिरुक्कुमिडं पलिगुच्चुवरे यट्रिक्
कोवैकुलि मुत्तिनियलकोदैयोडु कोलुंपोन्
मालैयोडु मालैतलै मण्दुवर नाट्रि
आलयमिदु ओवियर्कट्कु एन्न अणि अमैत्तार्

भावार्थ—युवती दत्ता के रहने के स्थान पर बढ़िये पत्थर से दीवार खड़ी कर, ठंडी मोती की मालायें, माणिक्यरत्न मालायें, अच्छे सोने की मालायें सब मिला कर टाँगे गये थे। सब जगह चित्रकारों का मन्दिर कहने लायक चित्रकारियाँ बनायो गयो थीं।

[५९५]

आयितल पोन् अलंगल् काल् अलैप्प ओलिक
वायरुगु वन्दोसिन्दु मरियमलै मिन्पोल्
सेयवर्क्कु तोन्ट्रियतोर् तिलगमेनुं तगैत्ताय्प्
पायतिरै मुत्तमणल् परन्दु पयिन्ट्रुलते

भावार्थ—सुन्दर पंखुड़ी सहित सोने से निर्मित मालायें, हवा लगने से हिलती थीं। प्रवेश द्वार के पास में आने-जाने से मेघ के अन्दर दीखने वाले विद्युत् के समान दूर पर रहने वालों को उसकी छटा दिखाई देती थी। इससे यह मण्डप सारे मण्डपों को तिलक सा लगता था। लहर के कारण फैले हुए मोतियों का सा दिखाई देता था।

[५९६]

कामर्कलिरुं पिडियुं कन्ट्रुं कलैमानुं
तामरैय वाविकलुं पुल्लुंतकै नलत्तिन्
एमुरुव पावैयिनोडु इयक्कि निलै एलुदि
आं ओरय्यं काण्बवर्क्कु इदु अगं पुरमिदुवेनवे

भावार्थ—सुन्दर हाथी और हथिनो, हिरन और हिरनी, कमल विकसित तालाब, सभी तरह की चिड़ियाँ ये सब, अत्यधिक सुन्दरता से दीखने के कारण देखने वालों के दिल पर मोह उत्पन्न होने योग्य विलासिनियाँ, प्रधान देवता लक्ष्मी का निवास स्थान आदि देदीप्यमान दीवार पर लिखे रखने कारण उन्हें जो कोई देखते हैं, उसको अवर्णनीय शोभा के कारण दीवार के भीतर का भाग कौन सा है ? और बाहर का भाग कौन सा है ? इस तरह सन्देह उत्पन्न होता था।

[५९७]

उलन्दवरुं नोक्किमगिल् तूंग ओलिवाय्न्दु
विलुंगुमेन प्परवैगलुं पिरविलंगुं अडैया

मुलंगु तिरै वेलियिनि लिल्लै येन मोय् कोण्डु
एलुन्दु कोडियाडुमिदु अव्वेलिलनगरि नियलबे

भावार्थ—बहुत दिन से चित्रकला में अभ्यस्त चित्रकार भी देखकर आश्चर्य करने योग्य शोभायमान इस चित्रकारो में रहने वाले तिर्यंच, पक्षियों आदि सबको देखकर अन्य पशु-पक्षी पास नहीं जाते थे। कारण यह है कि दीवार के चित्र जीवित हैं, वे अपन को मार डालंगे, इस तरह के डर के मारे पास नहीं जाते थे। ऐसी परिस्थिति में शब्दायमान लहर वाले समुद्र की सीमा बनाये हुए इस संसार में अपने समान कोई नहीं है इस तरह शेखी दिखाते हुए लतायें खड़ी होकर हिलती थीं। यह उस मण्डप की शोभा का वर्णन है।

[५९८]

ओडुं मुगिलकीरयोलिंतिगल् सिकै वैत्त
माडमदु वार्सडैय वल्ललैयु मोक्कुं
नाडिमुगं नान्गदनिन्नान्मुगनै योंक्कुं
नेडिनिमिर्तन्मैयिनि लेनमियैयु मोक्कुं

भावार्थ—वह सुन्दर मण्डप कैसा है? चलते मेघ को फाड़ कर प्रकाशित होने वाले चन्द्रमा को सिर पर रखे हुए और लम्बे बाल वाले शिव के समान है। चार द्वार होने के कारण चारों तरफ दिखाई देने से चतुर्मुखवाले ब्रह्मा के समान है। ऊपर की सीमा को ढूँढकर जाने से, और सिर उठाकर ऊँचे खड़े होने से कृष्ण के समान भी है।

[५९९]

कण्डवर्कल् कामुरलि न्कामनैयु मोक्कुं
कोण्डुलग मेत्तलिन् अक्कोट्रवनैयोक्कुं
वण्तेरियल् आरंमुलैमादर्मगिलमिर्द
उण्डवर्क लेव्वगैय रवत्रगैय दोन्ट्रे

भावार्थ—वह मण्डप और कैसा है? जो लोग उसे देखते हैं उन लोगों को बार-बार देखने की इच्छा होने से कामदेव के समान है। दुनियाँ उसे सिर पर उठा कर तारीफ करने से महाराजा सत्यन्धर के समान है।

फूलों की माला, मोती की माला इन मालाओं को पहनी हुई जो नारियाँ हैं उनके अमृत को पीये हुए लोग जैसे उन रमणियों को छोड़ कर अलग नहीं हो सकते वैसे ही उस मण्डप के अन्दर प्रवेश किये हुए लोग उसे छोड़ कर बाहर नहीं आ सकते; याने बाहर आने को इच्छा नहीं होगी। इतना सुन्दर है।

[६००]

मुगिल्तलै मदियमन्न मुलुमणि माडत्तिट्ट
अगिलपुगै तवन्दुवान त्तिरुविसुं अरुत्तु नोण्डु
पकलकदिर्परप्पिट्टागि प्पंजव विमान मुट्टिप्
पुदर्करुं अमरर्कर्पं पुक्कया उयिर्त्तंदन्ट्रे

भावार्थ—मेघ ऊपर लगने से चन्द्र के समान था। भरपूर मणियों का जो द्वार हैं उसमें रखे गये 'अगिल' नामक धूप की धुआँ ऊपर जाकर आकाश में मेघ के भीतर घुसा। फिर उसके ऊपर प्रकाशमय सूर्यमण्डल में फैल कर, ज्योतिष्क विमानों से टकरा कर, उससे आगे जाने का कठिन होते हुए भी देवलोक में जाकर विश्राम करने लगे।

[६०१]

अरैसन तरुलिनोडु अगन्मनै अवनेय्दि
उरैसेल ल्वगैयिनोडु उलगमु मरिवुर
मुरैसदिरिमिलिसै मुदुनग ररैकेन
विरैसेल विलैयरै वियवरिन्विडवे

भावार्थ—श्रीदत्त श्रेष्ठी राजा की सम्मति प्राप्त कर अपने बड़े भारी महल में जा पहुँचा। उसका विचार यह था कि गन्धर्वदत्ता के विवाहोत्सव के समाचार का सारी दुनियाँ में फैलाने का था। इस पुराने शहर में बीच का स्थान कंपायमान होवें इस तरह भेरी का ताडन और संगीत वाद्य आदि से शब्दायमान होता था। भेरी बजानेवालों के द्वारा सारे संसार को बताने के वास्ते आदमी भेजा गया था।

[६०२]

विडुकणै विसैयोडु वेरुवरुं तकैयवर्
पडुपणै यवरुरै पतियदु कुरुगि

नेडुमति यकडुर निललतवल् कोडियुयर्
कडिनग रिडिमुर सरै मिनं एनवे

भावार्थ—धनुष से निकले हुए बाण के समान वेग से जानेवाले और भयंकर रूपवाले लोग भेरी बजानेवालों के स्थान पर जा पहुँचे। उन लोगों से कहने लगे कि सोम के (चन्द्र) बीच के प्रदेश को छूने योग्य ऊँची एवं शोभाजनक पताकाओं से भरे नगर में वज्रपात के समान भेरी ताडन काजियेगा।

[६०३]

मंगल अणियिन र्मलक्कंदि र्मदियन
पुंगवन् अरनेरि पोलिओडु मलिगेन
अंगदि र्मणिनगै अलमरु मुलै वलर्
कोंकणि कुललवल् कोडणै अरैयवाम्

भावार्थ—मंगल रूप सफ़ेद कपड़े पहने हुए भेरी ताडनवाले "प्रकाशमय सूर्य चन्द्रमा के समान जो भगवान अरहन्त परमात्मा हैं उनका धर्म मार्ग जाज्वल्यमान होकर सारी दुनियाँ में फैलते रहें" इस तरह (इस तरह) मांगलिक वचन बोलकर प्रचार करते थे। सुन्दर एवं शोभायमान रत्न और मोती से अलंकृत स्तन कलशवाली, फूलों से अलंकृत बालों वाली गान्धर्वदत्ता के विवाह महोत्सव के समाचार का ढिंढोरा पीटते थे। उसके बारे में आगे कहा जायगा।

[६०४]

वान्तरु वलत्तागि वैयगं पिणियिर्ट्रोर्क
तेन्तरु किलवियारुं कर्पिनिट्रिरिदलिन्ट्रि
ऊन्ट्रुक ऊलितोरुं उलगिनुलमान्दरेल्लां
ईन्ट्रव र्वयत्तरागि इल्लरं पुणर्क नालुं

भावार्थ—बरसात खूब बरसे और उपजाऊ अच्छी रहे जिससे सारे संसार में बीमारियाँ दूर भाग जाँय। अमृत के समान मीठे वचन बोलनेवाली नारियाँ सदाचार के साथ जीवन चलावें। सारे संसार के लोग हर जन्म में माँ-बाप के वचन सुननेवाले और माननेवाले हों तथा सद्गृहस्थी चलानेवाले हों।

[६०५]

तवं पुरिन्दटक्कि नोकुं तत्तुवतं तलैप्पट्टोंपिय्
पवंपरि केमक्कु मेन्ट्रु पणिदव रुवप्प ईमिन्
अवंपुरिन्दुडंबु नींगा तरुंदव मुयलिमन् यारुं
सिवंपुरि नेरियैच्चेरच्चेप्पुमि प्पोरुलुं केण्मिन्

भावार्थ—अच्छे तप से पाँचों इंद्रियों को वश करते हुए व्रताचरण करनेवाले ज्ञानियों के पास जाकर उनकी भक्ति कर । भक्ति करते समय यह कहना है कि "हमारी जन्म परम्परा समाप्त की जाय ।" इस तरह कहकर भक्ति करने के साथ, उनका दिल सन्तुष्ट होने तक जिस किसी की आवश्यकता हो उन सबको देवें । कोई भी हो पाप कार्य से जीवन न छोड़ें । अपना हित हो ऐसे मोक्ष प्राप्ति का जो साधन है उसे इस शरीर की सहायता से उत्कृष्ट तप करने का प्रयत्न करें । इससे आगे जो कहा जायगा, उसे भी अवश्य सुनना है ।

[६०६]

अंमल रनिच्च त्तंपो तलिलयो डणियिन्नोन्दु
विंमुरु नुसुप्पु नैय वीट्रिरुन्दणंगु सेन्द्र
वेंमुलैप्परवै यलगुल मिडैमणिक्कलामं वेय्त्तोल्
सेम्मलत्तिरुविन् सायल तेमोलि दत्तै येन्बाल्

भावार्थ—दत्ता शोभायमान 'अनिच्च' नाम के फूलों की माला पहनी हुई थी । उसकी पंखुड़ी उसे कष्ट देती थी । और कमर को भी कष्ट होता था । सुन्दरता ही देवता हो उसका निवासस्थान और प्रेमोत्पन्न करनेवाले स्तनभार एवं विशाल मर्मस्थान के ऊपर रत्नों से भरे मेखलाभरण खचित कमर थी । बाँस के समान भुजदण्ड था । लाल कमल पर लक्ष्मी को जैसी मृदुलता भरी हुई थी । मधु के समान प्रियवचन बोलनेवाली वह दत्ता नाम की कन्या थी ।

[६०७]

मट्रवल्तन्दै नायकन् वणकैसि तत्तनेन्बान्
कोट्रवन्कुलत्तिल् वन्दान्कूरिय पोरुलिदाकुं

मुट्टवं उडैयलागि मूरिनूर्कलैगलयावुं
कट्टवलकणंकोल् नलयाल् अनंगनैक्कनिक्कुं नीराल्

भावार्थ—उसका पिता व्यापारी श्रीदत्त श्रेष्ठो था। वह राजा गरुड़वेग के कुल परंपरा में उत्पन्न हुआ था। उसके सम्बन्ध में कही हुई बात यह है कि वह दत्ता पूर्वजन्म में किया हुआ जो पुण्य था उसकी नायिका थी। अच्छे संगीत शास्त्र में जो-जो बातें कही गयी हैं, उन सब को वह जानती थी। संगीत कला से भरे वीणावाद्य को बजाने लगती थी। तो उसे सुनकर कामदेव भी द्रवित हो जाता था। इस तरह का संगीत ज्ञान उसके अन्दर कूट-कूटकर भरा हुआ था।

[६०८]

तीन्तोडे मकरवोणैत्तेलविलि एडुप्पित्तेट्रिप्
पून्तोड़ि यरिवै तन्निर्पुलमिगु त्तुडैयनंबिक्कुं
ईन्दिडुं इरैवरादि मूवकैक्कुलत्तुलाक्कुं
वेन्दडु कुरुदि वेलकण् विलंगिलै तातै एन्ट्रान्

भावार्थ—मधुर संगोत उत्पन्न करनेवाले नसों से मकर वोणा बजाकर साफ़-सुथरे नाद को उत्पन्न करने में अच्छो कारोगरी से भरो चूड़ियाँ पहनी हुई दत्ता को जोतनेवाला जो बुद्धिमान एवं कलारसिक होगा ऐसे व्यक्ति के साथ विवाह करा दिया जायगा। मगर शर्त यह है कि वह व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल वाला होना चाहिये। इन तीनों में कोई भी कुलवाला हो सकता है। कैसो है दत्ता ? राजाओं के दिल को दुख देनेवालो, वेलायुध के समान आँखवालो और बढ़िया वस्त्राभरण पहननेवालो है। इस तरह भेरो ताड़न के साथ ढिंढोरा पिटवाया गया था।

[६०९]

मण्णगमडन्दैयागं मार्पुर मुयंगि निन्ट्र
अण्णलै आदियाग अरुंगडि नगरै वाल्लि
विण्णग मुलक्किन् एय्प्प वीतितो रेरुक्कि एंगुं
कण्णोलिर्कंडिप्पि नोच्चि क्कडिमुरसरैन्द कालै

भावार्थ—भूमा देवी के छाती को अपने छाती के साथ आलिंगन करने वाला जो काष्ठांगार है पहले उसका नाम लेकर मंगल वचन बोलने के बाद सुन्दर सुरक्षित नगर के बारे में मंगलवचन कह दिया गया था। तदनन्तर आकाश मेघ के वज्रपात के समान हर एक वीथियों में जाकर शब्दायमान भेरी को लकड़ी से ताड़कर ढिंढोरा पीटते थे।

[६१०]

वणक्करुं तानै मन्न मत्तगं पिलन्दु वायत्त
निणकोलुं कुरुत्ति वाट्कै निलंपुडै पेयक्कुं माट्रल
अणैप्परुं कलिकोल् वेलत्तु अत्तिनपुरत्तु वेन्दन्
कणैक्कविनलित्त उण्कण् कन्नियै क्करुतिवन्दान्

भावार्थ—हस्तिनापुर का राजा दत्ता से शादी कर लेने के उद्देश्य से आया था। वह कैसा था ? जो राजा लोग दबे नहीं उसके मत्त हाथी के मस्तक को दो टुकड़ा कर उसके रक्त से मिश्रित तलवार वाला, जमीन उठाकर फेंकने योग्य शक्तिशाली, जिसे रोक नहीं सकते हों ऐसे मत्तमद वाले हाथी की सैन्यवाला था।

[६११]

सितैप्परुं सीर्त्तुप्पिन् सेयकलल् नरलवोक्कि
मदक्कलि रडत्तु क्कुन्ट्रं मणिवट्टि नुरुट्टुमाट्रल्
कदक्कलि योलिरु वैवेलकांबिलि क्कावलमन्नन्
पदैप्परुं परुम यानैप्पलमाकुमरन्वन्दान्

भावार्थ—कांबिलि देश का राजा 'बाल कुमरन्' दत्ता से शादी कर लेने के उद्देश्य से आया था। वह राजा कैसा था ? शत्रुओं को नाश करने में असमर्थ शक्तिशाली मत्तहाथी को दबाकर वश करने वाला, बड़े भारी पहाड़ जैसे पत्थर को उठाकर फेंकने योग्य शक्तिवाला, गुस्से से मारने योग्य तीक्ष्ण वेलायुधवाला, विरोधियों को देख कर डर के मारे कभी भी पीछा न भागने वाला, मत्त हाथी को सैन्य वाला था।

[६१२]

इलैपोर एलुदियन्न एरिमणिक्कडक मुन्कैच्
सिलैपोर त्तिरण्ड तिण्तोल् सिललरिच्चिलम्बिनार्तम्

मुलैपोर उडैन्द तण्तार् मोयं मदुत्तुलिप्प वन्दान्
मरैपोरअरिय मार्पिन् वारण वासि वन्दान्

भावार्थ—पत्तों को पास-पास में लिखे हुए के समान ज्योतिर्मय रत्न कटक पहना हुआ हाथ हो धनुष को धारण करने से बड़े और मजबूत भुजदण्ड हो, पर्वत के समान विशाल वक्षस्थल हो, पायल पहनी हुई नारी रमणियों के स्तन कलश के मोह-मूर्च्छा से विकसित जो ठंडी मालायें थी उनसे मधु गिर रहे थे। ऐसी परिस्थिति के साथ वाराणसी का राजा आ पहुँचा।

[६१३]

कदिर्मुडि मन्नर्सूलदुं कैतोलुदिरैंजि मालैत्
तिरुमुडि वयिर विल्लार्सेवडि तिलैप्प एत्ति
अरुमुडि अणिनद कोट्रत्तु अवन्दियन् मुरसमार्प
ओरुपिडि नुसुप्पि नालै उल्लुपु वन्दु विट्टान्

भावार्थ—दत्ता देवी से शादी कर लेने के निमित्त अवन्ति देश का राजा भी आ गया था। प्रकाशमान किरीटवाले राजा लोग घेर कर हाथ जोड़ते थे। माला पहने हुए और उसके सिर पर रखे गये किरीट के हीरे के प्रकाश से उसके चरण को कान्ति कम न हो इस तरह नमस्कार कर मंगल वचन (आप चिरकाल जीते रहें) कहते थे। ऐसे रत्नकिरीटधारी एवं सर्व विजयी अवन्ति देश का राजा भी शामिल हुआ था।

[६१४]

वेल्लणि अण्दि आन्ट्रे वेन्दतं मुडियिल्कोण्ड
कल्लणि मालै मोन्दु कनैकलल् इलंगु नोन्ताल्
पुल्लणि कोडियि नालिन्पोरपल तोलैत्त आट्रल्
अलिललै यणिन्द वैवेल् अयोत्तियरिरैयुं वन्दान्

भावार्थ—अयोध्या का राजा भी आ गया था। जन्म दिन पर सफेद कपड़े पहने थे। सामन्त राजा लोग उसके सिर पर अलंकृत मधुमिश्रित सुन्दर माला सूँघते थे। वीरता के साथ रहने वाले, मजबूत पैरवाले गरुडध्वजा सम्पन्न कृष्ण के समान कई युद्धों में विजय पताका दिखाने वाला, पत्ते के समान तीक्ष्ण वेलायुधधारी अयोध्या का राजा था।

[६१५]

नीणिदि वणिक रीरा निलमिसै यवर्गलेललां
वीणैयिर्पाऱ्दु वेलवान्विरैविन र्तुवन्ट्रि मूडूर्क
कोणमुं मरुगुंएल्लांकुच्चेन निरैत्तं मान्दर्
माण्मदु नसैयिन्मोय्त्त मदुकर ईट्टं ओत्तार्

भावार्थ—इस तरह राजा से लेकर धनिक व्यापारी लोग तक सभी देश के सारे लोग गान्धर्वदत्ता की वीणास्पर्द्धा में जीतने के लिये आ पहुँचे। उन लोगों का आना इस तरह रहा कि पुराने इस शहर की छोटी गलो में और बड़ो गलो में अन्य स्थलों पर सूत से कपड़े बुनने के समान था। उन लोगों का इस तरह आना बढ़िये मधु पीने की इच्छा से आने वाली मधुमक्खी के सदृश था।

[६१६]

उरुक्कमैन्दु एरियुं सेंपोनो रैविल अगल मेंगुम्
तिरुक्कुल लमडन्दै सेललत्तिरुनिलन्तिरुत्तिपिन्नर्
विरैत्तगु नानं नीराल् वेण्णिर प्पोडियै माट्रिप्
परप्पिन र्पडुवण्डार्प्पप् पन्मल र्पक्कमेल्लाम्

भावार्थ—अच्छी तरह तपाये गये सोने से पाँच अँगली चौड़ाई तक सुन्दर बालों वाली गान्धर्वदत्ता थी। धन संपत्ति के अनुकूल जमीन को शोभायमान बनाकर सुगन्ध वस्तुओं से तथा गुलाब के जल से अशुद्धता को निकाला गया। तदनन्तर चारों तरफ़ भ्रमरें गुंजायमान हो इस तरह फूलों को फैलाया गया था।

[६१७]

विलैवरं परिवलल्ला वेण्तुगिल् अडुत्तु वोथि
अलर्तलै अनिच्चतंबो तैंमुल अगलमागप्
पलपड प्परप्पि प्पावै मेललडि प्परिवु तीर
निलवरै तन्न नारैनिधियिनालवरुमै सेय्दान्

भावार्थ—अनमोल सफेद पीताम्बर कपड़ों को जमीन पर फैला कर, विशालमय उस जगह पर सुन्दर 'अनिच्च' नाम के फूल को पाँच हाथ

लम्बाई तक फैला कर गान्धर्वदत्ता को कठिनता के बिना चलने के लिये श्रीदत्त ने सुविधायें बना डालीं। इससे यह पता लगने लगा कि उनके समान जो-जो श्रीमन्त लोग थे वे सबके सब सेठ श्रीदत्त की अपेक्षा से गरीब बन गये थे।

[६१८]

मण्डलं निरैन्द मासिल् मतिप्पुडै वियालं पोन्ट्रार
कुण्डलं इलंग निन्ट्र कोडियिनै क्कुरुगित्तोलि
विण्डलर्कोतै विम्मुं विरै कुलल् तोलुदु नीविप्
पण्डियल् मणंगलेल्लां परिवरप्पणिन्दु सोन्नाल्

भावार्थ—निर्दोष एवं गोलाकार स्वरूप चन्द्रमा के पास रहने वाले गुरु के समान सुन्दर मुख चन्द्रमा के पास उपमातीत एक कुण्डल था। उसकी शोभा से दत्ता ऐसी शोभती थी कि मानो एक लता ही खड़ी हो। ऐसी दत्ता के पास जाकर उसको नमस्कार किया। विकसित माला के साथ प्रकाशित एवं सुरभित बालों को ठीक किया था। पुराने जमाने से संसार में जो आठ तरह के विवाह की विधि चलती आ रही है उसे किसी तरह के कष्ट के बिना जानने के लिये सखी जो वीणापति थी वह कहने लगी।

[६१९]

एरिमणि नेट्रि वेयन्द इलंपिरै इदु कोल् एन्नप्
पुरिमणि सुमन्द पोर्पूण पोरुक्कला नुसुप्पिन्पावै
तिरुमणि वीणै कुन्ट्रत्तिलिन्दतींपालै नीत्तत्
तरुमुडि यरसरालत्र रमनै यरिवलेन्ट्रान्

भावार्थ—जाज्वल्यमान रत्नों को दोनों तरफ़ जमे हुए होने के कारण मानों पूर्वपक्ष चन्द्रमा हो इस तरह आश्चर्य होने लायक मोती की माला थी। उसके साथ दोनों तरफ रत्नों से भरे सोने की माला को ढोने में दुखित पतली कमरवाली हे सखि! शोभित रत्नों से भरे वीणारूपी छोटी पहाड़ से निकलनेवाले प्रिय नादरूपी बाढ़ में सारे नरेश लोग डूब जायेंगे; इसे मैं अच्छी तरह जानती हूँ। इस तरह वह कहने लगी।

[६२०]

मण्णिडं मलिर एंगुं मान्दरुं वन्दु सेन्दार्
ओल्लिर उरोणि ऊर्न्द ओलिमति ओण्पोनाटिचत्
तेल्निर विसुंबिन्निन्ट्र तेलिर्माद मुकत्त नंगै
कण्णिय वीणै वालपोर्क्कलामिन्ट्र काण्डुमेन्ट्रे

भावार्थ—प्रकाश और रंग इन दोनों से विभूषित रोहिणी नक्षत्र के साथ सम्बन्ध रखनेवाला जो चन्द्र है उसके गुरुवार के दिन, साफ़-सुथरे आकाश में घूमनेवाले चन्द्रमा के समान जिसका मुख हो ऐसी दत्ता को दुनियाँ के लोगों से सम्मान प्रदान करने योग्य, वीणा की स्पर्द्धा के फल को आज देखेंगे। इस विचार के साथ भू-प्रदेश के मानवगण आकर इकट्ठे हुए। दत्ता की वीणा स्पर्द्धा इतनी मशहूर हो गयी थी।

[६२१]

पसुंकदि र्कडवुलयोगं पलिप्पर नुनित्तु वल्लान्
विसुंमिव र्कडवु लोप्पान् विरिच्चिवगन् अरिन्दुकूर
असुंबुतेनलंग लैंबाल अरिवैयोडायन्दु नायक्कन्
विशुंन्नुपोल मान्दरार विलुंनिधि सितरिनाने

भावार्थ—'चन्द्राभरण' नामक ज्योतिष शास्त्र को विशेष रूप में खोजकर समझनेवाले देव गुरु के समान निमित्तक ने समय और काल बताया था। मधु गिरनेवाली माला पहनी हुई सुन्दर बालोंवाली पद्मा के साथ श्रीदत्त व्यापारी सोच-विचार कर मेघ वृष्टि के समान प्रजा के मन की तृप्ति होने तक भरपूर निधि को देने लगा।

[६२२]

वासनेय वण्डुमूस मान्तलि विरलकल सेप्पप्
पूसिवेलिल लात्तरत्तिन्पूंपोरु वकरैत्त सान्तिन्
कासरु कुवलै क्काम रगइतल् पयिलमट्टित्तु
आसर त्तिमिर्न्दुमाद रणिनलंतिगलिवत्तारे

भावार्थ—शरीर में भ्रमरें गुंकार करते थे। आम्र पेड़ के पल्लव के समान उँगलियाँ लाल-लाल थीं। सुगन्ध घी को लगाकर 'वेल्लिलोतर'

नाम के सूखे फूल को पीसकर उसके गाढ़े से 'कुवलै' नाम के फूल के समान जो शरीर था उस पर मालिश कर नारियाँ गन्धर्वदत्ता की सुन्दरता को और भी शोभा जनक कर रही थीं।

[६२३]

कंगैयिन्कलिट्रिनुच्चि वकदिर्मणि कुडत्तिलतन्द
मंगलवास नन्नीमंणिनिरं कलीय दोप्प
नंगैयै नयप्प एललां विरैयोडु तुवरुं सेर्त्ति
अंगुर वलगुलालै आट्टिना ररमै यन्नार्

भावार्थ—गंगा के पानी को सोने के घड़े में भरकर हाथी के ऊपर रखकर लाये गये सुगन्ध वस्तु मिश्रित पानी से हीरे को प्रकाशमान करने के समान, दत्ता ने प्रिय वस्तु लोंग, इलायची, चन्दन, कुंकुम आदि सुगन्ध वस्तुओं को मिलाकर देव स्त्री के समान नारियों ने सर्प के फणा के समान मर्मस्थानवाली दत्ता को नहलाया था।

[६२४]

वेण्णिर मलैयिन्मिन्पो लवेण्तुगि लकलापं वोक्किक्
कण्णिर मलैयुं तोलुं सन्दन त्तेयवै कोट्टित्
तेलिनर च्चिलम्बु सेंबोन्किकिणि पादं सेर्त्तिप्
पण्णिर च्चुरुंबु सूलुं पनिमुल्लै च्चूट्टु वेयन्दार्

भावार्थ—सफ़ेद मेघ के अन्दर प्रकाशमान विद्युत् के समान सफ़ेद कपड़े से उनके काले बालों को अच्छी तरह बाँध दिया गया था। काले स्तन कलशों के सिरे में और भुजों में चन्दन के गाढ़े को लगाया गया था। चरणों में सुन्दर पायल और शब्दायमान एवं सोने से निर्मित 'किंकिणि' नामक आभूषण पहनाये गये थे। गुंजायमान भ्रमरों के रींकार से युक्त एवं सतीत्व के चिह्नस्वरूप चमेली फूलों का सिर पर अलंकार किया गया था।

[६२५]

एरिमणिच्चुण्णं मिन्नुं इरुंजिलै मुत्तं सेर्त्तित्
तिरुमणि मुलैयिन्नेट्रि च्चिरुपुरं सेरियत्तोट्टि

पुरिमणि यगत्तु ऐदा विरुनुति कोण्डु पूसि
विरिमणि वियप्प मेनि ओलिविट्टु विलंकिट्रन्ट्रे

भावार्थ—जाज्वल्यमान बड़े आकाश धनुष के समान मोती की माला को सुन्दर रत्नाभरण से भूषित स्तन कलशों पर अलंकृत किया गया था। प्रकाशमान सुगन्ध चूर्णों को पृष्ठभाग में लगाया गया था। उसी चूर्णों को मोती की माला और रत्नमालाभरण से अलंकृत वक्षस्थल में भी कोमल ऊँगलियों से लगाया गया था। शरीर पर विभूषित माणिक्यरत्न एकदम शरीर की कान्ति को अत्यधिक कान्तिमय कर दिया था।

[६२६]

अरुं कयं विसुंबि न्पाक्कुं अणिच्चिरु सिरलै अंजि
इरुंकयं तुरन्दु तिंगल् इडंकोण्डु किडन्द नोलं
नेरुंगिय मणिविलकाप्प नीण्डुलाय् प्पिरल्व सेंकेलक्
करुंकयल् अलल कण्णे एनक्करि पोक्किनारे

भावार्थ—बढ़िया तालाब में रहनेवाला सुन्दर मत्स्य अपने को पकड़ने के लिये देखनेवाले पक्षी के वास्ते डर कर, उक्त बड़े तालाब को छोड़कर चन्द्रमा के समान जो दत्ता का मुख है उसे स्थान बना लिया हो। धनुष के समान नीलरत्न सदृश जो आँखें हैं वे मीन नहीं हैं बल्कि नयन ही हैं। इस तरह देखनेवाले समझने योग्य रूप में (आँखों पर) काजल लगाया गया था।

[६२७]

पोरुन्दु पोन्तूण्कलनान्कि न्पोलिन्दु नूर्पुलवर्सेन्ना
वरुन्दियुं पुगलदलाका मरगतगणि सेय् कूडत्
तिरुन्दिलै यार्कल् कोलमिन्दिर न्निरुमित्ता र्पोल्
तिरुन्दच्चेय् ददन्पि न्नंगै तिरुविर्कोंतिलक मोत्ताल्

भावार्थ—अच्छी तरह टिक सके ऐसे सोने के चार खम्भे खड़े किये गये थे। शास्त्रज्ञान में समर्थ विद्वान् लोगों से भी तारीफ़ करने में असमर्थ एवं मरकत रत्नों से अलंकृत अलंकार मण्डप में, अलंकार कला में निपुण नारियों से मानों इन्द्र के द्वारा निर्मित किया गया हो इस तरह वर्णन

करने योग्य रूप में सुन्दर बनाने के बाद वहाँ गान्धर्वदत्ता लक्ष्मीदेवी के लिये लगाये गये तिलक के समान दिखाई देती थी।

[६२८]

मण्मकनै मुलवं विम्म परिवलै तुवैप्प वलवार्क
कण्कनैन्दिडियिन्वैबि क्कडलेन मुरसमार्प्प
विण्कनिन्दुरुकुं नीमैं वेल्वलैत्तोलि पोर्त्तालि
पण्कनिन्दुरुकुं नलयालप्पडै पोरुदु डैक्कलुट्ट्रे

भावार्थ—भेरी का शब्द, शंख ध्वनि, अन्य मुरसु नाम के वाद्य विशेष आदि की ध्वनि ये सब मेघ गर्जना की आवाज करती थीं। इन सबकी ध्वनि समुद्र लहर की ध्वनि के समान होती थी। देव लोगों को भी देखकर अपने मन में लालसा उत्पन्न होने योग्य नारी सफ़ेद चूड़ियाँ पहनी हुई थी। सगीत का रस भरे रहने से सुननेवालों का मन द्रवीभूत हो जाता था। अतः मंगलमय वीणावाद्य की सेना के साथ लड़ कर जीतने के लिये गन्धर्वदत्ता देवी स्पर्द्धा के मण्डप में आ पहुँची।

[६२९]

परन्दु ओलि उमिलुं पैंपोन्कण्णडि पताकै तोट्टि
विरिन्दिरु ल्मेयुं सेंपोन्विलक्कु वेण्मुरसु कुंभं
सुरन्द वेण्मतियैच्चून्ट्रु कतिर्कोण्डु तोगुत्त पोलुं
पोरुन्दु पोन्कदिर्पेय् कट्टै पुणर्कयल् पोन्द अन्ट्रे

भावार्थ—ज्योतिर्मय सोने का दर्पण, पताका, अंकुश, चारों तरफ प्रकाश फैलाकर अन्धेरे को हटानेवाला सोने का दीपक, सफेद मुरसु (वाद्य) पूर्णकुम्भ, अमृत उत्पन्न होनेवाले सफेद चन्द्रमा को जमीन से निकालने के कारण उससे निकलनेवाली किरणों को समेटने से उज्ज्वलित एवं सोने के समान जाज्वल्यमान चामर, एक जोड़ा सोने का मत्स्य आदि अष्टमंगल द्रव्य दत्ता के साथ लाये गये थे।

[६३०]

वेन्ट्रबनगलं पूट्ट विलंगोलि मणिसेय् सेप्पिन्
**निन्ट्रेरि पशुंपोन्मालै पोन्दवु नेरियिन्पिन्नर्

ओन्ट्रिय मणिसेय् नलयाल् पोन्दन उरुव मालै
तिन्ट्रु तेन् इसैकल्पाड त्तिरुनग र्सुडर अन्ट्रे

भावार्थ—वीणा की स्पर्द्धा में जो जीतेगा उसके गले (वक्षस्थल) में पहनाने के लिये जाज्वल्य माणिक्य करण्डक में प्रकाशमान सोने की माला पद्धति के अनुसार आ गयी थी। उसके बाद माणिक्यरत्नों से जड़ी हुई अच्छी वीणायें लायी गई थीं। शरीर की कान्ति को मालायें छिपा लेती थीं। उस माला में रींकार करनेवाले भ्रमरें गाना गा रहे थे। जिसके कारण नगर की शोभा और बढ़ गयी थी।

[६३१]

आरं तुयलवर अंतुगिल सोर्तर
वीरं पउक्कैयै मेय्वलि वीसित्
तेरै नडप्पन पोल कुरलिसन्दिनोडु
ऊरुं नडन्दन ओण्तोडि मन्ने

भावार्थ—माला हिलने लगी; सुन्दर कपड़े सरकने लगे; वीरत्व प्रदीप्त हो रहा था। हाथों को खूब हिलाकर मेंढक चलने के समान (दो फुट ऊँचाई वाला) नाटा और (तीन फुट ऊँचाई वाला) सिद्ध नाम की जाति वाले गान्धर्वदत्ता के आगे-आगे चल रहे थे।

[६३२]

वट्टच्चूरैय वर्मुलै क्कच्चिनर्
पट्टु वीक्किय अलकुल र्पलकणै
विट्ट तूणिय विलिलन् वालिनर्
ओट्टिय आयिरत्तु ओरेण्मर् मुन्निनार्

भावार्थ—सिर में घुँघराले बालोंवाली वेश्यायें, अच्छी तरह खींच कर बाँधे गये स्तन भार वाली, सफ़ेद पीताम्बर धारिणी मर्मस्थान वाली, कई बाणों से भरे उसके कवच, धनुष और बाण इन सबको हाथों लेती हुईं एक हजार आठ नारियाँ (रक्षा करनेवाली) बधाइयाँ देती हुईं आगे-आगे जा रही थीं।

[६३३]

वंबु वीक्कि वरुमुलै उल्करन्दु
अंबिन्नोय्यवर् आणुडैत्तानैयर्

पैंपोन्केडकं वालोडु पट्टुप
सेंपो पावैयै च्चेवित्तु मुन्निनार्

भावार्थ—बढ़ने वाले स्तनों को बेलट (कमर बन्धन) के द्वारा अच्छी तरह बाँधकर तथा छिपाकर , बाणों से भी वेग से जाने वाले पुरुष लोग अपने योग्य वस्त्रों को पहने हुए थे। ऐसे ये सेनानी लोग सोने के केडय और तलवार हाथ में लेकर, लाल-लाल सोने से निर्मित नकली पुतली के समान दत्ता को नमस्कार करते हुए आगे बढ़ने लगे।

[६३४]

आपौ याणै अगलुमिन्नीर् एन
वेणु क्कोलि न्मिडैन्दवरोट्रलिन्
आणै इन्ट्रु एमदे एन्ट्रणिनगर्
काणुं कादलिन्कण् नेरुक्कुट्रवे

भावार्थ—हुक्म है, यह राजा का कड़ा हुक्म है। आप लोग हट जाइये; इस तरह सेवक लोग निरीक्षकों को बाँसों की लकड़ी से हटाते समय नागरिक लोगों का कहना यह था कि हुकूमत आज हम लोगों की है। इस तरह कहने वाले शहर के नागरिक लोगों की (देखने की लालसा से) आँखें नजदीक रहने लगीं। (देखने वाले निरीक्षक लोग इकट्ठे होकर देख रहे थे।)

[६३५]

कण्णिनोडु पिरन्ददु कारिकै
वण्णं काण्डर्कु अन्ट्रो एन्ट्रु वैतवर्
विण्णुं मण्णुं विरुन्दु सेयदालोप्प
एण्णिन् एण् इडं इन्ट्रि नेरुंगिनार्

भावार्थ—हम लोग आँख के साथ जो जन्म लिये हैं वह दत्ता के लावण्य को देखने के लिये है न। इस तरह विचार कर (जो सेवक हटाते थे उन्हें गाली देकर) देवगण और मानव गण दोनों दावत के लिये मानों आये हुए हों, इस तरह तिल डालने को भी जगह न छोड़कर एक-दम मिल कर रहते थे।

[६३६]

इनंसेरा वाकि इलैयारुयिरिन्मेल् एण्णं कोलवान्
पुनं सेर्कोडि मुलले पूंपवलत्तु ल्पुक्कु प्पूत्त पोलुं
वनं सेर्तुवच्चेव्वाय् वाल्एयिरुं कण्मलरुं वनैयलाकाक्
कनंसे र्कंदिर्मुलैयुं कण्डारगल् वीट्टुलगं काणार्पोलुं

भावार्थ—अपनी जाति को (स्त्रियों से) न मिल कर, वयस्क (पुरुषों के) आत्मा पर विचार विनिमय करते हो। वन में रहने वाली चमेली फूलें सुन्दर पन्ने के अन्दर प्रवेश कर मानों विकसित हों; शोभा युक्त पन्ने के लाल मुँहवाली, प्रकाशमय चमेली फूल के सदृश दाँतों वाली, फूल सदृश आँखों वाली, हाथ से नहीं बना सकते हों ऐसे मोटे एवं प्रकाशमान स्तनों वाली दत्ता को जिन लोगों ने देख लिया है उन्हें मोक्ष पाने की इच्छा ही नहीं होती हो (जो दत्ता को देख चुके हैं उन्हेंमोक्ष की इच्छा नहीं होगी और जो मोक्ष पा चुके हों उन्हें दत्ता को देखने की इच्छा नहीं होगी। यह हो तो वह नहीं, वह हो तो यह नहीं।)

[६३७]

मीन्से र्कुलामनय मेखलैयुं वेंमुलैयुं कूट्रं कूट्रं
ऊन्सेरुयिरुय्य क्कोण्डोडि प्पोमिन्गलु रैत्तेमेंट्रु
कान्से र्कमल कोदै कालतोडर्न्दु कैविडादु अरट्रु किन्ट्र
तेन्सेर्तिरुवडिमेल् किंकिणिपोन्नावदर्के तक्कदेन्बार्

भावार्थ—"आकाश के नक्षत्र मिले हुए के समान रत्नों से भरे मेखलाभरण हो; आश्चर्य प्रदायी स्तन हो, यमराज, यमराज, अतः शरीराश्रित जीवन जिन्दा रहने के लिये भाग जाइये; हम कह चुके हैं" इस तरह सुगन्ध भरे फूलमाला के समान भूत पैरों को पकड़ कर छोड़े बिना रोनेवाले भ्रमरें कहते हैं कि यह एक फूल है। ऐसा समझ कर लगे हो; सुन्दर चरणों पर लगाये गये किंकिणी नाम का आभूषण सोना होने के लायक ही है; ऐसा कहेंगे।

[६३८]

कलवाय् प्पेयप्पट्ट मालै क्करुंगुलल्कल् कण्डार्नेय
उलवाय् प्पेयप्पट्ट वेंमदुच्चेंबु ओरिणैमेलागमीन्ट्र

पुलवाय् मणिमलै प्पोसिलंबिन् इक्कोडियै ईन्ट्रालपोलुं
कोलवानुलगुक्कु ओर्क्कूट्रु ईन्ट्रा लम्मवो कोडिय वारे

भावार्थ—शहद से भरे फूलों की माला पहनी हुई एवं काले बाल वाली, देखने वालों के दिल में प्रेमवासना पैदा हो और मधु से भरे दो करण्डक के समान कोमल छाती पर समुत्पन्न स्तन कलश हो, हंसपक्षी के मुँह के समान सुन्दर जोभ से वर्षा के समान मृदुभाषा बोलने वाली हो, सोने के पायलवाली हो ऐसी लता के समान इस दत्ता को जिस माता ने जन्म दिया है, उसने संसार के लोगों की आत्मा को छीन लेने के लिये यमराज को जन्म दिया हो; अरो माँ, यह भयंकर है।

विशेषार्थ—इस दत्ता की सुन्दरता को देखकर लोग मोहित हो जाते हैं। उसे पा तो नहीं सकते। आखिर कामवेदना के द्वारा घुल-घुल कर मर जाते हैं। यह दत्ता की सुन्दरता का काल्पनिक वर्णन है। इसका मतलब यह है कि दत्ता अत्यन्त एवं अनुपम सुन्दरी थी। इसे देखने वाले हर कोई इस पर मोहित हो जाते थे।

[६३९]

सेय्य तामरै मेलतिरु वेकोलो
वेय्य नोक्कि न्विच्चादरि येकोलो
मैयिलवानवर्तं मकले कोल्लेन्ट्रु
ऐय मुट्रुलर्तामन्न र्कूरिनार्

भावार्थ—यह देवी लाल कमल के ऊपर निवास करने वाली लक्ष्मी हो, क्रूर दृष्टिवाली विद्याधर कन्या हो अथवा निर्दोष देव कन्या हो। इस तरह फूलों की माला पहने हुए राजा लोग सन्देह के साथ कहने लगे। दत्ता की सुन्दरता राजा लोगों को मोहित कर देती थी। हर एक के दिल में इसे पाने की लालसा होने लगी।

[६४०]

वीणै वेन्ट्रिवल् वेंमुलै प्पून्तडं
आणै तोय्यवदल्लाल्यिर न्वौवुमेल्
कोणै प्पोरि लकुलिक्कुव मन्ट्रेनिल्
माण नर्द्रवं सेय्कुवं एन्मरुं

भावार्थ—इस दत्ता को वीणा की स्पर्द्धा में जीत कर इसकी काम वेदना पैदा करने वाले सुन्दर वक्षस्थल को आलिंगन कर अपार सन्तोष का अनुभव करना है। यह नहीं हो सकें तो, दूसरा कोई प्राप्त कर लें तो हम सपथ करते हैं कि उसके साथ युद्ध करेंगे। यह नहीं हो सकें तो इसे प्राप्त करने योग्य जो तप है उसे धारण करेंगे। इस तरह राजा लोग अपनी-अपनी इच्छा प्रकट करते थे। प्रत्येक व्यक्ति के दिल में दत्ता को पाने की असीम लालसा होती थी।

[६४१]

कुलिक च्चेप्पेन कोम्मै वरिमुलै
नलियुं एम्मैयेन्बार्नल्ल कण्कलाल्
वलियवांगि एयदाल् एम्मै वालकलें
मेलिय आवि विडुक्कुं मट्रेन्मरुं

भावार्थ—"लाल-लाल करण्डक के समान बड़े-बड़े लकीरों वाले स्तनकलश हम लोगों को दुख देते हैं।" इस तरह कुछ लोग कहते थे। अच्छी आँखें रूपी बाणों का हम लोगों पर जोर से छोड़ने से हमें कष्ट पहुँचाया है। इसके बाद हम लोग जो नहीं सकते। शरीर दुर्बल होगा और हम लोग मर जायेंगे इस तरह कुछ लोग प्रलाप करने लगे।

[६४२]

ऊट्टियन्न उरुक्करक्कु आरडि
नीट्टि मन्मलर्मेलवन्दु निन्नलं
काट्टिएम्मै क्कोन्ट्राय् एनक्कैतोलुदु
ओट्टै नेंजिनराय् उलल्वारकलुं

भावार्थ—तपाये गये लाख के समान लाल रङ्ग वाले चरणों को उठाकर कोमल फूलों पर रखते हुए चलते समय दत्ता की सुन्दरता दिखायी देती थी। साथ ही हम लोगों के जीवन को त्रासती थी।" कुछ लोग इस तरह कह कर हाथ जोड़ते हुए प्रणाम करते थे और बुद्धि भ्रष्ट होकर चलते-फिरते थे।

[६४३]

तिंगलमतिमुगत्त सेलुं पवलमुं सिलैयुं मुत्तुं
कोंगुण्कुललालमेल् आगत्त कोंगरुंबुं कोलिप्पिल् पोन्नुं

अंगै कुलियाररक्कीत्त सेन्तलिर्नेय् तोय्त्त पोलुं
मंगै मलरडियुं तामरैये यामरियों अणंगे एन्बार्

भावार्थ—दत्ता का मुख चन्द्रमा सरीखा था। उस मुख के अन्दर आँख, मुँह, भ्रू दाँत जो हैं वे क्रमशः मीन, पन्ना, धनुष, मोती इनकी समानता को पाते थे। मधु के समान सुगन्धित बालों वाली दत्ता के पतले बदन में रहने वाले स्तन और उसमें रहने वाली चर्म की शोभा 'कोंगे' नाम के फूल को कली और सोना इनकी समानता पाती थी। दत्ता की हथेली के लाल रंग पर घी डाले गये पत्ते को कोमलता दिखायी देती थी। दत्ता देवी के फूल सदृश चरण, कमल की उपमा पाते थे। इन सबके अन्दर अपन को दुख देने वाला वस्तु कौन सा है यह पता नहीं चलता।

[६४४]

पोन्मकरं वाय्पोलन्द मुत्तनूल्तोलयाप्पि न्पोलित्तवारुं
मिन्मकरं कूत्ताडि विलिलट्टु इरुंकुलैकोल् इलंगुमारुं
मन्मकर वेलकोडियान्मालकोल्लककाल् कोण्ड मुलैयिनालै
एन् अरंबै एन्नावारु एन्बार इमैक्कुंकण् इवैयो एन्बार्

भावार्थ—सोने से निर्मित मकर, मत्स्य, अपने मुँह से निगलने वाली मोतियों से बनायी गयी मालायें राजाओं के भुज में शोभित थीं। बिजली के समानभूत कर्णभूषण जाज्वल्यमान होता था। गौरव प्रदान करने एवं मकर मत्स्य चिह्न वाला और विजय ध्वजा से अलंकृत मन्मथ भी प्रेमपाश की बुद्धि से मूर्च्छित हो जाता था। क्योंकि दत्ता के छाती पर स्थित स्तन कलश का निचला भाग बड़ा था। उसे देखकर लोगों का कहना यह था कि इसे देखकर देव लोक की रम्भा क्यों नहीं कहा गया? इस तरह सोचने वालों का जवाब मिलता था कि दत्ता को पलक लगती है। अतः यह रम्भा नहीं है। यह पलकवाली मानव कन्या है। इसकी शोभा अवर्णनीय थी।

[६४५]

कोलवयिरं नीलरुविक्कुन्द्र, इविन्दं सेंचुट बोंलकोलैवेल मन्नर्–
नीलवयिरं वेण्मरुप्पिन्नीलक्कलिट्टिन्मेल् निरैन्दार् पोंगत्

तोलवयिरं तोन्ट्र त्तौलुवा रलुदु नैवार्तोक्को र्कोडि
वालवयिरं विकुं मडनोक्कि यार्कोलो पेरुवारेन्बार्

भावार्थ—बढ़िये हीरे (रत्न) वाली झरने जिसमें हों ऐसे छोटे पहाड़ के शिखर पर समुत्पन्न सूर्य के समान जो हिंसात्मक वेलायुध हो उसे धारण करने वाले राजा लोग थे। वे लोग हीरे जड़ित मस्तक भूषण हो, लम्बे सफ़ेद दाँतवाले हो ऐसे हाथी के ऊपर सवार होकर सुगन्ध फूलमाला पहने हुए थे और भुजदण्ड में रत्नों के प्रकाशमान आभूषण चमकते थे। ऐसे राजा लोग दत्ता को नमस्कार करते थे और रोते थे कि यहाँ इकट्ठे हुए करोड़ों शोभायमान तलबार वाले राजा लोगों पर प्रेमपूर्वक दर्शन दिखाने वाली इस दत्ता को न जाने कौन भाग्यशाली नरोत्तम प्राप्त करने वाला है ? कुछ लोग इस तरह कहते थे।

[६४६]

पैंपोन्मिमिर्कोडि पावै वनप्पेन्नुं तलिरै ईन्ट्र॰
सेंपोन्मलर्न्दिलैयार्कण्णेन्दुं सीर्मणिवण्डुलच्चिललेन्ट्र
अंबोसि लंबरर्ट्र अन्नपोलमेल्लवे ओदुंगि अंपूजं
सेंपोन्पुरिसै अडैन्दाल सेन्तामरैमेलितरु ओडोप्पाल्

भावार्थ—पुतली सदृश दत्तादेवी, लाल कमल पर निवास करनेवाली लक्ष्मीदेवी के समान थी। बिल्कुल खरे सोने के सदृश थी। सुन्दर स्वरूप कोमल पल्लव प्रदान करती थी। सोने के फूल के समान होने से वयस्क पुरुषों के काले नयनरूपी भ्रमर उनके चारों तरफ घूमते थे। उसके सुन्दर सोने का पायल झल-झल शब्द करते थे। ऐसी शोभामयी दत्ता हंसपक्षी की चाल से धीरे-धीरे चलकर बृहदाकार एवं मनोहर स्पर्द्धा मण्डप के जो सोने का परकोटा था, वहाँ आ पहुँची।

[६४७]

पट्टु इयन्ट्र कण्डत्तिरैवलैत्तुप् पन्मलर्नन्माले नाट्रि
विट्टु अगलाच्चन्दिन्निल मेलुगि मेन्मलर्गलिसदरित्तूमं
इट्टु इलैयारेत्त इमैयार् मडमगलपोलिरुन्दु नलयाल्
तोट्टंली इप् पण्णेरिन्दाल् किन्नररुं मेय्मरन्दु सोर्न्दारन्ट्रे

भावार्थ—पीताम्बर से तैयार किये गये कई तरह के परदों को डालकर, कई रंग की फूल-मालाओं को लटकाकर सुगन्ध चन्दन आदि वस्तुओं से जमीन को पोतकर, कोमल फूलों को फैलाकर, सुगन्ध धुआँ लगाकर कन्याएँ तारोफ़ करने लगीं। बिना टक लगाये जो देवलोक की देवियाँ हैं उनके समान बैठकर दत्ता अच्छी वीणा को लेकर उनके तारों को बजाने लगी। उसके सुस्वर को सुनकर किन्नर लोक के देव लोग भी अपने को भूलकर एवं तन्मय होकर सुनने लगे।

[६४८]

पुन्कांजि त्तादुतन्पुरंबुतैयलिकलियेन क्कण्डु
अन्बुकोल् मडप्पेडै अलंवन्दांगु अगलवतनै
एन्बुरुगु कुरललैकि इरुंचिरक कुलैत्तुगुत्तत्
तन्पेडैयै क्कुयिल्तलुवत्त लैवन्ददु इलवेनिल्

भावार्थ—अप्रसिद्ध कांजो नाम के फूलों से अपना पृष्ठ भाग छिप जाय (कोकिल) उसे तोता समझकर प्रेम करनेवाली मादा कोकिल वहाँ से दुख के साथ चली गई थी। अपने नाद से कोकिल अपने पंखों को हिलाकर अपनी मादा कोकिल को आलिंगन करने लगी। उस समय बसन्त काल आ गया था।

[६४९]

तण्कांजित्तादाडि त्तन्निरं करन्ददनैक्
कण्डाना मडप्पेडै किलि एनप्पोय् कैयगल
नुण्तूवि इलंचेव लनाक्कोडु विलिपयिट्टित्
तण्सिरका लपेडै तलुवत् तलैवन्द दिलवेनिल

भावार्थ—ठंडे 'कांजि' नाम के फूलों के मकरन्द गिरने लगे। मादा कोकिल अपने पति को काला रंग छिप जाने की हालत में इधर-उधर देखकर कुछ न समझ सकी। छिपी हुई उस चिड़ियाँ को तोता समझकर अलग जाने लगी। ऊँचे पंखवाला छोटा कोकिल प्रेमभाव से कई बार बुलाने के साथ अपने पंखों से मादा कोकिल को आलिंगन करने लगा। उस समय वसन्त काल धीरे से आ गया था।

[६५०]

कुरुंताल कुयिलसेवलकोलुं काजित्तादाडि
वेरुत्तांगे मटप्पेडै विलैवगन्ट्र नडप्पदनै
मरुत्तांगे सिरगुलर्न्दु मगिबाना क्कोलनेट्रि
उरुप्पिना लडिपणिय त्तलैवन्द दिलवेनिल्

भावार्थ—छोटे-छोटे पैरवाले कोयल, खूब भरे 'कांजि' फूल के गुंज में छिप जाने के कारण उसे तोता समझ कर मादा कोयल घृणा के साथ अपनी वेदना को दबाते हुए जाने लगी। इस तरह जानेवाली अपनी मादा कोयल को रोककर खुद को वे कोयल बताने के लिये अपने ऊपर पड़े हुए पत्ते को हटा दिया था। उसके लिये उसने अपने पंखों को हिलाकर सारे पत्तों को नीचे गिरा दिया था। मादा कोयल को अपना स्वरूप दिखाकर खुश होने का वसन्त काल धीरे-धीरे आने लगा।

[६५१]

तलैयविल कोदै पाडित्तानमन्दिरुप्पत्तोलि
विलैमदु क्कण्णि वीणापति एनुं पेडि वेलकण्
इलैयव लपाड वीर रेलाल्वकै तोडंगलन्ट्रेल्
वलैयवल् एलालिन्मैन्दर् पाडुक वेललैयेन्ट्राल्

भावार्थ—फूलों की माला पहनी हुई गान्धर्वदत्ता मंगलाचरण गाकर वीणा वादन के लिये जब तैयार थी। उस समय उसकी सखी 'वीणापति' नाम की कन्या कहने लगी कि वेलायुध के समान नयनवाली दत्ता गाते समय उसके बराबर वीर पुरुष आप लोगों (राजा लोगों) का काम यह है कि वीणा के स्वर लय को जानकर उसे बजाना शुरू करें। नहीं तो चूड़ियाँ पहनी हुई दत्ता के वीणा बजाने के समान आप लोग गावें; इस तरह कहने लगी।

विशेषार्थ—आपलोग दत्ता की वीणा के समान गावें अथवा दत्ता के गाने के समान वीणा बजावें।

[६५२]

वेये तिरलमेन्तोलिवल्ले कोडुं पुरुवं
वाये वलर्पवलं मान्तर्पेलिरे मामेनि

नोये मुलै सुमप्पदु एन्ट्रार्क्कु अरुगिरुन्दार्
एये इवलोरुत्ति पेडियो एन्ट्रार्
एरिमणिप्पूण् मेगलैयाल् पेडियो एन्ट्रार्

भावार्थ—(वीणापति के वचन का जवाब देने में असमर्थ राजा लोग उसकी दिल्लगी उड़ाने लगे) वे लोग उसे देखकर उसको मजबूत भुजायें क्या बाँस है ? टेढ़ा भ्रू क्या धनुष है ? मुँह क्या पन्ना है ? इसके शरीर की कान्ति आम्रवृक्ष के कोमल पत्ते हैं (लेकिन उसके स्तन दिखाई नहीं देते) इसके स्तन भार को इससे नहीं ढोने का रोग है ! इस तरह कुछ लोग सवाल उठाने लगे ! समोपस्थ कुछ का कहना यह है कि हे, हे, यह एक नपुंसक है। इस तरह सन्देह करने लगे। दूसरे का कथन है कि यह रत्नाभरण भूषित मेखलावाली दत्ता के साथ आयी हुई नपुंसक है। इस तरह आपस में बातें करने लगे।

[६५३]

बलिकोण्डु पारथपासं इवलकण्
ओलिकोण्डु उयि रुण्णं कूट्रमेन्ट्र एल्ले
कलिकोण्डु देव र्मुलै सुरन्दु वैत्तार्
इलै कोण्ड पूणिनीरेन्ट्रेलिनी सेन्दाल्
इलंगु पोन्किणकिणियाल् नक्केलिनिसेन्दाल्

भावार्थ—पत्ते के रूपवाले आभूषणों को पहने हुए हे राजा लोग, मेरी आँखें जीवन की बलि लेने के कारण हिंसा के रूप कालपाश है। यह (मैं) बाहर जोवन को खतम करनेवाला यमराज है। ब्रह्मा ने मेरे स्तन को आँखों को न दीखें इस तरह छिपाकर रखा है। ऐसे कोलाहल के साथ उत्तर देकर वीणापति परदे के अन्दर चली गयो। उसकी आवाज सुनकर, सुन्दर किंकिणि को पहनी हुई 'दत्ता' हँसतो हुई परदे के अन्दर चली गयी थो।

[६५४]

नुण्तुकिल् अगललकुल नोसित्त वेंमुलै
उण्डिवल नुसुप्पेन उरैक्कु मल्लदु
कण्डुण किला इडै क्कामवल्लियाल्
कोण्डव र्कुलात्तिडै क्कोडियि नोलिकनाल्

भावार्थ—पतली साड़ी पहनी हुई, विशाल मर्मस्थलवाली, दूसरों को दुख देने वाले स्तन कलश वाली, इसको कमर है या नहीं ऐसा कहने के सिवाय आँखों को नहीं दीखने योग्य कमरवालो, कामवल्लो सदृश दत्ता देवी वोणा को हाथ में लेकर सखियों के बीच में से वल्ली के समान चलने लगी।

[६५५]

पलिक्कोलि मणिच्चुव रेलिनि पैयवे
किलिच्चोलि निनियव र्नोक्कक्किकिणी
ओलिक्कु मिन्ट्राडव रुयिर्क लेन्न नोन्दु
अलित्तवै इरंगच्चेन्ट्रु अणैयि लेरिनाल्

भावार्थ—ज्योतिर्मयरत्न जड़ित दोवारों को परदे से छिपाया गया था। तोते को बोली बोलने वाली सखियाँ परदे का धीरे से हटाने लगी। किंकिणि शब्द वाली पायल कष्ट के साथ कह रही थी कि आज पुरुषों का जीवन चला जायगा। परन्तु उन लोगों का जीवन न जाय इस पर मानो कृपा दिखाती हो ऐसी गन्धर्व दत्ता अपने स्थान पर जाकर बैठने लगी।

[६५६]

उरैकलि त्तिलंगुवालुडट्रं कण्णिनाल्
मरैयोलि मणिच्चुव रिडैयिट् टित्तलै
इरैवलै याल्तलो यिरुप्प अत्तलैक्
करैकेलु वेलिना र्कण्णि तोन्दवे

भावार्थ—म्यान से निकाले गये तलवार के समान आँखवाली दत्ता शोभती थी। छिपाने के लिये खड़े किये गये प्रकाशमान काँच की दोवाल के मध्य में रहती थी। भीतर टेढ़ो वीणा को हाथ में लेकर बैठे रहते समय बाहर बैठे हुए रक्त मिश्रित धनुषधारी राजाओं को काम रोग सताने लगा।

[६५७]

सिलैत्तोलि सिरुनुद ट्रेय्व पावैपोल्
कलैत्तोलि पंडवेली प्पाडिनालकनिन्

तिलैप्पोलि कुरंगिन वीन्ट्र तूण्डलिर्
निलत्तिडै परवै मेय्म्मरन्दु वीलन्दवे

भावार्थ—धनुष के समान आँखवाली, दैव पुतली के सदृश रहनेवाली, संगीत कलारूपी धन्धे के रूप में वीणा बजाती हुई उसके अनुकूल गाती थी। गाने को सुनकर पत्तेवाले पेड़ झुकने लगे। खम्भे कोमल पत्ते को निकालने लगे। संगीत कला में निपुण किन्नर मिथुन (पति-पत्नी) चिड़ियायें अपने को भूलकर जमीन पर गिर पड़े।

[६५८]

करुंकोडिप्पुरुवं एरा कयलनेडुं कण्णुमाडा
अरुंकडि मिडरुं विवम्मा अणिमणि एयिरुं तोन्ट्रा
इरुंकडलपवलच्चेव्वाय् तिरुन्दिव ल्पाडिनालो
नरंबोडु वीणै नाविन्नविन्ट्रदो एन्ट्रु नैन्दार्

भावार्थ—काले और लम्बे भ्रू ललाट में चढ़े नहीं मीन नयन हिले नहीं, सुन्दर गला भी विकसित न हो, प्रकाशमान मोती समान दाँत बाहर न दीखें, ऐसी इस दत्ता ने बड़े सागर में उत्पन्न पन्ने के समान अपने लाल-लाल मुँह को खोल कर गाया था या स्नायु के साथ जो वीणा है मानों उसी ने जीभ पाकर गाया हो इस तरह सब लोग असमंजस में फँसकर चिंतित हो रहे थे।

[६५९]

इसैत्तिरुतु अनंगने अनैय नीर्मैयार
वसैत्तिर मिललादव र्वान पोन् याल् एलीई
विसैत्तव र्पाडलिन्वेरुवि प्पुल्लेलां
असिप्प पोन्ट्रु इरु विसुंबु अडैन्द एन्बवे

भावार्थ—संगीत कला में कामदेव के समान एवं अपवाद से असंबन्धित श्रेष्ठ सोने की वीणा को बजाकर उच्च स्थायो में गाते समय (पहले दत्ता के गाने को सुनकर मूर्च्छित सारी) चिड़ियाँ (इन लोगों के गानस्वर को सुनकर) डर के मारे उड़कर उन लोगों की मानों हँसी उड़ा रहो हों ऐसी दशा में आकाश में उड़ने लगीं।

[६६०]

मादर्याल् तैवर वन्द मैन्द कैक्
गोतत्ता ल्मीण्डन् केलिव किन्नरं
पोतर प्पाडिनाल् पुकुन्द पोयिन
तातल तंरिना तंगलपाडवे

भावार्थ—दत्ता के गाने की मधुर ध्वनि को सुनकर आये हुए किन्नर मिथुन, पुरुषों (राजाओं) के वीणावाद्य को सुनकर वापस चले गये थे। उनके फिर से आने के रूप में दत्ता गाने लगीं। दत्ता की वीणावाद्य को सुनकर राजा लोग वापस आने लगे। फिर राजा लोगों के गाने और वीणावाद्य को सुनकर वापस चले गये थे।

[६६१]

सुरुंबु एलुन्तिरुन्दुणुं तोगलवार्कुलल्
अरुंपेरलवटिकसै अरसर्तोट्रिपिन्
नरंबुरु तेलविलि नविन्ट्र नान्मरै
नरंपेरु नेरियवर्मलैतल् मेयिनार्

भावार्थ—भ्रमर रींकार के साथ मधु पीते थे, ऐसो फूलमाला पहनो हुई एवं लम्बो बालों वाली दत्तादेवो ने संगीत में सारे राजाओं को हरा दिया था। उसके बाद स्नायु सहित वीणा की स्पर्द्धा में चार वेदों को पढ़नेवाले ब्राह्मण लोग शामिल होने लगे।

[६६२]

तिरुमलर्क्कमलत्तंगण् तेनिनं मुरल्व दोप्प
विरिमलर्क्कोदैपाड एलालवगै वीरर्तोट्रार्
एरिमलर्पवलच्चेव्वाय् इन्नरंबुलर मैन्दर्
पुरिनरं पिसै कोल् पाडल् उडैन्दन पोन्ननाट्के

भावार्थ—सुन्दर कमल फूल के अन्दर भ्रमर गाने के समान फूल-माला पहनो हुई दत्ता वीणा बजातो थो। उस स्पर्द्धा में सारे ब्राह्मण लोग हार गये। लाल-लाल पन्ने के समान मुँहवालो दत्ता प्यारो नसे (वीणा के तार) को बजाकर उन नसों (वीणा के तार) को स्वरलय के अनुसार गाना गाने लगी। उसमें भो सारे ब्राह्मण लोग हार गये।

[६६३]

वालर क्केरिन्द कान्दलमणियरुं पनैयवाकिक्
कोल्पोरच्चिवन्द कोलक्कुविविर ल्मडन्दै वीणै
नूलपोर प्पुगुन्द नुण्णुल वणिकरुं तोलैन्दु मादो
काल्पोर क्करिन्द काम पंगय प्पलनं ओत्तार

भावार्थ—अच्छे एवं लाल वाले लाख के समान जो फूल थे उसको कली सदृश वीणा के स्नायु को बजाने से जिसकी उँगलियाँ लाल हुई ऐसी दत्ता के साथ स्पर्द्धा के लिये आये हुए यज्ञापवीतधारी वैश्यलोग भी हार जाने से, उत्तरी हवा के कारण काले पड़नेवाले कमल फूल के समान दुखित एवं मुर्झा गये थे।

[६६४]

तेनुयर्मकर वीणै त्तींजुवै इवलै वेलवान्
वानुय मंधुकै वाट्टुं वार्सिलै अनंगनागुं
ऊनुयर्नुतिकोलवेलीरोलिग इंगिलै एन्ट्रान्
कानुयर् अलंगल्मालै क्कट्टियंकार नन्ट्रे

भावार्थ—अति मधुर मकरवीणा के मीठे लय के अन्दर इसको जो जीतता है, उसे देवलोगों को ऊँची बुद्धिमत्ता को जीतनेवाला लम्बा धनुर्धारी मन्मथ ही समझा जायगा। इसलिये सिरा पर रक्त (खून) लगे वेलायुधधारो हे वीर पुरुष, इसके साथ स्पर्द्धा करने का जो कार्य है उसे छोड़ दीजियेगा। इस तरह काष्ठांगार बोलने लगा।

[६६५]

मरुमुयक्किकवर्न्द वेग माकणं अडैयप्पट्ट
निरैमति पोन्ट्र मन्नरोलिकुरैन्दुरुकि नैय
अरुपगलकलिन्द पिन्ट्रै अन्नगक्कादि नाय्कन्
सिरुवनोसिग एट्टुं जीवक सामिएन्बान्

भावार्थ—खरगोश चिह्नवाले राहु नाम के सर्प के विष वेग के कारण कम प्रकाशवाले पूर्णचन्द्र के समान राजा लोग हारकर तेजहीन होते हुए बैठे रहे। इसी में छः दिन निकल गये थे। उस समय उसी नगर के मुख्य

व्यापारी पुत्र एवं उपमातीत और सिंह सदृश जोवक नाम का एक महान् व्यक्ति आया था।

[६६६]

तम्बियुं तोलन्मारुं तानुं मट्टॅण्णिच्चूलन्दु
वेंबिय वीणेप्पोरुल् सेल्गुवं यामुं इन्ने
तुंबर प्पुत्तिसेनन्सोल्लिदु कुरवक्कॅन्नक्
कन्दुकर्कवनुं सोन्ना नवनिदु विलंबिनाने

भावार्थ—जीवन्धर कुमार ने अपने भाई और सब लोगों से मिलकर विचार किया। राजा लोग वगैरह स्पर्द्धा में हार जाने से असन्तुष्ट होकर रह रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में उस वीणा की स्पर्द्धा में शामिल होने का निश्चय किया जाय। उसके बाद अपने विचार को अपने माता-पिता से कहकर अनुमति लेने के वास्ते बुद्धिसेन नाम के व्यक्ति से सन्देश भेजा गया था। उससे कहा गया था कि जोवक दत्ता के ऊपर प्रेम के कारण शामिल नहीं हो रहे हैं। बल्कि विद्वत्ता को दिखाने के लिये जा रहे हैं। इस तरह पिताजो से कहकर अनुमति ले आना। बुद्धिसेन ने तत्काल जाकर सारा वृत्तान्त गन्धोत्कट श्रेष्ठो से कह सुनाया। उसे सुनकर श्रेष्ठी अपना विचार कहने लगे।

[६६७]

ऐयनुक्कमैन्द नीरा ररुपत्तुनालवरंबोन्
वैयगत्तमिर्द मन्नार् वाक्कमै पावै योप्पार्
एय्दिय इलमैमिक्कार् इयन्दनरेन्ट्रु पिन्नुं
कैयमै सिलैयिनर्कुक् कन्दुकन्निदुवुं कूरुं

भावार्थ—चौंसठ कला हो जीवन्धर कुमार की साथो हैं। वे सोने के नगर के अमृत सदृश हैं। साफ़ सुथरे पुतलो के समान हैं। जवानी में अति शोभनोय हैं और हमेशा साथ हो रहनेवाले हैं। इसलिये वोणा की स्पर्द्धा में शामिल होने में कोई कसूर नहीं है। इस तरह गन्धोत्कट श्रेष्ठो ने हाथ में धनुषधारो जीवक के बारे में बतलाया; साथ में यह भो बतलाया कि उसमें यह कमो है वह यह है कि—

[६६८]

मरैवल्लार्कुं उरैक्कुं पोल्दल् कोयिलुलिनन्ट्रु मालैप्
पिरैवेल्लुं नुतलिनाल् ओरपेण्कोडि वन्दु कून्दल्
उरैसेल नोकिप् पैन्ताल् ओण्मणिक्कुवलै नीट्ट
नरैवेल्लुं नागमालै नोक्कोडु पूक्कोण्डाने

भावार्थ—इस तरह गन्धोत्कट, वेदशास्त्र में समर्थ बुद्धिसेन को कह रहे थे कि उस समय अपरपक्ष के शाम की चन्द्रमा के सदृश ललाटवाली एवं लता के समानभूत एक लड़की राजमहल से आयी और अपनी सिर के बालों को खोलकर उसमें से प्रकाशमानमणि के समान कुवलै नाम के फूल को निकाल कर देने लगी। वह नागमाला नाम की स्त्री से भेजा गया था। उसे श्रेष्ठी ने हाथ में ले लिया।

[६६९]

नल्लवल्नोक्कं नाय्कन् तेर्न्दु पूंगुवलैप्पोतिन्
अल्लियुल् किडन्द ओलैतालदु सलाकै आदल्
सोल्लुं एन्ट्राय्दु कोण्डु तुगिलिकै क्कणक्कु नोक्कि
वल्लिदिन्सलाकै सुट्रि ओलैयै वासिक्किट्रान्

भावार्थ—नागमाला अच्छी महिला थी। उसकी लिखावट को जानकर गन्धोत्कट सुन्दर कुवलै नाम के फूल की पंखुड़ी में लिखे हुए समाचार को लोहे के कीले में पिरो कर पढ़ने लगे।

[६७०]

नंपनै नगरिन्नीक्कि च्चेमत्ताल् वैक्क तोयुल्
सेंपोन्पोल् पेरिदुं सेन्दु मेकुत्तिडल् उट्रु निन्ट्रान्
वेंबिनान्कारि युण्डि क्कडवुलिन्कनन्ट्रु वेन्दन्
इन्बरिन्ट्रुनक्कु च्चोन्ना निदुपट्ट दडिकलेन्ट्राल्

भावार्थ—उसमें लिखी हुई बात यह थी कि जीवक को शहर से अलग भेजकर एक सुरक्षित स्थान पर रखना है। क्योंकि काष्ठांगार अग्नि में तपे हुए सोने के समान अत्यधिक गुस्से के साथ कुमार को खतम करने में उतारू हुआ है। वह विष को पीये हुए शिव के समान गुस्सा

कर जल रहा है। यहाँ पर इस समय मैंने जो कहा है वह होने की सम्भावना है। इस तरह यह बात उसमें लिखी हुई थी।

[६७१]

ओलैयै अवट्कु नोट्टिओण्मणिक्कुलैयुं मुत्तुं
मालैयुं पडुसोल्लोट्टि वंमेन मरैय नलिक
वेलैनेय् पेय्द तिंगल् विरविय पेयरिनार्कुं
मेलैनालपट्टदोन्ट्रु विलम्बुवलकेलिदेन्ट्रान्

भावार्थ—उस पत्र को उसो के पास देकर उसको रत्नों से जड़ित आभूषण, मोतो आदि को छिपा कर दिया। उसके बाद उससे कहा गया था कि शाम के समय होनेवाले समाचार को जानकर आना और कहना। इस तरह कहकर उसे भेज दिया गया। उसके बाद गन्धोत्कट ने घो से याग (यज्ञ) करनेवाले बुद्धिसेन से कहा कि पहले जो सम्भव हुआ था उसे कहता हूँ, सुनो।

[६७२]

कडि यरंगणिन्दु मुट्टर् कडलिक लन्दनैय दोप्प
नडैयरि पुलवरीण्डि नाडकं नयन्दु काण्ब्रान्
कुडैयुडै यवनोडेण्णिज्जंवकन्कोणमिन्नेन्नत्
तोडैयलसूल् वेलिनानुं तोलरुं काणच्चेन्ट्रार्

भावार्थ—एक सुन्दर नाटक मंच तैयार कर पुराने राजमापुर में समुद्र ही उठकर आ गया हो ऐसो नाटक विधि के जानकार लोग मिलकर इकट्ठे हुए थे। इस नाटक को तैयार करने के लिये राजा के साथ मिले और परामर्श कर जोवक को बुलाने के लिये आदमो भेजे। उस बात को सुनकर फूलमाला पहने हुए एवं वेलायुधधारो जोवक और साथो सब लोग देखने के वास्ते गये।

[६७३]

निलमरिन्दणिग ऐयन् जीवकन्नेरियि नेन्न
नलंनुदल् पट्टंकट्टि नगैमुडि क्कोदै सूट्टि
अलर्मुलै क्कुरुधिच्चान्दुं आरमुं पूणुंसेत्तिक्
कुलविय कुरुतिप्पट्टिन्कलै नलं कोलुत्ति यिट्टान्

भावार्थ—कला कुशल जीवक मंच की हालत जानकर तदनुसार जैसा शास्त्र है वैसा मंच पर खेलने आयी हुई महिला का अलंकार करें। इस तरह नाटक लक्षण (कला) के जानकार लोग कहने लगे। उस कुमार ने भी नायिका के प्रकाशमान ललाट पर पट्टा लगा कर और जाज्वल्यमान बालों पर फूलमाला को अलंकृत कर, वृद्धिगत होनेवाले स्तनों पर रक्त समान कुंकुम के गाडे को लगाकर, मोती माला आदि आभरणों को अच्छे ढंग से अलंकृत कर, शोभायमान पीताम्बर को बाँधकर सुन्दरता को और भी प्रकाशित किया था।

[६७४]

तिरुविले सोरिन्दु मिन्नुं कण्डलं सॅपोन् ओलै
उरुवुं कोलमदियं एन्न ओलिमुगं सुडर आविक
परियगं सिलम्बु सॅपोन् किंकिण पादं सेर्त्ति
अरिवैयै अरंबै नाण अणिन्दनन् अनंग नन्नान्

भावार्थ—इन्द्र धनुष के समान प्रकाश को मानों निगलकर जाज्वल्यमान होता हुआ कुण्डल और सोने के आभूषणों से सुन्दर चन्द्रसा शोभायमान मुख और भी प्रकाशमान होने के रूप में सजाकर पायल और किंकिणी आदि को पैर में अलंकृत कर देवरम्भा लज्जित हो, इस तरह कामदेव सदृश जीवन्धर कुमार ने सजावट की थी।

[६७५]

तोलपोलि मुलवु यावुं तुलै पयिल् कुललुं एंग
क्कार्कोसि कोंबु पोल प्पोन्दु कैत्तलंगकाट्टि
मेर्पड वेरुविनोक्किक्तानैयै विट्टिटटोलिकत्
तोट्रिनान्मुखंसेय् कोलं तुलक्किनान्मनत्तै एल्लाम्

भावार्थ—चर्म से बनाये गये वाद्यविशेष बजने लगे, नाट्यरानी ने परदे को निकालकर हिलनेवाली फूल की लता के समान बाहर आकर सबको नमस्कार किया। ऊपर लज्जा से देखा। अपने सुन्दर मुख को सब लोगों को दिखाया। अपनी सुन्दरता के कारण सभी लोगों के दिल को चिन्तित कर दिया।

[६७६]

तेलमट्टुत्तुवलै मालै तेनोडु तुलिप्प त्तिगल्
ऊल्नट्ट कुवलै पोलुं उरुवक्कण् वेरुवियाड
विण्विट्टु क्कडवुल्वील नुडंगिन पुरुवं नेंजम्
पण्विट्ट दिरुन्दु काणुं पन्मणिक्कललिनाक्कें

भावार्थ—नाट्यरानी वेग से नाचती थी। पहनी हुई फूल की माला पर बैठे हुए भ्रमर मधु के साथ इधर-उधर गिरने लगे। चन्द्रमा के साथ दोस्ती करनेवाली 'कुवलै' नाम के फूल के समान सुन्दर आँखें बदलकर विक्षेप करने लगी। आकाश से देवतागण देखने के वास्ते जमीन पर आ गये। उसके भ्रूवें हिलने लगे। वहाँ पर बैठे हुए लोगों के दिल चंचल होने लगे।

[६७७]

सेंगतिर्च्चिलम्बु सेंपोन् किंकिणि सिलम्ब क्कोदै
पोंगप्पो न्नोलै वट्टं पोलिन्दु मिन्नुगुप्पप्पोर्त्त
कुंकुमच्चान्दुवेयंदु कुण्डलं तिरुविल्वोस
अंकदिरार मिन्न अरिवै कूत्ताडु किन्ट्राल्

भावार्थ—किरणों से प्रकाशमान किंकिणी आदि शब्दायमान हो रहे थे। मालायें पलट रही थीं। सोने से निर्मित गोलाकार विद्युत् के समान कर्णभूषण जाज्वल्यमान थे। शरीर पर लगाये गये कुंकुम का गाड़ा कान्ति को फैला रहे थे। सुन्दर मेखली की मालायें जाज्वल्यमान हो रहे थे। ऐसी हालत में नाट्यरानी ने नाट्य करना शुरू किया।

[६७८]

मरुंगुलुं ओन्ट्रु ताय्क्कं ओरुमगलाद लोन्दुं
इरुंबिनालियन्ट्र नेंजत्तु इवर्कलो इरुन्दु काण्ग
अरंगिन्मे लिवलैत्तन्द ताय्कोलो कयत्ति अन्ट्रेल्
सुरुम्बुसूल् कण्णिसूट्टि यवर्कोलो कयव सोल्लीर्

भावार्थ—कुछ लोग कहने लगे कि कमर एक ही है (इस तरह खेलने से यदि यह टूट जायगी तो दूसरी नहीं है) माता को इकलौती

लड़की है। इसे जानते हुए भी (बिना करुणा के) लोहे के दिलवाले ये भयंकर लोग आखिर तक रहकर देखें! इस तरह ये लोग खेल के आखिर तक रहकर इस नाट्य के मंच पर शरीर दुबले-पतले होने तक नाट्य करने भेजी गयी माँ सचमुच निर्दाक्षिण्यवाली होगी। अथवा भ्रमरों से गुंजायमान फूलों को बालों में लगाये गये व्यक्ति क्या भयंकर आदमी नहीं है? इनमें भयंकर व्यक्ति कौन हैं? कहियेगा?

[६७९]

अगिलार्पुगैयलाल् सान्तणियाल् पूच्चाच्चेल्लाल् सेल्लिन्
पगले पगैवलर्त्त पावैसिरुनुगप्पोन्ट्रुण्डे पावं
इगलेन्दु इलमुलैमे ल्सान्देलुदि मुत्तण्डि पूवुं सूट्ट
मुगिलेन्दु मिन्मरुंगुल् मोय् कुलल्तायिदुकण्ड मुल्लेपावं

भावार्थ—यह लड़की 'अखिल' नाम के वस्तु की धुआँ के सिवाय चन्दन को लेपती नहीं। फूलों के पास भी नहीं जाती। यदि जाती तो (चन्दन और फूल इन दोनों को वहन करने) खुल्लं खुल्ला स्तन भार को वहन करती इस लड़की की छोटी कमर है या नहीं। यह सन्देह होता है। हन्त पाप! इसका स्वभाव इस तरह रहता है। इसके मनोहर स्तनों पर चन्दन का लेपन कर मोती का हार पहना कर, फूल को अलंकृत कर विद्युत के समान कमर पर काले मेघ सदृश बालों वाली इस नारी को माँ इस भयंकर कृत्य को देख कर भी जीवित है! हन्त पाप! इस तरह कुछ लोग करुणा दिखाने लगे।

[६८०]

तेन्तामं सेम्पवल त्तामं सेंपोन्नेरितामं मिन्नुत्तिरल्तामंगल्
तां तां एनत्तालन्द पोन्मेरवलैत्ताम वरंगिन्मेलत्तार्मुल्लैप्
पूंताम क्कों पाडक्कण्डारेल्लां पुनमयिले अन्नमे पोन्नंकोंपे
आं तामरै मगले अल्ललायि नमरकलेन्पारुं आयिनारे

भावार्थ—यह राणी, मधु गिरने वाली फूलों की माला हो! लाल-लाल पन्ने की माला हो! एकदम लाल सोने की माला हो। शोभायमान रत्न माला हो। इस तरह देखने वाले आश्चर्य के साथ कहने योग्य थी। सोने की मेखलाभरण वाली फूल की माला वाली जो नाट्य राणियाँ

हैं उन (नटन पूरा होने के बाद गाने वालों) से भरे मंच पर चमेली फूलों की माला पहनी हुई और फूल गुच्छे के निचले भाग के समान (अनंग माला) जो नाट्य राणी है उसके नाट्य को देखने वाले सबके सब कह उठते हैं कि क्या यह मोरिणी है ? अथवा हंस पक्षिणी है ? सोने की छड़ी है। लक्ष्मी देवी है ? नहीं तो देवकन्या है ? इस तरह कुछ लोग काम वेदना के साथ कहने लगे !

[६८१]

कोडियार्कुलिर्मुत्तं सूट्टिवैत्ता कोलवाने कुंकुमच्चेराट्टिनार्गल्
अडिसान्दुं वालवारै अमुलैकल्तामे आलीत्तिडु मेलतामे
अलित्तिडु केन्ट्रु
ओडियाद मात्तिरैयालुण्डेनुसुप्पु इरुन्दु कण्पारु मुलरे सेंगण-
नेडियान्मगन्सिलैयुं अंबु वैत्त निलल्मतियो वाल्मुगमोनोक्कि-
क्काणीर्

भावार्थ—अपन लोगों को मार डालने के लिये दुष्ट लोगों को इस नर्तकी का ठण्डे मोतियों से अलंकार किया है। कुंकुम के गाड़े लगाये हैं। अपने अधीन में जीवनयापन करने वालों को संसार नाश करना चाहें तो साधारण वस्तु भी हम लोगों के नाशकारी हो सकते हैं ऐसा विचार कर न टूटने के रूप में कमर थी। इसे ऐसे ही रहने दें इस पाप कार्य को आँखों से देखने वाले भी मौजूद हैं, यह आश्चर्य की बात है। (इस तरह नर्तकी के बारे में कुछ लोग कहते हैं) लाल आँख वाले विष्णु के पुत्र कामदेव अपने धनुष को चढ़ाकर उस पर बाण लगाते हुए छोड़े गये प्रकाशमान चन्द्र हो ! नहीं तो शोभायमान मेघ हो ! इस नर्तकी को अच्छी तरह दिल लगाकर देखना है।

[६८२]

नेय्परुकि नीण्ड इरुलकट्टैपोलुं कुलर्कट्टै कण्डु निरैकलंगुवार्
मैपरुगि नीण्ड मतर्त्तकुण्कण्वालेरु पेट्रु नैवार् मानागत्तिन्
पैपरुगुं अल्कुलिलयं पट्रिप्पत नमैत्त पावैनिरुत्तं नोक्कि
मैय्युरुगि वकण्णुरुगि नॅंजुरुकिक्काम वेयिलवेण्णेयप् पावेपोल्
मेलिकिन्ट्रारे

भावार्थ—घी लगा कर लम्बी एवं बढ़ी बालों को अंधकार के समान काला देख कर मन में चंचल होने से, काजल लगाये गये लम्बी आँख रूपी तलवार से काटने के कारण दुखित होकर, बडे सर्प के फणा के समान जो मर्मस्थान है उसे धारण करने वाली नारी, गाने के समान चरण लय लगा कर नाट्य करने वाली नायिका के नाटक को देखकर शरीर गल जाता है, आँखें गल जाती हैं; दिल ढीला होकर कामरूपी धूप में तपाये गये मक्खन के समान देखने वाले ढीले हो गये थे।

[६८३]

आडवर्मनंग लेन्नुं अरेगिन्मेलनंगमालै
आडिना न्मुरुव लेन्नुं तोलियै ऐयन्काण
ओडरि नेडुग णेन्नुंओलैयै एलुदिविट्टाल्
बाडिय वारुं नोयुं उरैत्तुवार्कोडिय नाले

भावार्थ—अनंगमालै पुरुष लोगों के मनरूपो मंच पर नाट्य करने लगी। वह लम्बी लता के समान थी। खुद मुरझायो गयी एवं उसका कारण जो बीमार थे उसे भी बतलायी थी। उसने लम्बो नयन रूपो पत्र में लिख कर उसे मुस्कुराहट नाम की सखो को देकर जीवक के नजर में भेजा था।

[६८४]

वलमलरणियप्पेट्रेन्वालवलै तिरुत्तप्पेट्रेन्
कलनेनक्करैयुं अलगुलकैयिनालतोण्डप्पेट्रेन्
इलमुलै सुमन्दु पेट्र वरुत्तमु मिन्ट्रु तोर्त्तेन्
उलमलि मगलि रेय्दुं इन्बमु मिन्ट्रु पेट्रेन्

भावार्थ—अनंगमाला कहतो है कि मैं (जोवक से) शोभायमान फूलों से अलंकृत की गई हूँ। हाथ के कंकण भो लगाई गई हूँ। झल-झल शब्द करने वालो मेखलाभरण अलंकृत किया गया था। सुन्दर मर्मस्थान साड़ो आदि से अलंकृत करते समय हाथ से स्पर्श को गई हूँ। चन्दन और कुंकुम आदि के गाड़े को लगाते समय जीवक के स्पर्श सुख से स्तनभार के कष्ट को भूल कर आनन्द में डूबी थी। इस काम मोह से शरीर कृश होने पर जो सुख प्राप्त होना था वह सब प्राप्त कर लो हूँ। यह सब कामवासना का प्रलाप है।

[६८५]

एन्ड्रवलरसन्तन्नै नोक्कलनिवन्कण् आवं
सेन्ट्मै कुरिप्पिल् तेरिक्कूत्तेला मिरन्दपिन्ट्रै
निन्ट्रदु मनत्तुलसेट्रं नीगित्तन्कोयिलपुक्कान्
मन्ट्रलमंडन्दै तन्नै वलितिर्कोण्डोलि कोल् तारान्

भावार्थ—वह अनंगमाला कामवेदना से इस तरह अपने मन में चिन्तित रहती थी। परन्तु राजा काष्ठांगार वहाँ बैठा हुआ था। उसने ख्याल नहीं किया था। उसका ध्यान जीवक की ओर हो था। धूर्त काष्ठांगार का विचार यह था कि अनंगमाला की इच्छा जीवक की ओर है इस बात को उसने अनंगमाला की चेष्टा से जान लिया था। उसने अपने मन में सोचा कि नाट्य खतम होने के बाद किसी न किसो तरह से जीवक को मार डालना है। इस तरह जीवक पर गुस्सा करता था। ऐसी हालत में विवाह योग्य अनंगमाला को उसकी इच्छा के बिना मंच पर से जबर्दस्ती खींच कर अपने राजमहल ले गया था।

[६८६]

तेनुडैन्तोलुगुं सेव्वित्तामरैप्पोदु पुल्लि
ऊनुडै उरुवक्काक्कै इदलुक्क कुडैन्दिट्टांगुक्
कानुडै मालै तन्नै क्कट्टियंकारन्सूलन्दु
तानुडै मुल्लै एल्लां तानुकप्परित्तिट्टाने

भावार्थ—काष्ठांगार अनंगमाला के पास गया और उसे हाथ से पकड़ कर खींचा। काष्ठांगार कैसा था ? वह वृद्ध कौआ के समान था। कौआ कैसा था ? पंखुड़ी खुले हुए एवं मधु गिरने वाले सुन्दर कमल फूल को आलिंगित, खून से शुष्क, पतला, वृद्ध, शक्तिहीन था। अनंगमाला फूल के समान मृदुल थी। उसकी हालत ऐसी हुई कि पंखुड़ियाँ गिर जाने से शोभा रहित थी। परन्तु सुगन्ध द्रव्य लगे रहने से सुवास आ रहा था।

[६८७]

कलैयिनिल्कन्नि नीक्किक्तामरै क्कण्गल् तम्माल्
मुलैयिनिन् एलुदिच्चेव्वाय् पयन्दतेन्परुगि मुल्कुं

सिलैवलाय् पुल्लु नंबि सीवक सामि एन्ट्रु
अलैकडल् पुलंबिन् ओवा तरट्रु माल् अणंगिनन्नाल्

भावार्थ—देवांगना सदृश अनंगमाला जीवन्धर कुमार को याद कर उनके विरह से दुखित होती हुई रोने लगी। मेखलाभरण को हटा कर, कमल फूल के समान आँखों से स्तन कलशों पर लिखकर, लाल मुँह से निकलने वाले मधु को पीकर कहने लगी कि हे धनुर्विद्या में निपुण! हे जीवक स्वामी! हे महानुभाव! मुझे आलिंगन करो; ऐसा कह कर समुद्र लहर की आवाज के समान बराबर कहती रही।

[६८८]

पिरन्नलं अरट्क्केट्टु पोडिनाल् कनिन्द काम
नरुमल रणिन्द मालै नाट्रक्कुओर्नान्गु कादं
उरनडन्तरितलिल्लान् ओण्तोडिक्कुरु किप्पिन्नुं
तिरनल तमक्कुच्चेप्पुं तीयुमिलन्तिलंगु वेलान्

भावार्थ—अग्नि को वमन करने वाला, वेलायुधधारी काष्ठांगार, दूसरे व्यक्ति के महत्त्व को कहकर रोने वाली अनंगमाला के रुदन को सुनकर अपने गौरव पर अडिग रहा। कामरूपी अच्छे फूल से तैयार किये गये माला के सुगन्ध से अति दूर रहने वाला यह राजा, प्रकाशमान एवं शोभायुक्त उसे याद कर अपने अमात्य से अयोग्य वचनों को कहने लगा।

[६८९]

विलंगलन्न वेगवेलं नान्गु वेल्लुं आट्रलन्
कलंकलन्दु इलंगुमार्पिन् कन्दुकन्मगनेन
नलं कलन्दु उरैक्कुमाल् इन्नगर्क्कु मन्ननो
उलं कलन्द तोलिनोरु रैमिन्नीवि रेन्नवे

भावार्थ—वह कुमार, आभरणों से भूषित वक्ष स्थलवाला एवं गन्धोत्कट श्रेष्ठी का पुत्र जीवक है। पर्वत के समान वेग से जाने वाले चार दिशा रूपी हाथियों को जीतने वाला है। इस बात को सारी दुनियाँ महत्त्व के साथ कहती है। परन्तु पत्थर के खम्भे के समान शक्तिशाली आप ही बताइये कि क्या वह इस नगर का राजा है?

[६९०]

मट्टलन्द तारिनान् इम्मानगर्क्कुल् आयिरर्
तोट्टेडुक्क लाउलं ओर्तोलिनेन्दि आडिनान्
ओट्टिनागं ओरिरण्डेडु वकलाद कल्लिनै
विट्टलर्न्द पोदुपोल एन्दलेन्दि नींगिनान्

भावार्थ—काष्ठांगार का जो प्रश्न था उसके उत्तर में अमात्य गण बोलने लगे कि मधु भरे माला पहने हुए इस कुमार ने इस बड़े नगर में हजारों लोगों से उठाने में अशक्य पत्थर की गोल (शिला) को आसानी से उठा कर अपने कन्धे में रख कर नर्तन किया था। हाथियों से उठाने में अशक्य पत्थर को चेलेंज देकर विकसित कमल फूल को उठाने समान आसानी से उठा कर फेंका था। इसलिये कुमार एक मात्र वीर हैं, यह बात स्वीकार करने की है।

[६९१]

वेंजिलैयिन्वेडर्वेल्लं अप्पुमारि तूवलिन्
एंजलिटि नंपडै इरुं मुरै उडैन्दपिन्
मंजुसूल् कर्णमलै पोलिन्दुमा निरै पेयर्त्तु
अंजिलो.दे यार्पुनैन्द सेंजोल मालै सूडिनान्

भावार्थ—अमात्य लोग और भी कहने लगे कि व्याध लोग भयंकर धनुषों से बाढ के समान बाणों को वर्षा करने लगे। इसलिये अपनी सेना दो बार हार गई थी। कुमार मेघाच्छन्न वर्षा के समान बाणों को वर्षा कर व्याधों से बलात्कार के साथ ले गये। गायों के झुंड का छुड़ा लाये। यह साधारण बात नहीं है। उसी कारण से उसने सुन्दर बालों वाली नारियों की ख्याति रूपी माला को पहन लिया था।

[६९२]

तींपयरियन्ट्र सोरु सेप्पिन् आयिरंमिटा
नींगला नरुनेय् वेल्लं कन्नलायिरं कुडं
एन्दुवित्तु नामिसैय वन्दु तन्दु नोक्कि नान्
आंगुनां पसित्तसैन्द कालैअन्ट्र अण्णले

भावार्थ—इसके अलावा दयामूर्त्ति उस राजकुमार ने जब हम लोग भूखे रहे तब दालमिश्रित चावल, सुगन्ध भरे घी मिश्रित भोजन, हजारों घड़े गन्ने का रस ये सब मँगा कर अपन लोगों की भूख मिटायी थी। वे ऐसे महान व्यक्ति हैं। इसमें कोई शक नहीं है।

[६९३]

इन्न नेन्न इन्बुरानिलन्दनन् अरसेन
एन्नै वौवुं वायिल्दान एन्नुं सूच्चि तन्नुलान्
अन्नदाल् अरिल् तप अरिन्दु कूत्ति कूरिनाल्
इन्नदाल् पडैयमैत्तु एलुमिनेन्ट्रु इयंबिनान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार महत्व के पात्र हैं! ऐसी बात को काष्ठांगार अमात्यों के मुँह से सुनकर सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह कहने लगा कि क्या मैं अपने राज्य में भ्रष्ट हूँ। इस तरह मन में संक्लेश परिणाम के साथ कुमार को मार डालने का रास्ता ढूँढने लगा। और षड्यन्त्र में उतरने लगा। इस बात का नागमाला को ज्ञान हुआ। इसलिये उसने गन्धोत्कट को समाचार भेजा। इन सब बातों को जान कर गन्धोत्कट कहने लगा कि अकेले मत जाना बल्कि सेना लेकर जाना।

[६९४]

तातैतानुरैत्तेललां तन्नुयित्तौलन्कूरक्
कोदैमुत्तणिन्द मार्बन् कूरेयिरिलंग नक्कां
एतमोन्ट्रिल्लै च्चेरुं एन्ट्लुं इलंगु वाट्कैप्
पोतुलां कण्णि मैन्दर् पोर्पुलिक्कुलात्तिन्सूलन्दार्

भावार्थ—पिता जो गन्धोत्कट श्रेष्ठी थे, उनके द्वारा जो कहा गया था उन सारी बातों को प्रियमित्र बुद्धिसेन ने आकर कुमार से कह दिया। फूलों की माला और मोती की माला पहना हुआ जीवक हँसने लगा। फिर बोलने लगा कि पिताजी ने जो बातें कही हैं उसमें किसी तरह की हानि नहीं है। अतः उनसे कहे अनुसार किया जाय। इस तरह कहने के बाद हाथ में तलवार लिये हुए वीर लोग युद्ध सन्नद्ध होकर बाघ के झुंड के समान कुमार को घेर कर चलने लगे।

[६९५]

कण्णुदलक डवुलसीर क्कनलेरि कुलित्त कामन्
मण्मिसैत्तोन्ट्रि यन्न वकै नलंउडैय कालै
तेण्मणियार मार्बन तिरुनुतर्मकलिनैंजत्
तुलिनरै परुगुं वण्तारुरुवमै निरुविन् मिक्कान्

भावार्थ—शिवजी के ललाट के नेत्रों से जला दिया गया कामदेव, फिर से भूलोक में उत्पन्न हुआ हो कुमार ऐसा वक्षस्थल वाला था। विशाल ललाटवाली नारी मणियों के दिल में स्थान प्राप्त किया हुआ था। सुन्दर फूल की माला पहना हुआ था। शोभा हो जिसका धन हो ऐसा सम्पत्तिशाली था।

[६९६]

करुनेरि पयिन्ट्र कुंजिक्कारगि ल्कमलवूट्टि
वरिनिर वण्णमालै वलंपट मिलैच्चि वालार्
तिरुनिर मुगत्तिर्कर्पच्चेंपोना रोलैसेंत्ति
एरिनिर क्कुलैयोर्काति क्किरुलर च्चुडर वैत्तान्

भावार्थ—काला एवं सुगन्ध घी लगा कर और 'अगिर' नाम के की धुआँ देकर, गाने वाले भ्रमरों का जो काला रंग है, उसी के समान रंगवाली माला को उन बालों में लगा लिया था। शोभायमान एवं प्रकाशमान सुन्दर रंगवाले चेहरे के अनुकूल लाल-लाल सोने से बनाया हुआ एक पत्ते को एक कान में लगा लिया था। दूसरे कान में लाल रंग वाले 'मकर' नाम के आभूषण को अन्धकार हटाने के लिये पहन लिया था।

[६९७]

तेन्वरैप्पोधियिल्तन्द सन्दन त्तेय्वै तेंगोल्
मन्वरै यगलत्तप्पि वलंपुरि आरं तांगि
मिन्विरित्तनैय तोत्तु विलैवरंबरियलागा
इन्नुरै क्कलिगं एप मरुंगिन्नु क्केलुति वैत्तान्

भावार्थ—तमिलनाडु की दक्षिण सीमा को दियमले (पोदिय पहाड़)

है। वहाँ पर चन्दन के पेड़ ज्यादा हैं। उसकी लकड़ो से निकला हुआ चन्दन के गाडे को पर्वत के समान छाती पर लगाया था। वर्चपुरी नाम के शंख से मिलने वाली मोतीमाला को पहन लिया था। विद्युत् को मानो चारों तरफ फैलाया गया हो ऐसे अमूल्य सफ़ेद दूध के समान जो वस्त्र हैं उसे पहन लिया था।

[६९८]

इरुंबर वकलुवि एगिनं इरुलर वडिवकप्पट्ट
अरुंपेर लसुरियै अंपूग कच्चिवडै क्कोत्तु वांगिप्
पेरुन्दगै क्कुरिसि लकोण्डु पेरुवलं सुडर वोक्कित्
तिरुंतिलै मगलिर्वेकुं तेविलंगुमरन्नोत्तान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार तामिल प्रान्त को नारियों की देवता जो षण्मुख (शिव का पुत्र) है उसी के समान सुन्दर दीखने लगा। जोवक और कैसा था ? लोहे को तपाकर तैयार किये गये एवं प्राप्त करने में अशक्य तलवार को हाथ से उठा कर कई जीत के कारणभूत उसे कमर में बाँध कर म्यान में रख लिया।

[६९९]

बरैविलित्तिमैप्पतोक्कुं वालोलि आर मार्पिन्
विरैवलि त्तिलैय रेल्लां विलुमणिक्कलन्गलतांगि
नुरैकिलित्तनैय नोय्मैनुण तुगिल मरुंगिलसेर्त्ति
उरै किलित्तुणरु मोप्पिनोवियप्पावै योत्तार्

भावार्थ—सभी जवान लोग पहाड़ अपने आँखें खोल कर मानो पलक लगाता हो ऐसे प्रकाशमान एवं मोतीमाला को पहने हुए वक्षस्थल में सुगन्धमय द्रव्यों को लगाये थे। महत्वपूर्ण रत्नाभरणों को पहन लिया था। डिंडीर को मानो तोड़े गये हों ऐसे सफेद वस्त्रों को पहन लिया था। वे ऐसे दीखने लगे कि वचनों से कहने में असमर्थ एवं दिल से ही स्मरण करने योग्य पुतली के समान हो।

[७००]

अरक्कुनोरेरियप्पट् अंजनक्कुन्ट्रं अन्न
तिरुक्किलरोडै सूलंद संपुकर् नेट्रित्तागि

उरुक्कि ऊनुण्णुं वेगत्तुरुपुलि अनैय नागं
अरुक्कनोर्कुन्ट्रं सेन्तांगु अण्णलतानेरिनाने

भावार्थ—बाघ के समान वीर एवं शक्तिशाली जीवन्धर कुमार हाथी के ऊपर बैठा था। वह हाथी कैसा था? काले पहाड़ के समान था। और कैसा था? मुख पर अलंकृत था, तथा बिन्दोवाला ललाट जिसका हो ऐसा था।

[७०१]

विडुकणै विसैयिन् वेय्यविलंगोलि इवुलित्तिण्तेर्
कडुनडै क्कवरि नेट्रिक्कलियल् पुरविकाय्न्दु
वडिनुनै ओलिरुमालै वाट्पडै मरवर् सूल
अडुतिरैच्चंगं आर्प अणिनगर् मुन्निनाने

भावार्थ—धनुष से निकले हुए बाण के समान, वेग से जानेवाले एवं प्रकाशमान घोड़े लगाये गये रथ और अतिवेग से हवा के समान दौड़नेवाले घोड़े, अग्नि में तपाये गये तीक्ष्ण तलवार से शोभित, माला पहने हुए पदातिगण सबके सब कुमार को घेरे हुए थे। किनारे पर लगनेवाले लहर से युक्त समुद्र से मिले शंखवाद्य की ध्वनि के साथ कुमार सुन्दर नगर के वीणा मण्डप जा पहुँचा।

[७०२]

नोट्रनल् मडन्दै नल्याल्तोन्ट्रलुक्केन्ट्रु निर्पार
नोट्रनल् नंगैमैन्दन् इलनलन् नुगर्तंकेन्बार
कोलतोडि मगलिर्सेपोन् कौदेयुं कुलैयुमिन्न
एट्रेन सोल्लि निर्पार् एंगणुं आयिनारे

भावार्थ—इस तरह उस कुमार के मण्डप में आ जाने के बाद, चूड़ियाँ पहनी हुई कुछ नारियाँ अपनी माला एवं मकर नाम का आभूषण दिखाने के रूप में आकर जीवक से गान्धर्वदत्ता वीणावाद्य में हार गयी, ऐसा कहकर खड़ी रहती थीं। कुछ नारियाँ इस तरह कहने लगी कि जीवक के यौवन सुख को भोगने के लिये ही दत्ता अपने आप हारी थी। इस तरह कहनेवाले लोग जैसे-जैसे कह सकते हैं वैसे-वैसे कहनेवाले ज्यादा थे।

[७०३]

सुरानिरक्कोडुंकुलै सुलन्ट्रेत्तु अलैत्तर
अरामलर्त्तेरियलान् अलन्ट्रुनोक्कि ऐयेनप्
पोरामन प्पोलिवेंनु मणिक्कै मत्तिकैयिनाल्
अराविवन्दु तोन्ट्रिनान् अनंगनन्न अण्णले

भावार्थ—मकरमत्स्य स्वरूप एवं सुन्दर रंगवाला टेढ़ा कर्णभूषण जिसका हिलता था तथा सुवास फूलमाला पहना हुआ काष्ठांगार गुस्से के साथ कुमार को देखकर आश्चर्य करने लगा। उसके द्वेषरूप दिल को अपने सुन्दर स्वरूपरूपी एवं माणिक्य घोड़े के बेंत से मारकर, कामदेव समान जो जीवन्धर कुमार था वह आकर सामने खड़ा हुआ था।

[७०४]

कुनिकोलपाक वेणमति कूरिरुंबु तान् उरी इप्
पनि कोल्माल् वरैयेन प्पडुमदक्कलिरु इरीइ
इनितिलिन्दिलैयरेत्त इन्नगिल् कोलुं पुगै
मुनिय उण्ड कुंजियान् मुरण् कोल्मांड मुन्निनान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार वीणा स्पर्द्धा के मण्डप पर जा पहुँचा। वह कैसा था ? टेढ़े सफ़ेद चन्द्रमा के समान तीक्ष्ण अंकुश को दबाकर, मदजल गिरनेवाले एवं पर्वत के समान हाथो को खड़ाकर, नौजवान लोगों के मंगल वचन करते समय, सुगन्ध 'अखिल' नाम के वस्तु की धुआँ से शोभितबाल वाला था।

[७०५]

पुतितिन् इट्ट पूंदविसिन् उच्चिमेल नडन्दवण्
पुतितिन् इट्ट मेललणैप् पोलिन्दवण्णं पोगुयिर्
मदियतेरिवेंजुडर, वेम्मै नींग मन्निय
उदयं एन्नुं मालवरै उवन्दिरुन्द तोत्तवे

भावार्थ—कुमार नये फूलों सहित बिछायो गयो दरो पर चलकर, वहाँ से नये रूप में तैयार किये गये मंच पर चढ़ा। यह देखने में ऐसा

लगा कि ऊँचे टीले पर सूर्य चढ़कर अपने किरणों को समेटने से उदयाचल पर्वत पर सूर्य खड़ा होने के समान था।

[७०६]

मुरुगु विम्मु कोदैयार् मोय्य लंगल् वण्डुपोल्
परुगुवान् इवल् नलं परितिट्ट इन्नगर्
उरुगुं ऐंगणै योलित्तु उरुविनैय कामनार्
करुतिवन्द तेन्ट्रु तंकण्कल् कोण्डु नोक्किनार्

भावार्थ—सुगन्धमाला पहनी हुई नारियाँ अपनी आँखों से कुमार को देखने लगीं। वे कैसी थीं ? माला के मधु को पीने में लालायित भ्रमरों के समान थीं। सारे नगर में फैली हुई दत्ता की सुन्दरता को पीने के साथ दिल को गीला करने लगीं। ऐसी हालत में मोहमद को चढ़ानेवाला मन्मथ (कामदेव) अपने फूल के पाँचों बाणों को छिपाकर आया हो; ऐसा कुमार दीख पड़ा।

[७०७]

मुनै त्तिरन्दु मिक्कसीर् मुनैवर्तं मुनैवनार्
वनप्पुमिक्कवर्कलिन् वनप्पुमिक्क इनियना
निनैत्तिरुन्दियट्रिय निरुमित मगनिवन्
कनैत्तु वण्डुलर्न्दता क्कलैसीवक्कन्नरो

भावार्थ—तप के माहात्म्य से श्रेष्ठ मुनिराजों से भी महत्वपूर्ण ब्रह्मा सोचने लगा कि लोगों में सुन्दर से अतिसुन्दर एक व्यक्ति की सृष्टि करनी है। इस विचार के कारण तैयार किया हुआ (सृष्टित) एवं भ्रमरों से गुंजायमान माला पहना हुआ तथा मत्त बैल के सदृश शोभायमान था कुमार।

[७०८]

पोन्नैविट्ट सायलाल् पुणर्मुलैत्तडत्तिनाल्
मिन्नैविट्टिलंगुपूण् विरैसेय मार्बं ओलेया
एन्नैपिट्ट आररो एलुदि नंगै आट्कोल् वान्
मन्नुं वन्दुं पट्टनन् मणिसेय् वीणैवारिये

भावार्थ—सुन्दर लक्ष्मी को जीती हुई और उसकी छाया से शोभित दत्तादेवी, अपने दोनों स्तन कलशों से प्रकाशमान थी। कुमार के सुगन्धमय वक्षस्थल को लेखन का पत्ता बनाकर मानों उसमें लिख दिया था कि अपने को अधीन बना लें। रत्नों से खचित वीणावाद्य से बचा नहीं बल्कि आकर फँस गया है। इस तरह सखियाँ बोलने लगीं। पुण्योदय का माहात्म्य अकथनीय है क्या कहा जाय ?

[७०९]

इनैय कूरि मट्वल् तोलिमारुं इन्बुर
वनैयलां पडित्तला वडिविर्केल्लै यागिय
कनैवण्डोति कैतोलुं कडवुल् कण्णिन् कण्डवर
एनेय देनैय तेय्तिनार् अनैय दनैय दायिनार्

भावार्थ—दत्ता की सखियाँ इस तरह की बातें कहकर मजे में मस्त थीं। सीमातीत सुन्दरता की सीमा बनी हुई हो; और भ्रमरों से रींकार करनेवाले फूलों से अलंकृत बालोंवाली हो ऐसी थी दत्ता। कामदेव को आँखों से देखकर हाथ जोड़े हुए नमस्कार करनेवाले जितना सन्तुष्ट होते हैं, उतना ही अन्य लोग भी सन्तोष प्राप्त करते हैं।

[७१०]

कुट्टनीर्कुवलैयेल्लां कूडि मुन्निट्रल् आट्राक्
कट्टलकुडैय कण्णाल् निरैयेनुं सिरैयैक्कंपोय्
इट्टनाण् वेलियुन्दि क्कडलेन एलुन्द वेट्कै
विट्टेरि कोलुव निन्ट्राल् एरियुरु मेलुकिन्निट्राल्

भावार्थ—वह गहरे पानी में रहनेवाले 'कुवलै' नाम के सभी फूल सामने आने पर भी खड़े होने में असमर्थ अत्यन्त शोभामय आँखोंवाली दत्ता, मन को तृप्ति नाम की हद को लाँघ कर, नारियों के लिये रखे गये लज्जारूपी रुकावट को हटा कर, सागर के समान उत्पन्न कामवेदनारूपी अग्नि में खूब जलकर तप जाने से दत्ता आग लगी मक्खन के समान दिल से ढीला होकर खड़ी रही।

[७११]

नलत्तै मत्तागनाट्टि नलवरि इलमै वाराक्
कुलपिरप्पेन्नुं कैयाल् कोलप्पासं कोलुत्तिक्

कलविकयिन्काममंपोंग क्कडैन्दिडु किन्ट्र कालै
इलैप्पोलि अलंगल मार्प इयैवदु एन्ट्रागुं कोल्लो

भावार्थ—अपने स्वाभाविक सुन्दरता को मंथान बनाकर, अच्छी शक्ति और यौवन इन दोनों को उस मंथान के दोनों तरफ की रस्सी बनाकर, उत्तम कुल में उत्पन्न होने रूपो हाथ से कृत्रिम सुन्दरतारूपी रस्सी के आखिरी भाग को उस मंथान में लगाकर प्रिय कामरूपी समुद्र को मथन करनेवाला, यौवनावस्था में स्थित कुमाररूपो पत्ते से प्रकाशमान माला पहने हुए वक्षस्थल को आलिंगन करने का दिन कब आयगा ? (इस तरह दत्ता प्रतीक्षा करती थी)।

[७१२]

तींगरुंबु एरुत्तिल् तृंगि ईयिन्ट्रि यिरुन्द तीन्देन्
नांकणालपरुगियिट्टु नलन् उणप्पट्ट नंबि
पूंगुलल् मकलिर् मुन्नर्प्पुलंबलनी नेंजे एन्ट्राल्
वींगिय काममं वेन्ट्रार् विलैत्त इन्बत्तोडु ओप्पाल

भावार्थ—कामवासना को जीते हुए वीर पुरुषों से देखा गया देवलोक सुख के समानभूत है दत्ता। रेमन, मीठे गन्ने के गाँठ में रहनेवाली मक्खी से झूठा न किया गया जो वस्तु है उसको यह अनुभव करनेवाला है। अपनी आँखों से सुन्दरता को अनुभव किया हुआ है यह कुमार। इसलिये फूल से अलंकृत बालोंवाली नारियों के सामने वे लोग हँसें ऐसा काम न करना है।

[६१३]

कण्णेनुं वलैयिन् उल्लान् कैयगप्पट्टिरुन्दान्
पेण्णेनु उललैपायुं पेरुवनप्पुडैयन्नंबि
एण्णिन्मट्रियावनांकोल एन्नित्तर्पडुत्त एन्दल्
ओण्णिर उरुवच्चेन्दी उरुवुकोण्डनैय वेलान्

भावार्थ—मैं उसे आँखों से अनुभव करने लगी। वह मेरी आँखरूपी जाल में पकड़ा गया है। मेरे हाथ में फँस गया है। स्त्रीत्व नाम की रुकावट को उल्लंघन करनेवाला अत्यन्त सुन्दर इस कुमार ने मेरे को ऐसी दुखित अवस्था में फ़साया है ऊँचानेता है। अतीव प्रकाश, आराधनीय

रंग, सुन्दर शरीर, आदि से समृद्ध रूपधारो और वेलायुधवाला है। इसके विषय में खोज करें तो मालूम न पड़ता है। क्या यह देव है, अथवा मानव है अन्यथा और कोई है? इस तरह प्रलाप कर दत्ता कुमार पर मोहित थी।

[७१४]

यावने यानुमाग वरुनिरै क्कतवं नोक्कि
क्कावलेन् नेंजमेन्नुं कन्निमाडं पुगुन्दु
नोब एन् उललं यात्ताय् निन्नैयुं मालैयाले
देवरिन्सेरिय याप्पेन् सिरितिडैप्पडुक एन्ट्राल्

भावार्थ—तुम देव हो, मानव हो अथवा और कोई हो, कोई भी रहें। मेरे अलभ्य आत्मा के किवाड़ को खोलकर आया और सुरक्षित मेरे दिलरूपी काया निवेश में प्रवेश कर मेरे को दुखित किया। तुम्हें भी मेरे स्वभाव के कारण देव लोगों के समान पलक लगाये बिना मेरे को ही देखने के वास्ते अच्छी तरह बाँध लेती हूँ। थोड़ी देर आनन्द में निकलें।

[७१५]

कलित्त वेलेरु पेट्र कडत्तिडैप्पिणैयिन्मालिक
विलित्तु वेयदुयित्तुं मेल्ल नडुंगित्तन्तोलिकून्दल्
इलुक्कि वण्डिरियच्चेन्दोर् कोडिप्पुल्लुं कोडियिर्पुल्लि
एलिल् तगै मापर्कुं इन्याल् इदु उयत्तु क्कोडुमो एन्ट्रान्

भावार्थ—म्यान से निकाले गये बाणों से छाती में लगे जंगली हिरण के समान दुखित होकर आश्चर्य से श्वास लेकर, शरीर कृश होकर डर के मारे सखी जो वीणापति थी उसके बालों में रींकार करने वाले भ्रमर डर के मारे भाग जावें इस तरह पड़कर जैसे एक लता दूसरी लता पर चढ़ती हों वैसे सुन्दर और योग्य इस महाशय को मनोहर इस वीणा को जाँचने के लिये दो। इस तरह दत्ता अपनी सखी से कहने लगी।

[७१६]

तडंगणालपणियिनाल् अण्वीणै ओंन्द्रिनै
नेडुंगणाल्एलिनियै नोक्कियुत्तु नोट्टिनाल्

मडगलन्न मौंपिनान् वरुगएन्ट्रु कोण्डुतन्
किडन्दआनत्तेल्लैयैक्किलक्ककलुट्रु मोक्किनान्

भावार्थ—बड़ी-बड़ी आँखों वाली दत्ता के आज्ञानुसार, लम्बी आँख-वाली सखी वीणापति कवच लगायी गयी एक ऊँची वीणा को छोड़कर बाकी वीणाओं को एक के बाद एक के हिसाब से देती रही। सिंह के समान जो जीवक थे वे 'दो' कह कर लेते जाने के साथ उसके 'तर' (तारतम्य) को बतलाने के वास्ते, अपने विशाल वीणा वाद्य के ज्ञान की सीमा से एक के पीछे एक के रूप में जाँच करते गये।

[७१७]

सुरन्दुवानं सूलमुदिर्न्दु मेय्नोन्दु ईन्ट्र तूलिये पोल्
परन्द केलिवत्तुरै पोय पैन्दार्पशुंपोन्याल्
नरम्बु तेनात्तुं एनत्तीण्डि नल्लाल्वीणै पोल्लामै
इरुन्दमुलैयाल् निन्ट्रालै नोक्कियिसैयिन्निदु सोन्नाल्

भावार्थ—मेघमाला गर्भ होकर शरीर कृशता के साथ बरसी गयी बरसात, सबको उपयोग होने के समान, विशाल वीणा वाद्य के सब पहलुओं की कमी के बिना जानकारी रखने वाला, नयी माला पहनने से विस्तृत छाती वाला जीवन्धर कुमार ने सोने से बनायी गयी वीणा की नसों को हाथ से लगा कर देखा। बाद में गौरवमय दत्ता से दिये गये वीणा में रहने वाले दोषों को जान कर, छोटे स्तनवाली वीणापति को देखकर कहने लगा कि यह वीणा 'नसे' में दोष युक्त है।

[७१८]

नीर्विन्ट्रु इलकिट्रिदुवेण्डानिरिन्वन्ददित्तु पोग
वार्निन्ट्रिलगु मुलैयिनाय् वाट्पुणुट्र दितुनडक्क
ओरुंउरुमेरु उण्डदितुओलिग ओण्पोन्नुगु कोडिये
सोर्साल् कणिकै सिरुबन्पोल् सिरप्पिन्ट्रम्म इदु एन्ट्रान्

भावार्थ—यह वीणा पानी में डालने से पतली हुई है, इसलिये यह नहीं होना है। यह पानी में डालकर खराब हो जाने के बाद बनाई हुई है। अतः यह भी नहीं चाहिये। हे बड़े स्तनवाली! यह तलवार से लकड़ी काट कर बनाया गया है। इसलिये यह भी नहीं चाहिये। यह वज्रपात

गिरे पेड़ से बनाया हुआ है। यह भी नहीं होना है। प्रकाशमान सोने की लता जैसी हे सुन्दरि! यह ख्याति प्राप्त वेश्या के लड़का जैसा है। इसलिये यह ग्राह्य नहीं है। इस तरह जीवन्धर कुमार ने वीणा की परीक्षा में गान्धर्व दत्ता से कहते गये।

[७१९]

कलसेर्पूण्कोल् कदिमुलैयाय् कामत्तीयाल् वेय्दवर्पोल्
कोल्लै उलव र्सुडप्पट्टु क्कुरंगि वेंदतु इदु कलिरु
पुल्ल मुरिन्दतु एनप्पोक्किकत्तूमं आर्न्द तुगिलिरैयुल्
नलयालनीट्ट अदुकोण्डु नैगैनलत्तदु इदु एन्ट्रान्

भावार्थ—जीवक और कहने लगा कि हे पत्थर के समान स्तन कलश वाली बाले! यह वीणा कामाग्नि से जले हुए व्यक्ति के समान 'मुल्लै' नाम के जमीन के किसानों से जलाये गये पेड़ से बनी हुई है। अतः यह उपयुक्त नहीं है। इस तरह हर एक को निकालते गए। बाद में 'अगिर' की धुआँ से सुगन्धित एवं कवच लगाये गये एक सुन्दर वीणा को वीणापति देने लगी। उसे जीवक ने स्वीकृत किया और कहने लगा कि यह दत्ता के समान ग्राह्य है।

[७२०]

इरु निलमडन्दै ईन्ट्र इरु विसुंपेन्नु कैत्ताय्
तिरु निल मिन्नुप्पोन्ऩाण् मुगिलमुमै मारित्तीं पाल्
ओरुनलं कविनियूट्ट वुण्डुनोय् नान्गु नींक्कि
अरुनलं कविनि वालवाय् अरिंदितु वन्द देन्ट्रान्

भावार्थ—यह पेड़ भूमिरूपी नारी से उत्पन्न हुआ है। इसकी बड़े आकाशरूपी माँ है। सुन्दर विद्युतरूपी सोने की लज्जा है। मेघरूपी स्तन है। वह बरसातरूपी मीठे दूध को प्रेम के साथ पिलाती है। ऐसा वह पेड़ उस दूध को पीकर धूप, हवा, अतिवर्षा, छाया इन चार तरह की बीमारी से बचकर शोभा के साथ बड़े होकर हथियार से काट कर लाया गया है। इस तरह कुमार रूपकालंकार से वीणा का वर्णन करने लगा।

[७२१]

तीन्तोडै नरंविनतीमै सिरिदिलाप्पोलुदुं ओदिप्
पून्तोडै अरिवैक्काण प्पुरिनेगिल्त् तुरोमं काट्टत्

तेंगमल् ओदि तोट्राल् सेलवनुक्केन्न मैन्दन्
वांगुपु नपुलन्कैयुल् वार्पुरि नरंबु कोण्डान्

भावार्थ—उसके बाद जीवक ने अच्छी 'नस' को कमी को बहुत देर तक खोज कर, फूल की माला पहनी हुई दत्ता की जानकारी में नस को जोर को कम कर उसमें पड़ी हुई बाल को निकाल कर दिखाया। उसे देखकर सभा में रहने वाले सब लोग मधु के सुवास से सुगन्धित बालों वाली दत्ता, जीवन्धर कुमार से हार गयी; ऐसा कहने लगे। जीवक ने लम्बे जोर की एक 'नस' को 'नपुलन' के हाथ से लेकर वीणा में जमा लिया था।

[७२२]

पणिवरुं पैंपोन् पन्दर् पलविनै प्पवल आणि
मणिकडै मरुप्पिन् वालार्माडक वयिरत्तीन्देन्
अणिपेर ओलुदियन्न अमिल्तुरल् नरंबिन्नलयाल्
कणिपुगल् कालै कोण्डु कडलगं वणक्क लुट्रान्

भावार्थ—उसके बाद वीणा के 'नस' को बजाने के लिये उचित नये सोने से निर्मित 'पत्तरै' नाम के वस्तु को, कारीगरी से सम्पन्न पन्ना से निर्मित कीलों को और मोती से तैयार किये गये प्रकाशमान हीरे के 'माटक' नामक चीज को, मधुर मधु से मिश्रित सुन्दर अमृत के समान एक 'नस' वाले अच्छी वीणा के संगीत शास्त्र निपुणों से तारीफ़ करने योग्य जीवन्धर कुमार ने हाथ में लेकर सागर से घेरे गये संसार को अपने संगीत स्वर लालित्य से गाकर अपने वश कर लिया था।

[७२३]

कुरलकुरलागप्पण्णि क्कोदै तालकुंजियान्तन्
विरलकवर्न्देडुत्त गीतं मिडरेनत्तेलि तल्तेट्रार्
सुररोडु मक्कलवीलदार् सोर्न्दन पुल्लुं मावुं
उरुगिन मरमुं कल्लुं ओर्त्तेलीप्पाडु किन्ट्रान्

भावार्थ—संगीत कला निधि एवं सिर के बालों में माला पहने हुए जीवक के अपनी ऊँगली के द्वारा वीणा को बजाने से सुनने वाले लोगों में यह भ्रम आता है कि यह वीणा का संगीत है अथवा मुँह से गाने वाला

संगीत है ? इसके भेदभाव को जानने में लोग असमर्थ हो रहे थे। यह गाया गया गाना समझ कर देवगण और मानव दोनों मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़े। किन्नर पक्षी और तिर्यंच भी मूर्च्छित हुए। पत्थर और पेड़ गलने लगे। इस तरह वीणा वाद्य के लय को दिल में बिठा कर कुमार आलापना के साथ गाने लगे।

[७२४]

कन्निनागं कलंग मलंगि
मिन्नुं इरंगुं मलै एन् कोयान्
मिनुं मलैयिन् मेलियुं अरिवै
पोन्नाण् पोरुद मुलै एन् कोयान्

भावार्थ—दत्ता की सखी कहने लगा कि कन्या जो दत्ता थी वह अपनी अवस्था से गिरने लगी। मेघ पहले विद्युत को दिखाता है; बाद में वज्रपात करता है तदनन्तर वर्षा करता है। बरसात के कारण सोने की रस्सी से बाँधी गयी स्तन कलश वाली यह दत्ता पतली हो जायगी ऐसा मैं कैसे कहूँगी ?

[७२५]

करुवि वानंकान्ट्र पुयलिन्
अरुवि अरट्रं मलै एन् कोयान्
अरुवि अरट्रं मलैकण्डु अलुंगु
मरुवार् सायल् मनं एन् कोयान्

भावार्थ—विद्युत, वज्रपात आदि के साथ मेघ की वर्षा से पहाड़ के झरने की आवाज है। मैं ऐसा क्या कहूँगी ? कि झरने की आवाज वाला जो पहाड़ है उसे देखकर सन्तोष प्रकट करने वाली यह दत्ता दुखित होगी ऐसा मैं कैसे कहूँगी ?

[७२६]

वानं मीनिन् अरुंबि मलन्दुं
कानं पूत्त कारेन्कोयान्
कानं पूत्त कार्कण्डु अलुंगुं
तेनार्कोदै परिन्देन्कोयान्

भावार्थ—आकाश के मत्स्यों (नक्षत्र) से भरे वर्षा काल के कारण जंगल विकसित हुआ है। ऐसा मैं कैसे कह सकती हूँ ? अथवा वन को विकसित करने के वास्ते वर्षाकाल देखकर, मधु मिश्रित माला वाली दत्ता दुखित होकर रोयेगी क्या मैं ऐसा कह सकती हूँ ?

[७२७]

अण्णल्याल् नरंबै आयन्दु मणिविरलतवलन्दवारुं
पण्णिय इलयं पट्रिप्पाडिय वनप्पुं नोक्कि
विण्णव र्वीणै वीलत्तार्विजैयर्कनिन्दु सोन्दार्
मण्णव र्मरुलि न्माय्न्दार्सित्तरुं मनत्तु ल्वैत्तार्

भावार्थ—बुद्धिमान जीवक ने वीणा के नस को खोज के साथ बजा कर संगीत का जो लालित्य दर्शाया है उसमें वीणा के लय के साथ मुँह से गाये गये गाने के लय की मधुरता थी। इन सबको देख कर किन्नर जाति के लोगों ने अपनी वीणा को फेंक दिया। विद्याधर लोग मन से मोहित होकर मूच्छित हुए। मानव लोग मूर्च्छा के साथ अपने को भूल गये। सिद्ध जाति के लोग यह भी आत्मोन्नति का लय समझ कर, तन्मय होकर सन्तुष्ट हुए।

७२५ से ७२७ तक के तीन पद्य वर्षाकाल में नायिका के वियोग दुख को नायक से बताकर वियोग को निवारण करने का है। ऐसा वर्णन होना महाकाव्य का लक्षण है।

[७२८]

वीलमणि वण्डु पायन्दु मिदित्तिड विकलित्तमालै
सूलमणिक्कोट्टु वीणैच्चुकिर्पुरि नरंबु नंबि
ऊलमणि मिउरुं ओन्ट्राय्प् पणिसेयदवारु नोक्कित्
तालमणित्तामर्मार्पिकिन्नर सांबिनारे

भावार्थ—मधु को चाहने वाला काला भ्रमर दौड़कर दबाने से विकसित फूलमाला और रत्नों से खचित लकोर वाली वीणा को जोर लगाई गई नसें, कुमार के अच्छे ढंग से बजाने की पद्धति को देखकर—अर्थात् वीणा की नस, अनुकूल गाना, इनसे निकले सुन्दर रागमालिका को सुनकर लम्बी माणिक्कमाला पहना हुआ छाती है जिसकी ऐसे किन्नर जातिवाले लोग शरीर के पतन के साथ गल गये।

[७२९]

विण्णवर्वियप्प विंजै वोरगंल् विरुंबि एत्त
मण्णवर्मगिल वान्कण्परवै मैय्मरन्दु सोर
अण्णल्तान् अनंगन् नाणप् पाडिना नरसरेल्लां
पण्णमैत्तुं एलुदप्पट् पावैपोल् आयिनारे

भावार्थ—देवलोग आश्चर्य करने लगे। विद्याधर वोर लोग प्रेम से बधाई देने लगे। नर लोग सन्तुष्ट होने लगे। आकाश में उड़नेवाले पक्षी अपने को भूलकर भागने लगे। कामदेव लज्जित होने लगा। इस तरह की परिस्थिति में जीवन्धर कुमार गाने लगे। उस गाने को सुनकर सारे राजा लोग लिखे हुए चित्र के समान निश्चल रहे।

[७३०]

परुन्दुं निललुं पोल् पाट्टुं एलालुं
तिरुन्दु तार्च् जीवकर्केसेन्दनएन्ट्रिण्ग
विरुन्दाग याल्पण्ग वोणैदान् तोर्पान्
इरुन्दाल् इलमयिलपोल् एन्दिलै वेलकण्णल्

भावार्थ—गरुड और उसकी छाया के समान गाना और उसके अनुकूल वीणा बजाना, यह कार्य सुन्दर माला पहने हुए जीवन्धर कुमार को ही ढंग से जमा। वीणा बजाने में खुद हार जाने के अनुकूल सब बन गये। इस तरह सोचकर पत्ते के समान सुन्दर मुखवाली, वेलायुध के सदृश आँखवाली दत्ता छोटी मोर के समान थी। जो अब तक गायी नहीं थी, ऐसी नयी पद्धति से वीणा बजाकर गाने लगी।

[७३१]

कोदैपुरंतालक्कुण्डलमुं पोन्तोडुं
कादिन ओलिंतिलंगक्ककामर् नुदलिवयर्प्प
मादर् एरुत्तं इडं कोट्टि मामदुर
कीतं किडैयिलाल् पाडत्तोडंगिनाल्

भावार्थ—सिर के बाल पीठ तक लटकने लगे। कुण्डल और सोने के आभूषण कान में जगमगाते रहे। सुन्दर ललाट में पसीना निकल

आया। मनोहर गर्दन को वाम भाग में टेढ़ाकर अत्यन्त लय से भरे उपमातीत गाने को दत्ता गाने लगी।

[७३२]

इलैयार् एरिमणिप्पूण् एन्दु मुलैयुं
सिलैयार् तिरुनुदलुं सेंपलै मूलग
मलैयार् इलंकरुवि वाल्पोल् मिन्नुं
कलैयार् तींज् सोल्लिनाय् काणार्कोल् केल्वर्

भावार्थ—पत्ते के रूपाकार वाली प्रकाशमय माणिक्क से अलंकृत स्तनवाली, धनुष के समान टेढ़े भ्रूवाली दत्ता सुन्दरता में डूबने लगी। पहाड़ के ऊपर से गिरनेवाली, तलवार के समान शोभा देने वाली, झरने के समान कला से परिपूर्ण गाना दत्ता से निकलने लगा जिसे प्रेमी और प्रेमिकागण न सुना और न देखे ही हो।

[७३३]

पिरैयेंतिरुनुदलुं पेरमरुण् कण्णुं
पोरैयार् वनमुलैयुं पूंपसलै मूल्क
निरैवाल् इलंगरुवि नीलवरैमेल् मिन्नुं
करैवेलुण् कण्णिनाय् काणा कोंल् केलीर्

भावार्थ—पूर्व पक्ष में चन्द्रमा की तरह सुन्दर ललाट हो; बड़े आश्चर्य पैदा करने वाले नयन हो; वजनदार स्तन कलश हो; इच्छा में डूबे एवं प्रकाशमान तलवार के समान झरने हो; वह झरने बड़े पहाड़ से निकलने वाला एवं विद्युत् के सदृश हो; ऐसी दत्तादेवी कहने लगी कि खून भरे वेलायुध के समान और काजल लगाये गये आँखवाली हे सखि! क्या प्रेमी इन सबको देखे नहीं क्या?

इस पद्य से आगे तीन पद्य तक वसन्त काल को देखकर सहन न करती हुई प्रेमिका अपनी सहेली से यह कहना।

[७३४]

अरुंपेर वनमुलैयुं आडमैमेन्तोलुं
तिरुंतेर् पिरैनुदलुं सेंपसलै मूलग

नेरुंकार मणियरुवि नीलवरै मेल् मिन्नुं
करुपार्ती जोल्लिनाय् काणा कोंल केलवर्

भावार्थ—गन्ने के समान प्रिय एवं मीठे वचन बोलने वाली हे सखि ! अविकसित फूल के समान सुन्दर स्तन भार, हिलने वाले बाँस के सदृश पतली भुजायें, साफ़-सुथरे प्रकाशमान पूर्वपक्ष चन्द्रमा के समान ललाट, रत्नों को गिराते हों ऐसे सुन्दर ऊँचे पहाड़ से गिरने वाले विद्युत् के समान एवं शोभायमान झरने ये सब नायक को दीखते नहीं हैं क्या ?

[७३५]

पण्णोन्ट्रु पाडलदुओन्ट्रु पल् वलैक्कै
मण्णोन्ट्रु मेलविरलुं वालनरंबिन मेलनडवा
विण्णिन्ट्रु इयंगि मिडरु नडुनडुंगि
एण्णिन्ट्रि मादरिसैतोट्रिरुन्दनले

भावार्थ—वीणा का लय, लय के अनुकूल गाना दोनों पहले बराबर जमता था। बाद में कई तरह की चूड़ियाँ पहनी हुई हाथवाली दत्ता, वीणा बजाते समय ऊँगलियाँ नसे में बराबर जमती नहीं थीं। वीणा के बिना मुँह से गाया हुआ गाना उच्चस्थायी में रहते समय दत्ता डर के मारे मूर्च्छित हो गयी थी। अर्थात् वह कुमार से हार गयी थी।

[७३६]

मैया नेंडुंकण्णाल् मामणियाल् तानुडैन्दु
नैया नडुंगाननि नाण मीदूराप्
पोय्यातोर् कुन्ट्रेडुप्पालपोल् मेलिन्दु पोन्मालै
पेय्पूङ् कललार्कुं प्पेण्णरसि एन्दिनले

भावार्थ—काजल लगाई गई हो जिसमें ऐसी सुशोभित आँख वाली एवं नारियों की नायिका दत्ता रत्नों से खचित वीणा में हारकर, मन से दुखित होकर एवं डरकर अत्यन्त लज्जित थी। (याने जीवक के गाते समय दत्ता ने वीणा के नस को ठीक तरह से बजाया नहीं था और कुमार के वीणा बजाते समय दत्ता ने ढंग से गाया नहीं था। इसलिये दत्ता कुमार से हार गयी थी) वह एक बड़े पत्थर को उठाने में असमर्थ होकर थकी हुई के समान पतली सी होकर सोने की माला को, रत्ना-

भरणभूषित जीवन्धर कुमार के वक्षस्थल में अलंकृत करने के लिये हाथ में लिये थी।

[७३७]

मेलएन सिम्बु अरट्र मेरवलैकण् मिन्नुमिल
नल्ल पेडै अन्न नाण अडियोदुंगि
ओल्लेन् उयर्तवमे सेय्मिन उलकत्तीर
एल्लीरुं एन्बाल् पोल् एन्दलमेल् वीलन्दनले

भावार्थ—चरणों में पायल शब्द करने लगे; मेखलाभरण प्रकाशित होते थे, सुन्दर हंस पक्षिणी लज्जित हो ऐसा धीरे-धीरे पैर के ऊपर पैर रखकर चली। उसका आशय यह था कि हे दुनियाँ वाले, "आप लोग तालि बजाने योग्य यशः प्राप्त करने के लिये तप कीजियेगा।" मानों ऐसा कहती हो। इस तरह आह्वान के साथ माला को कुमार के गले में पहना दी थी।

[७३८]

नागत्तु प्पडकोल् अलकुल् नलंकिल सेंपोन्मालै
मेगत्तुप्पिरन्दोर् मिन्नु मणिवरै वीलन्ददे पोल्
आगत्तुप्पूट्टि मैन्दन्नडितोलुदु इरैंजि निन्ट्राल्
पोकत्तु नेरियैक्काट्टुं पूमगल् पुणर्न्द तोप्पाल्

भावार्थ—सर्प फणा के समान मर्मस्थलवाली दत्ता ने सुन्दर एवं लाल-लाल सोने की माला को, मेघ में उत्पन्न विद्युत् रत्नों के पहाड़ पर गिरी हो, इस तरह जीवन्धर कुमार के वक्षस्थल को अलंकृत किया; तथा उसके चरणों में नमस्कार करते हुए खड़ी रही। यह ऐसा दीखने लगा कि वह भोग सुख को समर्पण करने वाली लक्ष्मीदेवी के समान हो।

[७३९]

सेम्मलरडियुं नोक्कि त्तिरुमणि अल्गुल नोक्कि
वेंमुलैत्तडमुं नोक्कि विरिमति मुगमुं नोक्कि
विमिदप्पट्टु मादो विलुंगुवान्पोल वागि
मैंमलत्तडंगण् नंगै मरैमलद्देवि एन्ट्रान्

भावार्थ—कुमार अपने चरणों पर नमस्कार करने वाली दत्ता के लाल कमल के समान पावों को देखकर, मर्मस्थान के ऊपर रहने वाले मेखलाभरण को देखकर, आश्चर्य पैदा करनेवाले अत्यन्त सुन्दर स्तन कलशों को देखकर, पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान मुखकमल को भी देखकर आश्चर्य के साथ उसे निगलने वाले के समान देखता हुआ काजल से अलंकृत नयनद्वयों से शोभित यह देवी कमल फूल के अन्दर निवास करने वाली लक्ष्मी देवी ही है ऐसा समझने लगा।

[७४०]

कोदैयुं तोडुं मिन्नक्कुण्डलं तिरुविलवोस
मादरं पावै नाणि मलैमिनिन् ओसिन्दु निरपक्
कादलन्तोलिमार्कल् करुंगय ल्कण्णिनालै
एदं ओन्ट्रिप्पपूंपट्टु एन्दिर एलिनि वीलत्तार्

भावार्थ—फूलों की माला, कर्णभूषण एवं कुण्डल विद्युत के समान प्रकाशमान थे। प्रेमोत्पन्न करने योग्य सुन्दर पुतली के समान दत्ता लज्जा से बरसात के मेघ के अन्दर शोभा युक्त विद्युत् सदृश होकर रहते समय प्रेमपूर्ण उसकी सखी से काजल लगाये गये एवं मीन नयन वाली दत्ता को उसकी लज्जा के कारण आने वाले दोषों से बचाने के लिये पीताम्बर यन्त्र के परदे को उसे छिपाने के वास्ते डाला गया था।

[७४१]

वेल्लिलै वेलकणालैज्जीवकन् वीणैवेन्ट्रान्
ओल्लियनेन्ट्रु मान्दरुवाक्कडल् मिलिय आर्पक्
कल्लरालपुलियै एरु काणिय कावलमन्नन्
उल्लगं पुलुंगि मातो उरैत्तनन्मन्नक्कैलाम्

भावार्थ—पान के पत्ते के समान एवं तीक्ष्ण वेलायुध सदृश आँख वाली दत्ता को जीवन्धर कुमार ने वीणा में जीत लिया था। अतः वह कुमार सभी लोगों से आराध्य है। इस तरह सब लोग पौर्णिमा से युक्त चन्द्रमा के दिन समुद्र जैसा उद्गारित होता है वैसे आरवार के साथ कुमार की तारीफ करने लगे। बाघ को चोरों से खतम करने की इच्छा से खुद कुमार को जीतने की शक्ति न होने से खुद को बचाने एवं दूसरों

से झगड़ा कराने को इच्छा से प्रजापालक एवं धूर्त काष्ठांगार द्वेष के कारण मन में आतंकित हुआ। बाद में आये हुए राजाओं को देखकर कहने लगा।

[७४२]

वडदिसैक्कुन्ट्रं अन्न वान्कुलं मासु सेय्दीर्
विडुकदिर् प्परुदि मुन्नर्मिन्मिनि विलक्कं ओत्तोर
वडुवुरै एन्ट्रु मायुं वालमर् अंजि नीरेल्
मुडितुरन्दुलियिर्पोंगि मुनिवनं पुगुमिन् एन्ट्रान्

भावार्थ—उत्तर दिशा में रहने वाला जो हिमाचल है, उसके समान गौरवपूर्ण होते हुए भो आप लोगों ने राजवंश को कलंकित कर दिया है। प्रकाशमान सूर्य के सामने जुगुनू के समान हो गये हैं। हथियारों से लड़ने के लिये आप लोग डरेंगे तो यह अपमानजनक अपवाद कब मिटेगा? दया के पात्र आप सब लोग मुकुट को उतार कर मुनिराजों के निवास स्थान (वन) में जाकर तप धारण कर लीजियेगा। इस तरह काष्ठांगार आये हुए राजाओं से कहने लगा। अर्थात् उन लोगों को कुमार के साथ लड़ने को तैयार करने लगा।

[७४३]

मुल्लैप्पूं पन्दु तन्नै मुंमद क्कलिट्रु वेलिक्
कोल्लैप्पूं कुन्ट्रं सेय्दी कुंकुम क्कुलंगल् मालै
मल्लुप्पूदगन्ट्र मार्पीर् पुगलेनुं पोवैं पोर्त्तुच्
सेलवप्पू मगलुं नालै अवनुलैच्चेल्लुं एन्ट्रान्

भावार्थ—वह और भी कहने लगा कि चमेली फूल के गेंद को दबा कर फेंकने को अपेक्षा तीन तरह के मदवाले हाथियों को हद बनाये गये जंगल में उस सुन्दर गेंद को छोटा पहाड़ बना दिया है। कुंकुम के गाडे पर लगे रत्नमाला पहने हुए और लड़ाई में प्रख्यात एवं विशाल वक्षस्थल वाले हे राजा लोग, धनलक्ष्मी कीर्ति रूपो ओढन को ओढ़ कर उसके पास पहुँच जायेगी।

विशेषार्थ—धन लक्ष्मी जीवक के पास जाने के बाद आप लोग क्या करेंगे? कुछ नहीं। अर्थात् उसके अधीन बन कर रहना होगा। अतः जो

कुछ प्रतीकार करना है तो उसे अभी कीजियेगा। विलम्ब करना नहीं चाहिए। इस तरह कह कर काष्ठांगार ने राजा लोगों के गुस्से को उत्तेजित किया था।

[७४४]

तिरुमगलिवलैच्चेन्दान् तेण्तिरै आडै वेली
इरुनिलमगट्कुं सेंपोन्नेमिक्कुं इरैवनागुं
सेरुनिलत्तिवनैवेंट्रीर् तिरुविनु क्कुरियी रेन्ट्रान्
करुमन नच्चु वेंजोल कट्टियंकारनन्ट्रे

भावार्थ—दुष्ट मन वाला एवं विष के समान भयंकर वचन बोलने वाला काष्ठांगार, आगे कहने लगा कि लक्ष्मी के समान रहने वाली इस गान्धर्व दत्ता को जो पायेगा वह, पारावार ही कपड़ा एवं सीमा हो ऐसे इस बड़े भारी भूप्रदेश और लाल सोना उत्पन्न होने वाले चक्रवालगिरि इन दोनों का भी अधिनायक बनेगा। इसलिये लडाई में कुमार को जीत लेंगे तो उन पर कही गई सम्पत्ति के स्वामी बनेंगे।

[७४५]

अनिच्चप्पूंगोदै सूट्टिन् अम्मनैयो एनं ट्रंजि
पनिक्कुनु ण्णुसुप्पिन्पावै ओरुत्तिनांपलरेन्ट्रुण्णित्
तनित्तु नीर् तुलंगल् वेण्डातूमणि च्चिविरि नीर्त्तूयत्
तनिक्कयत्तु उलक्कि वेन्ट्रोतैंयलैच्चार्तिर् एन्ट्रान्

भावार्थ—'अनिच्च' नाम के कोमल फूल को लगाते समय यह दत्ता 'हा' कह कर डरेगी अर्थात् उसकी गन्ध (खुशबू) को सहन नहीं करेगी। ऐसी कोमलांगी एवं नरम कमरवाली दत्ता एक नारी है। इस एक ललना के लिये हम सब लोगों को मिल कर लड़ना बेकार है। इस तरह विचार कर जुगुप्सा के साथ मन में चिन्तित मत होना; क्योंकि साफ़ 'तुरित्ति' नाम की थैली से पानी डाल कर पृथक्-पृथक् तालाब की लड़ाई में जो जीतता है वही दत्ता को प्राप्त करेगा।

[७४६]

वेंतिरलालन कूर वेगमोडु उररिमन्नर्
पन्दणिविरलिनाल् तन् पडामुलै पोंगं वेण्डि

कन्देन त्तिरण्ड तिण्कोल् कन्दुकन् सिरुवन् कायुं
ऐंतलै अरविन्सीट्रत्तारलल्कुलिक्क लुट्रार्

भावार्थ—भयंकर पापी काष्ठांगार के इस तरह कहने के बाद राजा लोग गुस्से के मारे, गेंद खेलने वाली दत्ता के सुन्दर स्तन के सुख को प्राप्त करने के निमित्त, खम्भे के समान शक्ति सम्पन्न भुजवाले गन्धोत्कट के पुत्र जीवन्धर कुमार के क्रोध युक्त पाँच सिरवाले सर्प के भयंकर आग में डूब कर मरने को तैयार हो गये थे।

[७४७]

पण्णियल यानै मेलान्पदुमुगन्परवैत्तानै
कण्णिय दुणर्न्दु कल्लाक्कट्टिटअकारन्नेंजिल्
एण्णिदेण्णि मन्नर् इगल्मलैन्तेलुन्द पोलदिल्
तण्णिय सिरियवेय्य तलसॊलालसाट्रुकिन्ट्रान्

भावार्थ—सुन्दरता के साथ बनाये गये हो ऐसे हाथी पर चढ़कर बैठा हुआ पद्मास्य विशाल राजाओं की सेना, जीवन्धर कुमार के साथ युद्ध करने के वास्ते निश्चित है। इस समाचार को जानकर और अनपढ़ काष्ठांगार ने अपने दिल में जो विचार कर राजाओं को भड़काया था, उस पर भी विचार विनिमय कर, राजा लोग आपस में एकता के बिना लड़ने को तैयार होते समय साम, भेद, दाम और दण्ड इन चार विधि-विधान के अनुसार इच्छित कठिन वचन बोलने लगा।

[७४८]

इसैयिनिल् इवट्कुत्तोट्रां यानैयाल्वेरुं एन्निल्
इसैवदु ओन्ट्रुन्ट्रु कण्डीर इदनैयानिरन्दु सोन्नेन्
वसैयुडैत्तरसर्क्कॆललां वलि मुरैवन्द वारे
तिसैमुंग पटर्कवल्ले तीत्तोट्टाल् सुडुवदन्त्रे

भावार्थ—संगीत स्पर्द्धा में दत्ता से हारे हुए आप लोग हाथी की सेना के द्वारा जीवन्धर कुमार को जीत लेंगे। इस तरह आप लोग यदि विचार करेंगे तो वह उचित नहीं है। यह बात आप लोगों को मालूम ही है। फिर भी आप लोगों को भलाई के वास्ते मैं इस बात को कहता हूँ कि इसे सुनियेगा। आप लोगों का जो कार्य है वह राजकुल के लिये अपमानजनक

है। अतः आप सब लोग जिस रास्ते से आये हैं उसी रास्ते से वेग के साथ चले जाइयेगा और एक बात समझने की है, वह यह है कि अग्नि है, जो उसमें हाथ डालता है वह उसी से जलेगा। लेकिन दूसरे की नारी को बुरे भाव के साथ स्मरण करने मात्र से वह आग जला देगी। इस तरह कहने लगा।

[७४९]

तोलिनालिमडैन्दु पुल्लुं तोण्डै वायमिदं वेट्ट्रोर्
वालिनाल्मलैन्दु कोलिलन्वालकनुं कलैयु मादो
कोलुलां सिंगं अन्नान् कोडियिनै एय्दप्पेट्रीर्
तालिनान् नोय्यीरागि त्तारणिता विडुमिन ऐन्ट्रान्

भावार्थ—पद्मास्य और कहने लगा कि अपनी भुजा से जीत कर जो प्राप्त करना था, उसे छोड़ कर फल के समान प्राप्त किये गये अमृत के तलवार से लड़ कर छीन लेना चाहें तो आप लोगों की युद्ध कला को धिक्कार हो। लड़ाई हिंसा में समर्थ सिंह के समान जीवन्धर कुमार ने वीणा में जीत कर दत्ता को प्राप्त किया है। आप लोग भूमि के नाथ हैं। जो करने का नहीं है ऐसे कार्य में समय लगा कर हार जाने के साथ-साथ उससे होने वाले दुख पर विचार कर छोड़ दीजियेगा। यहीं गौरव की बात है।

[७५०]

नारुं मुंमदत्तिनाले नागत्तै यिरिक्कुं नागं
आरिय सिनत्त दन्ट्रि अंदिगत्तिन् कवलं कोण्डाल्
वेरुनीर् निनैन्दु काणीर्यावक्कुं विडुवक लागा
नारित्ते नोलुगुं कोदै नंबिक्कुं अन्नलेन्ट्रान्

भावार्थ—पद्मास्य और कहने लगा कि आप लोगों से, सुगन्धमय मधु गिरने वाले फूलों से अलंकृत दत्ता को कुमार से अलग करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। जैसे गन्ध से युक्त और अपने तीन तरह के मद से पूर्ण तथा अन्य हाथियों को हटाने वाला एक महान् हाथी गुस्से के साथ अति मधुर पत्ते को खाने की वस्तु बना लें तो, आप लोग अच्छी तरह विचार कर देखियेगा कि उक्त पत्ते को क्या किसी से अलग किया जा सकता है ? कदापि नहीं।

[७५१]

इलवल नागु पुलिल इनत्तिडै एरु निन्ट्राल्
उलवलं करुदि कुक्कल् उलप्पु एरु दुरैय तामे
तलवलमुकै कोल पललाल् जीवक न्तलुवि निन्ट्राल्
केल वुलैन्दु एलुव दल्लाल् कूडुतल् नुंकट्कु आमो

भावार्थ—पद्मास्य आगे कहने लगा कि एक मत्त बैल कोई सुन्दर गाय के साथ रमण कर अपने झुण्ड के साथ रहता है। उसके समान शोभायुक्त अविकसित चमेली फूल के सदृश दत्ता के जीवन्धर कुमार प्रेमी बन कर रहें, तो उसे छीन लेने के प्रयत्न में आप लोग रहेंगे तो वह कार्य असम्भव समझ कर वापस जाने के सिवाय कभी कार्य सिद्धि हो सकती है ? कदापि नहीं।

[७५२]

एलुन्दु विण्पडरुं सीर्य पेट्टेमेल् इवर्न्दुनिन्ट्राल्
मलुंगमेर्सेन्ट्रु पाय्दल् मरप्पुलि तनक्कुं आका
कोलुंगयल्कण्णिनालैज्जीवक कुमरन्सूलन्दाल्
अलुंगच्चेन्ट्रणैतल् पेय्काल् अनंगर्क्कुमावदुण्डो

भावार्थ—उठ कर आकाश में घूमने वाला सिंह अपनी सिंहनी के साथ रमते समय उसको अलग करने के वास्ते उस पर धावा डालने के लिये वीरता के साथ रहने वाले बाघ सा हो सकता है क्या ? कभी नहीं। उसके समान सुशोभित मोन नयनवाली दत्ता को जोवक प्रेम से आलिंगन करते समय हे पिशाच, जोवक को दुखी करा कर दत्ता के साथ आलिंगन करना कामराज से भी होने का नहीं है। इस तरह पद्मास्य लड़ने को तैयार होने वाले राजा लोगों से कहने लगा।

[७५३]

मत्तिरिपुडैय नागं वाय्निरै कडात्तदागि
उत्तमप्पिडिक्कण्निन्ट्राल् उडट्रुदल् कलपक्कामे
पत्तिनि प्पावै नंबि जीवकन्पाललानाल्
अत्तिरं करुति ऊक्कल् अरसिर्काल् नुंगकट्कामो

भावार्थ—क्रोधयुक्त हाथी गिरने वाले मद के साथ हथिनी से रमते समय उसे अलग करने के लिये छोटे हाथी सा हो सकता है? कभी नहीं। उत्तम पत्नी देवी जो दत्ता है वह जीवक स्वामी को पत्नी हो गयी है। हे राजा लोगों! उस दत्ता को बलात् प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करना कभी हो सकता है? कदापि नहीं।

[७५४]

धूमत्ताल् केलीइय कोदै तोलतुणै पिरित्तलिवण्मेल्
तामत्ता ल्केलीइय मार्पिन् इन्दिरन् तनक्कमाका
येमुट्टी रिन्नुं केण्मिन् इरतियै प्पुर्ट्टु मेन्ट्रु
कामत्ताल्केलुमि नार्कुक्कामनिन् पिरिक्कलामे

भावार्थ—'अगिर' नामक धुआँ से सुगन्धित सिर के बाल वाली दत्ता के भुज के सहायक हैं जीवक। उसे दत्ता से अलग करना देव लोक में कल्पवृक्ष की माला पहनने वाले इन्द्र से भी नहीं हो सकता। मद से मूच्छित हे राजा लोगों! सुन लीजियेगा कि रति देवी के साथ भोग भोगेंगे ऐसा आँख मींचकर कामवासना में डूबे हुए मानवों के द्वारा काम-देव को उक्त रति से अलग क्या किया जा सकता है? कदापि नहीं।

[७५५]

एम्मैनी वेल्लप्पेट्टी वेन्ट्पिन् इरुन्दवेन्दन्
उम्मेयुं वेरु सेयदु नुंमुले पोरुदु वीन्दाल्
वेम्मैसेय् दुलगमेल्लां आण्डिड विलैक्कुं नीति
अम्मट्रु अदनै ओरी रवन्करुत्तन्नदेन्ट्रान्

भावार्थ—पद्मास्य और कहने लगा कि बात के लिये मान लीजिये कि हम लोगों को आप लोग यदि जीत भी जायेंगे तो, उसके बाद काष्ठांगार आप लोगों से आपस में झगड़ा करायेगा। उस कारण से आप लोग आपस में लड़ कर मरेंगे तो, बाद में वह अकेला रह कर लोगों पर अत्याचार के साथ हुकूमत चलाने का रास्ता खोलेगा उस रहस्य को आप लोग नहीं जानते हैं। काष्ठांगार का विचार (धूर्त स्वभाव) इस तरह का है।

[७५६]

सोलितरल अन्ट्रि मन्नीरतोक्कुनी कर्णिमनेगल्
विलि्तरल एन्ट्रु विलवाय् वेंगणै तोडुत्तु वांगिक्
कलितरलकलिन्दु मण्णुल्सुरन्दतुकुलिपेय्दिट्टु
इन्ट्रेमर्कलि्व एन्ट्रान् इडियुरुं एट्रोडोप्पान्

भावार्थ—पद्मास्य गिड़-गिड़ा कर और कहने लगा कि हे राजा लोग ! हम लोगों के वचनों को आडम्बर मात्र मत समझना, आप सब लोग मिलकर हमारे धनुर्विद्या के चातुर्य को अवश्य देखना। तदनन्तर धनुष पर बाण चढ़ा कर जोर से खींच कर छोड़ा; वह पत्थरों को तोड़ कर जमीन पर घुस कर छिप गया। धनुर्विद्या में हम लोगों का सामर्थ्य इस तरह का है।

[७५७]

आलिअं कलनितन्नुल् अंबोडु कणैयं वित्तिच्
सूल्कुड प्पिणंगलमलग विलैत्तपिन तोलुतिप्पलपेयक्
ऊलपडु कुरुदि नेय्यिन् इरैच्चिचच्चोरुट्टि वेन्ट्रि
वीलतर वेट्टु निन्ट्रा रेय्दुप वेकुलल् वेण्डा

भावार्थ—चक्रव्यूह के रूप में खड़ी को गयी सेनारूपी उपजाऊ जमीन पर, बाण और दण्डायुध को बोकर, शवरूपी धान को खूब पैदा करते हुए लड़ाई में मरे हुए शत्रु लोगों के रक्तरूपी घी को मांसरूपी चावल के साथ, झुण्ड के रूप में आने वाले पिशाचों को खिला कर विजय लक्ष्मी को प्राप्त करने वाले हैं दत्ता के पक्ष वाले। अतः आप लोगों को व्यर्थ गुस्सा करने की कोई जरूरत नहीं है। सावधानी से रहना, सब कुछ देखने को मिलेगा। इस तरह पद्मास्य गिड़-गिड़ाहट के साथ कहने लगा।

[७५८]

पोपरै मुलंगि एंगुं पोरुवलि पुडैक्कप्पट्ट
कार्कडलपोन्ट्रु सेनै कलक्कमो डुररि आर्प्पत्
ताप्पोलि मार्बन् ओर्त्तत् तन्कैयि ल्वीणै नीक्कि
वाप्पोलि मुलैयि नाटकु वायितिरं तितनैच्चोन्नान्

भावार्थ—उसके बाद सब जगह युद्ध भेरी बजने लगी। हवा से ताड़ित काला समुद्र के समान योद्धा लोग हल्ला मचाते थे। फूलमाला से शोभित वक्षस्थल वाला कुमार उसे जान कर अपने हाथ में जो वीणा थी, उसे नीचे रख कर, चोली से बाँधे गये स्तन कलश वाली गान्धर्वदत्ता से मुँह खोल कर नीचे लिखे वाक्यों को कहने लगा।

[७५९]

तेयन्दु नुण् इडै नैन्दुकच्चेप्पिनैक्
कायन्द वेंमुलैयाय् निन्कण्गळ् पोल्
आय्न्द वंपिनुक्कारिरै यागिय
वेन्द वेंण्डिनिन्ट्रा विम्मल् नीयेन्ट्रान्

भावार्थ—घिसी हुई कमर वाली, कलश को भी लज्जित करने वाले स्तनों को धारण करने वाली हे प्रेमिका ! तुम्हारे नयनों के समान हमारे जो प्राण हैं वे कभी व्यर्थ नहीं जाते। राजा लोग ऐसे बाणों का हार बनने के लिये प्रेम से खड़े हैं। इसके लिये तुम घबराओ मत। सब ठीक कर दिये जायेंगे।

[७६०]

अण्णलकूरलुं अंमनैयो वेनात्
तुण् एन्नेंजिन लाय्त्तुडितायिलै
कण्णिनीर मुलैपाय्क्कलंगिनाल्
वण्णमाक्कविन्सोल्लोडु भाय्न्दते

भावार्थ—कुमार के वचन सुनकर दत्ता 'हाँ' कहकर डर के मारे दिल से घबराने लगी। आँखों से आँसू की धारा प्रवाह के रूप में निकल कर स्तनों के ऊपर गिरने के साथ रोने लगी। उस समय उसका सौन्दर्य वचनों के साथ बिगड़ने लगा।

[७६१]

मेवि नंविक्कु वेंपकै याक्किय्
पाविये नुयि र्पालुडल् पट्रुविट्टु
आवियो नउवायेन्ट्रलुदुतन्
कावि वाट्कण् कलंग वदुक्किनाल्

भावार्थ—मेरा कुमार के रिस्तेदार बनने से विचारे (कुमार) को मेरे कारण विरोध खड़ा हुआ है। मैं पापिनी हूँ। मेरा जीव अब तक इस नीच शरीर को छोड़ कर गया क्यों नहीं। हे जीव, मेरे शरीर को छोड़ कर भाग जा। इस तरह कहती हुई पीट-पीट कर रोने लगी। जिससे उसकी नीलोत्पल कमल सरीखे प्रकाशमान आँखें लाल होने लगीं। फिर भी सिर पर पीट कर रोती रही।

[७६२]

पालि नंपडै मेलदु इप्पारेलां
नूलि लाट्टि नुडक्कि क्कुडित्तिडुं
वालि नंगै कण्डायेन्ट्रु वाट्कणीर्
तोलि तूत्तुकिर्ट्रोगैयि नीक्किनाल्

भावार्थ—पीट कर रोने वाली दत्ता को देख कर उसकी सखी कहने लगी कि अपनी सेना शक्तिशाली है। राजा लोगों की सेना क्या और भी सेना आवें सबको ध्वंस कर एवं पीस कर पीने वाली है। इस बात को तुम अच्छी तरह जान लो। अतः दुखित होने की कोई जरूरत नहीं है। शान्ति के साथ रहना। इसे कहने के साथ शोभायमान उसकी आँखों से निकलने वाले आँसुओं को साफ कपड़े से पोंछने लगी।

[७६३]

एंगल् पेण्मैयुं ईर्मलर्त्तार्मिन्नर–
तंगलाण्मैयुं सालवदु काण्डु मेन्ट्रु
इंगुवार्मुरलुं कलैर्यन्दलकुल्
नंगैवाट्पडै नंगैयै च्चूलददे

भावार्थ—दत्ता के पास तलवार को हाथ में ला हुई नारियों की सेना सुरक्षार्थ खड़ी हुई थी। वह कैसी थी? ठंडे मलतार प्रदेश के राजाओं की सेनाओं से भी बलशालिनी थी। और कैसी थी? लम्बी एवं शब्दायमान मेखलाभरणों से अलंकृत मर्मस्थान वाली थी।

[७६४]

कून्गलुं कुरलुंअंजिक्कुडर्वेन्दु कोलुं पोर्पेलै
तान्कोलप्पाय वोडिच्चान्दुक्कोय् पुकिय सेल्व

तेन्कोल्पूमालै सूडित्तामम्माय्त् तिरण्डनिर्प
वान् पल्लिगुरुवत्तूणे मर्रेपवु मायवन्ट्रे

भावार्थ—कुबड़े और नाटा लोग लड़ाई को देख कर डर के मारे सोने की पेटी के अन्दर घुस जाने का प्रयत्न करने लगे। मकान के छत पर बैठ कर छिप जाने को दौड़ने लगे। मधु मिश्रित फूलमाला पहन कर उस माला के रूप में खड़े रहना एवं प्रकाशमान पत्थरों से बनाये गये खम्भों में छिप जाना इस तरह की लड़ाई से बच जाने का मार्ग समझ कर छिपने का प्रयत्न करने लगे। लड़ाई से सभी को डर लगता था।

[७६५]

इंगित निलैमै नोक्कि मुरुवलित्तेरिपोन्मार्बन्
नंगैयै क्काक्कुंवण्ण नकानिन्ट्र् मोलिन्दु पेय्वाय्च्
सिंगन्तान्कडिय तांगोर सेलुंजिग मुलक्कि सीरिप्
पोंगिमेच्चेंलवदेपोल्पोलन्कलल् नरल च्चेन्ट्रान्

भावार्थ—इस तरह सेना के आक्रमण को देखकर कुबड़े और नाटे लोगों के डरने की हालत से शोभायमान सोने की माला पहने हुए कुमार ने हँस कर दत्ता की रक्षा के कार्य को उन्हें करने के वास्ते आदेश दिया। उसके बाद काले मुँहवाला शेर, वहाँ के शेरों के शब्दों को सुन कर खुद भी आवाज करते हुए उसके साथ जाने लगे।

[७६६]

पदुमुग कुमरन्मट्रिप्पावैयै क्कावलोंबि
मदुमुग मालै नेट्रिमदकलि रुन्दिनिर्प
नुतिमुग वालुं विल्लुं नुण्णिलै वेलुं एन्दिच्
सदुमुग माकच्चेनै नमर्तलै प्पेय्ग वेन्ट्रान्

भावार्थ—इसक अलावा युवा पद्मास्य दूसरी जगह से दत्ता की रक्षा के निमित्त मधु से भरे फूल की माला से अलंकृत माया वाले एवं मद भरे हाथी को जहाँ दत्ता रहती थी वहाँ के मुख द्वार पर खड़ा किया था। उनके बन्धु-बान्धव लोग तीक्ष्ण तलवार, धनुष और पत्ते के समान जो वेलायुध है उन्हें भी हाथ में लेकर अपनी सेना को चक्रव्यूह के रूप में खड़ा कर दिया था।

[७६७]

वट्टुडै मरुंगुल् सेर्त्ति वालिरु पुडैयुं वीक्किक्
तट्टुडै प्पोदिन्द तिण्तेर्त्त नंजेयन्पोल एरिक्
कट्टलै प्पुरवि सूलन्दु कालपुडै काप्प एवि
पट्टुयि र्पुरुगुं कूट्टं कोलेलुन्दनैय तोत्तान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार, जीव जन्तुओं को मार कर खाने वाले यमराज के समान दिखाई देने लगा। युद्ध वीरों के पहनाव जैसा (जंघा तक कपड़ा पहनना) पहन कर तलवार को दोनों तरफ़ लटका कर सुन्दर रथ पर अर्जुन के समान बैठ कर, आज्ञा जैसे देते थे वैसे घोड़े दौड़ते थे। उनके रथ के चारों तरफ वीर लोग रक्षा करते थे। इस तरह युद्धभूमि पर पहुँचा था।

[७६८]

पुल्लिरैप्पन्न पोट्रार्प पुरवित्तेर् इरवि पोला
वुललुरुत्तेलुन्दु पोंगि युडलिसनं कडव नोक्कि
मुल्लेयि रिलंग नक्कु मुडिक्कुला मन्न कॅट्पक्
कललवि ललंगल् मार्पन् कार्मलै मुलंगिन्सोन्नान्

भावार्थ—चिड़ियों के शब्द के समान शब्द करने वाले सोने की किंकिणी घंटियाँ बाँधे गये जो घोड़े हैं वे रथ में बाँधे गये थे। उस रथ में प्रातःकाल सूर्य के समान बैठकर, गुस्से के मारे निकले हुए जो शब्द हैं उनके साथ दाँतें कटकटाते हुए हँसकर किरीटधारी सारे राजाओं के सामने फूलमाला से शोभित वक्षस्थल वाले जीवन्धर कुमार मेघ गर्जना के समान कहने लगे।

[७६९]

मुरुकुला मुललै मालै मूप्पिला मुलैयिनानुं
मरुकुलां पुलविनोक्क त्तमितमिन्रुकुप्प कोललो
करुतलां पडियदन्ट्रि क्कलतियं पिवैयुं काय्न्द
पोरुतुलां पुगलै वेटिव् वॅंकमुं पुगैन्द एट्रान्

भावार्थ—हे राजा लोगों! सुगन्ध चमेली फूल की माला पहनी हुई, छोटी-मोटी स्तनवाली आपकी नारियाँ हैं। अलावा इसके आप लोग वीणा

में दत्ता को जीतकर सुख प्राप्त करने के लिये आये थे। लेकिन उसमें हार गये। बाद में बुरे मार्ग को अपनाने के कारण अपनी नारियों से प्राप्त होनेवाला जो भोग सुख है उसे भी बेकार खो रहे हैं। इसलिये भयंकर कष्ट पहुँचाने वाले बाण सूखे हुए हैं। युद्ध करने से मिलनेवाली जो कीर्त्ति है उसे प्राप्त करने के वास्ते ये वेलायुध भी जाग्रत हैं।

विशेषार्थ—हे राजा लोगों! कुमार के कहने का आशय यह है कि अपनी सुन्दर नारियों के भोग सुख को छोड़ कर यहाँ आये हैं। यहाँ दत्ता से हार जाने के कारण यहाँ भी भोग सुख प्राप्त नहीं हुआ। परन्तु बलात्कार (लड़ाई) से दत्ता को प्राप्त करने को कोशिश कर रहे हैं। इसमें आप लोग निश्चित रूप से हारेंगे और खतम हो जायेंगे। "इतो भ्रष्टः ततो भ्रष्टः" इस नीति के अनुसार न इधर (दत्ता) का सुख रहा और न उधर (पत्नी) का सुख रहा। दोनों से हाथ धोकर यमराज के अतिथि बन जायेंगे। आप लोग जो कर रहे हैं उसका नतीजा यही होगा। देख लेना।

[७७०]

वाणिक मोन्ट्रं तेट्राय् मुदलोडुं केडुवन्दाल्
ऊण् इगंत्तीट्टप्पट्टवूदिय वोलुक्किनेंजत्
तेणिकन्तिलेसु नोक्कि यिरुमुदल्केडामै कोलवार्
सेणिकन्तुय्यप्पोनिन्सेरितोडि ओलिय वेन्ट्रार्

भावार्थ—जीवक के द्वारा कही गयी बातों को सुनकर राजा लोग कहने लगे कि तुम वणिक के पुत्र हो। तुम्हें व्यापारी का कर्तव्य भी मालूम नहीं है। वणिक् लोग खाने को भी छोड़कर सम्पाद्य असल (पूंजी) के साथ व्याज (लाभ) का नष्ट आवें तो उक्त पूँजी से आने वाले लाभ को छोड़ कर, असल और व्याज दोनों को छोड़ने के सिवाय असल (पूंजी) नष्ट न होवें इस पर वणिक् लोग ध्यान देंगे। अतः लाभ रूपी चूड़ियाँ पहनी हुई दत्ता को यहाँ छोड़ कर तुम्हारे शरीर रूपी पूंजी को सुरक्षित करने के साथ अपना जीवन बिता लो।

विशेषार्थ—कुमार वणिक के घर पर पलता है। इसलिये राजा लोग उसे व्यापारी का पुत्र समझ कर इस तरह बोलते हैं।

[७७१]

तंमुडैप्पण्डन्तन्नैक्कोडुत्तव रुडमै कोडल्
एम्मुडै यवर्कल् वाल्कै येमक्कुमदोक्कु मन्ट्रे

अंमुडि यासिक्कैल्ला मेन्कैयिलंबुतन्दु
नुम्मुडैत्तिरुवुन्देशु नोक्कुमिन्कोलवल् एन्ट्रान्

भावार्थ—राजा लोगों की बात सुनकर जीवक कहने लगे कि अपनी वस्तु को दूसरों को देकर उनकी वस्तुओं को ले लेना हमारे कुल वालों की आदत है। यह बात मेरे लिये भी लागू होगा न? सुन्दर मुकुटधारी राजा लोगों को याने आप लोगों को मेरे हाथ के बाणों को देकर उसके बदले आप लोगों की पूंजी और कीर्त्ति दोनों को ले लेंगे। यदि हो सकें तो उनकी रक्षा कर लेना। नहीं तो पीछे पछताना होगा।

[७७२]

मट्टुवान्दारिनाय् निन्वनप्पिनोडिलमै कलिव
केट्टुवाय् सिलंबु सेंबोन्किकिणी नगलिर्कोंग
मोट्टुला मुलैगल्पायन्द वगलत्तुच् सरंगण्मूलकप्
पट्टुलाय् किडक्क लुट्राय् एन सोलाय् पावि येन्ट्रार्

भावार्थ—कुमार की बात सुनकर राजा लोग कहने लगे कि मधु-मिश्रित फूलमाला पहने हुए जीवक, तुम्हारा यौवन, विद्या, नाश होकर, पायल और सोने की किंकिणी नाम की चीज को पहनी हुई नारी के गन्ने के समान स्तन कलश वाले छाती पर बाण लगने से मरवाने के वास्ते आकर खड़े हुए रे पापिष्ठो तू क्या-क्या नहीं कहेगा? अर्थात् सब कुछ कहेगा।

[७७३]

एरिसुडर्प्परुदि मुन्नरिरुलेन वुडैन्दु नींगप्
पोरुपडै मन्ननुंगेल् पुरक्कोडै कण्डु मट्रिम्
मुरुकुडैक्कुललि नाडन्मुगिल्मुलै कलप्पलन्ट्रे
इरुसुडर्वलंगुं वैयत्तेन्पेयर्केडुग एन्ट्रान्

भावार्थ—राजा लोगों की बात सुनकर कुमार कहने लगा कि प्रकाशमान सूर्य के सामने अन्धकार नष्ट होने के समान सेना बलवाले हे राजा लोगों! तुम लोग मेरे सामने हार कर पीठ दिखाते हुए भागने की हालत को देखने के बाद ही, सुगन्धमय सिर के बालवाली दत्ता के स्तन कलशों को स्पर्श करूँगा। नहीं तो सूर्य-चन्द्र के संचार वाली इस दुनियाँ में मेरा नाम नहीं रहेगा। यह शर्त है! (Challange)

[७७४]

आण्मरवाल् निलत्तप्पु वेलसेय् मूट्
काण्वरु काट्रिनक्कलिट्ट् नील्वरै
नीणिल वेन्दनुं वेलप्पेरिनम्
पूण्मुलैप्पिडिक्क वायप्पोर सेय कुट्रवे

भावार्थ—युद्ध वीर रूपी पेड़ हैं; उनके हथियार रूपी जमीन हैं। बाण और वेलायुध युद्ध सामग्री हैं। सब लोग देखने वाले हैं। जंगल के हाथियों के झुंडरूपी पहाड़ हैं। उसमें राजा लोग रूपी झुण्ड सवार होकर दत्ता देवी के सुन्दर स्तन कलश की आशा से झगड़ने लगे।

[७७५]

तालिरुदडक्कैयुं मरुप्पुं तंबियर्
तोलर्तन्ताल्कला च्चोरियु मुंमद
मालकडच्चुंट्ट्मा वलन्ट्ट् जीवक
वेलुयर्बोधक मिनत्तोडेट्रते

भावार्थ—भाई नन्दाढ्य लम्बे और बड़े सूण्ड है। नपुल-विपुलरूपी कान हैं। भ्रातारूपो पैर हैं। सागर के समान विशाल रथ सेना, घोड़ों की सेना, पैदल सेना ये हाथी के तीन मद हैं। वीणा के गान से ऊँचे स्थान पर गौरव प्राप्त हाथियों का राजा जोवन्धर कुमार विरोधी हाथियों के झुण्ड के साथ झगड़ने लगे।

[७७६]

कुडैयुडै वेन्दनु कुलां कोणागमुं
कोडियेनुं पिडियुडै क्कुमर वेलमुं
वेडिपडु पोर्त्तोल्लिलकाण विंजैयर
इडियुडै यिनमलै नेट्रि एरिनार्

भावार्थ—छत्रों से शोभित राजा लोग रूपी हाथियों का समूह फूलों की लता जैसी दत्ता देवो हथिनो के वास्ते जोवकरूपी हाथी का आपस में विरोधी राजा रूपी हाथियों के साथ जो लड़ाई होतो थी उस युद्ध रूपी धन्धे को देखने के लिये विद्याधर लोग गर्जना के साथ रहने वाले मेघों के ऊपर चढ़कर खड़े होने लगे।

[७७७]

करैपोरु कडलोडु कार्कणु ट्रेन
मुरैसोडु वरिवलै मुलंगियार्त्तन
अरैसरु मममंलैन्तरणंवीसिनार्
कुरैकडर्ट्रा नैपोक्कोल ञ्चेयदवे

भावार्थ—किनारे पर जोर से लगने वाला सागर की लहर के साथ मेघ गर्जना भी मिलकर शब्द करने के समान, युद्ध भेरी और शंखनाद शब्द करने लगे। राजा लोग भी युद्ध सन्नद्ध होकर कवच पहनने लगे। शब्द करने वाले समुद्र के समान सेना भी युद्ध के लिये तैयार हो गयी थी।

[७७८]

देय्वतं वणंगुपुसें पोन्वायुलिट्टु
रग्य्कणैप्पडुमलै सितरियेंकणुं
मोय्यमर्म लैत्तनर्मुरुगु विम्मुतार्च
सेय् कलल् सीवकन् वाल्ग एन्नवे

भावार्थ—भगवान को नमस्कार कर, लाल रंग वाले सोने के पट्ट को मुँह में रखकर, सब जगह वर्षा के समान बाणों को फेंककर, आये हुए युद्ध को स्वीकार कर, सुवास माला और वीर का चिह्न पहन कर जीवक जीते रहें इस तरह का मंगल वचन कहकर कुमार की सेना भी युद्ध में लग गयी थी।

[७७९]

कलंदतु पेरुंपडै कणै पेयम् मारितूय्
इलंगिन वाट्कुला मिवुलि एट्रन
विलंगिन तेर्तोकै वेलं कायन्दन
सिलंबिन इयमरं तेलित्त संगमे

भावार्थ—राजा लोगों की बड़ी भारी सेना मेघ वर्षा के समान बाणों को कुमार की सेना पर छोड़ने लगी। दोनों सेनायें आपस में भिड़ गयी थीं। दोनों तरफ़ की पैदल सेना जोर से लड़ने लगीं। घोड़े आपस में भिड़ने लगे। रथ आपस में रोक-रोक कर टकराने लगे। हाथी भी आपस में लड़ने लगे। युद्धवाद्य और शंखनाद खूब शब्दायमान होने लगे।

[७८०]

सुट्रणि कोडुंतिलै मेघं तूविय
मुट्रणि पिरैएयिट्रु अंबु मूल्कलिन्
अट्रुवील् कुलैमुख मलर्न्द तामरै
मट्रेवै सोरिवदोर् मारि ओत्तवे

भावार्थ—चारों तरफ़ टेढ़े धनुष रूपी मेघ वर्षित अर्द्ध चन्द्राकार सिरा के समान बाण वर्षा में डूब जाने से, टूटकर नीचे गिरने वाले बाण ऐसे दीख पड़ते थे कि विकसित कमल फूलों को वर्षा करने वाले मेघ हो।

[७८१]

मरप्पडै पसित्तन वयिरिन्ट्राकेनक्
कुरैत्तन कुंजरं कून्दन् मात्तुणित्
तिरत्तिन रोडुतेर मैन्दर इन्नुयिर्
तुरक्कं पोय्प् पुगु केनत् तुणिय नूरिनार्

भावार्थ—योद्धागण "पहले भूख से रहने वाले योद्धा लोग अब भूख मिटा कर पेट भरपूर भरें" ऐसा कह कर हाथियों को मारने लगे। गर्दन पर रोमवाले घोड़ों को मार कर दौड़ने वाले रथों को नाश करते थे। वीरों की आत्मा स्वर्ग में जावें इस तरह कह कर उन वीरों को टुकड़े-टुकड़े कर देते थे।

[७८२]

आट्रुवीर्वम्मि नेंम्मोडु आण्मैमें पडोइयवेन्बार्
एट्रव मापत्तल्ला लिरुंबुमेल विडादु निर्पार्
कूट्रंपो कोंडिय यानैं क्कोडुलु तकन्ट्र मार्पम्
कीट्रु पट्टलगि ताकक्किडक्केन क्कोडुत्तु निर्पार्

भावार्थ—कुछ वीर लोग यों कहते थे कि "तुम्हारे पास यदि अच्छी वीरता होवें तो उसे दिखाने के वास्ते मेरे पास आकर युद्ध करें।" ऐसा कहते थे। इस तरह आने वाले वीर लोग छाती पर लोहे से बने वेलायुध को फेंके बिना खड़े रहते थे। यमराज के समान जो हाथी था उसकी

हड्डी इसको विशाल छाती पर लग कर गहरा घाव होवें, ऐसा कहने के साथ छाती को हाथी के पास देकर छुपे खड़े रहते थे।

[७८३]

कलित्तुवाल् अमलै याडिक् काट्टुवार्कण्कल् सेन्ती
विलित्तुमेलसेन्ट् वेलंवेलिनाल् विलक्कि निर्पार्
तेलित्तुत्तेर्कयिरु वालाल् अरिन्दिट्टुप्पुरवि पोक्किप्
पलिप्पिल कोणर्न्दु पूट्टु पाकनी येन्ट्रु निर्पार्

भावार्थ—और कुछ वीर लोग म्यान से तलवार को निकाल कर हाथ में लेते हुए चारों तरफ़ घुमा कर नाटक दिखायेंगे। सामने वेग से आने वाले हाथो को बेलायुध से रोक कर खड़ा करेंगे क्रोध से रथ की रस्सी को तलवार से काट कर घोड़ों को भगा देंगे। बाद में रथ को चलाने वाले से कहेंगे कि निर्दोष घोड़ों को लाकर रथ में लगाओ कह कर खड़े रहेंगे।

[७८४]

ऐंगतिक्कलिन प्पायमा च्चिरिदुपोर कलयी तेन्बार
वेंगतिर्वेलि सुंट्टि वेंत्तेदिर् कोण्डु निर्पार्
नंगै कलयाणं नन्ट्रे नमक्केन नक्कु निर्पार्
सिंगमुं पुलियुंपोन्ट्रार् सीवकन् तोलन्मारे

भावार्थ—और कुछ लोग कहने लगे कि पाँच गति, लगान वाली घोड़ों की लड़ाई छोटी है इसे छोड़ देंगे। सूर्य के समान प्रकाशमान वेलायुध वाला एक राजा था उसे दिखा कर यह मेरा शत्रु है, इसे छोड़ेंगे नहीं; ऐसा कह कर उसका सामना करते थे। दत्ता के विवाह ने अपन लोगों को झगड़ा दिलाया। मजा चखाने के लिये, यह अच्छा हो हुआ ऐसा कह कर कुछ लोग सन्तुष्ट होते थे। इस तरह जीवन्धर कुमार के दोस्त लोग शेर और बाघ के समान ये दीखते थे।

विशेषार्थ—पाँच गति :—विक्खितं, वग्गितं, उपखण्डं, मध्यमं और चारिकै ये पाँचों पाँच गति कहलाती है। युद्ध में इस तरह पाँच गति का विधान है।

[७८५]

ओरुं गवन्पिरन्द आन्ट्रे पिरन्दवरुदयत्तुच्चि
इरुंबिनार्पिन्नि यन्न येरुल्वलि मुलवुत्तोलार्
विरुंबुवार् वेल वेपोर् नूट्वर नूरुकोडिक्
किरुन्दनं वरुगवेन्बार् इन्नण मायिनारे

भावार्थ—जिस दिन जोवन्धर कुमार का जन्म हुआ था उस दिन जन्म लिये हुए सहोदर वर्ग उदयगिरि के शिखर लोहे से बनाये गये हों ऐसे शक्तिशाली हैं और हाथी पर बेलायुध को चलाने में होशियार हैं। वे एक सौ लोग एक करोड़ सेना के समान हैं। वे लोग कहते हैं कि हम लड़ाई के लिये तैयार हैं जो हमसे लड़ना चाहते हैं वे आवें। वे लोग शत्रुओं को झगड़े में आह्वान देकर लड़ाई में शामिल हुए थे।

विशेषार्थ—ये एक सौ लोग जीवन्धर कुमार के साथ जन्म नहीं लिये हुए हैं; बल्कि उसी दिन शहर में जन्म लिये हुए हैं और सहोदर के समान हैं। हर तरह से कुमार को साथ देते हैं।

[७८६]

कूट्टुर मुरुक्कि विट्ट कुयमगन तिगिरि पोल
वाट्टिरट्टेव दत्तन् कलिमामालै वेल्वेल्
ईट्टं पोलन्तियानै नेट्टि यिरुंगुलं पलुत्ति मन्नर्
सूट्टोडु कण्णि सूलामणि सिन्दित्तिरियु मन्ट्रे

भावार्थ—गोली मिट्टी को रख कर घुमाये गये कुलाल के चक्र के समान शक्ति सम्पन्न हथियार वाले देवदत्त का घोड़ा, माला पहने हुए सफ़ेद योद्धाओं के झुण्ड को नाश कर हाथो के ललाट में पाँवों को जमा कर राजा लोगों से अलंकृत युद्ध की फूलमाला, चूडामणि आदि को विध्वंस कर चारों तरफ घूमने लगा।

[७८७]

पायन्ददु कलिन मावो परवैयोवेन्न वुटिक
वेन्दतं वयिरुवेव नपुलामा विपुलरेन्बार्
काय्न्दु तं पुरविक्काम र्कुलंबिनाल् कलिट्रिनोडै
तेय्न्दुकच्चेर्त्ति मालैत्तिरुमुडि त्तिलकं कोण्डार्

भावार्थ—जोर से लगाया गया वह घोड़ा है या चिड़िया है ? इस तरह डर के मारे राजा लोगों का पेट जलने लगा; नकुल-विपुल नाम के दोनों योद्धाओं ने क्रोध से अपने घोड़े के चरणों से हाथी के मुख का आभूषण काट कर गिराया गया। उसी घोड़े को जोर से चला कर राजा लोगों के सिर पर जो चूड़ामणि रत्न थे वे छीन लिये गये थे।

[७८८]

कायत्तिन्कुलंबु तीट्रिक्कारिरुं पेरिय मेगं
तोयुमु लिलविन्कून्काय् किलैतोरु मुदिर्ववेपोल्
मायं कोल मरवर्मालै प्पैन्तलै युंदिन्द्र सेंगण्
सेयनान् तिरुविन् पेरान् सेलुंजिलै प्पगलियाले

भावार्थ—हींग के गाडे को लगाये गये कुठार से काटे गये बड़े से बड़े काँटे वाले पेड़ के कच्चा फल हर एक डाल से गिरने के समान, माला पहने हुए वीरों के सिर, सुन्दर आँख वाले षण्मुख के सदृश अधिक सम्पन्न श्रीदत्त के धनुष से छोड़े गये बाणों से गिराये गये थे। यह क्या आश्चर्य है ?

विशेषार्थ—श्रीदत्त का वीरत्व और युद्ध का चातुर्य अत्यन्त सराहनीय था।

[७८९]

नीनिरप्पौवं मेयन्दु सून्मुट्रि नीलमेगं
वानिर विसुंम्मि निन्ट्रमारियिन्मरैव लालन्
पोनिरप्पुद्धिसेनन्पोन्नणि पकलि सिन्दि
वेनिर मन्नर्सेनै कूट्रिकु विरुन्दु सेय्दान्

भावार्थ—नील रंग का जो समुद्र है उसके पानी को पीकर मेघ के रूप में बदला हुआ वह (मेघ) शुद्ध आकाश से पानी बरसने के समान वेदशास्त्र में निपुण एवं सोने के रंग वाला बुद्धिसेन, सोने से बनाये गये बाणों की खूब वर्षा कर वेलायुधधारी राजाओं की सेना को यमराज के अतिथि बना दिया था।

[७९०]

वीरवेल उडंबेलांसूल वेंबुलाल्
सोरुं सेंकुरुधियुण् मैन्दर् तोन्ट्रुवार्

ओरुमे लोण्मणिच्चूट्टु वैक्किय
आरमे यमैन्द तेर्क्कुरिसि यायिनार्

भावार्थ—शत्रु लोगों के वीरत्व से भरे वेलायुध, सारे शरीर में लगे हुए थे। जिस कारण से शरीर पर घाव लग गया था। उससे लाल-लाल रक्त की धारा निकल रही थी। ऐसी हालत में दीखने वाले शत्रु के वीर लोग प्रकाशमय रथ चक्र के अवयव बन गये थे।

[७९१]

पोन अनाल् पुणर्मुलै प्पोगं वेण्डिय
मन्नरोडिलैयव मंरलि वालमर्
इन्नण मित्तलै मयंग वत्तलैक्
कोन्नविल् वेलिनान्तिलमै कूरुवां

भावार्थ—लक्ष्मी देवी के समान जो दत्ता थी उसके स्तन कलश को प्रेम लालसा से भरे राजा लोगों के साथ सहोदर लोगों का तलवार युद्ध यहाँ पर जोर से चल रहा था। दूसरी जगह पर शत्रुओं को नाश करने में सर्व समर्थ वेलायुद्धधारी जोवन्धर कुमार का युद्ध कैसा चल रहा था उसके बारे में थोड़ा सा प्रकाश डालेंगे।

[७९२]

तंबियैच्चीवकन्नोक्किच्चामरै
वेंवरिमान्सेवि वोरमन्दिरं
इंबर्नं मिटकेड विरण्डुं वललैयाय्
नंबिनी मोलिकेन नयन्दु कूरिनान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार भाई नन्दाढ्य को देखकर कहने लगे कि भैय्या, तुम एक मन्त्र जानते हो वह यह है कि चाहें तो वेग से दौड़ने वाले घोड़े के कान पर वह मन्त्र बोलकर उन्हें उड़ाना और खड़ा कर सकते हैं। उस वीर मन्त्र को अपने संकट निवारणार्थ मुझे बताओ तो सही।

[७९३]

मन्दिरं केट्टु नान्गुं वानेट्टिप्पुगुवे पोल्
अन्दरत्तिवन्दं वालिक्कानिलंविट्ट मालैच्

सुन्दर क्कण्णि मेनि मगलिर्तं कण्णु ल्लिट्ट
मैन्दरु मिरुंबु मोव्वा वान्पुलं कावल कोण्डार्

भावार्थ—नन्दाढ्य से कहे गये उस मन्त्र वचन को सुन कर, तदनुसार रथ में लगाये गये चारों घोड़े आकाश में दौड़ने के समान उड़ने लगे। गोलाकार रथ की लकड़ी स्थिर हो गयी। मालायें पहनी हुई एवं सुगन्ध चूर्ण लगाई गईं नारियों तथा अपने आँखों में रखे गये जीवक और नन्दाढ्य दोनों सच्ची बुद्धि का, लोहे से ऊँचा कवच पहने हुए थे।

[७९४]

वडिकयिराय्न्दु मुलकोल वलक्कैयालतांगि वेन्ट्रि
मुडिकेन प्पुरवि मुल्लालुरुत्तिनान्मोलितरेट्र्न्
कडुकिय वण्णमाविन्तारोलि कामर्पोट्रोर्
पडैयदु सेवियुं कण्णुं पट्रि निन्ट्रिट्ट वन्ट्रे

भावार्थ—नन्दाढ्य ने घोड़े की लगाम को ठीक करके, चलाने छोटी लकड़ी को सीधे हाथ में लेकर, उस लकड़ी में लगी काँटे से घोड़े को चला कर दौड़ाये। उस समय वे घोड़े कैसे दौड़े ? इसे कहने के लिये हमारे पास शब्द नहीं है। घोड़े को किंकिणी घंटी को माला से निकलने वाली आवाज कान में और सुन्दर सोने के रथ आँखों में इस तरह दोनों में जमे हुए थे; हटे नहीं।

[७९५]

अण्णलते र्परवै एन्बारु अरुवभे युरुवं एन्बार्
मण्दे वानदेन्बार् मनत्तदे मुगत्तदेन्बार्
कण्दे सेवियदेन्बार् क्लंगनूल् कलिय नोक्किप्
पण्णिय वीतिपट्रि मण्डलं पयिट्टिनाने

भावार्थ—कुमार के रथ को चिड़िया कहेंगे। रूप रहित कहेंगे; रूपवान कहेंगे; ऐसा कहेंगे कि जमीन पर है; ऐसा भी कहेंगे कि नहीं नहीं आकाश में है। मन में है कहेंगे और कान में है कहेंगे। इस तरह जो कोई रथ को देखते हैं वे सब के सब अपनी-अपनी इच्छानुसार बोलते थे। वानशास्त्र को पढ़े हुए जीवक, उसके विचार के अनुसार वीथी से लेकर मण्डल तक चलाते थे।

[७९६]

अकिल कोण्ड कोल्लि वट्टं आरुयिर् मेयुनेमि
मुगिल कोण्ड मिन्नुत्तोर्प मुरुकिय विसैयिट्टागि
मिगलकोण्ड विकलैत्ताने विलुंगिय सिरकत्तोट्रिप्
पगल्कोण्डु परक्कुं तेरार् कालैतन्पैं पोट्रेरे

भावार्थ—'अगिल' नाम का वस्तु अपने पास रहने वाले प्रकाश एवं गोलाकार रूप जो है वह कई जीवों को हताहत करने वाला कालचक्र है। मेघ में रहने वाली विद्युत् को उत्पन्न करना, अति वेग के साथ भिन्न-भिन्न लड़ाई को पैदा करना, इस तरह सूर्य को लेकर कुमार का रथ आकाश में उड़ने लगा।

[७९७]

कालट्र वयिर मालै वेण्कुडै कविल्दं पिच्चं
मेलट्र कवचंवीलन्द सामरै यट्र विलनाण्
मालुट्र मन्नर्तं कण् मनंगयट्र् मिलन्द वललल्
कोलोट्र क्कुनिन्दवारे सिलैकुनिन्तोलिन्ददन्ट्रे

भावार्थ—दान कर्त्ता जीवक बाणों को लगाने के वास्ते एक बार झुके; उस समय धनुष भी एकदम झुक गया। उस समय धनुष से निकले हुए बाणों से राजा लोगों के होरे की माला, सफ़ेद छत्र सबके सब टूट-फूट कर गिरने लगे। अलंकृत वस्तुयें गिर पड़ीं। चामर नीचे गिरे। शत्रु राजा का धनुष टूट गया था। राजा लोग किंकर्तव्यता के साथ क्षुब्ध रहे।

[७९८]

नुंगलै वीणै वेन्ट्र नूपुरवडियिनाल् तन्
वेंकलित्तडंगण् कण्डीर् विरुन्देदिर्कोमिनेन्नार्
वंगलियरसर्केल्लां ओरोन्ट्रुमिरण्डुमागच्
सेंगलिप्पगलियोप्पित् तुल्लबारुट्टिनाने

भावार्थ—जीवक शत्रु राजाओं को देखकर कहने लगा कि आप लोगों ने वीणा में जोती गयो एवं पायल के शब्द से शोभायमान चरणों

वाली दत्ता की मादकता को उत्पन्न करने वाली आँखों को देखा है। अतः उसके आँखों के समान हैं ये बाण। आप लोग इन्हें स्वीकार कर लीजियेगा; मानो ऐसा कह कर घमण्ड से सम्पन्न राजा लोगों को उनकी योग्यता के अनुसार एक, दो, तीन और चार के हिसाब से दिया था। याने उन राजाओं के ऊपर बाण छोड़ा था।

[७९९]

नन्मनवेन्दर तंगल् नकैमणिमार्प नक्किप्
पुन्मन वेन्दर तंगल् पोन्नणि कवचं कीरि
इन्दुयिर्कवर्न्दु तीमै यिनिकोल्लु मुडंबिनालुं
तुन्नन्मिन् एन्बवे पोल सुडुसरं परन्दवन्द्रे

भावार्थ—कुमार से भेजे गये बाण अच्छे मन वाले राजाओं के प्रकाशमान रत्नों से अलंकृत छाती को छूकर, बुरे मन वाले राजाओं के सोने के कवच को फाड़कर, उन लोगों के प्रिय आत्मा को उठा कर, आप लोगों के आनेवाले किसी भी जन्म में दूसरों को भार्या का चाहने का जो बुरा कार्य है उसे कभी न कीजियेगा; मानो ऐसा कहते हुए सारी जगह फैलने लगे।

[८००]

मीन एरि तूण्डि ल्पोन्द्रु वेंजिलै नाण्कलट्र
तेनिरिकुन्द्र मोत्त तिण्कच्चै तुणिन्दवेलं
मान्नेरिकाट्टु न्तिणतेर् करिरट्रु मरिय वेन्दर्
ऊन् एरि यालि येन्दि योय्येन कुलंबि यार्तार्

भावार्थ—मछली को पकड़ने वाले जाल के समान राजा लोगों की भयंकर उँगलियाँ कट गयीं। वे लोग जिस हाथी के ऊपर चढ़कर आये थे, उनके पेट के निचले भाग में बँधी हुई रस्सी कट कर घायल होकर भ्रमरों से गुंजायमान होते हुए छोटे पर्वत के समान ढेर हो गये थे। शक्तिशाली रथ में बाँधे गये घोड़ों को ठीक करने वाले लगाम की रस्सी कट जाने से राजा लोग शरीरों को भेद करने वाले चक्र को उठा कर आरबार के साथ कोलाहल करने लगे।

[८०१]

आपेदिर्मारि पेय्युं अणिनेडुं कुन्ट्रंपोलप्
पोर्केदिन्तवरु मार्त्तारार्त्तलुं पूण्ड वल्लिल्
कार्केति मेंगंपोल क्कणैमलै कान्ट्र दिप्पाल्
ईर्त्तदु कुरुतिवेल्लं इरैच्चिक्कुन्ट्राविकनाने

भावार्थ—प्रतिध्वनि करने वाले बरसात के होने से सुन्दर बड़े पहाड़ के समान, राजा लोगों के आरवार जैसा जोवक के वीर लोग भो प्रति आरवार करने लगे। दोनों सेनायें इस तरह आरवार करने से जीवक का धनुष वर्षा काल मेघ के समान बाणों को वर्षा करने लगा। जिस कारण से रुधिर को धारा बहने लगो। उसमें जो सिर कट कर शरीर पड़े थे वे रुधिर को धारा में खींच कर ले जाने लगे। अन्त में वहाँ जीवन्धर कुमार ने एक शवों का पहाड़ खड़ा कर दिया था।

[८०२]

मन्नर्कल् वेगुण्डुविट्ट मरप्पडै अलुवमारि
कोन्नुरै एगि नोक्कि क्कुनिन्दुविल् पगलिकान्ट्र
मिन्नवि रिलंगु मोलवाल् विलित्तुय विलुंग विन्न
तन्मैयाल्तानै नोन्तित् तान्विलैयाडु किन्ट्रान्

भावार्थ—शत्रु राजा लोगों के द्वारा गुस्से के साथ छोड़े गये युद्ध सेना रूपी बड़ी भारी वर्षा को जोवन्धर कुमार ने हिंसा करने में समर्थ अपने वेलायुध के द्वारा हटा दिया था। बाद में अपने धनुष को लगाकर छोड़े गये बाण और विद्युत् के समान एवं प्रकाशमान तलवार दोनों, राजा लोगों के सिरों को काट कर ले गये। इसके अलावा कुमार और भो महत्त्वपूर्ण कृत्य के द्वारा सेनारूपो समुद्र में तैर कर खेल खेला।

दूसरे लोग जिस युद्ध के लिये डरते थे वह युद्ध कुमार के लिये खेल सरीखा तमाशा मालूम होता था; याने कुमार युद्ध कला में निपुण एवं पारगामी थे।

[८०३]

वेल वेण्कोट्टु मेलकोल्तिन्ट्र कून्कुरुदि वालाल्
आलनावलित्तु नेय्दतोर कोप्पुलित्तलिन्द मावित्

सूलकुडर्कण्णि सूडिनिणत्तुकि लुडुत्तु वेल्लेन्
पूलपेर वणिन्दु सूलपेय् आडक्कण्डुवन्दु नक्कान्

भावार्थ—हाथो के सफेद हड्डो से दाँत साफ़ कर टेढ़े एवं खूब लगे हुए तलवार से जोभ साफ़ कर, खून रूपी पानो से कुल्लाकर, मरे घोड़ों के मांस को अलंकृत कर, शवरूपी कपड़े को ओढ़कर सफ़ेद हड्डियों की माला पहन कर जो पिशाच खेल खेल रहे थे उसे देखकर जोवक सानन्द हँसने लगा।

[८०४]

वेलिट्रु उडकुरुदि वेल्लं निलैयिदु वेन्बने पोर
कलिट्रु गिर्प पिरल पर्पेय्गल् कैकलै युच्चि क्कूप्पि
अलित्तवै पाडि याड क्कुरु नरि नक्कु वेलं
विलित्तन कलुंगुं पारुं विलाविट्र क्किकउन्द वन्ट्रे

भावार्थ—रक्त रहित जो शव थे, उसके रुधिर को गहराई इतनो है, मानों दिखाने के वास्ते हो, ऐसे हाथी के नाखूनों के समान बेढंग के दाँतों वाले जो पिशाच थे वे हाथ जोड़कर कुमार से दिये हुए आतिथ्य को स्मरण कर आनन्द नर्तन करने लगे। हाथो के पास जो गोदड़ थे, वे पिशाचों के नर्तन को देखकर हँसने के समान चिल्लाने लगे! मरे पड़े हाथियों को खाने वाले गरुड-बक, पिशाचों के नर्तन को देख कर हँसते हुए खड़े होने लगे।

[८०५]

कडलिवलै यमुदंकण्ड पोलुदिनेय् कनिन्द तींजोर्
ट्रडिसिलं जुवै मिक्कांगु मण्णलं कुमर नोन्ना
कुडलिन्मे ट्रिरियुं तिण्डेर काण्डलु मैन्दनैजत्
तिडल् पिलन्दिट्ट वेकंजुमन्दर्मत्ति रतिन्मिक्कार्

भावार्थ—सागर में उत्पन्न नमक को मिलाने से, घो मिश्रित खाने के वस्तुओं में मिर्च आदि का स्वादु बढ़िया रहने के समान, ख्याति प्राप्त जोवक के शत्रु लोगों के शरोर पर चलने वाले शक्ति सम्पन्न रथ को देखने के बाद जोवक के दोस्त एवं भ्रातृ लोग शत्रुओं को छातो को वेलायुध से फाड़कर और भो युद्ध कला में होशियार होने लगे।

[८०६]

कडांतिरन्दिट्टु वानिन्कलकल मुलंगु वेलं
पडांतिरन्तूलित्तीयिन्पदुगन्काट्टियिट्टान्
तडांपिरै मरुप्पुत्तिण्कै अपर कात्तिरंगल् तम्मार्
कोडांपिर कुमरिप्पोरुट् पिरक्केन क्कोन्ट्रदन्ट्रे

भावार्थ—उन लोगों में पद्मास्य ने वर्षा के मेघ के समान मद को गिराने वाले कलकल नाद से शब्दायमान हाथी के मुख वेष्टन को हटा कर, प्रलयकाल अग्नि के समान लाकर उसको युद्ध रंग में दिखाया। वह टेढ़े अपर पक्ष चन्द्रमा के समान मुख को हड्डी, सूँड और पैर आदि से दत्ता के निमित उत्पन्न युद्ध में हिंसा के धन्धे को दूसरों को नहीं सौंपेंगे बल्कि खुद ही सबको मार डालेंगे; मानो ऐसा विचार करने के समान हाथी ने सब लोगों को मार डाला।

[८०७]

मरुप्पिनालवेलं वीला मन्नरै वालिन्सीरा
मुरुक्किक्तेर् तडक्कै त्तन्नान् मुलंगिप्पाय् माक्कल कालिन्
एरित्तिडा क्कण्णुल् तोया र्सुट्टु नीराक्किनेयत्तो
रोरुक्किप्पेय् पाडियाडवुरु सिलै युडन्ट्र कोण्डान्

भावार्थ—और पद्मास्य के हाथी ने अपने मुख को हड्डी से शत्रुओं के हाथी को नाश किया। पूँछ के द्वारा राजा लोगों को ताड़न किया; लम्बी सूँड़ के द्वारा रथों को तोड़ा; गर्जना के साथ अपने पैरों से एवं क्रूर वीक्षण से घोड़ों के खूनों को नाश किया। पद्मास्य ने खुद भी उसी तरह करने के विचार से पिशाच को एवं खेल खिलाने की दृष्टि से उसके अनुकूल धनुष को गुस्से के साथ हाथ में लिया था।

[८०८]

कोण्डान्पकलि तोडुत्तान्सिलै कालकुनिन्ददु
ओप्तेर् मिसैयु मुरुवक्कलिट्टुच्चि मेलुं
वण्तार्पुरवि निरत्तुंमरमन्न मेलुं
कण्डान्सोरिन्दान् कणैमारि कलैन्द दन्ट्रे

भावार्थ—पद्मास्य ने धनुष को हाथ में लेकर उस धनुष के निचले भाग को टेढ़ा कर रथों के ऊपर, सुन्दर हाथियों के ऊपर, माला पहनाये गये घोड़ों के छातो पर, वीरता से भरे राजाओं पर बाणों को चलाया। जीवक ने दूसरो जगह रह कर इसी तरह बाणों को चलाया था। दोनों के बाण मिलते जाते थे।

[८०९]

पॅपोन्पुलक प्परुम क्कलियानै यीट्टं
सॅपोन्नेडुन्तेतोकै माक्कड ल्सेनै वेल्ल
नंबन्सिले वाय् नडक्कुं कणैमिच्चि वल्लाल्
अलंपोन्मणि प्पूणरुसुं मिलै एन्ट्रु नक्कान्

भावार्थ—खरे सोने से बना कर उसमें कांचों को लगाये गये गर्दन वाले मद भरे हाथियों के झुण्ड में, सोने से निर्मित ऊँचे रथों के झुंड में, घोड़ों के सागर में, वीरों के सागर में, सुन्दर सोने और रत्नों से अलंकृत राजा लोगों में जीवक के धनुष से निकले हुए बाण सबों को नाश करते जाते थे। पद्मास्य सोचने लगा कि भाई जीवक के द्वारा सब खतम कर दिये गये हैं। अब कौन है? लड़ने के लिये। इस तरह आश्चर्य के साथ हँसने लगा।

[८१०]

ओरुवले सिलैयुं ओन्ट्रे उडैयदो र्कलिट्रिन्मेलान्
अरुवरै मार्बिल् सेन्ट्रिरिन्दिल नेकमिन्नुं
पोरुवरो मन्नरेट्रान् पोरुसिलै मडक्कि यिट्टार्
वरुकलि यानै सोट्टार् वांल्यडै वांगिक्कोण्डार्

भावार्थ—इस तरह हँसा हुआ पद्मास्य सहायक के बिना अकेला था; धनुष भी एक हो था; एक हो हाथी पर आया हुआ था; एक वेलायुध अपने विशाल छातो पर लगा हुआ; परन्तु उस पर ध्यान नहीं देता हुआ ये खोटे राजा लोग क्या और भी युद्ध करेंगे? इस तरह पूछने लगा। इस बात को सुने हुए राजा लोग डर के मारे युद्ध के लिये टेढ़े किये हुए धनुष को सोधा कर लिये थे। मद गजों को युद्ध भूमि पर बिना चलाये वापस कर लिये थे। म्यान से निकाले गये तलवार को फिर से उसी में डाल लिये थे।

[८११]

सेंगण्माल् तेलिवकप्पट्ट वलंपुरित्तुवंकोण्ड
संगुवाय् वैत्तु नंबन् तेलित्तलुं तरुकणालि
पोंगिय मुलविकन्वेलप्परिनं पुलंबिना पोंल्
तंगुतार्मन्नरेल्लां तलन्दुं कण्सांपिनारे

भावार्थ—भारत की लड़ाई में कृष्ण के द्वारा शब्दायमान शंख के समान जो शंख था उसे मुँह पर रखकर जीवक ने बजाया था। प्रलय-काल में बजाये जाने वाले शंख ध्वनि से हाथियों के झुंड डर जाने के समान माला पहने हुए सारे राजा लोग डर के मारे अन्धे हो गये थे।

[८१२]

मरुवरै नागंजुट्रि आलियान्कडैय वन्ट्रु
करुवरै कुडैयप्पट्ट कटलेनवकलंगि वेन्दर्
तिरुवरै मार्बन् तिण्तेर मंजैये मुरुगन्तानेन
ट्रोरुवरो डोरुव र्कूडा वण्णमे युडैय लुट्रान्

भावार्थ—पुराने जमाने में कृष्ण जो मन्थर पर्वत को मथानी बना कर एवं वासुकी नामक साँप को रस्सी बना कर क्षीरसागर को मथन करते समय, उस पर्वत से मथन किये हुए क्षीरसागर जैसे क्षुब्ध हुआ था, वैसे ही राजा लोग क्षुब्ध हुए थे। वे लोग सुन्दर पर्वत सदृश विशाल वक्षस्थल वाले के (जीवक) मजबूत रथ को मोर समझ कर एवं जोवक को उस पर बैठे हुए षण्मुख समझ कर एक दूसरे से बिना मिले डर के मारे भाग खड़े हुए थे।

[८१३]

मुलिमरक्काडु मेयन्द मुलंगलल् पोन्ट्रु मैन्दन्
तेलिनलक्कुमरर्कूट्रिन् तेलित्तनर्पकलि सिन्दि
योलिनल वुप्पुक्कुन्ट्र मूर्पुनर्कुडैन्ददे पोर्
कलिनल मन्नतंगल् कडल्पडै युडैन्द दन्ट्रे

भावार्थ—सूखे पेड़ वाले जंगल में फैली हुई जंगल की आग के समान जोवन्धर कुमार के हित पहुँचाने वाले दोस्त और सोदर सब लोग यमराज

के समान आरवार (आवाज) करने लगे। उस आवाज को सुन कर, अत्यन्त प्रकाशमान एवं सुन्दर नमक का पहाड़ वेग से चलने वाले बाढ़ में गल जाने के समान सन्तोष और सुन्दर राजा लोगों की समुद्र के समान सेना जीवन्धर कुमार के सामने खड़े होने में असमर्थ होकर अपने-अपने हाथ में जो बाण थे उन्हें फेंक कर डर के मारे हारती हुई दौड़ गयी।

[८१४]

उरुपडै मन्नतंम्मैं उडर्ट्रि योन्ट्रानु मिन्ट्रिच्
सिरुपडै यवर्कल् वेन्ट्रु सेगुप्पवोवेन्न वेण्डा
सेरियेयिट्रालि वेलप्पेरिनं सेगुत्ततन्ट्रे
वुरिपुलि योन्ट्रु ताने कलैयिन मुडट्रिट्रन्ट्रे

भावार्थ—बड़ी भारी सेना वाले शत्रु राजा लोगों को कष्ट देकर, अपने को किसी तरह की हानि पहुँचे बिना छोटी सेना वाले को जीत कर क्या नाश कर सकते हैं ? इस तरह सन्देह करने की कोई जरूरत नहीं है। उदाहरण के लिये समझें, मिले हुए दाँत वाले एक 'आलि' (सिंह से भी शक्तिशाली एक भयंकर जीव) ही हाथियों के झुण्ड को सर्व नाश कर देती है। न; हाँ कर देती हैं। दूसरा उदाहरण शक्ति सम्पन्न एक बाघ ही हिरण के झुंड को नाश कर देगा न ? हाँ कर देगा।

[८१५]

नल्लवै पुरियुं मान्दनान्दिकं पिलैत्तु वोला
वल्लवै पुरियुं मान्द र्कत्तिर मोन्ट्रुं वायर्
वेलवदो गुणत्तिन्मिक्कार् वेट्रिलै विडिनुं वेला
मिल्लैये वेन्ट्रि तीमै इंडंकोण्ड मनत्तिनार्के

भावार्थ—अच्छा काम करने का उद्देश्य जिसको है उसका तलवार बिगड़ेगा नहीं। बुरा काम करने की इच्छा रखने वाले लोगों की यह हालत नहीं होती। अतः जीत के बारे में कहना है तो अच्छे गुण वाले 'पान' (तांबूल) को शत्रु लोगों के ऊपर फेंकेगे तो वह बेलायुध के समान घात कर जीत (जय) को प्रदान करेगा। अहित करने की इच्छा रखने वालों की जीत कभी होती ही नहीं।

[८१६]

कुलैयुडै मुगत्तिनालकण् कोणैप्पोर्सेय्द मन्नर्
मलैयिडै मिन्नि नोय्ता मरैन्दन विंजैवेन्दर्
मुलैयिडै च्चिंगं अन्नान्मोय्यमरेत्ति यार्त्तार्
विलवुडै वीथिमूतूविरुप्पोडु मलिन्द दन्ट्रे

भावार्थ—मकर कुण्डल पहनी हुई गान्धर्वदत्ता के कारण भिन्न-भिन्न विचार के साथ लड़ाई लड़े राजा लोग, मेघ मण्डल में उत्पन्न होकर अदृश्य होने वाली विद्युत् के समान अपने स्थान का पता न हो इस तरह भाग खड़े हुए। विद्याधर राजा लोग गुफा में रहने वाले शेर के समान जीवक के वीरत्व से भरे लड़ाई की तारीफ़ करने के साथ आरवार कर सन्तुष्ट हुए। विशेष उत्सव चलने वाले वीथी से अलंकृत पुराना शहर खुशी में डूबने लगा।

[८१७]

पार्मिसै युलगमेत्तुं पडुकलंकण्डु पट्टार
पोर्मुख क्कलिट्ट वेण्कोडुलुत सेंराण् कोण्मार्पिन्
सीर्मुखत्तोलर्सूल ज्जीवकन् तिरुविन् सायल
वार्मुखमुलैयिनालै मनैवयिन् कोण्डु पुक्कान्

भावार्थ—संसार के ऊँचे दर्जे के लोग तारीफ़ करने योग्य युद्धरंग को देख कर, शत्र राजाओं के युद्ध भूमि में हाथी के सफेद दाँतों से लगे गये लकीर के साथ शोभायमान छाती वाले सहोदर लोगों से घेरे हुए जीवन्धर कुमार लक्ष्मी के समान सुन्दर चोली पहनी हुई स्तन भार वाली दत्ता को अपने घर ले आया था।

[८१८]

नेयक्किलि वैक्कप्पट्टार् नेय्प्पलत्तल् किडत्तप्पट्टार्
पुक्कुलि येक्कनाडि यिरुंबिनार्पोलप्पट्टार्
मैक्किलिन्तोलुगुं कण्णोर मानित्तुगुक्कप्पट्टार्
कैक्किलि कोडुक्कप्पट्टार् कलंपल नल्कप्पट्टार्

भावार्थ—युद्ध भूमि में घायल हुए वीर लोगों के घाव में घी लगाकर कपड़े डाले गये थे। घी से लगाये गये कमरे में सुलाये गये थे। युद्ध में आयुध लगे लोगों को उसे तलवार से निकाल कर साफ करते हुए शुश्रूषा किये गये थे। बन्धु-बाँधवों को रुलाई के साथ मरे हुए लोगों को उनके नाम से जायदाद दी गयी थी। थोड़ा-सा घाव लगे वीरों को आभूषण दिये गये थे।

[८१९]

मुट्टुमर प्पोन्दुपोल मुलुमैयुं पुण्गलुट्टार्क
किदु मरुन्देन्न नल्लारिलु दुसे र्केवलं वैत्तुप्
पदुमुग न्पावै मार्पिनेय क्किकलि पयिलच्चेर्त्ति
नुदिमयित्तुगिर्क्कु प्पायं पुगुकेन नूक्किनाने

भावार्थ—जीर्ण पेड़ों के छिद्र के समान सारे शरीर में घाव लगे वीरों को यह अच्छी दवाई है ऐसा कह कर सेवकी (Nurse) घी मिश्रित चावल के कंबलों को पद्मास्य के विशाल छाती पर रखकर उस पर घी के कपड़े को लगा कर उसे कंबल से ओढ़ कर जीवक खुद देख-भाल करता था।

[८२०]

पार्केलु पैंपोन् तन्नाल् पण्णुवनुरुव माक्कि
ऊर्केलु विलवु सेय्दांगु उरुपोरु लुवप्प नलिकत्
तार्केलु मिन्नुं वीकित्तनिवड न्तिनैक्कु मार्पन्
पोकेलु कलत्तु प्पावं पुलंपोडु पोक्किनाने

भावार्थ—पत्थर से मिले हुए लाल-लाल सोने से जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा बनवा कर शहर के सारे लोग सन्तुष्ट होने योग्य प्रतिष्ठा आदि महोत्सव चला कर, बहुत से धन को गरीब लोगों के लिये दान देकर फूल की माला एवं प्रकाशमान मोती की माला आदि से अलंकृत कर विशाल वक्षस्थल वाले जीवन्धर कुमार ने, युद्धरंग में बहुत से लोगों को मारने से होने वाले पापों को तथा घृणा को निकाल दिया था।

[८२१]

सेय्द अप्पाव मेललां तीर्न्तिडुं तीर्त्तन्पादं
एय्दिय सेडं कूवित्तिरै ञुपु तोलुदु वालित

मैयरु मणियिन्सेयद वलंपुरीयदनो कोंण्डान्
वैयग मलिक्क नीण्ड वलंपुरित्तडवकैयाने

भावार्थ—देश की भलाई रूप दक्षिण में घुमाई चक्र रेखा वाला जीवन्धर कुमार, पूर्व जन्म में किया हुआ जो पाप है उसके निवारणार्थ, अरहन्त परमात्मा के दिव्य चरणों में रखे गये निर्माल्य (अर्चित फूल) एवं निर्दोष रत्नों से खचित दक्षिण घुमाई रूप तथा शंख स्वरूप पात्र में रखे गये पवित्र जल (गन्धोदक) हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए ले लिया था।

[८२२]

करुमणि अलुत्तिय कामसेंगतिर्त
तिरुमणि च्चेघेन च्चेरिन्द वेंमुलै
अरुमणि यलवरु मंपोन कोंबनाल्
पेरुमण विकलमैयांपेसुकिन्ट्रदे

भावार्थ—काले रत्नों से निर्मित सुन्दर एवं प्रकाशमय माणिक्य मणिमय रत्न करण्डक के रूप में कहने योग्य बड़े आकार वाले तथा आश्चर्यकारी स्तन कलशों में अपूर्व माणिक्यों के प्रकाश के साथ चलने-फिरने वाली शोभायमान सोने की लता जैसी गान्धर्व दत्ता के महिमामय विवाह महोत्सव के बारे में हम आगे कहेंगे। (ग्रन्थकर्त्ता तिरुत्तक्कदेव का कथन है।)

[८२३]

नान्गु नूरायिरं कुडत्तु नल्लन
आन्तयि पाल्नेयो डलकि तानिरैत्
तूंट्रिकल वेलिनान् वेलिवक्कूर्मरुल्
कोन्तोरु क्कावलन् कोण्डु मुन्निनान्

भावार्थ—चार लाख घड़ों में अच्छी गायों का दही, दूध और घी को सुन्दर वेलायुधधारी जीवक के विवाह यज्ञ के लिये सारे नगरवासी आश्चर्य करने के रूप में राजा के गाय का रक्षक नन्दगोप सबसे पहले ले आया था।

[८२४]

वलैनिर वार्सेनेलरिसि प्पण्डियोडु
अलवरु सरुक्करैप्पण्डि यार्न्दन
पिलवियल् पयरुपेय् पण्डि युप्पनीर्
विलैवमै पण्डियिन् वेरुत्त तांगोर्प्पाल्

भावार्थ—शंख के रंगवाला सफेद एवं लम्बे धान से चावल भरी गाड़ियाँ, अत्यधिक शक्कर भरी गाड़ियाँ, दाल के रूप में किये गये मुँह की गाड़ियाँ, पानी में उत्पन्न नमक से भरी गाड़ियाँ उनक घर के एक कोने में लाकर भर दिये गये।

[८२५]

सिनैत्तुण मुलुवन पलविन्तींगनि
कनैत्तुवण्डुलल् वनवालै मांगनि
एनैत्तुल किलंगु काय् कुरुकोडेन्दिय
सनत्तिनार् रकैत्तिडं पेरादु तानोर्पाल्

भावार्थ—पेड़ के डाल में उत्पन्न भरे कटहल की गाड़ियाँ, मक्खियों से भरे केले के फल, आम के फल, जमीन कन्द, कच्चा साग, जो-जो होना है उन सबको जनता लाकर भरने लगी; जिससे रखने के स्थान का अभाव हो गया था।

[८२६]

मरगत मणि प्पसुं काय् कोल् वान्कुलै
कवर्पलु क्काय् कुलै कनियक्कावुरीई
इवर्तरुं मेल्लिलै क्कावुं एन्दिय
कुवरियाय् च्चोरिन्दिडं पेरादु तानोर्पाल्

भावार्थ—मरगत रत्न के समान चढ़े कच्चे अनगिनत नारियल के गुच्छे, उसी तरह इच्छा करने योग्य सुपारी के गुच्छे, खुले रूप में रखी गयी बड़े-बड़े पान की पेटियाँ ये सब बाढ़ के समान आ जाने से एक तरफ जगह की कठिनाई होने लगी।

[८२७]

सम्बकं तमनगं तमालं मल्लिगै
तम्कलु नीरोडु कुवलै तामरै
वण्डिनं इसै कोल वास प्पूच्चुमै
कोण्डव र्कुलां पोलि वुट्र तांगोर्पालि

भावार्थ—चंबंगि, चमेली, मरुक्कोलुन्दु, कमल आदि सुगन्ध फूलों में भ्रमर गुंजायमान होते थे। इस तरह के फूलों को लेकर आये हुए लोगों की भीड़-भाड़ एक तरफ शोभायमान दिखाई देती थी।

[८२८]

आर्केलु कुरडु सूट् टालि पोन्ट्रवन्
सीर्केलु वलमनै तिलैत्त मासनं
कार्केलु कडलेन ककलन्द वल्लदूं
पोर्कूलु पलुमर प्परवै ओत्तवे

भावार्थ—गन्धोत्कट श्रेष्ठी के महल में प्रजा की भीड़-भाड़ अधिक होने से समुद्र के समान दिखाई देता था। इसको देखने से ऐसा लगता था कि मानों बड़े पेड़ पर आकर ठहरने के लिये आने वाली चिड़ियाँ हों। इस तरह सुन्दर दिखाई देता था।

[८२९]

कैयुरै येलुदिनर् कैनोन्तेडरुत्
तैयेन विरुप्प मट्रन्न तातलान्
वैयग मरुंगिनिन् वालनर्मट्रिवन्
सेयतव नमक्किसै केन्न च्चेन्ट्रदे

भावार्थ—विवाह के लिये आये हुए सम्मान की वस्तुएँ (Presentation) जो आयी थीं, उनके नाम जो लिखते थे वे थक गये थे। इसलिये वे लोग कुछ देर के लिये आराम (Rest) करने लगे। उन लोगों को इस तरह की हालत होने का कारण यह है कि सम्मान की वस्तुएँ भरमार आने लगीं। जो सन्मान लाये थे उन लोगों का विचार यह था कि इस महापुरुष से किया हुआ जो तप है, उसका फल अपन को भी थोड़ा-बहुत मिल जाय!

[८३०]

वाल् अरिकलुविय वण्णच्चेंपुनल्
काल् इयल् इवुलियुं कलिरु मालन्दवण्
कोलनीर्कुवलैयुं मरैयुं पूत्तुवण्
टालिवण् कुरुगुप्पाय् तडंगलानवे

भावार्थ—दत्ता की शादी के समय पर सफेद चावल को धोने से निकलने वाली पानी में, हवा के समान अति वेग से दौड़ने वाला घोड़ा और हाथी ये दोनों (उस पानी में) डूब जायेगा; इतना पानी था। उस पानी में कमल आदि फूल उत्पन्न होकर विकसित होने लगे; उन फूलों पर भ्रमर गुंजायमान हो रहे थे। बगुला आदि जीवों के रहने का स्थान हो गया था।

[८३१]

उडुप्पन तुकिलकलुं उरैक्कुं नानमुं
तोडुत्तन मालैयुं कुलैयुं सान्तमुं
कोडुप्पव कोलेपव वींलत्त पलकल
मडुत्तु विण्पूत्ततो रदलकिन् मिक्कदे

भावार्थ—ओढ़ने वाले कपड़े, लगाने वाली सुवास वस्तुयें, तैयार की गईं फूल की मालायें, घिस कर तैयार किये गये चन्दन आदि इन वस्तुओं को देने वाले और लेने वाले इन दोनों के बीच में से नीचे गिर जाने वाले बिन्दुओं को देखने से ऐसा लगता था कि ये आकाश में विकसित नक्षत्र हों। इस तरह सुन्दर दीख पड़ता था।

[८३२]

कलंगलुं अरवमुं करुनै यार्कुवार्
सिलंबोलि यरवमुंमिच्चिल् सीप्पवर्
इलंगु पोर्किकिणि यिरंगु मोसैयुं
उलंबुमा लुवक्कंडल् ओलियिन्मिक्कवे

भावार्थ—खाने वाले पात्रों (थाली) का शब्द, सब्जी तैयार करने वालों (रसोइया) के पैर में पहने हुए पायल के शब्द, जूठी चीजों को

निकालने वालों के किंकिणो शब्द थे सारे मिलकर नमक का जो सागर है उसकी आवाज से भी अधिक आवाज होती थो।

[८३३]

मूलिवाय् मुल्लै मालै मुरुकुलां कुललिनालुं
ऊलिवाय् त्तायोडोक्कुं ओलिरुवाल् तडक्कै यानुं
आलिवाय् विरलिर् कामनंपोडु सिलैकैयेन्दत्त्
तालिवाय् क्कुवलै वाट्कण् तैयलार्पर्वच्चान्दार्

भावार्थ—फूलों की जो फूलमाला थी, उस सुवास वाली माला को अपने सिर पर रखने से सुवासित बालों वाली दत्ता और युद्ध रंग में प्रलय-काल अग्नि के समान वेग के कारण प्रकाशमय तलवार से विभूषित बड़े हाथ वाले जीवन्धर कुमार, कामदेव का बाण और धनुष दोनों को अंगूठो में पहने हुए उँगली बाले हाथ में लेकर, पानो के तटाक में विकसित फूल के समान सुन्दर वर्ण और तलवार के समान तीक्ष्णता इन दोनों से अलंकृत आँखों वाली नारियाँ घेर कर रहते समय एक आसन पर दोनों जाकर (दत्ता और कुमार) बैठने लगे।

[८३४]

इन्नियंमुलंगि यार्प वीण्डेरि तिगलवे तं
तुन्निन र्पलासिर्सेयद तुडुप्पिनेय् सोरिन्दु वेट्प
मिन्नियल् कलसननीर सोरिन्दनन्वोरनेट्रान्
मुन्नुपुविलंगु वेल्लि मुलैत्तेल मुरुगनन्नान्

भावार्थ—वैवाहिक स्थल में वाद्य विशेष बड़े पैपाने पर चलने लगे। अग्नि ज्यादा हो इस कारण शास्त्रों के जानकार ब्राह्मण लोग आहुति के चमचे से घो को ज्यादा डाल कर अग्नि को बढ़ाने लगे। विद्युत् के समान प्रकाशमान लोटे में रहने वाले परिशुद्ध जल को श्रीधारा के रूप में छोड़ने लगे। उसे प्रातःकालोन शुक्रोदय के समय पर शोभायमान 'षण्मुख' के समान जाज्वल्यमान जोवन्धर कुमार ने उसे (जल धारा को) आदर के साथ ग्रहण कर लिया था।

[८३५]

इट्ट उत्तरिय मिन्नुंएरिमणि प्परुमुत्तार
मट्टविलकोदै वेय्य वरुमुलै तांगलार्ट्रा

नेट्टिरुं कून्दलाड नेर्वलै मुन्कैपट्रिक्
कट्टलल् वलंकोण्डाय् पोर कट्टिल्तानेरिनाने

भावार्थ—पहनी हुई ऊपर की साड़ी, प्रकाशमान रत्न और मोती की मालायें, मधुभरी फूल की मालायें, आश्चर्यकारी स्तन कलश इन सबको वहन करने में असक्त लम्बी एवं काले बालों वाली दत्ता की सुन्दर चूड़ियाँ पहने हुए हाथ के अग्र भाग को पकड़ कर विवाह के हवन की अग्नि को घूम कर अच्छी तरह शोध कर बनाये गये पलंग पर जीवन्धर कुमार चढ़कर बैठा था।

[८३६]

मन्दिरत्तर सन्कादल् मादरं पावै तन्नैक्
कन्दुकन्सिरुवन्वेट्ट कडिविनै नोडियिन्मट्रोर्
अन्दर विसुंबिन् देवर्ककतिपतियाय कोमान
इन्दिरन् तनक्कुमाका देन्बदु नडन्द दन्त्रे

भावार्थ—विद्याधर राजा कलुषवेग की प्रिय पुत्री एवं सुन्दर पुतली के समान भूत गान्धर्वदत्ता और गन्धोत्कट श्रेष्ठी के सुपुत्र जीवन्धर कुमार इन दोनों के विवाह वैभव का वर्णन करना अन्य लोग जो देवलोक हैं उसका राजा जो देवेन्द्र है उनसे भी नहीं किया जा सकता। ऐसी प्रख्याति के साथ विवाह वैभव सम्पन्न हुआ था।

[८३७]

अडिमनै पवलमाग अरुंपोनाललगु सेर्त्ति
मुडिमणि यलुत्ति च्चेयद मूरिक्काल् नेट्रिमूलग
क्कडिमलर्मलै नार्ट्रि क्कंबल वितानं कोलि
यिडुपुगै मंजिन्सूल मणवरै यियट्रिनारे

भावार्थ—चारों तरफ़ की दीवाल को पन्ने से भर कर, सुन्दर सोने से हाथ की लकड़ी बनाकर, शिखर पर रत्नों को जमा कर खड़े किये गये खम्भे का अग्र भाग छिप जाय इस तरह पीताम्बर कपड़ों से ऊपर वितान बाँधकर और उसे नीचे तक लटका कर बनाया गया था। 'अगिल' नाम की सुगन्ध वस्तु की धुँआ से मेघ के समान चारों तरफ फैला कर सुशोभित किया गया था।

[८३८]

ऐन्दु मुन्द्रडुत्त सेलवत्तु अमलिमून्द्रियट्रि प्पूंपट्
टेन्दिर वेलिनि वांगि इन्मिक वासच्चेप्पुं
सन्दन च्चान्द च्चेप्पुं तण्मलर्मालै पेय्द
इन्दिर नीलच्चेप्पु मिलैयवरेन्दि नारे

भावार्थ—पाँच वस्तुओं से दोनों को अलग-अलग सोने के लिये दो पलंग और दोनों भोग भोगने के लिये एक पलंग, इस तरह तीन पलंग तैयार किये गये थे। उसमें पोताम्बर का परदा भी डाला गया था। सुगन्ध वस्तु भरी पेटी और चन्दन आदि का कटोरा भी था। ठंडी फूल मालाओं के साथ इन्द्र नील रत्नों से बनायी गयी पेटो लेकर छोटी-छोटी सखियाँ खड़ी थीं।

[८३९]

कडैन्दुपेय् मणिक्कैच्चेंबोन् कासरुतट्टिर्सूलदुं
मिडैन्दुपेय् मणिक्कट्पीली मिन्नुसान्दाट्रि पोन्नार्
अडैन्दु वीसालवट्टं अरिवैय रेन्दि यादृत्
तडंगण्कल् कुवलै पूप्पत् तैयलो डाडु मन्ट्रे

भावार्थ—बड़ी-बड़ी आँखें लाल-लोल दोखें, ऐसी हालत में अच्छी तरह पीस कर बनाये गये हाथ पकड़ने का हो, लाल सोने से बनाये गये एवं बिलकुल बढ़िया डंडा हो, सब चीजें मिला कर बनाये हुए तथा नील रत्नों से खचित आँखें वाली पोलियों द्वारा नारियाँ प्रकाशमान पंखों से हवा करती थीं। जिससे जीवन्धर कुमार अपनी पत्नी गान्धर्वदत्ता के साथ आनन्द से सुख भोगता रहता था।

[८४०]

पंजुसूल परवै यल्कुल् पसुंगतिवर्कलापं वींगच्
सेन्तलिक्कोदै सोर विंककिणि सिलंपोटॅग
मैन्दरुल् कामननान् मगलिरुल् तिरुवनालै
अन्दरत्तमरपेट्र बमिदेन प्परुगिनाने

भावार्थ—रुई से बनाये गये कपड़ा पहनी हुई विशाल मर्मस्थल पर अलंकृत सोने की छटा हो ऐसे सुन्दर मेखला को बाँधकर शोभायमान

होती थी। गले में पहनी हुई मालायें बिखर कर पड़ी हुई थीं। किंकिणी सहित पायल शब्दायमान होती थी। ऐसी हालत में पुरुषों के अन्दर कामदेव के समान सुन्दर जीवक, नारियों में लक्ष्मी सदृश जो दत्ता थी; उसके साथ देवलोक के अमृत समान अधर पान कर सुख भोगता था।

[८४१]

इलमुलै मणिक्कण्सेप्प एलुदविर पुरुवमेर
विकलैनरं पनैय तींजोर्पवलवाय् तिकलत्तेन्सार्
वलमलर्कोदै तन्नै वाय्विटान्कुलैयप्पुलिल
अलमर लिलात विन्ब क्कडलगत्तलुन्दिनाने

भावार्थ—नीलरत्न के समान सिरा वाले स्तन कलश लाल होवें, लिखे हुए धनुष के समान भ्रूवें चढ़ते-उतरते हों, मधुर वचन बोलने वाली पन्ने का सा मुँह शोभायमान हो, मधु गिरने वाली सुन्दर फूलमाला सदृश दत्ता को कुमार गाढ़ आलिंगन कर बराबर अधर पान पीते हुए दुख रहित, सुख सहित आनन्द सागर में डूबता रहता था।

[८४२]

इन्नणं ओलुगु नालुल् इलमर क्कावु काण्वान्
पोन्नणि मार्बन सेन्ट्र पुगुतलु मोरुवन् ट्रोन्ट्रित्
तुन्नियोरोलै नोट्टित् तोलुदनन्पेयन्र्दु निर्प
मन्निय कुरुसिल् कोण्डु मरपिनाल्नोक्कुकिन्ट्रान्

भावार्थ—जीवन्धर कुमार इस तरह भोग भोगते हुए सुख से काल व्यतीत करते रहते थे। उस समय बगीचे की शोभा को देखने के लिये जीवक वहाँ पहुँचे थे। उसी समय एक व्यक्ति ने सामने आकर एक पत्र दिया और दूर जाकर खड़ा हो गया था। ख्याति प्राप्त जीवक उस पत्र को खोल कर पढ़ने लगा।

[८४३]

उरुमुक्कदि र्वेलकलुष नोलै युलकेन्नुं
परुमैक्कुरु प्पोलिगिल्पुगलपंजि मुलु दडुत्त
तिरुमिक्कुडै च्चेलवन्ट्रिरल् सामि ननिकाण्ग
अरुमैयर निन्बं पोरुलाकेन विडुत्तान्

भावार्थ—वह पत्र वज्रपात के समान शत्रुओं को नाश करने वाले वेलायुधधारी कलुषवेग का था। उनका लिखना यह था कि दुनियाँ रूपी विशाल साफ-सुथरे पत्थर के अन्दर आपकी कीर्त्तिरूपी रुई सब जगह फैल गयी है। यह आप पूर्वजन्म में संपादित पुण्य की महिमा समझनी है। इस बात को अच्छी तरह समझ लेना है। इसके अलावा आपको ऊँचा धर्म, सुख, समृद्धि आदि वृद्धिगत होते रहें। इस मंगल वाचनार्थ यह पत्र भेजा हूँ।

[८४४]

दत्तैयोडु वीणैमन तां पोरुदु तोर्प
मोय्त्तकलै नंबिमुकिल मुलैयै थिसै वेल्ल
वैत्त कदिवेलिन्वलि यार्क्कुरिय लेन्नच्
सित्तं करिन्तांकु क्कोडि यान्सेरु विलैत्तान्

भावार्थ—वीणा की स्पर्द्धा में सभी राजा लोग हार गये थे। उसके बाद कला में निपुण आप सुन्दर स्तन वाली दत्ता को वीणा की स्पर्द्धा में जीत लिये थे। उस समय दुष्ट काष्ठांगार ने तीक्ष्ण वेलायुध के द्वारा जो जीतेगा, दत्ता उसी की पत्नी होगी ऐसा कह कर युद्ध खड़ा कर दिया था।

[८४५]

तेन्मुलंगु ताक्कुरिसिल् सेंपोन्नेडुन्तेरमेल्
वान्मुलंगु वेंजिलैयिन् वालिमलै तूवि
ऊन्मुलंगु वेंगुरिदि वेलमुडन् मूलग
वेलमुलंगु तानैविलै याडियदुं केट्टेन्

भावार्थ—भ्रमर गुंजायमान हो ऐसी फूलमाला पहने हुए एवं श्रेष्ठ महानुभाव तुम लाल सोने से बनाये गये रथ पर बैठकर, मेघ के अन्दर उत्पन्न होने वाले वज्रपात के समान भयंकर धनुष से बाणों की वर्षा करने के कारण शरीर से निकल कर बाहर आये हुए खून में हाथियाँ डूब जाय, इस तरह धनुष लेकर झगड़ने वाली सेना के साथ तुमने वीरत्व का प्रदर्शन करते हुए जो खेल खेला था, उसे मैंने सुना है।

[८४६]

वन्दु तरन्कूरिय विव् वाय् मोलियुं अन्ट्रि
मुन्दुवरन्मोलिन्द पोरुण् मुट्रुंवगै नाडिप्
पन्दुपुडै पाणियेन प्पायुं कलिमान्तेर्
एन्दैतिर मुन्न मुणर्न तिन्नणं विडुत्तेन्

भावार्थ—गॅद के शब्द के समान दौड़ने वाली आवाजयुक्त घोड़ों को बांधे हुए रथ से किये गये तुम्हारे सामर्थ्य को "धर" नाम के व्यक्ति के द्वारा सुना था। यह सत्य वचन निकला है (दत्ता को जीवक के साथ सम्बन्ध करा कर आया हूँ। यह समाचार 'धर से' सुना था) पहले आर्यनन्दी महाराज के द्वारा कहे गये कार्य पूरा होने के पहले अनुमान से जानकर इस समय अपन को जाना, अनुचित समझ कर श्रेष्ठी श्रीदत्त के साथ दत्ता को भेजा था।

[८४७]

एल्लु नर्कल् सायवेन तोलिरण्डु नोक्कि
वेल्लिमलै मुलुदुं कोडि येडुत्तदिग लेन्दिक्
कल् सेय्मलर्मारबनुरु काप्पिगलद लिन्ट्रि
उललु पोरु लेंमुणर्त्ति यन्ट्रि उलवेण्डा

भावार्थ—मेरे दोनों भुजाओं को देखकर खिल्ली उड़ाने वाले शत्रु लोगों को सर्वनाश करने की शक्ति सम्पन्न जीवक नाम के महानुभाव, आपसे किये गये युद्ध को महिमा को सुन सारे विजयार्ध पर्वत में जीत के रूप में ध्वजायें फैलायी गई हैं। मधु भरे फूलमाला से अलंकृत विशाल छाती वाले आपको अच्छी तरह करने योग्य सुरक्षा को रोकना नहीं है। जो कुछ करना है उसे मुझसे कहे बिना कुछ भी न करें।

[८४८]

आंपोरुलकलागुमदु यार्क्कुमलि क्कोण्णाप्
पों पोरुल्कल् पोगुमवै पारियिन् वगैवण्णं
तें पुनलै नोर्कंडलुं सेन्ट्रु तरलिन्ट्रे
वींगुपुनल् यारुमलै वेण्डि यरियादे

भावार्थ—कुमार के प्रति राजा (श्वसुर) कलुष वेग का संबोधन यह है कि अपन को हित के रूप में जो आने का है वह आ ही जायगा; उसे कोई रोक नहीं सकते। उसी के समान जो वस्तु अपने हाथ से जाने का है, वह जायेगा का ही। कोई भी उसे रोक नहीं सकता। ये दोनों दो तरह के कर्म के आधीन हैं (शुभ और अशुभ कर्म) समझने की बात यह है कि नमक का सागर कभी भी दुनियाँ के लिये मीठा पानी नहीं देता। लेकिन मेघ तो नदी के लिये बिना माँगे ही मीठा पानी दे ही देता है। (यह उपदेश है कि कुमार को संबोधन कर काष्ठांगार की राज्य प्राप्ति राजा सत्यन्धर का राज्य, जीवन और सर्वस्व विनाश ये सबके सब जो होनहार था वैसे हुआ है। इसके लिये अब चिन्ता करने से कोई फायदा नहीं है। पूर्व में जो हुआ था उसे याद दिला कर सान्त्वना के रूप में संबोधित किया गया है।)

[८४९]

मन्पेरिय मामनडि मगिलन्दु दिसैवणंगि
अन्बिनगलातवनै विडुत्तलर्न्द कोदै
विकन्ब निलत्तियन्ट्पोरु लिवै यिवै नुं कोमान्
तन्दवेनच्चोलिल ननि सामि कोडुत्ताने

भावार्थ—सर्वश्रेष्ठ श्वसुर जो कलुष वेग राजा है, वे जिस दिशा में रहते हैं उस दिशा को देखकर उनके चरणों को नमस्कार करते हुए प्रेम स्वरूप जो 'धर' था (आया हुआ था) उसे आदर के साथ भेज दिया गया था। उसके बाद फूलों की माला पहनी हुई दत्ता के पास जाकर प्रेम संसार सागर के लिये योग्य जो-जो वस्तुएँ कलुष वेग राजा के द्वारा भेजी गयी थीं उन सबको अलग-अलग बता कर कुमार ने सारी वस्तुओं को दत्ता के हाथ में दिया था।

[८५०]

कुंकुममुं सन्दनमुं कूट्टियिडु कोडिया
वेंगणिल मुलैयिन्मिसै येलुदि विलैयाडिक्
कोगुण्मलर्क कोदैयोडु करिरिल्सेलुं वलिनाल्
अलंगणकर्प पट्टपोरु लाक्कियदु मोलिवां

भावार्थ—कुंकुम और चन्दन दोनों को मिला कर प्रेमोत्पन्न करने वाले स्तन कलशों पर लता के समान लिख कर, मधु गिरने वाले एवं फूलों से अलंकृत गान्धर्व दत्ता के साथ जीवन्धर कुमार प्रेम का खेल खेलते हुए आनन्द के साथ दिन बिताते समय, उस नगर के अन्दर जो कार्य हुआ था। उसे और उससे कुमार की क्या हालत हुई इन सबको आगे कहा जायगा।

भद्रं शुभं मंगलं

●